अल्बर्टाइन लापता हो गई

खोए हुए समय की खोज में - खंड VI मार्सेल प्राउस्ट

मूल शीर्षक:
मीठा धोखा चला गया
अतीत की यादें - खंड VI

अनुवादक: चार्ल्स केनेथ स्कॉट मोनक्रिफ़ चैटो एंड विंडस, लंदन, 1930

Table of Contents
अनुवादक का समर्पण
अनुवादक का नोट
अध्याय 1
दुःख और विस्मृति
अध्याय II
मैडमोजेल डी फोर्शेविल
अध्याय III
वेनिस
अध्याय IV
रॉबर्ट डी सेंट - लूप पर एक नया प्रकाश

अनुवादक का समर्पण
अर्न्स्ट रॉबर्ट कर्टियस समर्पित
हालांकि बेचारी अल्बर्टाइन अब हमारे बीच नहीं है, लेकिन अल्ब्रेचे भाइयों को हमें सांत्वना देना आता था।

[redacted]

[redacted]

[redacted]

अध्याय 1
दुःख और विस्मृति
"मैडम अल्बर्टाइन चली गईं!" मनोविज्ञान में पीड़ा कितनी गहराई तक समा जाती है, मनोविज्ञान से भी कहीं अधिक! कुछ क्षण पहले, जब मैं अपने भावों का विश्लेषण कर रहा था, तब मैंने सोचा था कि अंतिम मुलाकात के बिना यह बिछड़ना ठीक वही था जो मैं चाहता था, और जब मैंने अल्बर्टाइन द्वारा दिए गए साधारण सुखों की तुलना उन इच्छाओं की प्रचुरता से की जिन्हें उन्होंने मुझे पूरा करने से रोका था, तो मुझे लगा कि मैं बहुत सूक्ष्म सोच रहा हूँ, और मैंने निष्कर्ष निकाला था कि मैं उन्हें फिर से नहीं देखना चाहता, कि मैं अब उनसे प्रेम नहीं करता। लेकिन अब ये शब्द: "मैडम अल्बर्टाइन चली गईं!" मेरे हृदय में एक ऐसी तीव्र पीड़ा के रूप में उभरे हैं जिसे मैं लंबे समय तक सहन नहीं कर सकता। और इस प्रकार, जिसे मैं अपने लिए कुछ भी नहीं समझता था, वही मेरे पूरे जीवन का एकमात्र अर्थ बन गया। हम स्वयं से कितने अनजान हैं! सबसे पहले मुझे अपनी इस पीड़ा को तुरंत समाप्त करना था। जिस तरह मेरी माँ मेरी मरणासन्न दादी के प्रति कोमल थीं, उसी तरह मैं भी अपने प्रति कोमल भाव से, उस चिंता के साथ जो हम किसी प्रियजन को कष्ट सहने से रोकने के लिए महसूस करते हैं, मैंने स्वयं से कहा: "बस एक पल के लिए धैर्य रखो, हम दर्द दूर करने का कोई उपाय ढूंढ लेंगे, चिंता मत करो, हम तुम्हें इस तरह कष्ट नहीं सहने देंगे।" इसी तरह के विचारों के बीच, आत्मरक्षा की मेरी सहज प्रवृत्ति ने मेरे खुले घाव पर लगाने के लिए पहली शांतिदायक दवा ढूंढी: "यह सब जरा भी महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि मैं उसे तुरंत यहाँ वापस लाने वाली हूँ। मुझे पहले सोचना होगा कि मैं यह कैसे करूँगी,

लेकिन किसी भी हालत में वह आज शाम यहाँ होगी। इसलिए, चिंता करने का कोई फायदा नहीं है।" "इन सब बातों का ज़रा भी महत्व नहीं है," मैंने खुद को इतना दिलासा देकर संतुष्ट नहीं किया था। मैंने फ़्रांस्वा को भी यही जताने की कोशिश की थी, उसे अपनी पीड़ा न दिखाकर। क्योंकि, उस पल में भी जब मैं इतनी गहरी पीड़ा में थी, मेरा प्यार यह नहीं भूला था कि यह कितना ज़रूरी है कि यह एक खुशहाल प्यार, एक आपसी प्यार, लगे, खासकर फ़्रांस्वा की नज़रों में, जो अल्बर्टीन को नापसंद करती थी और हमेशा मेरी ईमानदारी पर शक करती थी। हाँ, अभी कुछ देर पहले, फ़्रांस्वा के कमरे में आने से पहले, मैंने सोचा था कि मैं अब अल्बर्टीन से प्यार नहीं करती, मैंने सोचा था कि मैं कुछ भी नहीं भूल रही; एक समझदार विश्लेषक होने के नाते, मैंने सोचा था कि मैं अपने दिल की हालत जानती हूँ। लेकिन हमारी बुद्धि, चाहे कितनी भी महान क्यों न हो, उन तत्वों को नहीं समझ सकती जो इसे बनाते हैं और तब तक अनजानी नहीं रह सकती जब तक कि उन्हें अलग करने वाली कोई घटना उन्हें ठोस होने के पहले चरण में न ले जाए। मुझे यह भ्रम था कि मैं अपने हृदय की गहराई को स्पष्ट रूप से देख सकता हूँ। परन्तु यह ज्ञान, जो मुझे उत्कृष्ट मानसिक बोध से नहीं मिला था, अब दुःख की तीव्र प्रतिक्रिया से मेरे समक्ष कठोर, चमकीला, विचित्र, क्रिस्टलीकृत नमक के समान प्रकट हुआ। मुझे कमरे में अल्बर्टीन को देखने की इतनी आदत हो गई थी कि अचानक ही मुझे आदत का एक नया रूप दिखाई दिया। अब तक मैं इसे मुख्यतः एक विनाशकारी शक्ति मानता था जो मौलिकता और यहाँ तक कि हमारी चेतना को भी दबा देती है; अब मैं इसे एक भयानक देवता के रूप में देखता हूँ, जो हमसे इस कदर जुड़ा हुआ है, जिसका अर्थहीन रूप हमारे हृदय में इस कदर समाया हुआ है कि यदि वह हमसे अलग हो जाए, यदि वह हमसे मुँह मोड़

ले, तो यह देवता, जिसे हम मुश्किल से पहचान पाते हैं, हम पर किसी भी अन्य पीड़ा से कहीं अधिक भयानक पीड़ा डालता है और तब मृत्यु के समान ही क्रूर हो जाता है।
सबसे पहले मुझे अल्बर्टीन का पत्र पढ़ना था, क्योंकि मैं उसे वापस लाने का कोई तरीका सोचने के लिए बेचैन था। मुझे लगा कि यह मेरे बस में है, क्योंकि भविष्य तो केवल हमारे मन में ही विद्यमान होता है, और हमें लगता है कि अंतिम समय में अपनी इच्छाशक्ति के बल पर इसे बदला जा सकता है। लेकिन साथ ही, मुझे याद आया कि मैंने उस पर अपने अलावा अन्य शक्तियों को भी काम करते देखा था, जिनके विरुद्ध मुझे चाहे कितना भी समय दिया गया होता, मैं कभी भी विजय प्राप्त नहीं कर सकता था। अगर हम उस चीज़ को प्रभावित नहीं कर सकते जो होनी ही है, तो समय न बीतने का क्या फायदा? जब अल्बर्टीन घर में रहती थी, तब मैंने हमारे बिछड़ने की पहल अपने हाथ में रखने का पक्का इरादा कर लिया था। और अब वह जा चुकी थी। मैंने उसका पत्र खोला। उसमें लिखा था:
"मेरा प्रिय मित्र,
मुझे माफ़ करना कि मैंने तुमसे वो सब कहने की हिम्मत नहीं की जो मैं अब लिख रही हूँ, लेकिन मैं इतनी डरपोक हूँ, मैं हमेशा तुम्हारी मौजूदगी में इतनी डरी रहती हूँ कि कभी खुद को बोलने के लिए मजबूर नहीं कर पाई। यही वो बात है जो मुझे तुमसे कहनी चाहिए थी। हमारा साथ रहना नामुमकिन हो गया है; वैसे भी, तुमने देखा ही होगा, जब तुमने पिछली शाम मुझसे मुँह मोड़ा था, कि हमारे रिश्तों में बदलाव आ गया था। जो बात हम उस रात सुलझा पाए थे, वो कुछ ही दिनों में बेकाबू हो जाएगी। इसलिए, हमारे लिए बेहतर है कि हम सुलह करने के सौभाग्य से दोस्तों की तरह बिछड़ें। इसीलिए, मेरे प्रिय, मैं तुम्हें ये पत्र लिख रही हूँ, और तुमसे विनती

करती हूँ कि अगर मेरी बातों से तुम्हें थोड़ा दुख हो रहा हो, तो मुझे माफ़ कर देना। मेरे प्यारे, मैं तुम्हारी दुश्मन नहीं बनना चाहती, तुम्हारे लिए धीरे-धीरे और बहुत जल्द अजनबी बन जाना ही काफी बुरा होगा; और इसलिए, क्योंकि मैंने पूरी तरह से मन बना लिया है, तुम्हें ये पत्र भेजने से पहले... फ्रांस्वा, मैं उससे अपने बक्से देने के लिए कह दूँगा। अलविदा: मैं अपने भीतर का सबसे अच्छा हिस्सा तुम्हारे साथ छोड़ रहा हूँ।
"अल्बर्टाइन।"
मैंने मन ही मन कहा, "इन सब बातों का कोई मतलब नहीं है। ये तो मेरी सोच से भी बेहतर है, क्योंकि उसकी कही हुई बातों का कोई मतलब नहीं है। उसने ये चिट्ठी सिर्फ़ मुझे ज़बरदस्त झटका देने के लिए लिखी है, ताकि मैं डर जाऊं और दोबारा उसके साथ बुरा बर्ताव न करूं। मुझे तुरंत कोई इंतज़ाम करना होगा: अल्बर्टीन को आज शाम वापस लाना होगा। ये सोचकर दुख होता है कि बोंटेम्प्स भी ब्लैकमेलर से कम नहीं हैं, जो अपनी भतीजी का इस्तेमाल मुझसे पैसे ऐंठते हैं। लेकिन इससे क्या फ़र्क पड़ता है? अगर अल्बर्टीन को आज शाम वापस लाने के लिए मुझे अपनी आधी दौलत मैडम बोंटेम्प्स को देनी भी पड़े, तो भी अल्बर्टीन और मेरे पास आराम से रहने के लिए काफ़ी पैसे बचेंगे।" और उसी समय, मैंने हिसाब लगाया कि क्या मेरे पास आज सुबह जाकर वो यॉट और रोल्स-रॉयस मंगवाने का समय है, जिसकी वो ख्वाहिश रखती थी। अब जब मेरी सारी झिझक दूर हो चुकी थी, मैं ये भूल चुका था कि मैंने उसे ये देना नासमझी होगी। "भले ही श्रीमती बोंटेम्प्स का समर्थन पर्याप्त न हो, अगर अल्बर्टीन अपनी चाची की बात मानने से इनकार कर दे और मेरे पास लौटने की शर्त यह रखे कि उसे पूरी आज़ादी चाहिए, तो चाहे मुझे कितना भी दुख हो, मैं उसे अकेला छोड़ दूँगा; वह जब

चाहे अकेले बाहर जा सकती है। बलिदान देने के लिए तैयार रहना चाहिए, चाहे वे कितने भी कष्टदायक क्यों न हों, उस चीज़ के लिए जिसे हम सबसे ज़्यादा महत्व देते हैं, और वह यह है कि आज सुबह मैंने जो भी फैसला किया, अपने विवेकपूर्ण और बेतुके तर्कों के बल पर, अल्बर्टीन यहीं रहेगी।" क्या मैं यह कह सकता हूँ कि उसे अपनी मर्ज़ी से कहीं भी जाने की आज़ादी देना मेरे लिए बहुत कष्टदायक होता? मैं झूठ बोल रहा हूँगा। अक्सर मुझे ऐसा लगता था कि मेरी नज़रों से दूर उसे अनुचित व्यवहार करने की आज़ादी देने का दुख शायद उस तरह के दुख से भी कम था जो मुझे तब होता था जब मुझे लगता था कि वह मेरे घर में, मेरी संगति में ऊब रही है। इसमें कोई शक नहीं कि जब उसने मुझसे कहीं जाने की इजाज़त मांगी, तो उसे जाने देना, खासकर किसी सुनियोजित अय्याशी के इरादे से, मेरे लिए एक भयानक यातना होती। लेकिन उससे यह कहना कि: "हमारी नौका या ट्रेन लो, एक महीने के लिए कहीं ऐसी जगह चले जाओ जिसे मैंने कभी नहीं देखा हो, जहाँ मुझे तुम्हारे कामों के बारे में कुछ भी पता न हो,"—यह बात मुझे अक्सर अच्छी लगती थी, क्योंकि मुझे लगता था कि जब वह मुझसे दूर होगी, तो वह मेरी संगति को ज़्यादा पसंद करेगी और वापस आने में उसे खुशी होगी। "यह वापसी तो वही है जो वह खुद चाहती है; वह उस आज़ादी पर ज़रा भी ज़ोर नहीं देती जिस पर, उसे हर दिन कोई नया सुख देकर, मैं आसानी से दिन-ब-दिन और पाबंदी लगा सकता हूँ। नहीं, अल्बर्टीन बस यही चाहती है कि मैं अब उसके लिए अप्रिय न बनूँ, और सबसे बढ़कर—जैसे ओडेट ने स्वान के साथ किया था—कि मैं उससे शादी करने का फैसला कर लूँ। एक बार उसकी शादी हो जाए, तो उसकी आज़ादी का कोई मतलब नहीं रह जाएगा; हम यहाँ साथ रहेंगे, पूरी खुशी से।" निःसंदेह इसका अर्थ वेनिस के बारे में किसी भी विचार को त्याग देना था। लेकिन जिन

किसी मजिस्ट्रेट की जाँच या किसी इतिहासकार द्वारा किसी अपराध या क्रांति के रहस्य पर किए गए शोध। यह वास्तविकता मेरी दूसरी परिकल्पना की सीमित अपेक्षाओं से कहीं अधिक व्यापक थी, फिर भी उसने उन्हें पूरा किया। यह दूसरी परिकल्पना कोई बौद्धिक उपलब्धि नहीं थी, और जिस शाम अल्बर्टीन ने मुझे चूमने से इनकार कर दिया था, जिस रात मैंने उसकी खिड़की खुलने की आवाज़ सुनी थी, उस शाम मेरे मन में जो भय और घबराहट थी, वह तर्क पर आधारित नहीं थी। लेकिन—और आगे की घटनाओं से यह और स्पष्ट हो जाएगा, जैसा कि कई घटनाओं से पहले ही स्पष्ट हो चुका है—यह तथ्य कि हमारी बुद्धि सत्य को समझने का सबसे सूक्ष्म, सबसे शक्तिशाली या सबसे उपयुक्त साधन नहीं है, यही कारण है कि हमें बुद्धि से शुरुआत करनी चाहिए, न कि अवचेतन अंतर्ज्ञान या पूर्वाभास में निहित विश्वास से। जीवन ही हमें धीरे-धीरे, एक-एक करके यह देखने में सक्षम बनाता है कि हमारे हृदय या मन के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है, यह तर्क से नहीं बल्कि अन्य शक्तियों से सीखा जाता है। और फिर स्वयं बुद्धि ही, उनकी श्रेष्ठता को पहचानते हुए, तर्कसंगत आधार पर उनके सामने अपना प्रभुत्व त्याग देती है और उनकी सहयोगी और सेवक बनने के लिए सहमत हो जाती है। यह अनुभव द्वारा पुष्ट विश्वास है। जिस अप्रत्याशित विपत्ति में मैं उलझ गया था, मुझे ऐसा लगा मानो मैं उसे पहले से ही जानता था (जैसे मैं अल्बर्टीन की दो समलैंगिक महिलाओं के साथ मित्रता के बारे में जानता था), क्योंकि मैंने इसे कई संकेतों में पढ़ा था जिनमें (अल्बर्टीन के अपने कथनों पर आधारित मेरे तर्क के विपरीत कथनों के बावजूद) मैंने उस गुलामी की स्थिति में रहने के कारण उसकी थकान, उसके भय को महसूस किया था, जो उसकी उदास, विनम्र आँखों के पीछे अदृश्य स्याही से अंकित थे, उसके गालों पर अचानक

कहने का साहस किया कि, अगर मुझे इस जाने का पूर्वाभास होता, तो शायद मैं इसे इसकी पूरी भयावहता के साथ अपने सामने चित्रित करने में असमर्थ होती, या वास्तव में, अल्बर्टाइन द्वारा मुझे इसकी सूचना देने और मेरे द्वारा उसे इसे रोकने की धमकी देने, उससे विनती करने की स्थिति में! वेनिस के लिए कोई भी लालसा अब मुझसे कितनी दूर हो गई थी! कॉम्ब्रे में पुराने दिनों में, श्रीमती डी गुएरमांटेस को जानने की जो लालसा थी, वही वह समय भी था जब मेरी एकमात्र इच्छा यही थी कि माँ मेरे कमरे में हों। और वास्तव में ये वे सभी चिंताएँ थीं जो मैंने अपने बचपन से महसूस की थीं, जो इस नए दुख के कारण, इसे और भी मजबूत करने के लिए तेजी से आ गईं, इसके साथ मिलकर एक समरूप समूह बना लिया जो मुझे घुटन महसूस करा रहा था। निश्चित रूप से, इस तरह के बिछड़ने से हृदय पर जो शारीरिक आघात लगता है, और जो शरीर की चीजों को महसूस करने की उस भयानक क्षमता के कारण, हमारे दुख को किसी न किसी रूप में हमारे जीवन के उन सभी युगों के साथ समकालीन बना देता है जिनमें हमने दुख झेला है; निश्चित रूप से, यह हृदय पर गहरा प्रहार है, जिस पर वह स्त्री शायद थोड़ा सोचती है—हम दूसरों के कष्टों के प्रति कितनी कम सहानुभूति दिखाते हैं—वह पश्चाताप को चरम सीमा तक पहुँचाने के लिए उत्सुक है, चाहे वह केवल एक काल्पनिक विदाई का संकेत देकर बेहतर शर्तों की माँग कर रही हो, या हमें हमेशा के लिए छोड़कर—हमेशा के लिए!—वह हमें चोट पहुँचाना चाहती हो, या बदला लेने के लिए, या प्रेम पाने के लिए, या अपने पीछे छोड़ी गई स्मृति को संजोने के लिए, अपने चारों ओर बुने गए थकान और उदासीनता के जाल को चीरने के लिए—निश्चित रूप से, यह हृदय पर गहरा प्रहार है, हमने कसम खाई थी कि हम इससे बचेंगे, हमने खुद को आश्वस्त किया था कि हम एक अच्छा अंत करेंगे। लेकिन वास्तव में

ऐसा बहुत कम होता है कि हम अच्छा अंत करें, क्योंकि यदि सब कुछ ठीक होता, तो हम कभी अंत ही नहीं करते! और इसके अलावा, जिस स्त्री के प्रति हम घोर उदासीनता दिखाते हैं, वह फिर भी अस्पष्ट रूप से यह महसूस करती है कि जहाँ हम उससे ऊबते जा रहे हैं, वहीं आदत के बल पर हम उससे और अधिक जुड़ते जा रहे हैं, और वह सोचती है कि किसी भी रिश्ते के अच्छे अंत का एक आवश्यक तत्व यह है कि जाने से पहले दूसरे व्यक्ति को आगाह कर दिया जाए। लेकिन उसे डर है कि अगर वह हमें आगाह करेगी, तो उसका अपना जाना रुक जाएगा। हर स्त्री को लगता है कि अगर किसी पुरुष पर उसका प्रभाव बहुत अधिक है, तो उसे छोड़ने का एकमात्र तरीका अचानक भाग जाना है। एक भगोड़ा, क्योंकि वह रानी है, ठीक है। निश्चित रूप से, उस ऊब के बीच एक अकथनीय अंतराल होता है जो उसने कुछ क्षण पहले पैदा की थी और उसके जाने के बाद, उसे वापस पाने की इस तीव्र इच्छा के बीच। लेकिन इसके लिए, इस कार्य के दौरान दिए गए और बाद में दिए जाने वाले अन्य कारणों के अलावा, कुछ कारण हैं। एक तो यह कि उसका जाना अक्सर उस समय होता है जब हमारी उदासीनता—वास्तविक या काल्पनिक — सबसे अधिक होती है, पेंडुलम के दोलन के चरम बिंदु पर। स्त्री मन ही मन कहती है: "नहीं, अब यह सब और नहीं चल सकता," क्योंकि पुरुष उसे छोड़ने के सिवा कुछ नहीं कहता, या उसके बारे में कुछ और सोचता ही नहीं; और वही उसे छोड़कर चली जाती है। फिर, पलड़ा अपने दूसरे छोर पर लौट आता है, और अंतराल और भी लंबा हो जाता है। पल भर में यह इस बिंदु पर लौट आता है; एक बार फिर, दिए गए सभी कारणों से परे, यह इतना स्वाभाविक लगता है। हमारा दिल अब भी धड़कता है; और इसके अलावा, जो स्त्री चली गई है, वह अब वैसी नहीं रही जैसी वह हमारे साथ थी। हमारे घर में उसका जाना-पहचाना जीवन, अचानक उन लोगों के जीवन से जुड़ जाता है जिनसे उसका अनिवार्य

रूप से संबंध होना तय है, और शायद उन्हीं से जुड़ने के लिए वह हमें छोड़कर चली गई है। इस प्रकार, जो स्त्री चली गई है, उसके जीवन की यह नई समृद्धि उस स्त्री पर प्रभाव डालती है जो हमारे साथ थी और शायद अपने जाने की योजना बना रही थी। मनोवैज्ञानिक तथ्यों की उस श्रृंखला के संदर्भ में, जिन्हें हम समझ सकते हैं और जो हमारे साथ उसके जीवन का हिस्सा हैं, उसकी संगति में हमारी स्पष्ट ऊब, हमारी ईर्ष्या भी (जिसका प्रभाव यह है कि कई महिलाओं द्वारा छोड़े गए पुरुषों को लगभग हमेशा एक ही तरीके से छोड़ा गया है, उनके स्वभाव और कुछ निश्चित, हमेशा एक जैसी प्रतिक्रियाओं के कारण: हर पुरुष के धोखा खाने का अपना तरीका होता है, जैसे उसे सर्दी लगने का अपना तरीका होता है), इस श्रृंखला के संदर्भ में, जो हमारे लिए बहुत रहस्यमय नहीं है, निस्संदेह ऐसे तथ्यों की एक श्रृंखला भी है जिनसे हम अनभिज्ञ थे। वह कुछ समय से किसी पुरुष या स्त्री के साथ लिखित, मौखिक या संदेशवाहकों के माध्यम से संबंध बनाए हुए होगी, किसी संकेत की प्रतीक्षा कर रही होगी जो शायद हमने उसे अनजाने में ही दे दिया हो, जब हमने कहा: "X. कल मुझसे मिलने आया था," यदि उसने X. के साथ यह तय किया हो कि जिस दिन वह उससे मिलने वाली थी, उससे एक दिन पहले वह मुझसे मिलने आएगा। कितनी ही संभावित परिकल्पनाएँ! केवल संभव ही। मैंने सच्चाई को इतनी अच्छी तरह गढ़ा, हालाँकि केवल संभावना के दायरे में ही, कि एक दिन गलती से मैंने अपनी प्रेमिका को संबोधित एक पत्र खोला, जो एक सांकेतिक भाषा में लिखा था और जिसमें लिखा था: "मार्क्विस डी सेंट-लूप के पास जाने के लिए संकेत की प्रतीक्षा करते रहो; मुझे कल फोन पर बता देना।" इस पत्र से मैंने एक प्रकार की योजनाबद्ध उड़ान की कल्पना की; मार्क्विस डी सेंट-लूप का नाम वहाँ किसी अन्य नाम के स्थान पर

था, क्योंकि मेरी प्रेमिका सेंट-लूप को अच्छी तरह नहीं जानती थी, लेकिन उसने मुझे उनके बारे में बात करते सुना था, और इसके अलावा हस्ताक्षर एक प्रकार का उपनाम था, जिसका कोई स्पष्ट रूप नहीं था। संयोग से, पत्र मेरी प्रेमिका को नहीं बल्कि इमारत में रहने वाले किसी अन्य व्यक्ति को संबोधित था जिसका नाम गलत पढ़ा गया था। पत्र सांकेतिक भाषा में नहीं, बल्कि टूटी-फूटी फ्रेंच में लिखा था, क्योंकि इसे एक अमेरिकी महिला ने लिखा था, जो वास्तव में सेंट-लूप की मित्र थी, जैसा कि उन्होंने स्वयं मुझे बताया था। और जिस विचित्र तरीके से उस अमेरिकी महिला ने कुछ पत्र लिखे थे, उससे एक ऐसे नाम को उपनाम का आभास हो गया था जो पूरी तरह से वास्तविक था, बस विदेशी था। इसलिए उस समय मेरे संदेह पूरी तरह से गलत थे। लेकिन मेरे मन में इन तथ्यों (जो सभी झूठे थे) को मिलाकर जो बौद्धिक संरचना बनी थी, वह स्वयं इतनी सटीक, इतनी अटल थी कि जब तीन महीने बाद मेरी प्रेमिका, जो उस समय मेरे साथ अपना शेष जीवन बिताने का इरादा रखती थी, मुझे छोड़कर चली गई, तो उसका व्यवहार बिल्कुल वैसा ही था जैसा मैंने पहले वाले मौके पर कल्पना की थी। एक पत्र आया, जिसमें वही विचित्रताएं थीं जिन्हें मैंने गलती से पहले वाले पत्र से जोड़ दिया था, लेकिन इस बार यह वास्तव में एक संकेत था।
यह विपत्ति मेरे जीवन की सबसे बड़ी विपत्ति थी। और अंततः, इस विपत्ति से मुझे जो पीड़ा हुई, उससे कहीं अधिक मेरी जिज्ञासा थी कि अल्बर्टीन ने जानबूझकर जो विपत्ति उत्पन्न की थी, उसके कारण क्या थे। परन्तु महान घटनाओं के स्रोत नदियों के समान होते हैं; पृथ्वी की सतह को खोजना व्यर्थ है, हम उन्हें कभी नहीं पा सकते। इसलिए अल्बर्टीन बहुत समय से भागने की योजना बना रही थी; मैंने कहा था (और उस समय मुझे यह केवल दिखावा और चिड़चिड़ापन का संकेत

नहीं चला कि वह मुझे छोड़कर जा रही है! क्योंकि उसने मुझे नाराज़गी से नहीं छोड़ा, बल्कि उसने पहले से ही ठान लिया था कि वह मुझे छोड़ देगी, उस जीवन को त्याग देगी जिसका उसने सपना देखा था, और इसी वजह से उसके चेहरे पर नाराज़गी का भाव था। एक नाराज़गी भरा भाव, लगभग गंभीर रूप से ठंडा, सिवाय उस आखिरी शाम के जब, मेरे कमरे में तय समय से ज़्यादा रुकने के बाद, उसने मुझसे कहा—एक ऐसी बात जिसने मुझे चौंका दिया, क्योंकि वह हमेशा बिछड़ने के पल को टालने की कोशिश करती थी—उसने दरवाज़े से मुझसे कहा: "अलविदा, मेरे प्रिय; अलविदा, मेरे प्रिय।" लेकिन उस समय मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया। फ्रांस्वा ने मुझे बताया कि अगली सुबह जब अल्बर्टीन ने उसे बताया कि वह जा रही है (वैसे, इसकी वजह थकान भी हो सकती है क्योंकि उसने पूरी रात अपने सारे कपड़े पैक करने में बिताई थी, सिवाय उन चीज़ों के जो उसे फ्रांस्वा से माँगनी पड़ीं क्योंकि वे उसके बेडरूम या ड्रेसिंग रूम में नहीं थीं), तो वह अब भी इतनी उदास, इतनी सीधी और इतनी अकड़ी हुई थी कि जब अल्बर्टीन ने उससे कहा: "अलविदा, फ्रांस्वा," तो फ्रांस्वा को लगभग लगा कि वह ज़मीन पर गिर पड़ेगी। जब हमें ऐसी कोई बात बताई जाती है, तो हमें एहसास होता है कि वह औरत जो हमें उन औरतों से कहीं कम आकर्षित करती थी जिनसे हम छोटी-छोटी मुलाकातों में आसानी से मिल जाते हैं, वह औरत जिसके लिए हमें खुद को कुर्बान करने का पछतावा होता है, वही औरत है जिसे हम अब हज़ार गुना ज़्यादा पाना चाहेंगे। अब चुनाव किसी एक विशेष सुख के बीच नहीं है—जो आदत के बल पर, और शायद उसके उद्देश्य की तुच्छता के कारण, लगभग नगण्य हो गया है—और अन्य सुखों के बीच नहीं है, जो हमें लुभाते और रोमांचित करते हैं,

बल्कि इन बाद वाले सुखों और उनसे कहीं अधिक शक्तिशाली किसी चीज, यानी पीड़ा के प्रति करुणा के बीच है।
जब मैंने खुद से वादा किया कि अल्बर्टीन रात से पहले घर लौट आएगी, तो मैंने उस खुले घाव को नए विश्वास से भरने की हड़बड़ी में कोशिश की, जिससे मेरा अब तक का सहारा बना विश्वास टूट गया था। लेकिन आत्मरक्षा की मेरी सहज प्रवृत्ति चाहे कितनी भी तेज़ी से काम करती, जब फ्रांस्वा ने मुझसे बात की, तो मैं एक पल के लिए बेबस रह गई, और अब यह जानना भी बेकार था कि अल्बर्टीन उसी शाम लौट आएगी। जिस पल मुझे उसके लौटने का आश्वासन नहीं मिला था (वह पल जब मैंने ये शब्द कहे थे: "मैडम अल्बर्टीन ने अपने बक्से मांगे हैं, मैडम अल्बर्टीन चली गई हैं"), वह दर्द अपने आप ही फिर से उतना ही तीव्र हो गया, मानो मुझे अल्बर्टीन के तुरंत लौटने का पता ही न हो। हालांकि, उसका लौटना ज़रूरी था, लेकिन अपनी मर्ज़ी से। हर लिहाज़ से, पहला कदम उठाने का दिखावा करना, उससे लौटने की भीख मांगना, मेरे अपने उद्देश्य को विफल करना होता। सच कहूँ तो, मुझमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि मैं उसे वैसे ही छोड़ सकूँ जैसे मैंने गिल्बर्टी को छोड़ा था। अल्बर्टीन को फिर से देखने से भी ज़्यादा, मेरी इच्छा थी उस शारीरिक पीड़ा को समाप्त करने की जिसे मेरा हृदय, जो पहले की तुलना में कमज़ोर हो चुका था, अब और सहन नहीं कर सकता था। फिर, काम या किसी और चीज़ की इच्छा न करने की आदत के कारण, मैं और भी कायर हो गया था। लेकिन सबसे बढ़कर, यह पीड़ा कई कारणों से कहीं अधिक तीव्र थी, जिनमें से सबसे महत्वपूर्ण शायद यह नहीं था कि मैंने श्रीमती डी गुएरमांटेस या गिल्बर्टी के साथ कभी कोई कामुक सुख नहीं चखा था, बल्कि यह था कि उन्हें हर दिन, हर समय न देखने, उन्हें देखने का कोई अवसर न होने और परिणामस्वरूप उन्हें देखने की कोई आवश्यकता

न होने के कारण, उनके प्रति मेरे प्रेम में आदत का प्रभाव कम हो गया था। शायद अब, जब मेरा हृदय, अपनी इच्छा से उस पीड़ा को सहन करने और उसकी कामना करने में असमर्थ था, तो उसे केवल एक ही समाधान दिखाई दिया - कि अल्बर्टीन हर हाल में वापस आ जाए। शायद इसके विपरीत समाधान (जानबूझकर त्याग, धीरे-धीरे समर्पण) मुझे किसी उपन्यासकार का समाधान लगता, वास्तविक जीवन में असंभव, यदि मैंने गिलबर्ट के मामले में अतीत में स्वयं यह निर्णय न लिया होता। इसलिए मैं जानता था कि यह दूसरा समाधान भी स्वीकार किया जा सकता है, और वही व्यक्ति इसे स्वीकार कर सकता है, क्योंकि मैं कमोबेश वैसा ही रहा था। केवल समय ने अपना काम किया था, समय जिसने मुझे बूढ़ा बना दिया था, समय जिसने हमारे साथ रहते हुए अल्बर्टीन को हमेशा मेरे साथ रखा था। लेकिन मुझे यह भी कहना होगा कि उस जीवन के विचार को छोड़े बिना, गिलबर्ट के प्रति मेरे मन में जो भी भावनाएँ थीं, उनमें से वह गर्व अभी भी शेष था जिसने मुझे अल्बर्टीन के लिए एक घृणित खिलौना बनने से रोक दिया, उसकी वापसी पर जोर देकर; मैं चाहता था कि वह वापस आ जाए, बिना यह जताए कि उसकी वापसी मेरे लिए कोई मायने रखती है। मैंने समय बर्बाद न करने के लिए बिस्तर से उठने की कोशिश की, लेकिन अपनी पीड़ा के कारण रुक गई; अल्बर्टीन के जाने के बाद यह पहली बार था जब मैं बिस्तर से उठी थी। फिर भी मुझे तुरंत कपड़े पहनने होंगे ताकि मैं जाकर उसके सहायक से पूछताछ कर सकूँ।
पीड़ा, बाहरी आघात से उत्पन्न आध्यात्मिक आघात का विस्तार, अपना रूप बदलने का प्रयास करती रहती है; हम योजनाएँ बनाकर, जानकारी जुटाकर इसे दूर करने की आशा करते हैं; हम चाहते हैं कि यह अपने अनगिनत रूपांतरणों से गुज़र जाए, इसके लिए अपनी पीड़ा को बरकरार रखने से कम साहस की आवश्यकता होती है; वह बिस्तर बहुत

संकरा, कठोर और ठंडा प्रतीत होता है जिस पर हम अपने शोक के साथ लेटते हैं। मैंने अपने पैर ज़मीन पर रखे; मैंने कमरे में बहुत सावधानी से कदम रखा, एक ऐसी जगह पर खड़ा हुआ जहाँ से मैं अल्बर्टीन की कुर्सी, पियानोला जिसके पैडल पर वह अपनी सुनहरी चप्पलें दबाया करती थी, और उसकी इस्तेमाल की हुई कोई भी चीज़ न देख सकूँ, और वे सभी चीज़ें, मेरी स्मृति द्वारा प्रदत्त गुप्त भाषा में, मुझे एक नया अनुवाद, एक अलग संस्करण देने की कोशिश कर रही थीं, मुझे दूसरी बार उसके जाने का समाचार सुनाने की कोशिश कर रही थीं। लेकिन उन्हें देखे बिना भी मैं उन्हें देख सकती थी, मेरी सारी शक्ति क्षीण हो गई, मैं उन नीले साटन की कुर्सियों में से एक पर बैठ गई, जिनकी चमकदार सतह ने एक घंटे पहले, मेरे शयनकक्ष के धुंधलेपन में, सुबह की रोशनी की एक किरण से बेसुध होकर, मुझे ऐसे सपने दिखाए थे जिन्हें मैंने तब बड़े प्यार से संजोया था, जो अब मुझसे बहुत दूर थे। अफसोस, इस क्षण तक मैं उनमें से किसी पर भी नहीं बैठी थी, सिवाय तब जब अल्बर्टीन मेरे साथ थी। और इसलिए मैं वहां बैठी नहीं रह सकी, मैं उठ गई; और इस प्रकार, हर क्षण हमारे व्यक्तित्व का निर्माण करने वाले उन असंख्य और विनम्र 'स्व' में से एक और 'स्व' प्रकट हो रहा था जो अभी भी अल्बर्टीन के जाने से अनजान था और जिसे इसकी सूचना दी जानी थी; मुझे मजबूर होना पड़ा—और यह उससे भी ज़्यादा क्रूर था अगर वे अजनबी होते और मेरी पीड़ा सहने की क्षमता को न समझते—कि मैं उन सभी 'स्वरूपों' को, जो अभी तक इससे अनजान थे, उस विपत्ति का वर्णन करूँ जो अभी घटी थी। यह आवश्यक था कि उनमें से प्रत्येक बारी-बारी से पहली बार ये शब्द सुने: "अल्बर्टीन ने अपने बक्से मंगवाए हैं"—वे ताबूत के आकार के बक्से जिन्हें मैंने बालबेक में अपनी माँ के बक्सों के साथ ट्रेन में रखते देखा था

— "अल्बर्टीन चली गई हैं।" मुझे उनमें से प्रत्येक को अपना दुःख बताना पड़ा, वह दुःख जो किसी भी तरह से अनेक दुखद परिस्थितियों से निकाला गया निराशावादी निष्कर्ष नहीं है, बल्कि एक विशिष्ट अनुभूति का रुक-रुक कर और अनैच्छिक पुनरुत्थान है, जो हमें बाहर से प्राप्त होती है और जिसे हम नहीं चुनते। इनमें से कुछ 'स्वरूप' ऐसे थे जिनसे मैं लंबे समय से नहीं मिला था। उदाहरण के लिए (मुझे याद नहीं था कि यह वही दिन था जब नाई आया था) वह 'स्वरूप' जो मैं बाल कटवाते समय था। मैं अपने इस 'स्व' को भूल चुका था। नाई के आने पर मैं फूट-फूट कर रोने लगा, ठीक वैसे ही जैसे किसी अंतिम संस्कार में किसी बूढ़े सेवानिवृत्त नौकर के आने पर होता है, जो मृतक को नहीं भूला होता। तभी अचानक मुझे याद आया कि पिछले एक हफ्ते में मुझे समय-समय पर ऐसे डर सताते रहे थे जिन्हें मैंने खुद से कभी स्वीकार नहीं किया था। ऐसे क्षणों में, मैं इस सवाल पर विचार करता था और खुद से कहता था: "बेशक, उसके अचानक मुझे छोड़कर चले जाने की संभावना पर विचार करना व्यर्थ है। यह बेतुका है। अगर मैं किसी समझदार, बुद्धिमान व्यक्ति को यह बात बताऊँ" (और मन की शांति के लिए मैं ऐसा कर भी देता, अगर ईर्ष्या ने मुझे विश्वास करने से न रोका होता) "तो वह मुझसे ज़रूर कहेगा: 'अरे, तुम पागल हो। यह असंभव है।' और, सच तो यह है कि पिछले कुछ दिनों में हमारा एक बार भी झगड़ा नहीं हुआ। लोग किसी कारण से अलग होते हैं। वे आपको अपना कारण बताते हैं। वे आपको जवाब देने का मौका देते हैं। वे ऐसे ही भाग नहीं जाते। नहीं, यह पूरी तरह बचकाना है। यही एकमात्र बेतुकी संभावना है।" फिर भी, हर दिन, जब मैं सुबह घंटी बजाकर देखता कि वह अभी भी वहीं है, तो मैं चैन की साँस लेता था। और जब फ्रांस्वा ने मुझे अल्बर्टीन का पत्र दिया, तो मुझे तुरंत यकीन हो गया कि यह उस एक

प्राप्त किया था। यही अनजान तत्व मेरे प्रेम का मूल आधार बना। अल्बर्टीन के घर के बाहर मुझे एक छोटी सी गरीब बच्ची मिली, जो आँखें फाड़कर मुझे देख रही थी और इतनी भोली लग रही थी कि मैंने उससे पूछा कि क्या वह मेरे साथ घर चलना चाहेगी, जैसे मैं किसी वफादार कुत्ते को घर ले आती हूँ। उसे मेरा सुझाव अच्छा लगा। घर पहुँचकर मैंने उसे कुछ देर अपनी गोद में बिठाए रखा, लेकिन जल्द ही उसकी मौजूदगी ने मुझे अल्बर्टीन की गैरमौजूदगी का इतना गहरा एहसास कराया कि यह असहनीय हो गया। मैंने उसे जाने के लिए कहा और पहले उसे पाँच सौ फ्रैंक का नोट दिया। फिर भी, एक पल बाद, घर में किसी और छोटी बच्ची के होने का, कभी अकेले न रहने का, एक मासूम मौजूदगी के सुकून के बिना न रहने का ख्याल ही मुझे यह सहन करने की हिम्मत दे रहा था कि अल्बर्टीन शायद कुछ समय के लिए दूर रहेगी और फिर वापस आएगी। जहाँ तक अल्बर्टीन की बात है, वह मेरे भीतर लगभग नाम के अलावा और किसी रूप में मौजूद नहीं थी, जो जागने पर मिलने वाले कुछ दुर्लभ पलों को छोड़कर, मेरे दिमाग में बस जाता था और लगातार बना रहता था। अगर मैं ज़ोर से सोचता, तो मैं इसे बार-बार दोहराता रहता, और मेरी वाणी इतनी नीरस, इतनी सीमित हो जाती मानो मैं एक पक्षी में बदल गया होता, उस कथा के पक्षी की तरह जिसका गीत लगातार उस स्त्री का नाम दोहराता रहता था जिसे उसने पुरुष होने पर प्यार किया था। हम मन ही मन उस नाम को दोहराते हैं, और जब हम चुप रहते हैं तो ऐसा लगता है मानो हमने उसे अपने ऊपर अंकित कर लिया हो, मानो उसने हमारे मस्तिष्क पर अपनी छाप छोड़ दी हो, जो अंततः उस नाम से पूरी तरह ढक जाता है, जिस पर किसी ने कुछ भी लिखकर अपना मनोरंजन किया हो, उस स्त्री के नाम से जिसे हम प्यार करते हैं, हज़ार बार लिखा हुआ। हम इसे हर समय अपने मन में दोहराते रहते हैं, खुश होने पर भी, और दुखी होने

थे जिसमें फ्रांस्वा ने मुझे नहलाया था जब उसने कहा था: "मैडम अल्बर्टीन चली गई हैं।"
पाठक को शायद याद होगा कि जब मैंने अल्बर्टीन के साथ रहने और यहाँ तक कि उससे शादी करने का फैसला किया था, तो उसका मकसद उसकी रक्षा करना, उसकी गतिविधियों पर नज़र रखना और उसे मैडम विंटेइल के साथ अपनी पुरानी आदतों में लौटने से रोकना था। बालबेक में उसके खुलासे से हुए भयानक दुख में, उसने मुझे यह बात ऐसे बताई थी जैसे यह बिल्कुल स्वाभाविक हो, और मैं, हालाँकि यह मेरे जीवन का सबसे बड़ा दुख था, उस बात को स्वाभाविक समझने में कामयाब रहा, जिसकी कल्पना करने की हिम्मत मैंने अपने सबसे बुरे अनुमानों में भी कभी नहीं की थी। (यह आश्चर्यजनक है कि ईर्ष्या, जो असत्य की छोटी-छोटी धारणाएँ गढ़ने में अपना समय व्यतीत करती है, सत्य का पता लगाने के समय कल्पना की कितनी कमी दिखाती है।) अब यह प्रेम, जो सबसे पहले अल्बर्टीन को गलत काम करने से रोकने की ज़रूरत से पैदा हुआ था, इस प्रेम ने बाद में भी अपनी उत्पत्ति के निशान बरकरार रखे। उसके साथ रहना मेरे लिए तब तक कोई मायने नहीं रखता था जब तक मैं उसे "भागने" से, इधर-उधर जाने से रोक सकता था। उसे रोकने के लिए, मैंने सतर्कता का सहारा लिया था, उन लोगों की संगति का सहारा लिया था जो उसके साथ घूमते थे, और दिन के अंत में उन्होंने मुझे जो रिपोर्ट दी, वह काफी हद तक आश्वस्त करने वाली थी, जिससे मेरी चिंताएं अच्छे मूड में गायब हो गईं।
मैंने खुद को यह भरोसा दिला दिया था कि चाहे मुझे कोई भी कदम उठाना पड़े, अल्बर्टीन उसी शाम घर लौट आएगी। इस तरह मैंने उस दुःख को कुछ देर के लिए शांत किया जो फ्रांस्वा ने मुझे अल्बर्टीन के चले जाने की खबर देकर दिया था (क्योंकि उस क्षण मेरा मन सदमे में था और एक पल के लिए मुझे लगा कि उसका जाना

है। मानव द्वारा की जाने वाली वह साहित्यिक चोरी जिससे बचना सबसे कठिन है, व्यक्तियों के लिए (और यहां तक कि उन राष्ट्रों के लिए भी जो अपनी गलतियों में लगे रहते हैं और उन्हें बढ़ाते रहते हैं), वह है स्वयं की साहित्यिक चोरी।
मुझे पता था कि सेंट-लूप पेरिस में है, इसलिए मैंने उसे तुरंत बुलवाया। वह मेरी मदद के लिए तुरंत आया, ठीक वैसे ही फुर्तीला और कुशल जैसे वह बहुत पहले डोंसिएरेस में था, और तुरंत टूरेन के लिए रवाना होने को तैयार हो गया। मैंने उसे निम्नलिखित व्यवस्था का सुझाव दिया। उसे चैटेलराउल्ट के लिए ट्रेन लेनी थी, पता लगाना था कि श्रीमती बोंटेम्प्स कहाँ रहती हैं, और तब तक इंतजार करना था जब तक अल्बर्टीन घर से बाहर न निकल जाए, क्योंकि उसके द्वारा उसे पहचान लिए जाने का खतरा था। "लेकिन क्या वह लड़की जिसकी आप बात कर रहे हैं, मुझे जानती है?" उसने पूछा। मैंने उसे बताया कि मुझे ऐसा नहीं लगता। इस योजना ने मुझे अवर्णनीय खुशी से भर दिया। फिर भी, यह मेरे मूल इरादे के बिल्कुल विपरीत थी: चीजों को इस तरह व्यवस्थित करना कि ऐसा न लगे कि मैं अल्बर्टीन की वापसी की कोशिश कर रहा हूँ; जबकि ऐसा करने से मैं निश्चित रूप से उसकी वापसी की कोशिश करता हुआ प्रतीत होऊंगा, लेकिन इस योजना का 'सही काम' से कहीं अधिक लाभ यह था कि इसने मुझे यह कहने में सक्षम बनाया कि मेरे द्वारा भेजा गया कोई व्यक्ति अल्बर्टीन से मिलने जा रहा है, और निस्संदेह उसे अपने साथ वापस ले आएगा। और अगर मैं शुरुआत में ही अपने मन की बात समझ पाती, तो शायद मैं यह समझ जाती कि अंधेरे में छिपा हुआ यही समाधान, जिसे मैं बेहद दुखद समझ रही थी, अंततः उस धैर्य के विकल्प पर हावी हो जाएगा जिसे मैंने इच्छाशक्ति की कमी के कारण चुना था। सेंट-लूप को यह जानकर थोड़ी हैरानी हुई कि एक लड़की

पूरी सर्दी मेरे साथ रही और मैंने उसके बारे में उसे एक शब्द भी नहीं बताया, और उसने मुझसे अक्सर बालबेक में रहने वाली लड़की के बारे में बात की थी और मैंने कभी जवाब में यह नहीं कहा था: "लेकिन वह तो यहाँ रह रही है," तो शायद वह मेरे भरोसे की कमी से नाराज़ हो। मैडम बोंटेम्प्स द्वारा बालबेक का ज़िक्र उससे करने का भी खतरा था। लेकिन मैं उसके जाने और दूसरे छोर पर पहुँचने के लिए इतनी बेचैन थी कि उसकी यात्रा के संभावित परिणामों के बारे में सोचने की भी हिम्मत नहीं थी। जहां तक अल्बर्टीन को पहचानने के जोखिम की बात है (जिसकी ओर उन्होंने डोनसिएरेस में उससे मिलने पर देखने से पूरी तरह परहेज किया था), जैसा कि सभी मानते थे, वह इतनी बदल गई थी और इतनी मोटी हो गई थी कि इसकी संभावना न के बराबर थी। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मेरे पास अल्बर्टीन की कोई तस्वीर है। मैंने पहले तो कहा कि मेरे पास नहीं है, ताकि बालबेक में हमारे ठहरने के दौरान ली गई उसकी तस्वीर से उन्हें अल्बर्टीन को पहचानने का मौका न मिले, हालांकि उन्होंने रेलवे के डिब्बे में उसे बस एक झलक ही देखा था। लेकिन फिर मुझे याद आया कि तस्वीर में वह बालबेक की अल्बर्टीन से उतनी ही अलग होंगी जितनी कि आज की जीवित अल्बर्टीन हैं, और वह उन्हें तस्वीर से भी उतना ही नहीं पहचान पाएंगे जितना कि असल में। जब मैं तस्वीर ढूंढ रही थी, तो उन्होंने मुझे सांत्वना देने के लिए धीरे से मेरे माथे पर हाथ रखा। मैं उस पीड़ा को महसूस कर पाई जो उनके अनुमान के अनुसार मेरे दुख से उन्हें भी हो रही थी। एक बात तो यह है कि राहेल से उनका अलगाव चाहे कितना भी अंतिम क्यों न रहा हो, उस समय उनके मन में जो भावनाएँ थीं, वे इतनी दूर नहीं थीं कि उनके मन में इस प्रकार के कष्ट के लिए विशेष सहानुभूति, विशेष दया न हो,

क्योंकि हम स्वयं को उस व्यक्ति के अधिक निकट पाते हैं जो हमारे समान ही पीड़ा से पीड़ित होता है। इसके अलावा, मेरे प्रति उनका स्नेह इतना प्रबल था कि मेरे कष्ट का विचार उनके लिए असहनीय था। और इसलिए, मेरे कष्ट का कारण बनने वाली राहेल के प्रति उनके मन में प्रशंसा के साथ-साथ द्वेष भी था। वे मुझे इतना श्रेष्ठ मानते थे कि उनका मानना था कि यदि मैं किसी अन्य व्यक्ति के अधीन होती, तो वह वास्तव में असाधारण ही होती। मुझे पूरी उम्मीद थी कि तस्वीर में अल्बर्टीन सुंदर लगेगी, लेकिन साथ ही मैंने यह कल्पना भी नहीं की थी कि इसका उस पर वैसा ही प्रभाव पड़ेगा जैसा हेलेन का ट्रोजन बुजुर्गों पर पड़ा था। इसलिए, तस्वीर ढूंढते हुए मैंने विनम्रता से कहा: "अरे! आप जानते हैं, आपको कल्पना नहीं करनी चाहिए, एक तो यह तस्वीर अच्छी नहीं है, और दूसरी बात, उसमें कुछ भी चौंकाने वाला नहीं है, वह सुंदर नहीं है, वह बस बहुत प्यारी है।" "अरे हाँ, वह अद्भुत होगी," उसने सरल, सच्चे उत्साह के साथ कहा, जैसे वह उस व्यक्ति की मानसिक छवि बनाने की कोशिश कर रहा हो जो मुझे इतनी निराशा और बेचैनी में डुबो सकता था। "मैं उससे नाराज़ हूँ क्योंकि उसने आपको दुख पहुँचाया है, लेकिन साथ ही यह भी स्पष्ट है कि आप जैसे कलाकार, जो हर चीज़ में सुंदरता से प्रेम करते हैं और इतने भावुक प्रेम से, जब आपको एक स्त्री में वह सुंदरता मिली तो आम आदमी से ज़्यादा दुख सहना ही था।" आखिरकार मुझे उसकी तस्वीर मिल गई। “वह ज़रूर अद्भुत होगी,” रॉबर्ट की आवाज़ गूंज रही थी, जिसने यह नहीं देखा था कि मैं उसे तस्वीर दिखा रहा हूँ। अचानक उसकी नज़र तस्वीर पर पड़ी, उसने उसे कुछ पल के लिए अपने हाथों में थामे रखा। उसके चेहरे पर हैरानी का भाव था, जो मूर्खता के समान था। “क्या यही वह लड़की है जिससे तुम प्यार करते हो?” उसने आखिरकार ऐसे स्वर में कहा जिसमें

हेलेन को जाते हुए देखा और कहा: "हमारी सारी मुसीबतें उसकी आँखों की एक झलक के बराबर भी नहीं हैं," बल्कि ठीक इसके विपरीत भावना थी, जिसे इस तरह व्यक्त किया जा सकता है: "क्या, इसी के लिए उसने खुद को इतनी तकलीफ दी है, इतना दुखी किया है, इतनी मूर्खतापूर्ण हरकतें की हैं!" यह मानना ही पड़ेगा कि जिस व्यक्ति ने दुख दिया है, जीवन को अस्त-व्यस्त किया है, कभी-कभी हमारे किसी प्रियजन की मृत्यु का कारण बना है, उसे देखकर इस तरह की प्रतिक्रिया ट्रोजन के बुजुर्गों की तुलना में कहीं अधिक बार होती है, और संक्षेप में कहें तो यह एक आदत बन चुकी है। ऐसा केवल इसलिए नहीं है कि प्रेम व्यक्तिगत होता है, न ही इसलिए कि जब हम इसे महसूस नहीं करते, तो इसे टाला जा सकने वाला समझना और दूसरों की मूर्खता पर दार्शनिक विचार करना हमारे लिए स्वाभाविक हो जाता है। नहीं, ऐसा इसलिए है क्योंकि जब यह उस अवस्था तक पहुँच जाता है जहाँ यह इतना कष्ट उत्पन्न करता है, तो स्त्री के चेहरे और उसके प्रेमी की आँखों के बीच स्थित संवेदनाओं से बनी संरचना—पीड़ा का वह विशाल अंडा जो उसे इस प्रकार घेरे रहता है और छुपाता है जैसे बर्फ की चादर किसी झरने को छुपाती है—इतनी ऊँची उठ जाती है कि प्रेमी की दृष्टि जिस बिंदु पर ठहरती है, जिस बिंदु पर उसे सुख और दुख दोनों मिलते हैं, वह उस बिंदु से उतना ही दूर होता है जितना कि वास्तविक सूर्य उस स्थान से दूर होता है जहाँ से उसका संघनित प्रकाश हमें आकाश में दिखाई देता है। और इतना ही नहीं, इस दौरान, दुःखों और भावनाओं के उस खोल के नीचे जो प्रेमी के लिए प्रेमिका के सबसे बुरे परिवर्तनों को भी अदृश्य कर देता है, उसके चेहरे को बूढ़ा होने और बदलने का समय मिल जाता है। परिणामस्वरूप, यदि प्रेमी ने पहली बार जो चेहरा देखा था, वह उस चेहरे से बहुत अलग है जिसे

उसने प्रेम में पड़ने और पीड़ा सहने के बाद देखा है, तो ठीक विपरीत दिशा में, वह चेहरा उस चेहरे से भी उतना ही अलग है जिसे अब एक उदासीन दर्शक देख सकता है। (क्या होता यदि रॉबर्ट ने किसी युवती की तस्वीर के बजाय किसी वृद्ध प्रेमिका की तस्वीर देखी होती?) और वास्तव में, इस विस्मय को महसूस करने के लिए हमें उस महिला को पहली बार देखने की आवश्यकता नहीं है जिसने इतना बड़ा उथल-पुथल मचाया है। अक्सर हम उसे पहले से ही जानते हैं, जैसे मेरे परदादा ओडेट को जानते थे। तब यह दृष्टिगत अंतर केवल शारीरिक रूप तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि चरित्र और व्यक्ति के महत्व तक भी पहुँच जाता है। इस बात की प्रबल संभावना है कि जिस स्त्री के कारण उसका प्रेमी पीड़ा झेल रहा है, उसने पहले किसी ऐसे व्यक्ति के प्रति उत्तम व्यवहार किया हो जिसे उसमें कोई रुचि नहीं थी, ठीक वैसे ही जैसे ओडेट, जो स्वान के प्रति इतनी क्रूर थी, मेरे परदादा के प्रति एक विनम्र 'गुलाबी वस्त्र वाली महिला' की तरह व्यवहार करती थी। या फिर, जिस स्त्री का हर निर्णय उसके प्रेमी द्वारा किसी देवता के निर्णय की तरह पूर्व-निर्धारित किया जाता है, वही स्त्री उस व्यक्ति की नज़र में महत्वहीन प्रतीत होती है जो उससे प्रेम नहीं करता, मानो वह उसकी हर इच्छा पूरी करने के लिए तत्पर हो। ठीक वैसे ही जैसे सेंट-लूप की प्रेमिका मुझे प्रतीत हुई, जिसे मैंने केवल वही 'राहेल' समझा जो मुझे बार-बार दिखाई गई थी। मुझे अपनी वह स्तब्धता याद आई, जब मैं पहली बार सेंट-लूप के साथ उससे मिली थी, यह सोचकर कि कोई इस बात से इतना व्याकुल कैसे हो सकता है कि उसे पता ही नहीं कि ऐसी स्त्री क्या कर रही थी, यह जानने की बेचैनी कि उसने किसी दूसरे पुरुष से फुसफुसाकर क्या कहा होगा, और वह संबंध क्यों तोड़ना चाहती थी। और मुझे लगा कि मेरा यह सारा अतीत—खासकर अल्बर्टीन

का—जिसकी ओर मेरे दिल का हर कण, मेरा जीवन एक धड़कते, बेढंगे दर्द के साथ खिंचा चला गया था, सेंट-लूप के लिए उतना ही महत्वहीन प्रतीत होता होगा जितना शायद एक दिन मेरे लिए भी। मुझे लगा कि अल्बर्टीन के अतीत की महत्वहीनता या गंभीरता के संदर्भ में, मैं धीरे-धीरे उस मानसिक स्थिति से, जिसमें मैं उस क्षण था, सेंट-लूप की मानसिक स्थिति में पहुँच जाऊँगा, क्योंकि मुझे इस बात का कोई भ्रम नहीं था कि सेंट-लूप क्या सोच रहा होगा, या प्रेमी के अलावा कोई और क्या सोच रहा होगा। और मैं अनावश्यक रूप से परेशान नहीं था। चलो, सुंदर महिलाओं को कल्पनाहीन पुरुषों के लिए ही छोड़ देते हैं। मुझे हममें से बहुतों की उस दुखद व्याख्या की याद आई जो एक प्रेरित लेकिन सजीव न लगने वाले चित्र द्वारा दी जाती है, जैसे एल्स्टिर का ओडेट का चित्र, जो एक प्रेमिका का नहीं, बल्कि उसके प्रति हमारे नीच प्रेम का चित्र है। इसमें केवल एक ही कमी थी, जो हमें अनेक चित्रों में देखने को मिलती है—कि चित्रकार एक महान कलाकार होने के साथ-साथ एक प्रेमी भी हो (और तब भी यह कहा जाता था कि एल्स्टिर ओडेट से प्रेम करता था)। यह विरोधाभास, एक प्रेमी का पूरा जीवन—एक ऐसे प्रेमी का जीवन जिसकी नादानियों को कोई नहीं समझ पाता—स्वैन परिवार का पूरा जीवन सिद्ध करता है। लेकिन अगर प्रेमी एल्स्टिर जैसे चित्रकार में समाहित हो जाए, तो हमें इस रहस्य का हल मिल जाता है, अंततः हमारे सामने वे होंठ आ जाते हैं जिन्हें आम लोगों ने कभी नहीं देखा, वह नाक जिसे किसी ने कभी नहीं देखा, वह अनपेक्षित चाल-ढाल। चित्र कहता है: "जिससे मैंने प्रेम किया है, जिसने मुझे पीड़ा दी है, जिसे मैं हमेशा देखता रहा हूँ, वह यही है।" एक विपरीत कसरत की तरह, मैंने, जिसने सेंट-लूप द्वारा रचेल में जोड़े गए सभी गुणों को जोड़ने का मानसिक प्रयास किया था,

या बस उसके पास रहता है, ताकि वह उसके साथ रह सके या वह उसके साथ, या केवल इसलिए कि वह अन्य लोगों के साथ न रहे।

"क्या तुम्हें पक्का यकीन है," रॉबर्ट ने मुझसे पूछा, "कि मैं सीधे जाकर इस औरत को उसके पति के चुनाव क्षेत्र के लिए तीस हज़ार फ़्रैंक देने की पेशकश कर सकता हूँ? क्या वह सचमुच इतनी बेईमान है? तुम्हें यकीन है कि तुम बात को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं कह रहे हो और तीन हज़ार फ़्रैंक काफ़ी नहीं होंगे?" "नहीं, मैं तुमसे मिन्नत करता हूँ, उस चीज़ में कंजूसी करने की कोशिश मत करो जो मेरे लिए इतनी मायने रखती है। तुम्हें उससे यह कहना है (और यह कुछ हद तक सच भी है): 'मेरे दोस्त ने ये तीस हज़ार फ़्रैंक एक रिश्तेदार से उधार लिए थे, उस लड़की के अंकल के चुनाव खर्च के लिए जिससे उसकी सगाई हुई थी। इसी सगाई की वजह से उसे यह पैसा दिया गया था। और उसने मुझसे कहा कि मैं यह पैसा तुम्हारे पास ले आऊँ, ताकि अल्बर्टिन को इसके बारे में कुछ पता न चले। और अब अल्बर्टिन उसे छोड़कर चली गई है। उसे समझ नहीं आ रहा कि वह क्या करे। अगर वह अल्बर्टिन से शादी नहीं करता, तो उसे वे तीस हज़ार फ़्रैंक वापस चुकाने पड़ेंगे। और अगर वह उससे शादी करने वाला है, तो कम-से-कम लोक-दिखावे के लिए ही सही, उसे तुरंत वापस आ जाना चाहिए; क्योंकि अगर वह ज़्यादा समय तक दूर रही, तो यह बहुत बुरा लगेगा।' तुम्हें क्या लगता है, क्या मैंने यह सब मनगढ़ंत कहानी बनाई है?" "बिल्कुल नहीं," सेंट-लूप ने मुझे तसल्ली दी—मेरे प्रति अपनी हमदर्दी और समझदारी की वजह से, और इसलिए भी कि वह जानता था कि सच अक्सर कल्पना से भी ज़्यादा अजीब होता है। आख़िरकार, यह बिल्कुल भी नामुमकिन नहीं था कि उन तीस हज़ार फ़्रैंक वाली इस कहानी में, जैसा कि मैंने उसे बताया था, सच का

एकमात्र वजह है जिससे तुम मुझसे मिलने को राज़ी होगे। अगर मैं शादी करता हूँ," उसने आगे कहा, "तो क्या तुम्हें नहीं लगता कि हम एक-दूसरे से ज़्यादा मिल-जुल पाएँगे? क्या तुम मेरे घर को अपना घर नहीं मानोगे...?" वह अचानक रुक गया; उसे अचानक यह ख्याल आया (जैसा कि उस समय मुझे लगा) कि अगर मैं भी शादी कर लूँ, तो उसकी पत्नी अल्बर्टिन की पक्की सहेली नहीं बन पाएगी। और मुझे याद आया कि कैम्ब्रेमर्स ने मुझसे क्या कहा था—कि इस बात की कितनी संभावना है कि वह प्रिंस डी गुएरमांटेस की किसी भतीजी से शादी करेगा। उसने टाइम-टेबल देखा, और पाया कि वह शाम से पहले पेरिस से नहीं निकल सकता। फ्रांकोइस ने पूछा: "क्या मैं मिस अल्बर्टिन का बिस्तर स्टडी रूम से हटा दूँ?" "बिल्कुल नहीं," मैंने कहा, "तुम्हें उसके लिए सब कुछ तैयार रखना है।" मुझे उम्मीद थी कि वह किसी भी दिन लौट आएगी, और मैं नहीं चाहता था कि फ्रांकोइस को ज़रा भी शक हो कि उसके लौटने में कोई अनिश्चितता है। अल्बर्टिन का जाना ऐसा लगना चाहिए था जैसे यह हम दोनों के बीच आपसी सहमति से तय हुआ हो, और इससे यह ज़रा भी ज़ाहिर नहीं होना चाहिए था कि वह अब मुझसे पहले से कम प्यार करती है। लेकिन फ्रांकोइस ने मेरी तरफ़ ऐसे अंदाज़ में देखा—अगर उसे पूरी तरह से अविश्वास नहीं था, तो भी कम से कम शक तो ज़रूर था। उसके पास भी अपने कुछ अलग अंदाज़े थे। उसकी नाक के नथुने फूल गए थे; वह झगड़े की बू सूंघ सकती थी; उसे यह बात काफी समय से हवा में महसूस हो रही होगी। और अगर उसे इस बात का पूरा यकीन नहीं था, तो शायद इसकी वजह यह थी कि — मेरी ही तरह—वह भी बिना किसी शर्त के उस बात पर यकीन करने में हिचकिचाती थी, जिससे उसे बहुत ज़्यादा खुशी मिलने वाली हो। अब इस मामले का बोझ मेरे पहले से ही परेशान दिमाग पर नहीं, बल्कि सेंट-लूप पर आ गया था। मैं काफी हल्का महसूस करने लगा था,

क्योंकि मैंने एक फ़ैसला ले लिया था; क्योंकि मैं खुद से कह सकता था: "मैंने ज़रा भी समय बर्बाद नहीं किया है, मैंने कदम उठाया है।" सेंट-लूप अभी ट्रेन में पहुँचा ही होगा कि हॉल में मेरी मुलाक़ात ब्लोच से हो गई। मैंने उसके दरवाज़े पर दस्तक देने की आवाज़ नहीं सुनी थी, इसलिए मुझे उसे एक मिनट के लिए अपने पास रुकने देना पड़ा। वह हाल ही में मुझसे अल्बर्टिन (जिसे वह बालबेक में जानता था) के साथ मिला था—उस दिन जब अल्बर्टिन का मूड खराब था। उसने मुझे बताया, "रात के खाने पर मेरी मुलाक़ात मिस्टर बोंटेम्प्स से हुई। चूंकि उन पर मेरा कुछ असर है, इसलिए मैंने उनसे कहा कि मुझे इस बात का दुख है कि उनकी भतीजी तुम्हारे साथ ठीक से पेश नहीं आती; और उन्हें इस बारे में उससे ज़रूर बात करनी चाहिए।" मैं गुस्से से आग-बबूला हो गया। ये गुज़ारिशें, यह हमदर्दी—इन सबने सेंट-लूप की कोशिशों का सारा असर खत्म कर दिया था। अब तो ऐसा लग रहा था जैसे मैं सीधे अल्बर्टिन से ही मिन्नतें कर रहा हूँ—जैसे मैं उससे वापस आने की भीख माँग रहा हूँ। और तो और, फ्रांस्वा—जो हॉल में ही आस-पास मंडरा रही थी—वह सब कुछ सुन सकती थी।
हर एक शब्द। मैंने ब्लोच पर हर मुमकिन इल्ज़ाम लगाया, उससे कहा कि मैंने उसे ऐसा कुछ भी करने की इजाज़त कभी नहीं दी थी और, इसके अलावा, यह पूरी बात ही बकवास थी। उस पल से, ब्लोच मुस्कुराता रहा — मुझे लगता है, खुशी से ज़्यादा इस बात की शर्मिंदगी से कि उसने मुझे नाराज़ कर दिया था। उसने हंसते हुए इस बात पर हैरानी जताई कि उसने इतना गुस्सा कैसे दिला दिया। शायद उसने यह बात इस उम्मीद में कही हो कि मेरे मन में उसके इस बेतुके दखल की अहमियत कम हो जाए; शायद इसलिए कि वह डरपोक किस्म का इंसान था, और झूठ के माहौल में मज़े से और बेकार बैठा रहता था—ठीक वैसे ही जैसे

जेलीफ़िश समुद्र की सतह पर तैरती हैं; या शायद इसलिए कि—भले ही वह किसी दूसरी नस्ल का न भी होता—दूसरे लोग कभी भी खुद को हमारी नज़र से नहीं देख पाते, इसलिए वे इस बात का अंदाज़ा नहीं लगा पाते कि यूं ही बेसोचे-समझे बोले गए शब्द हमें कितना गहरा ज़ख्म दे सकते हैं। मैंने उसे अभी दरवाज़े तक ही पहुँचाया था—और उसके किए हुए नुकसान का कोई हल नहीं सोच पा रहा था—कि तभी घंटी फिर बजी और फ्रांस्वा मेरे लिए 'सुरेते' (Sûreté) के मुखिया का बुलावा ले आई। उस छोटी बच्ची के माता-पिता—जिसे मैं एक घंटे के लिए अपने घर ले आया था—ने मेरे खिलाफ़ 'सहमति की उम्र से कम उम्र के बच्चे के साथ दुराचार' का आरोप लगाते हुए शिकायत दर्ज कराने का फ़ैसला कर लिया था। ज़िंदगी में कुछ पल ऐसे भी आते हैं जब हम पर टूट पड़ने वाली मुसीबतों की भरमार से एक अजीब सी खूबसूरती पैदा हो जाती है—ये मुसीबतें वैगनर के संगीत की तरह आपस में गुंथी हुई होती हैं; और साथ ही, एक ऐसा विचार भी उभरता है कि घटनाएँ उन विचारों के दायरे में कैद नहीं होतीं जो हमारे मन के सामने रखे उस छोटे से, बेचारे आईने में दिखाई देते हैं—जिसे हम 'भविष्य' कहते हैं—बल्कि वे कहीं बाहर मौजूद होती हैं, और ठीक वैसे ही अचानक सामने आ खड़ी होती हैं जैसे कोई अजनबी आकर हम पर किसी जुर्म का इल्ज़ाम लगा दे। यहाँ तक कि जब कोई घटना अपने आप घटती है, तब भी उसका रूप बदल जाता है—चाहे हमारी निराशा उसे हमारे लिए और भी बड़ा बनाकर पेश करे, या फिर हमारी संतुष्टि उसे छोटा कर दे। लेकिन ऐसा बहुत कम ही होता है कि कोई घटना अकेले ही घटे। हर घटना से पैदा होने वाली भावनाएँ एक-दूसरे के बिल्कुल उलट होती हैं; और—जैसा कि मुझे 'सुरेते' के मुखिया से मिलने जाते समय महसूस हुआ था—एक हद तक, कम से कम कुछ पलों के लिए ही सही, एक ऐसी घिन या अरुचि पैदा हो जाती है जो डर की ही तरह, हमारे

मन में गहरी उदासी और तकलीफ़ पैदा करने वाली होती है। सुरेते (Sûreté) में मुझे उस लड़की के माता-पिता मिले, जिन्होंने मेरा अपमान करते हुए कहा: "हम इस तरह की रोटी नहीं खाते," और मुझे वे पाँच सौ फ़्रैंक वापस दे दिए, जिन्हें लेने से मैंने मना कर दिया। वहाँ सुरेते का मुखिया भी था, जिसने न्यायिक हाज़िरजवाबी का एक बेमिसाल उदाहरण पेश करते हुए, मेरे कहे हर वाक्य से एक ऐसा शब्द पकड़ लिया, जिसकी मदद से वह एक मज़ाकिया और करारा जवाब दे सका। मुझ पर लगे कथित अपराध के मामले में मेरी बेगुनाही पर कभी विचार ही नहीं किया गया; क्योंकि यह एकमात्र ऐसी परिकल्पना थी जिसे कोई भी एक पल के लिए भी मानने को तैयार नहीं था। फिर भी, मुझे दोषी साबित करने में आ रही मुश्किलों की वजह से मैं एक बहुत ही सख़्त फटकार खाकर बच निकला—और यह सब तब हुआ जब लड़की के माता-पिता भी कमरे में ही मौजूद थे। लेकिन जैसे ही वे लोग वहाँ से गए, सुरेते के मुखिया ने—जिसे छोटी लड़कियों के प्रति एक ख़ास लगाव था—अपना लहजा बदल लिया और एक मर्द की तरह दूसरे मर्द को समझाते हुए कहा: "अगली बार, तुम्हें और ज़्यादा सावधान रहना होगा। अरे यार, तुम लड़कियों को इतनी आसानी से नहीं उठा सकते, वरना तुम मुसीबत में पड़ जाओगे। वैसे भी, तुम्हें उस लड़की से कहीं बेहतर दर्जनों लड़कियाँ मिल जाएँगी, और वह भी बहुत कम पैसों में। तुमने जो रक़म चुकाई थी, वह तो बिल्कुल ही बेतुकी थी।" मुझे लगा कि अगर मैंने उसे सच बताने की कोशिश की, तो वह मेरी बात समझने में पूरी तरह से असमर्थ रहेगा; इसलिए बिना कुछ कहे, मैंने वहाँ से चले जाने की उसकी अनुमति का फ़ायदा उठाया। जब तक मैं सुरक्षित अपने घर नहीं पहुँच गया, तब तक मुझे हर आने-जाने वाला व्यक्ति ऐसा लगा, मानो वह कोई इंस्पेक्टर हो जिसे मेरे बर्ताव पर नज़र रखने के लिए ही नियुक्त किया गया हो। लेकिन यह

विचार—ठीक वैसे ही जैसे ब्लोक (Bloch) के प्रति मेरा गुस्सा— धीरे-धीरे शांत हो गया, और अल्बर्टिन के चले जाने वाले विचार के लिए मैदान साफ़ कर गया। और अब वह विचार एक बार फिर हावी हो गया, लेकिन इस बार उसका लहजा कुछ-कुछ ख़ुशी भरा था—क्योंकि अब सेंट-लूप (Saint–Loup) ने इस काम की शुरुआत कर दी थी। अब जब उसने जाकर मैडम बोंटेम्प्स (Mme. Bontemps) से मिलने का बीड़ा उठा लिया था, तो मेरी सारी तकलीफ़ें दूर हो गई थीं। मुझे लगा कि ऐसा इसलिए हुआ है, क्योंकि मैंने कोई ठोस क़दम उठाया था; मुझे इस बात पर पूरी तरह से यक़ीन था—क्योंकि हमें कभी पता नहीं चलता कि हमारे दिल की गहराइयों में असल में क्या छिपा होता है। जिस बात ने मुझे सचमुच ख़ुश किया था, वह यह नहीं थी—जैसा कि मैं मान बैठा था—कि मैंने अपनी सारी दुविधाओं का बोझ सेंट-लूप के कंधों पर डाल दिया था। वैसे, इस मामले में मैं पूरी तरह से ग़लत भी नहीं था; किसी भी दुर्भाग्यपूर्ण घटना का (और चार में से तीन घटनाएँ तो दुर्भाग्यपूर्ण ही होती हैं) एकमात्र सटीक इलाज है—एक ठोस फ़ैसला लेना। इसका असर यह होता है कि हमारे विचारों में अचानक आए बदलाव से, यह अतीत की घटनाओं से आने वाले विचारों के प्रवाह को रोक देता है और उनकी गूंज को लंबा खींचता है; और फिर बाहर से, भविष्य से आने वाले विपरीत विचारों के एक उलटे प्रवाह से उस प्रवाह को तोड़ देता है। लेकिन ये नए विचार हमारे लिए सबसे ज़्यादा फ़ायदेमंद तब होते हैं जब (और इस पल मुझ पर हावी हुए विचारों के साथ भी यही हुआ था), भविष्य के उस गर्भ से, वे हमारे लिए एक उम्मीद लेकर आते हैं। जिस बात ने मुझे सचमुच इतना खुश किया, वह यह पक्का यकीन था कि सेंट-लूप का मिशन नाकाम नहीं हो सकता, अल्बर्टिन को लौटना ही था—मुझे इस बात का एहसास हो गया था; क्योंकि अगले दिन सेंट-लूप से कोई जवाब न मिलने पर, मैं फिर

से तकलीफ़ महसूस करने लगा था। इसलिए, मेरा फ़ैसला या काम करने की पूरी आज़ादी उसे सौंप देना मेरी खुशी की वजह नहीं थे—अगर ऐसा होता, तो मेरी खुशी बनी रहती; बल्कि मेरी खुशी की असली वजह वह सोच थी कि 'सफलता पक्की है', जो मेरे मन में थी।
मुझे याद है जब मैंने कहा था: "चाहे कुछ भी हो जाए।" और उसके देर से आने की वजह से मेरे मन में जो विचार आया—कि शायद उसका काम सफल न हो पाए—वह मुझे इतना बुरा लगा कि मेरी सारी खुशी गायब हो गई। असल में, हमारी उम्मीदें और सुखद घटनाओं की आशा ही हमें उस खुशी से भर देती हैं, जिसका श्रेय हम अक्सर दूसरी चीज़ों को देते हैं; लेकिन जब हमें यह पक्का नहीं रहता कि हमारी इच्छा पूरी होगी या नहीं, तो वह खुशी खत्म हो जाती है और हम फिर से दुख के सागर में डूब जाते हैं। यह हमेशा हमारा यही 'अदृश्य विश्वास' होता है जो हमारी भावनाओं की दुनिया को थामे रखता है; इसके बिना हमारी दुनिया की नींव ही हिल जाती है। हमने देखा है कि इसी विश्वास की वजह से ही हमारे लिए दूसरे लोगों का महत्व या महत्वहीनता तय होती है, और उन्हें देखकर हम उत्साहित होते हैं या ऊब जाते हैं। इसी तरह, यह विश्वास हमें उस दुख को सहने की शक्ति भी देता है जो हमें मामूली लगता है—सिर्फ इसलिए क्योंकि हमें यकीन होता है कि यह दुख जल्द ही खत्म हो जाएगा—या फिर यह उस दुख को इतना बढ़ा देता है कि किसी खास इंसान की मौजूदगी हमारे लिए हमारी अपनी जान से भी ज़्यादा, शायद उससे भी कहीं ज़्यादा कीमती हो जाती है। हालाँकि, एक चीज़ ऐसी थी जिसने मेरे दिल के दर्द को फिर से उतना ही गहरा बना दिया, जितना वह पहली बार हुआ था—और (मुझे यह मानना पड़ेगा) जितना वह अब नहीं रहा था। ऐसा तब हुआ जब मैंने अल्बर्टिन के खत का एक हिस्सा दोबारा पढ़ा। लोगों से प्यार करना और उन्हें खोने का दर्द सहना—जब हम अकेले

होते हैं और इस दर्द का सामना अकेले ही करते हैं, और जब हमारा मन इस दर्द को अपनी मर्ज़ी से कोई भी रूप दे सकता है—तब यह दर्द सहने लायक होता है। यह उस दूसरे दर्द से बिल्कुल अलग होता है— जो कम मानवीय होता है, जिस पर हमारा अपना बस नहीं चलता; यह दर्द नैतिक दुनिया और हमारे दिल की गहराइयों में किसी अचानक हुई दुर्घटना की तरह अप्रत्याशित और अजीब होता है। यह दर्द उन लोगों की वजह से उतना नहीं होता, जितना कि उस तरीके की वजह से होता है जिससे हमें यह पता चलता है कि अब हम उन्हें दोबारा कभी नहीं देख पाएँगे। अल्बर्टिन के बारे में सोचते हुए शायद मेरी आँखों में हल्के आँसू आ जाते—यह सच स्वीकार करते हुए कि मैं आज शाम उसे दोबारा नहीं देख पाऊँगा, जैसा मैंने पिछली रात देखा था — लेकिन जब मैंने उसके खत की यह लाइन दोबारा पढ़ी: "मेरा फैसला अटल है," तो बात ही कुछ और थी। यह किसी जानलेवा ज़हर को पीने जैसा था, जिससे मुझे दिल का दौरा पड़ सकता था और शायद मैं बच भी न पाता। बेजान चीज़ों में, घटनाओं में, और विदाई के खतों में एक खास तरह का खतरा छिपा होता है; यह खतरा उस दुख को कई गुना बढ़ा देता है—और यहाँ तक कि उसका स्वरूप ही बदल देता है—जो लोग हमें दे सकते हैं। लेकिन, यह दर्द ज़्यादा देर तक नहीं रहा। सब कुछ कहने-सुनने के बाद, मुझे सेंट-लूप की काबिलियत और उसकी आखिरकार होने वाली सफलता पर इतना पक्का यकीन था, और अल्बर्टिन की वापसी मुझे इतनी निश्चित लग रही थी कि मैंने खुद से पूछा कि क्या मेरे पास इसकी उम्मीद करने का कोई कारण भी था। फिर भी, इस विचार से मुझे खुशी हुई। बदकिस्मती से मेरे लिए—जो यह मान बैठा था कि सुरक्षा विभाग (Sûreté) के साथ का मामला अब पूरी तरह से खत्म हो चुका है—फ्रांकोइस अंदर आई और मुझे बताया कि एक इंस्पेक्टर यह पूछने आया था कि क्या मुझे घर में लड़कियों को रखने की आदत है;

— मुझे ऐसा लगने लगा कि 'नाबालिगों को बहकाने' का आरोप अल्बर्टिन पर भी लग सकता है। बस, उसी पल से मुझे अपनी ज़िंदगी हर तरफ से घिरी हुई और फँसी हुई सी लगने लगी। और जब मैंने सोचा कि मैंने उसके साथ पवित्रता से जीवन नहीं बिताया था, तो मुझे उस सज़ा में—जो मुझे एक अनजान छोटी लड़की को ज़बरदस्ती पैसे देने के लिए मजबूर करने के कारण मिली थी—वह संबंध दिखाई दिया जो इंसानी दंड-विधानों में लगभग हमेशा मौजूद रहता है; जिसका नतीजा यह होता है कि शायद ही कभी कोई निष्पक्ष फ़ैसला होता है या कोई न्यायिक भूल होती है, बल्कि यह एक तरह का समझौता होता है—एक तरफ़ तो वह झूठा विचार जो न्यायाधीश किसी निर्दोष कार्य के बारे में बना लेता है, और दूसरी तरफ़ वे दोषी कर्म जिनके बारे में वह अनजान होता है। लेकिन फिर जब मैंने सोचा कि अल्बर्टिन की वापसी मुझे एक ऐसे फ़ैसले के कलंक में फँसा सकती है जो उसकी नज़रों में मुझे गिरा देगा, और शायद उसे भी ऐसी चोट पहुँचाएगा जिसे वह कभी माफ़ नहीं करेगी, तो मैंने उसके लौटने का इंतज़ार करना छोड़ दिया।
उसके लौटने की बात से ही मैं डर गया। मेरा मन किया कि उसे तार भेजकर कह दूँ कि वह वापस न आए। और तभी, बाकी सब कुछ भुलाकर, उसे वापस पाने की तीव्र इच्छा मुझ पर हावी हो गई। असल बात तो यह थी कि एक पल के लिए यह सोचने के बाद कि मैं उसे वापस न आने को कह दूँ और उसके बिना रह लूँ, अचानक मुझे लगा कि इसके विपरीत, मैं अपनी सारी यात्राएँ, सारे सुख, सारा काम-काज छोड़ने को तैयार हूँ—बस अल्बर्टिन वापस आ जाए! आह, अल्बर्टिन के लिए मेरा प्यार—जिसके भविष्य के बारे में मैंने सोचा था कि मैं गिल्बर्ट के लिए अपने पिछले प्यार के अनुभव के आधार पर पहले से ही अंदाज़ा लगा सकता हूँ—वह तो बिल्कुल ही विपरीत दिशा में विकसित हुआ था! उसके

बिना जीना मेरे लिए कितना असंभव था! और मेरे हर काम के साथ—यहाँ तक कि सबसे छोटी-मोटी बातों के साथ भी—क्योंकि वे सभी पहले अल्बर्टिन की मौजूदगी से पैदा हुए सुखद माहौल में डूबे हुए थे, मुझे हर बार नई ऊर्जा और उसी गहरे दुख के साथ, उससे बिछड़ने का सबक फिर से सीखना पड़ता था। फिर, जीवन के अन्य पहलुओं की व्यस्तताओं ने इस नए दुख को पीछे धकेल दिया; और वसंत के उन शुरुआती दिनों में—जब मैं सेंट-लूप के, मैडम बॉनटेम्प्स से मिलने का इंतज़ार कर रहा था—वेनिस और वहाँ की खूबसूरत, अनजान औरतों के बारे में सोचते हुए, मुझे कुछ पल का सुखद सुकून भी मिला। जैसे ही मुझे इस बात का एहसास हुआ, मेरे मन में एक गहरी घबराहट और डर पैदा हो गया। यह जो सुकून मैंने अभी-अभी महसूस किया था, वह उस महान और कभी-कभार उभरने वाली शक्ति का पहला संकेत था—वह शक्ति जो मेरे भीतर दुख और प्यार के खिलाफ जंग छेड़ने वाली थी, और अंत में विजयी होने वाली थी। यह जो मानसिक स्थिति मैंने अभी-अभी थोड़ी देर के लिए चखी थी और जिसका संकेत मुझे मिला था—वह कुछ ही पलों के लिए थी, लेकिन भविष्य में यही मेरी स्थायी स्थिति बनने वाली थी; एक ऐसा जीवन जिसमें मैं अल्बर्टिन की वजह से अब और दुख नहीं उठाऊँगा, एक ऐसा जीवन जिसमें मैं अब उससे प्यार नहीं करूँगा। और मेरा प्यार—जिसने अभी-अभी अपने एकमात्र दुश्मन को पहचान लिया था, वह दुश्मन जो उसे हरा सकता था — यानी 'भूल जाना' (विस्मृति)—वह काँपने लगा; ठीक उस शेर की तरह, जो अपने पिंजरे में बंद रहते हुए अचानक उस अजगर को देख लेता है, जो उसे निगलने के लिए तैयार बैठा है।

मैं हर समय अल्बर्टीन के बारे में सोचता रहता था और जब फ्रांस्वा मेरे कमरे में आती, तो वह तुरंत कहती, "कोई पत्र नहीं

हैं," जिससे मेरा दुख कम हो सके। कभी-कभी मैं अपने दुख में विचारों की एक धारा प्रवाहित होने देकर अपने हृदय के दूषित वातावरण को थोड़ा-बहुत ताज़ा और हवादार बनाने में सफल हो जाता था, लेकिन रात में, अगर मैं सो पाता, तो ऐसा लगता था मानो अल्बर्टीन की याद ही वह दवा हो जिसने मुझे नींद दिलाई हो, क्योंकि उसका असर खत्म होते ही मैं जाग जाता था। सोते समय भी मैं हर समय अल्बर्टीन के बारे में सोचता रहता था। यह एक खास तरह की नींद थी जो उसने मुझे दी थी, और ऐसी नींद जिसमें जागते समय की तरह मैं दूसरी चीजों के बारे में सोचने के लिए स्वतंत्र नहीं होता था। नींद और उसकी याद, ये दो चीजें थीं जिन्हें मुझे एक साथ मिलाकर एक ही घूंट में पीना पड़ता था ताकि मैं सो सकूं। जब मैं जागता था, तब भी मेरा दुख कम होने के बजाय दिन-ब-दिन बढ़ता ही जा रहा था। ऐसा नहीं था कि विस्मृति अपना काम नहीं कर रही थी, बल्कि इसलिए कि ऐसा करने से ही उस दुखद छवि का आदर्श रूप धारण हो जाता था और इस प्रकार मेरा प्रारंभिक दुख अन्य समान दुखों से जुड़ जाता था, जिससे वह और भी तीव्र हो जाता था। फिर भी यह छवि सहनीय थी। लेकिन अगर अचानक मुझे उसके कमरे का ख्याल आता, उस कमरे का जिसमें पलंग खाली पड़ा था, उसके पियानो का, उसकी कार का, तो मेरी सारी शक्ति छिन जाती थी। मैं अपनी आँखें बंद कर लेता था, अपना सिर कंधे पर ऐसे झुका लेता था जैसे कोई बेहोश होने वाला हो। दरवाज़े खुलने की आवाज़ भी मुझे लगभग उतनी ही पीड़ा देती थी क्योंकि उन्हें खोलने वाली वह नहीं थी।
जब सेंट-लूप से टेलीग्राम आने की संभावना थी, तब भी मैंने पूछने की हिम्मत नहीं की: "क्या कोई टेलीग्राम आया है?" आखिरकार एक टेलीग्राम आया, लेकिन उसमें केवल यही लिखा था कि कोई नतीजा नहीं निकलेगा, और संदेश था: "महिलाएं तीन दिनों के लिए बाहर गई हैं।"

निस्संदेह, अगर मैंने उसके जाने के बाद बीते चार दिन सहन किए, तो इसलिए क्योंकि मैंने खुद से कहा था: "बस कुछ ही समय की बात है, सप्ताह के अंत तक वह यहाँ आ जाएगी।" लेकिन इस तर्क से यह तथ्य नहीं बदला कि मेरे दिल और मेरे शरीर के लिए, जो करना था वह वही था: उसके बिना जीना, घर लौटना और उसे घर में न पाना, उसके कमरे का दरवाजा खोलना - और यह जानते हुए कि वह अंदर नहीं है - यह सोचकर उसके पास से गुजरना कि वह अंदर नहीं है, उसे शुभ रात्रि कहे बिना सो जाना, ये वे कार्य थे जिन्हें मेरे दिल को पूरी तरह से और भयानक रूप से सहना पड़ा था, मानो मैं अल्बर्टीन से मिलने जा ही नहीं रहा था। लेकिन मेरे दिल ने यह दैनिक कार्य पहले ही चार बार पूरा कर लिया था, जिससे यह साबित हो गया कि अब वह इसे जारी रखने में सक्षम है। और जल्द ही, शायद, वह विचार जिसने मुझे इस तरह से जीने में मदद की थी—अल्बर्टीन के लौटने की उम्मीद—मुझे उसकी कोई आवश्यकता महसूस नहीं होगी (मैं खुद से कह सकूंगा: "वह कभी वापस नहीं आएगी," और फिर भी उसी तरह जीवित रहूंगा जैसे मैं पिछले चार दिनों से जी रहा था), एक अपंग व्यक्ति की तरह जिसके पैर फिर से चलने लगे हों और वह बैसाखियों के बिना रह सके। निस्संदेह, जब मैं रात को घर आता, तो मुझे अब भी, सांस रोक देने वाली, एकांत के निर्वात में घुटन पैदा करने वाली, उन सभी शामों की अंतहीन श्रृंखला में सजी यादें मिलतीं, जिन पर अल्बर्टीन मेरा इंतजार करती थी; लेकिन इस सिलसिले में मुझे पिछली रात, उससे पहले वाली रात और उससे पिछली दो शामों की यादें मिल गईं, यानी अल्बर्टीन के जाने के बाद गुज़री उन चार रातों की यादें, जिनमें मैं उसके बिना अकेला रहा था, फिर भी मैंने उन चार रातों को जी लिया था, जो यादों की एक ऐसी कड़ी बन गई थीं जो बाकी की तुलना में बहुत पतली थी, लेकिन जिसमें शायद हर नया दिन कुछ नयापन जोड़ता। मैं उस

पत्र के बारे में कुछ नहीं कहूंगा जिसमें मुझे पेरिस की सबसे खूबसूरत लड़की मानी जाने वाली श्रीमती डी गुएरमांटेस की भतीजी से प्यार का इज़हार मिला था, न ही ड्यूक डी गुएरमांटेस द्वारा उनके माता-पिता की ओर से मुझसे किए गए प्रस्तावों के बारे में, जो अपनी बेटी की खुशी सुनिश्चित करने की चिंता में, इस असमान रिश्ते को, एक स्पष्ट बेमेल रिश्ते को स्वीकार कर चुके थे। ऐसी घटनाएं जो हमारे आत्मसम्मान को संतुष्ट कर सकती हैं, प्यार में होने पर बहुत पीड़ादायक होती हैं। हम एक इच्छा तो महसूस करते हैं, लेकिन उसे बताने की शिष्टता से कतराते हैं, क्योंकि उसकी हमारे बारे में राय अच्छी नहीं है। और यह जानकर भी उसकी राय नहीं बदलेगी कि हम उसके मन में एक बिल्कुल अलग राय पैदा कर सकते हैं। ड्यूक की भतीजी ने मुझे जो लिखा, उससे अल्बर्टीन ज़रूर नाराज़ हो जाती। जागते ही, जब मैंने अपने दुख को वहीं से फिर से महसूस किया जहाँ सोते समय था, ठीक वैसे ही जैसे कोई किताब कुछ देर के लिए बंद पड़ी हो, जिसे मैं रात तक अपनी आँखों के सामने रखूँ। अल्बर्टीन से जुड़ी किसी भी सोच से ही मेरी सारी भावनाएँ शांत हो पातीं, चाहे वो बाहर से आएँ या भीतर से। घंटी बजी: ये उसका पत्र है, शायद वो खुद ही है! अगर मैं बेहतर महसूस कर रही होती, इतनी दुखी न होती, मुझे उससे जलन न होती, मुझे उससे कोई शिकायत न होती, तो मैं उससे तुरंत मिलना चाहती, उसे चूमना चाहती, और उसके साथ हमेशा खुशी से रहना चाहती। उसे टेलीग्राम करके "तुरंत आ जाओ" कहना मुझे बिलकुल आसान लगने लगा था, मानो मेरे नए मूड ने न सिर्फ मेरी भावनाओं को बदला हो, बल्कि मेरे आस-पास की चीज़ों को भी आसान बना दिया हो। अगर मैं उदास होता, तो उसके प्रति मेरा सारा गुस्सा फिर से जाग उठता, मुझे उसे चूमने की कोई इच्छा नहीं होती, मुझे लगता कि वह मुझे कभी खुश नहीं कर सकती,

मैं सिर्फ उसे नुकसान पहुँचाना चाहता और उसे दूसरों से दूर रखना चाहता। लेकिन इन दो विपरीत भावनाओं का एक ही नतीजा होता था: उसका जल्द से जल्द लौटना ज़रूरी था। फिर भी, उसके लौटने पर मेरी खुशी चाहे कितनी भी तीव्र क्यों न हो, मुझे लगता था कि बहुत जल्द वही मुश्किलें फिर से खड़ी हो जाएँगी और किसी नैतिक इच्छा की पूर्ति में खुशी ढूँढना उतना ही मूर्खतापूर्ण है जितना सीधे चलते हुए क्षितिज तक पहुँचने की कोशिश करना। इच्छा जितनी आगे बढ़ती है, सच्चा सुख उतना ही दूर होता जाता है। इसलिए अगर खुशी या कम से कम दुख से मुक्ति मिल सकती है, तो वह संतुष्टि नहीं, बल्कि हमारी इच्छा का धीरे-धीरे कम होना, अंततः उसका खत्म होना है, जिसकी हमें तलाश करनी चाहिए। हम जिसे प्यार करते हैं, उसे देखने की कोशिश करते हैं, जबकि हमें उसे न देखने की कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि विस्मृति ही इच्छा का अंतिम अंत करती है। और मैं कल्पना करता हूँ कि यदि कोई लेखक इस प्रकार के सत्य प्रकाशित करे, तो वह उस पुस्तक को, जिसमें ये सत्य लिखे हों, उस स्त्री को समर्पित करेगा जिसे वह यह कहते हुए प्रसन्नता से लौटाएगा: "यह पुस्तक तुम्हारी है।" इस प्रकार, अपनी पुस्तक में सत्य बताते हुए भी, वह अपने समर्पण में झूठ बोल रहा होगा, क्योंकि वह पुस्तक के उसके द्वारा समर्पित होने को उतना ही महत्व देगा जितना उस पत्थर को देता है जो उसे उस स्त्री से प्राप्त हुआ है और जो उसके लिए तभी तक अनमोल रहेगा जब तक वह उससे प्रेम करता रहेगा। जो बंधन हमें किसी दूसरे व्यक्ति से जोड़ते हैं, वे केवल हमारे मन में ही विद्यमान होते हैं। स्मृति जैसे-जैसे धुंधली होती जाती है, ये बंधन भी शिथिल होते जाते हैं, और उस भ्रम के बावजूद जिससे हम धोखा खाना चाहते हैं और जिसके द्वारा हम प्रेम, मित्रता, शिष्टाचार, आदर, कर्तव्य आदि के नाम पर दूसरों को धोखा देते हैं,

पुलट हो गया था, तो मैं क्रोध और निराशा के सैलाब में फूट पड़ा, क्योंकि यही वह चीज थी जिसे रोकने के लिए मैं दुनिया में कुछ भी कर सकता था। जब अल्बर्टीन को इस बात का पता चला, तो सेंट-लूप के मिशन ने मुझे उस पर निर्भर होने का आभास दिया, जिससे वह वापस लौटने से हिचकने लगी। संयोग से, मुझे इस बात का बहुत डर था, और यही मेरे उस गौरव का एकमात्र अंश बचा था जो मेरे प्रेम ने गिल्बर्ट के दिनों में दिखाया था और जो अब खो चुका था। मैंने रॉबर्ट को कोसा। फिर मैंने खुद से कहा कि अगर यह कोशिश नाकाम रही, तो मैं दूसरी कोशिश करूँगा। चूंकि मनुष्य बाहरी दुनिया को प्रभावित कर सकता है, तो अगर मैं चालाकी, बुद्धिमत्ता, आर्थिक लाभ, स्नेह का इस्तेमाल करूँ, तो मैं इस भयानक सच्चाई - अल्बर्टीन की अनुपस्थिति - को नष्ट करने में कैसे असफल हो सकता हूँ? हम मानते हैं कि अपनी इच्छा के अनुसार हम अपने आस-पास की चीजों को बदल सकते हैं, हम ऐसा इसलिए मानते हैं क्योंकि अन्यथा हमें कोई अनुकूल समाधान दिखाई नहीं देता। हम उस समाधान को भूल जाते हैं जो आमतौर पर घटित होता है और अनुकूल भी होता है: हम अपनी इच्छा के अनुसार चीजों को बदलने में सफल नहीं होते, बल्कि धीरे-धीरे हमारी इच्छा बदल जाती है। जिस स्थिति को हम असहनीय होने के कारण बदलना चाहते थे, वह महत्वहीन हो जाती है। हम उस बाधा को पार नहीं कर पाए, जैसा कि हमने पूरी तरह से ठान लिया था, लेकिन जीवन ने हमें उसके चारों ओर से घुमाकर, उसके पार ले जाकर, हमें पीछे छोड़ दिया, और फिर अगर हम दूर अतीत की ओर मुड़कर देखें, तो हम उसे मुश्किल से ही देख पाते हैं, क्योंकि वह इतना अगोचर हो गया है। हमारे ऊपर वाले फ्लैट में, पड़ोसियों में से एक गाना बजा रहा था। मैंने उनके जाने-पहचाने शब्दों को

अल्बर्टीन और खुद पर लागू किया, और एक ऐसी गहरी भावना से भर गया कि मैं रोने लगा। शब्द थे:
"अफसोस, वह पक्षी जो गुलामी समझकर भागता है, हताशा में वापस लौटकर खिड़की के शीशे से टकराता है।"
और मैनन की मृत्यु:
"मैनन, मुझे उत्तर दो, हे मेरी आत्मा के एकमात्र प्रेम, मुझे तुम्हारे हृदय की अच्छाई के बारे में आज ही पता चला है।"
जब से मैनन डेस ग्रियू के पास लौटी, मुझे ऐसा लगा कि मैं अल्बर्टीन के लिए उसके जीवन का एकमात्र प्रेम था। अफसोस, यह संभव है कि यदि वह उस समय वही संगीत सुन रही होती, तो वह मुझे डेस ग्रियू के नाम से नहीं पुकारती, और यदि यह विचार उसके मन में आया भी होता, तो मेरी याद उसे इस संगीत को सुनकर भावुक होने से रोक देती, भले ही यह संगीत बेहतर और अधिक विशिष्ट था, फिर भी ठीक उसी प्रकार का संगीत था जिसकी वह प्रशंसा करती थी। जहाँ तक मेरी बात है, मुझमें इतने सुखद विचारों में खो जाने का साहस नहीं था, यह कल्पना करने का कि अल्बर्टीन मुझे अपना 'दिल का इकलौता प्यार' कह रही है और यह महसूस कर रही है कि उसने जिसे 'बंधन' समझा था, उसमें वह गलत थी। मैं जानता था कि हम किसी भी उपन्यास को उसकी नायिका को उस स्त्री के रूप और विशेषताओं से सुशोभित किए बिना नहीं पढ़ सकते जिससे हम प्रेम करते हैं। लेकिन अंत चाहे कितना भी सुखद क्यों न हो, हमारा प्यार एक इंच भी आगे नहीं बढ़ा है और जब हम किताब बंद कर देते हैं, तो जिसे हम प्यार करते हैं और जो अंततः उसके पन्नों में हमारे पास आई है, वह असल जिंदगी में हमसे पहले जैसा प्यार नहीं करती। गुस्से में आकर मैंने सेंट-लूप को तार भेजा कि वह जितनी जल्दी हो सके पेरिस लौट आए, ताकि कम से कम उस मिशन पर ज़ोर देने का आभास न हो जिसे मैं गुप्त रखने के लिए

इतना उत्सुक था। लेकिन मेरे निर्देशों का पालन करते हुए उसके लौटने से पहले ही मुझे अल्बर्टीन से निम्नलिखित पत्र मिला: "मेरे प्यारे, तुमने अपने दोस्त सेंट-लूप को मेरी चाची के पास भेज दिया, जो मूर्खतापूर्ण था। मेरे प्यारे बेटे, अगर तुम्हें मेरी ज़रूरत थी तो तुमने मुझे खुद क्यों नहीं लिखा? मुझे वापस आने में बहुत खुशी होती। अब इन बेतुकी उलझनों को छोड़ो।" "मुझे वापस आने में बहुत खुशी होती!" अगर उसने ऐसा कहा, तो इसका मतलब यही होगा कि उसे अपने जाने का पछतावा था और वह लौटने का बहाना ढूंढ रही थी। इसलिए मुझे बस वही करना था जो उसने कहा, उसे लिखना था कि मुझे उसकी ज़रूरत है, और वह वापस आ जाती।
मैं उससे दोबारा मिलने जा रहा था, उससे, बालबेक की अल्बर्टाइन से (क्योंकि उसके जाने के बाद वह मेरे लिए फिर से वही बन गई थी; जैसे कोई समुद्री शंख जिस पर हम कमरे की दराजों में रखे होने पर ध्यान देना बंद कर देते हैं, लेकिन उससे अलग होने के बाद, चाहे उसे किसी को दे दें या खो दें, हम उसके बारे में सोचने लगते हैं, जो हमने करना बंद कर दिया था, वह मुझे समुद्र के नीले पहाड़ों की सारी आनंदमय सुंदरता की याद दिलाती थी)। और केवल वही कल्पना की प्राणी नहीं बन गई थी, यानी वांछनीय, उसके साथ जीवन एक काल्पनिक जीवन बन गया था, यानी सभी कठिनाइयों से मुक्त जीवन, इसलिए मैंने खुद से कहा: "हम कितने खुश रहने वाले हैं!" लेकिन अब जब मुझे उसके लौटने का आश्वासन मिल चुका था, तो मुझे ऐसा नहीं लगना चाहिए कि मैं उसकी वापसी में जल्दबाजी कर रहा हूँ, बल्कि इसके विपरीत सेंट-लूप के हस्तक्षेप से बने बुरे प्रभाव को मिटाना चाहिए, जिसे मैं बाद में यह कहकर नकार सकता था कि उसने अपनी मर्जी से ऐसा किया था, क्योंकि वह हमेशा से हमारी शादी के पक्ष में था। इस बीच, मैंने उसका पत्र फिर से पढ़ा, और फिर भी निराश हुआ जब मैंने

मुझे आपको न तो नौका और न ही कार स्वीकार करने के लिए मनाने की कोई उम्मीद नहीं है (मेरे लिए वे बिल्कुल बेकार हैं), तो मैंने सोचा था - क्योंकि मैंने उन्हें एक एजेंट के माध्यम से, लेकिन आपके नाम पर, ऑर्डर किया था - कि शायद आप स्वयं उन्हें रद्द करके मुझे नौका और कार के खर्च से बचा लें, जिनकी अब आवश्यकता नहीं है। लेकिन इस पर और कई अन्य मामलों पर चर्चा करनी होगी। खैर, मुझे लगता है कि जब तक मैं आपसे दोबारा प्यार करने में सक्षम हूं, जो कि ज्यादा समय तक नहीं रहेगा, तब तक एक नौका और रोल्स रॉयस के लिए दोबारा मिलना और आपके जीवन की खुशी को जोखिम में डालना पागलपन होगा, क्योंकि आपने तय कर लिया है कि आपकी खुशी मुझसे अलग रहने में है। नहीं, मैं रोल्स रॉयस और नौका दोनों को रखना पसंद करूंगा। और चूंकि मैं उनका उपयोग नहीं करूंगा और वे संभवतः ये दोनों नौकाएँ हमेशा के लिए वहीं पड़ी रहेंगी, एक अपने गोदी में, अलग-अलग हिस्सों में बंटी हुई, दूसरी अपने गैरेज में। मैं नौका पर (हे भगवान, मुझे डर है कि मैं शीर्षक को गलत उद्धृत कर रहा हूँ और एक ऐसा अधर्म कर रहा हूँ जो आपको चौंका देगा) मल्लरमे की वे पंक्तियाँ उत्कीर्ण करवाऊँगा जो आपको पसंद थीं: बहुत समय पहले का एक हंस याद रखता है कि वह वही था।
शानदार, लेकिन निराशाजनक, यह खुद को प्रस्तुत करता है।
मैंने जिस क्षेत्र में रहता हूँ, उसके बारे में गीत नहीं गाया है, इसके लिए मुझे खेद है।
जब नीरस सर्दियों से ऊब की भावना झलकने लगी।
आपको याद होगा—यह वही कविता है जो इस प्रकार शुरू होती है:
आज की वो कुंवारी, जीवंत और खूबसूरत...
अफसोस, आज का दिन न तो पवित्र है और न ही सुंदर। लेकिन जो लोग यह जानते हैं, जैसा कि मैं जानता हूँ, कि वे बहुत जल्द इसे एक सहनीय 'कल' में बदल देंगे, वे स्वयं शायद ही कभी सहनीय होते हैं। जहाँ

तक रोल्स रॉयस की बात है, तो यह उसी कवि की उन अन्य पंक्तियों के अधिक योग्य है जिन्हें आपने कहा था कि आप समझ नहीं पाए।
अगर मैं खुश नहीं हूँ तो मुझे बताएँ
केंद्रों पर गर्जना और माणिक
हवा में यह देखना कि यह आग भेद रही है
बिखरे हुए राज्यों के साथ
जैसे पहिये को बैंगनी रंग में रंगना
मेरे रथों की एकमात्र शाम से।
अलविदा, मेरी प्यारी अल्बर्टीन, और विदाई की पूर्व संध्या पर हमने जो मनमोहक ड्राइव की, उसके लिए एक बार फिर धन्यवाद। मुझे उसकी बहुत सुखद यादें संजोकर हैं।
"पुनश्च: आपने सेंट-लूप (जिसके बारे में मुझे एक पल के लिए भी विश्वास नहीं है कि वह टूरेन में है) द्वारा आपकी चाची को दिए गए कथित सुझावों के बारे में जो बताया है, उसका मैं कोई जिक्र नहीं कर रहा हूँ। यह बिल्कुल शर्लक होम्स की कहानी जैसा है। आप मुझे किसलिए समझते हैं?"
निःसंदेह, जैसा कि मैंने पहले अल्बर्टीन से कहा था: "मैं तुमसे प्यार नहीं करता," ताकि वह मुझसे प्यार करे; "जब मैं लोगों से नहीं मिलता तो उन्हें भूल जाता हूँ," ताकि वह मुझसे अक्सर मिलने आए; "मैंने तुम्हें छोड़ने का फैसला कर लिया है," ताकि बिछड़ने का कोई ख्याल ही न आए, अब इसलिए कि मैं पूरी तरह से दृढ़ था कि उसे एक सप्ताह के भीतर वापस आना ही होगा, मैंने उससे कहा: "हमेशा के लिए अलविदा"; इसलिए कि मैं उससे फिर से मिलना चाहता था, मैंने उससे कहा: "मुझे लगता है कि तुमसे मिलना खतरनाक होगा"; इसलिए कि उससे अलग रहना मुझे मृत्यु से भी बदतर लग रहा था, मैंने उसे लिखा: "तुम सही थीं, हम साथ में दुखी ही रहेंगे।" अफसोस, यह झूठा पत्र, जिसे मैंने यह दिखाने के लिए लिखा था कि मैं उस पर निर्भर

नहीं हूँ और साथ ही कुछ ऐसी बातें कहने का आनंद लेने के लिए जो केवल मुझमें ही भावनाएँ जगा सकती थीं, उसमें नहीं, मुझे शुरू से ही यह अनुमान लगा लेना चाहिए था कि इसका परिणाम नकारात्मक हो सकता है, यानी ऐसा जवाब जो मेरी कही हुई बात की पुष्टि करे; यह वास्तव में संभव था, क्योंकि अगर अल्बर्टीन अपनी बुद्धि से कम भी होती, तो भी उसे एक पल के लिए भी संदेह नहीं होता कि मैंने उससे जो कहा वह असत्य था। वास्तव में, इस पत्र में व्यक्त किए गए अपने इरादों पर विचार किए बिना, केवल इसे लिखना ही, भले ही सेंट-लूप का हस्तक्षेप न हुआ होता, उसके लिए यह साबित करने के लिए पर्याप्त था कि मैं उसकी वापसी चाहता था और उसे मुझे और अधिक गहराई से अपने जाल में फंसाने के लिए प्रेरित करता। फिर, नकारात्मक उत्तर की संभावना को देखते हुए, मुझे यह भी अनुमान लगा लेना चाहिए था कि यह उत्तर अल्बर्टीन के लिए मेरे प्रेम को पूरी तीव्रता से पुनर्जीवित कर देगा। और मुझे अपना पत्र भेजने से पहले ही खुद से यह पूछना चाहिए था कि अगर अल्बर्टीन उसी लहजे में जवाब देती और वापस आने से इनकार कर देती, तो क्या मैं अपने दुःख पर इतना काबू रख पाता कि चुप रहूँ, उसे "वापस आ जाओ" का टेलीग्राम न भेजूँ, या कोई और संदेशवाहक न भेजूँ, क्योंकि उसे यह लिखने के बाद कि हम दोबारा नहीं मिलेंगे, यह स्पष्ट हो जाता कि मैं उसके बिना नहीं रह सकता, और वह पहले से भी अधिक दृढ़ता से इनकार कर देती, जिसके बाद मैं अपने दुःख को एक पल भी सहन न कर पाता और उससे मिलने चला जाता, और शायद मुझे अंदर आने से मना कर दिया जाता। और निस्संदेह, तीन बड़ी गलतियों के बाद, यह सबसे बुरी गलती होती, जिसके बाद उसके घर के सामने आत्महत्या करने के अलावा कोई चारा नहीं बचता। लेकिन मनोरोगी दुनिया की भयावह संरचना ने यह तय कर दिया है कि अनाड़ीपन भरा कार्य, वह कार्य

जिससे हमें अत्यंत सावधानी से बचना चाहिए था, वही कार्य हमें शांत करेगा, वह कार्य जो परिणाम जानने से पहले ही हमारे सामने आशा के नए द्वार खोल देगा और अस्वीकृति से उत्पन्न असहनीय पीड़ा से क्षण भर के लिए हमें राहत देगा। परिणामस्वरूप, जब पीड़ा असहनीय हो जाती है, तो हम पत्र लिखने, किसी को मध्यस्थता के लिए भेजने, स्वयं जाकर यह साबित करने की भूल में पड़ जाते हैं कि हम अपनी प्रिय महिला के बिना नहीं रह सकते। लेकिन मैंने इन सब बातों का पूर्वाभास नहीं किया था। मुझे तो अपने पत्र का संभावित परिणाम इसके विपरीत यह लग रहा था कि अल्बर्टीन तुरंत मेरे पास लौट आएगी। और इसलिए, इस परिणाम के बारे में सोचते हुए, मुझे पत्र लिखने में बहुत आनंद आया। लेकिन साथ ही, पत्र लिखते समय मेरी आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे; कुछ हद तक, शुरू में, ठीक उसी तरह जैसे उस दिन हुआ था जब मैंने अलगाव का दिखावा किया था, क्योंकि वे शब्द मेरे लिए उस विचार का प्रतिनिधित्व करते थे जिसे वे व्यक्त कर रहे थे, भले ही वे विपरीत दिशा में निर्देशित थे (झूठ बोलकर क्योंकि मेरे अहंकार ने मुझे यह स्वीकार करने से रोक दिया था कि मैं प्यार में हूँ), फिर भी उनमें दुख का अपना भार था। लेकिन इसलिए भी क्योंकि मुझे लगा कि उस विचार में सच्चाई का अंश है।
चूंकि मुझे लग रहा था कि इस पत्र का असर निश्चित है, इसलिए मुझे इसे भेजने का पछतावा होने लगा। जैसे ही मैंने अल्बर्टीन की वापसी (जो कि स्वाभाविक ही थी) की कल्पना की, वैसे ही वे सभी कारण जो हमारे विवाह को मेरे लिए विनाशकारी बना रहे थे, पूरी ताकत से वापस आ गए। मुझे उम्मीद थी कि वह वापस आने से इनकार कर देगी। मैं यह हिसाब लगाने में लगा था कि मेरी स्वतंत्रता, मेरा पूरा भविष्य उसके इनकार पर निर्भर है, कि मैंने उसे पत्र लिखकर

जाए और वह अवांछित प्राणी हमसे दूर हो जाए, तो हम सहन नहीं कर पाते। लेकिन क्या फ्रेड्रे की कहानी में ये दोनों स्थितियाँ एक साथ नहीं मिलतीं? हिप्पोलिटे जाने ही वाला है। फ्रेड्रे, जिसने तब तक उसकी शत्रुता को मोल लेने का ध्यान रखा था, अंतरात्मा की झिझक के कारण कहती है, या यूँ कहें कि कवि उससे कहलवाता है, क्योंकि वह परिणामों का अनुमान नहीं लगा सकती और महसूस करती है कि उसे प्यार नहीं किया जाता, फ्रेड्रे अब इस स्थिति को सहन नहीं कर सकती। वह उसके पास अपने प्यार का इज़हार करने आती है, और यही वह दृश्य था जिसे मैंने अपने मन में बार-बार दोहराया था: कहते हैं कि जल्दी चले जाने से आप हमसे दूर हो जाते हैं... निःसंदेह हिप्पोलिटे के प्रस्थान का यह कारण, हम मान सकते हैं, थेसी की मृत्यु की तुलना में कम निर्णायक है। और इसी प्रकार, कुछ पंक्तियों के बाद, जब फ्रेड्रे क्षण भर के लिए यह दिखावा करती है कि उसे गलत समझा गया है:
क्या मैंने अपनी प्रतिष्ठा के प्रति सारी चिंता खो दी है?
हम यह मान सकते हैं कि इसका कारण यह है कि हिप्पोलिटे ने उसकी घोषणा को अस्वीकार कर दिया है।
महोदया, क्या आप भूल गई हैं?
क्या आप जानते हैं कि थीसियस मेरे पिता हैं और वह आपके पति हैं?
लेकिन अगर परम सुख के उस क्षण में फ्रेड्रे को भी यही एहसास न होता कि इसका कोई महत्व नहीं है, तो यह आक्रोश उत्पन्न न होता। जबकि, जैसे ही उसे पता चलता है कि यह प्रेम संबंध पूर्ण नहीं होने वाला है, कि हिप्पोलिटे को लगता है कि उसने उसे गलत समझा है और वह माफी मांगता है, तो ठीक वैसे ही जैसे मैंने फ्रांस्वा को अपना पत्र वापस देने का फैसला किया था, वह भी यही सोचती है कि

इनकार तो हिप्पोलिटे की तरफ से ही आएगा, और वह उसके जवाब पर सब कुछ दांव पर लगा देती है।
आह! निर्दयी, तुमने मेरी बातें बहुत ज्यादा सुन ली हैं।
और इस दृश्य में कुछ भी ऐसा नहीं है, यहाँ तक कि वह कठोरता भी नहीं जिसके साथ, जैसा कि मुझे बताया गया था, स्वान ने ओडेट के साथ व्यवहार किया था, या मैंने स्वयं अल्बर्टीन के साथ व्यवहार किया था, एक कठोरता जिसने मूल प्रेम के स्थान पर दया, भावना, और अभिव्यक्ति की आवश्यकता से बना एक नया प्रेम स्थापित किया, जो कि पूर्व प्रेम का ही एक रूप है।
तुम मुझसे और भी नफरत करते थे, लेकिन मैंने तुम्हें कम प्यार नहीं किया।
आपकी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं ने आपको और भी नया आकर्षण प्रदान किया।
यह बात सिद्ध करती है कि फ्रेड्रे के लिए 'अपनी प्रसिद्धि का विचार' सबसे महत्वपूर्ण नहीं था, क्योंकि यदि उसे उसी क्षण यह पता न चलता कि हिप्पोलिटे, अरिसी से प्रेम करता है, तो वह हिप्पोलिटे को क्षमा कर देती और ओएनोन की सलाह अनसुनी कर देती। इस प्रकार, ईर्ष्या, जो प्रेम में समस्त सुख के ह्रास के समान है, प्रतिष्ठा की किसी भी हानि से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। इसी कारण वह ओएनोन (जो कि उसके स्वयं के निम्नतम पक्ष का ही एक नाम है) को हिप्पोलिटे की निंदा करने देती है, बिना उसकी रक्षा का भार स्वयं उठाए, और इस प्रकार उस व्यक्ति को, जो उससे प्रेम नहीं करता, ऐसे भाग्य की ओर भेज देती है जिसकी विपत्तियाँ उसके लिए कोई सांत्वना नहीं देतीं, क्योंकि हिप्पोलिटे की मृत्यु के तुरंत बाद वह स्वयं आत्महत्या कर लेती है। इस प्रकार, कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगा, जैसा कि बर्गोट ने कहा होगा, उन सभी

हैं, हम अपने भीतर एक ऐसी उम्मीद बनाए रखने की आशा रखें जो हमें पूर्ण निराशा में न डुबो दे, दूसरे शब्दों में कहें तो, हम उस पीड़ा को, जिससे हम पीड़ित हैं, अन्य रूपों में परिवर्तित करने का प्रयास करें, जो हमारे लिए कम कष्टदायक हों। लेकिन दूसरी प्रवृत्ति भी कम महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि अपने प्रयास की सफलता में विश्वास से उत्पन्न यह प्रवृत्ति, संतुष्ट इच्छा की उपस्थिति में हमें जल्द ही होने वाली निराशा का पूर्वाभास मात्र है, और इस बात का पछतावा है कि हमने अन्य रूपों को त्यागकर, जिन्हें अनिवार्य रूप से त्यागना पड़ा, अपने लिए खुशी का यह रूप चुन लिया है। मैंने अपना पत्र फ्रांस्वा को दिया था और उससे तुरंत जाकर उसे डाक से भेजने को कहा था। पत्र जाते ही, मैंने एक बार फिर अल्बर्टीन की वापसी को निकट भविष्य के रूप में सोचना शुरू कर दिया। इसने मेरे मन में कुछ सुखद छवियां जगा दीं, जिन्होंने उसकी वापसी से जुड़े खतरों को कुछ हद तक कम कर दिया। लंबे समय से खोया हुआ, उसका साथ होना मदहोश कर देने वाला था। समय बीतता है, और धीरे-धीरे झूठ में कही गई हर बात सच हो जाती है; मैंने गिलबर्ट के साथ यह बात अच्छी तरह सीख ली थी; जब मैं अपने आँसू नहीं रोक पाती थी, तब मैंने जिस उदासीनता का दिखावा किया था, वह आखिरकार हकीकत बन गई; धीरे-धीरे, जैसा कि मैंने गिलबर्ट को झूठ बोलकर बताया था, जो बाद में सच साबित हुआ, जीवन ने हमें अलग कर दिया। मुझे यह याद आया, मैंने खुद से कहा: "अगर अल्बर्टीन कुछ समय बीतने देती है, तो मेरा झूठ सच हो जाएगा। और अब जब सबसे बुरे पल बीत चुके हैं, तो क्या मुझे यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि वह इस महीने बिना वापस आए बीतने देगी? अगर वह वापस आती है, तो मुझे उस सच्चे जीवन को त्यागना पड़ेगा जिसका आनंद लेने की स्थिति में मैं अभी बिल्कुल भी नहीं हूँ, लेकिन समय बीतने के

साथ-साथ शायद वह मुझे आकर्षित करने लगे जबकि अल्बर्टीन की यादें धुंधली होती जा रही हैं।"
मैंने कहा था कि विस्मृति अपना काम करने लगी थी। लेकिन विस्मृति का एक प्रभाव यह भी था कि अल्बर्टीन के कई अप्रिय पहलू, उसके साथ बिताए उबाऊ पल, अब मेरी यादों में नहीं थे, और इसलिए अब वे कारण नहीं रहे कि मैं उसे अपने साथ न देखना चाहूँ, जैसा कि मैं तब चाहता था जब वह घर में थी। इससे अल्बर्टीन की छवि अधूरी रह गई, और अन्य महिलाओं के प्रति मेरे प्रेम ने इसे और भी गहरा बना दिया। उसके इस नए रूप में, विस्मृति जो मुझे हमारे अलगाव का आदी बना रही थी, ने मुझे एक अधिक आकर्षक अल्बर्टीन दिखाकर, उसके लौटने की लालसा और भी बढ़ा दी।
उसके जाने के बाद से, अक्सर जब मुझे पूरा यकीन होता था कि मेरी आँखों में आँसू का कोई निशान नहीं है, तो मैं फ्रांस्वा को फोन करके कहती थी: "हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि मैडमोजेल अल्बर्टाइन ने कुछ भी पीछे न छोड़ा हो। उसका कमरा तैयार रखना, उसके आने पर वह तैयार होना चाहिए।" या फिर बस इतना कहती थी: "अभी कुछ दिन पहले ही मैडमोजेल अल्बर्टाइन ने मुझसे कहा था, ज़रा सोचो, यह उसके जाने से एक दिन पहले की बात है..." मैं फ्रांस्वा की अल्बर्टाइन के जाने पर होने वाली अत्यधिक खुशी को कम करना चाहती थी, यह दिखाकर कि यह खुशी ज़्यादा देर तक नहीं रहेगी। मैं फ्रांस्वा को यह भी दिखाना चाहती थी कि मैं इस विदाई के बारे में बोलने से नहीं डरती, इसे खुलकर बताती हूँ—जैसे कुछ सेनापति मजबूरी में पीछे हटने को पूर्व-निर्धारित योजना के अनुसार रणनीतिक वापसी बताते हैं—कि यह मेरी अपनी योजना थी, एक ऐसा प्रसंग जिसका असली अर्थ मैंने फिलहाल छिपा रखा है, लेकिन इसका अल्बर्टाइन के साथ मेरी दोस्ती के अंत से कोई लेना-देना नहीं

है। उसका नाम बार-बार दोहराकर, मैं संक्षेप में, उस कमरे में उसकी थोड़ी सी मौजूदगी को हवा के झोंके की तरह लाना चाहता था, जहाँ उसके जाने से एक खालीपन छा गया था, जहाँ मैं साँस भी नहीं ले पा रहा था। इसके अलावा, हम अपने शोक को कम करने के लिए उसे अपनी रोज़मर्रा की बातचीत में शामिल कर लेते हैं, जैसे कि सूट ऑर्डर करना या खाना ऑर्डर करना।
जब फ्रांस्वा अल्बर्टीन का कमरा साफ कर रही थी, तो जिज्ञासावश उसने उस छोटी सी रोज़वुड की मेज का दराज खोला जिसमें मेरी मालकिन सोने से पहले उतारे हुए गहने रखा करती थीं। "ओह! महोदय, मैडम अल्बर्टीन अपनी अंगूठियां लेना भूल गई हैं, उन्होंने उन्हें दराज में ही छोड़ दिया है।" मेरा पहला विचार था: "हमें उन्हें उनके पीछे भेजना चाहिए।" लेकिन इससे ऐसा लगता कि मुझे उनके लौटने पर संदेह है। "ठीक है," मैंने कुछ पल चुप रहने के बाद उत्तर दिया, "उन्हें भेजने का कोई फायदा नहीं है क्योंकि वह इतनी जल्दी वापस आ रही हैं। मुझे दे दीजिए, मैं इस बारे में सोच लूंगा।" फ्रांस्वा ने मुझे अंगूठियां देते समय थोड़ी हिचकिचाहट दिखाई। वह अल्बर्टीन से नफरत करती थी, लेकिन मुझे अपने जैसा समझते हुए, उसे लगा कि मेरी मालकिन की लिखावट में लिखा पत्र मुझे देने से पहले उसे खोलने का खतरा रहता है। मैंने अंगूठियां ले लीं। "महाशय, इन्हें खोने से सावधान रहें," फ्रांस्वा ने कहा, "ये कितनी खूबसूरत हैं! मुझे नहीं पता कि ये उसे किसने दीं, महाशय ने दीं या किसी और ने, लेकिन मुझे लगता है कि ये किसी अमीर और अच्छे स्वाद वाले व्यक्ति ने दी होंगी!" "मैंने नहीं दीं," मैंने उसे आश्वस्त किया, "इसके अलावा, ये दोनों एक ही व्यक्ति से नहीं मिली हैं, एक उसकी चाची ने दी थी और दूसरी उसने खुद खरीदी थी।" "एक ही व्यक्ति से नहीं!" फ्रांस्वा

को यह यकीन दिला लेते हैं कि कोई अजनबी हमें करोड़ों की दौलत दे जाएगा, मैंने अल्बर्टीन को अपनी बाहों में कल्पना की, वह मुझे कुछ शब्दों में समझा रही थी कि उसने दूसरी अंगूठी उसकी कारीगरी की समानता के कारण खरीदी थी, कि उस पर अपने नाम के पहले अक्षर उसने ही खुदवाए थे। लेकिन यह स्पष्टीकरण अभी भी कमजोर था, इसे अभी तक मेरे मन में अपने सकारात्मक अर्थ को गहराई से समझने का समय नहीं मिला था, और मेरा दुख इतनी जल्दी शांत नहीं हो सका। और मैंने सोचा कि बहुत से पुरुष जो अपने दोस्तों से कहते हैं कि उनकी प्रेमिकाएँ उनके प्रति बहुत दयालु हैं, उन्हें भी इसी तरह की पीड़ा सहनी पड़ती होगी। इस प्रकार वे दूसरों से और स्वयं से झूठ बोलते हैं। वे पूरी तरह झूठ नहीं बोलते; वे स्त्री के साथ सचमुच सुखद समय बिताते हैं; लेकिन ज़रा सोचिए कि उनकी प्रेमिकाएँ उनके दोस्तों के सामने जो दयालुता दिखाती हैं और जिसके कारण वे डींग मारते हैं, और उनकी प्रेमिकाएँ जब वे अकेले होते हैं तो जो दयालुता दिखाती हैं और जिसके कारण उनके प्रेमी उन्हें आशीर्वाद देते हैं, उन अनगिनत पलों को छुपा देती हैं जिनमें प्रेमी ने पीड़ा सहन की है, संदेह किया है, और सच्चाई जानने के लिए हर जगह व्यर्थ खोज की है! इन्हीं पीड़ाओं से हम प्रेम का सुख जोड़ते हैं, एक स्त्री की सबसे तुच्छ बातों में आनंद लेते हैं, जिन्हें हम जानते हैं कि वे तुच्छ हैं, लेकिन फिर भी हम उन्हें उसकी सुगंध से सराबोर कर देते हैं। इस क्षण मुझे अल्बर्टीन की सुगंध को याद करके भी सूंघने में कोई आनंद नहीं मिल रहा था। स्तब्ध होकर, दोनों अंगूठियों को हाथ में पकड़े हुए, मैं उस निर्दयी चील को घूर रहा था जिसकी चोंच मेरे दिल को चीर रही थी, जिसके पंख, उच्च नक्काशी के साथ, मेरी प्रेमिका पर मेरे भरोसे को छीन रहे थे, जिसके पंजों में मेरा पीड़ादायक मन

एक पल के लिए भी उस अजनबी के बारे में बार-बार उठने वाले सवालों से बच नहीं पा रहा था जिसका नाम चील निस्संदेह प्रतीक थी, लेकिन मुझे उसे समझने नहीं दे रही थी, जिसे उसने निस्संदेह अतीत में प्यार किया था, और जिसे उसने निस्संदेह कुछ समय पहले फिर से देखा था, क्योंकि उसी सुखद, अंतरंग दिन, जब हम साथ में जंगल से गुजर रहे थे, मैंने पहली बार दूसरी अंगूठी देखी थी, जिस पर चील अपनी चोंच को माणिक के चमकीले रक्त में डुबोती हुई प्रतीत हो रही थी।
लेकिन अगर सुबह, दोपहर और रात, मैं अल्बर्टीन के जाने के गम से कभी मुक्त नहीं होता था, तो इसका मतलब यह नहीं था कि मैं सिर्फ उसी के बारे में सोच रहा था। एक तो, समय के साथ-साथ उसका आकर्षण उन चीजों पर भी हावी होता चला गया जो उससे पूरी तरह अलग हो गई थीं, लेकिन फिर भी उसी भावना से भरी हुई थीं जो वह मुझे देती थी। अगर कोई बात मुझे इनकार्विल या वर्दुरिन्स, या लीया की किसी नई भूमिका की याद दिलाती, तो दुख का सैलाब मुझे घेर लेता। दूसरी बात, जिसे मैं खुद अल्बर्टीन के बारे में सोचना कहता था, वह असल में यह सोचना था कि मैं उसे कैसे वापस ला सकता हूँ, कैसे उससे मिल सकता हूँ, कैसे जान सकता हूँ कि वह क्या कर रही है। नतीजा यह हुआ कि अगर उस निरंतर पीड़ा के घंटों के दौरान, मेरे दुखों के साथ आने वाली छवियों को चित्रित करने के लिए कोई चित्रकार मौजूद होता, तो आपको गैरे डी'ओर्से के चित्र, श्रीमती को भेंट किए गए बैंक नोटों के चित्र दिखाई देते। सेंट-लूप के उस चित्र में बोंटेम्प्स को एक टेलीग्राफ कार्यालय की ढलानदार मेज पर झुके हुए दिखाया गया है, जहाँ वे मेरे लिए एक टेलीग्राम लिख रहे थे, अल्बर्टाइन का चित्र कभी नहीं। ठीक वैसे ही जैसे हमारे पूरे जीवन में, हमारा अहंकार हमेशा उन वस्तुओं को अपने सामने देखता

है जो हमारे लिए रुचिकर होती हैं, लेकिन उस अहंकार को कभी ग्रहण नहीं करता जो निरंतर उनका अवलोकन करता रहता है, उसी प्रकार हमारी क्रियाओं को निर्देशित करने वाली इच्छा उनकी ओर उतरती है, लेकिन स्वयं में वापस नहीं लौटती, चाहे वह अत्यधिक उपयोगितावादी होने के कारण क्रिया में कूद पड़ती है और उसके सभी ज्ञान को नकार देती है, या इसलिए कि हम अतीत की निराशाओं की भरपाई के लिए भविष्य की ओर देख रहे हैं, या इसलिए कि हमारे मन की जड़ता उसे आत्मनिरीक्षण की कठिन ढलान पर चढ़ने के बजाय कल्पना की आसान ढलान पर धकेलती है। दरअसल, संकट के उन क्षणों में, जब हम अपना सब कुछ दांव पर लगा देते हैं, जिस व्यक्ति पर हमारा जीवन निर्भर करता है, वह हमारे जीवन में अपने विशाल स्थान को जितना अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट करता है, उतना ही उस व्यक्ति की छवि धुंधली होती जाती है, यहाँ तक कि वह अदृश्य हो जाती है। हर चीज़ में हमें उसकी उपस्थिति का प्रभाव हमारी भावनाओं में दिखाई देता है; स्वयं, यानी कारण, हमें कहीं नहीं मिलती। इन दिनों मैं अल्बर्टीन की कोई छवि नहीं बना पा रहा था, यहाँ तक कि मुझे लगभग यह विश्वास हो गया था कि मैं उससे प्रेम नहीं करता, ठीक वैसे ही जैसे मेरी माँ, निराशा के उन क्षणों में जब वह मेरी दादी की कोई छवि नहीं बना पाती थी (केवल एक बार एक सपने में हुए संयोग से, जिसका महत्व उसने इतनी गहराई से महसूस किया कि उसने अपनी नींद में बची हुई सारी शक्ति का इस्तेमाल उसे लंबे समय तक याद रखने के लिए किया), खुद पर अपनी माँ के लिए पछतावा न करने का आरोप लगा सकती थी और वास्तव में लगाया भी, जिसकी मृत्यु उसके लिए एक गहरा आघात थी, लेकिन जिसके चेहरे उसकी स्मृति से ओझल हो गए थे।
मुझे ऐसा क्यों लगता कि अल्बर्टीन को महिलाओं में कोई दिलचस्पी नहीं थी? क्योंकि उसने कहा था, खासकर हाल ही में, कि उसे उनमें

अबाबीलों को दक्षिण की ओर उड़ते देखकर खुशी से यह निष्कर्ष निकालता है कि ठंड का मौसम निकट है। अंत में फ्रांस्वा चली गई, और जब मैंने यह सुनिश्चित कर लिया कि उसने दरवाजा बंद कर दिया है, तो मैंने चुपचाप, ताकि मैं चिंतित न दिखूँ, पत्र खोला, जिसमें निम्नलिखित लिखा था:
प्रिय, मेरे लिए इतनी अच्छी बातें कहने के लिए धन्यवाद। अगर आपको लगता है कि मैं किसी भी तरह से मदद कर सकता हूँ, तो मैं आपके आदेश पर रोल्स रॉयस को रद्द करने के लिए तैयार हूँ, जैसा कि मुझे पूरा यकीन है कि मैं कर सकता हूँ। आपको बस अपने एजेंट का नाम बता देना है। आप इन लोगों के झांसे में कैसे आ सकती हैं जिनका एकमात्र मकसद सामान बेचना है, और आप जो घर से बाहर ही नहीं निकलतीं, आपको मोटरकार की क्या ज़रूरत है? मुझे बहुत खुशी हुई कि आपको हमारी पिछली ड्राइव की सुखद याद है। आप निश्चिंत रहें कि मैं उस धुंधली रात में (क्योंकि रात हो रही थी और हम अलग होने वाले थे) उस ड्राइव को कभी नहीं भूलूँगा और वह मेरी यादों से तभी मिटेगी जब अंधेरा पूरी तरह से छा जाएगा।
मुझे लगा कि यह आखिरी वाक्य महज़ एक वाक्य था और अल्बर्टीन अपनी मृत्यु तक इस यात्रा की कोई सुखद स्मृति नहीं रख सकती थी, जिससे उसे कोई आनंद नहीं मिला था क्योंकि वह मुझे छोड़कर जाने के लिए बेचैन थी। लेकिन जब मैंने बालबेक की उस साइकिल सवार, गोल्फर के बारे में सोचा, जिसने मुझसे मिलने से पहले एस्तेर के अलावा कुछ नहीं पढ़ा था, तो मैं यह देखकर भी प्रभावित हुआ कि वह कितनी प्रतिभाशाली थी और मेरा यह सोचना कितना सही था कि मेरे घर में उसने नए गुण प्राप्त किए थे, जिन्होंने उसे अलग और अधिक संपूर्ण बनाया था। और इस प्रकार, बालबेक में मैंने उससे जो शब्द कहे थे: "मुझे लगता है कि मेरी दोस्ती तुम्हारे लिए मूल्यवान होगी, कि

मैं ही वह व्यक्ति हूँ जो तुम्हें वह दे सकता है जिसकी तुम्हें कमी है"—मैंने यह एक तस्वीर पर लिखा था जो मैंने उसे दी थी—"इस विश्वास के साथ कि मैं ईश्वर की कृपा कर रहा हूँ"—ये शब्द, जो मैंने बिना विश्वास किए कहे थे और केवल इसलिए कि उसे मेरी संगति में कुछ लाभ मिले जो किसी भी संभावित ऊब से अधिक हो, ये शब्द भी सच साबित हुए। इसी तरह, जब मैंने उससे कहा कि मैं उससे प्यार में पड़ने के डर से उसे देखना नहीं चाहता, तो मैंने ऐसा इसलिए कहा था क्योंकि इसके विपरीत मैं जानता था कि बार-बार मिलने से मेरा प्यार ठंडा पड़ जाता था और जुदाई उसे फिर से जगा देती थी, लेकिन वास्तव में हमारे बार-बार मिलने से उसके प्रति एक ऐसी आवश्यकता पैदा हो गई थी जो बालबेक में पहले कुछ हफ्तों के मेरे प्यार से कहीं अधिक मजबूत थी।

अल्बर्टिन के खत से हालात में कोई सुधार नहीं हुआ। उसने मुझसे सिर्फ़ मेरे एजेंट को खत लिखने के बारे में बात की। इस हालात से निकलना, बात को जल्दी खत्म करना ज़रूरी था, और मेरे मन में यह विचार आया। मैंने तुरंत आंद्रे को एक खत भेजा जिसमें मैंने उसे बताया कि अल्बर्टिन अपनी मौसी के घर है, कि मैं बहुत अकेला महसूस कर रहा हूँ, कि अगर वह आकर कुछ दिनों के लिए मेरे साथ रहे तो मुझे बहुत खुशी होगी, और क्योंकि मैं कोई राज़ नहीं रखना चाहता था, इसलिए मैंने उससे गुज़ारिश की कि वह अल्बर्टिन को इस बारे में बता दे। और उसी समय मैंने अल्बर्टिन को इस तरह लिखा जैसे मुझे अभी तक उसका खत मिला ही न हो: "मेरी प्यारी, मुझे माफ़ करना कि मैंने कुछ ऐसा किया जिसे तुम बहुत अच्छे से समझोगी; मुझे राज़ रखने से इतनी नफ़रत है कि मैंने तय किया कि तुम्हें यह बात उसके और मेरे, दोनों के ज़रिए पता चले। तुम्हारे मेरे घर

में इतने प्यारे तरीके से रहने की वजह से मुझे अकेले न रह पाने की बुरी आदत पड़ गई है। क्योंकि हमने तय कर लिया है कि तुम वापस नहीं आओगी, तो मेरे मन में यह ख्याल आया कि तुम्हारी जगह लेने के लिए सबसे सही इंसान आंद्रे होगी—क्योंकि वह मेरी ज़िंदगी में सबसे कम बदलाव लाएगी और मुझे तुम्हारी सबसे ज़्यादा याद दिलाएगी—और इसलिए मैंने उसे यहाँ बुलाया है। ताकि यह सब कुछ बहुत अचानक न लगे, मैंने उससे सिर्फ़ कुछ दिनों के लिए आने को कहा है, लेकिन हम दोनों के बीच की बात है, मुझे पूरा यकीन है कि इस बार यह हमेशा के लिए होगा। क्या तुम्हें नहीं लगता कि मैं सही हूँ? तुम जानती हो कि बालबेक में तुम्हारी लड़कियों का छोटा सा ग्रुप हमेशा से वह सामाजिक इकाई रहा है जिसका मुझ पर सबसे ज़्यादा असर पड़ा है, और जिसमें शामिल होकर मुझे आखिरकार सबसे ज़्यादा खुशी मिली। इसमें कोई शक नहीं कि यही असर आज भी महसूस होता है। क्योंकि हमारी फितरत की जानलेवा बेमेलता और ज़िंदगी की बदकिस्मती ने यह तय कर दिया है कि मेरी प्यारी अल्बर्टिन कभी मेरी पत्नी नहीं बन सकती, तो मेरा मानना है कि फिर भी मुझे एक पत्नी मिलेगी—जो शायद उससे कम प्यारी होगी, लेकिन जिसकी फितरत मुझसे ज़्यादा मेल खाएगी, और जो शायद मेरे साथ ज़्यादा खुश रह पाएगी—और वह आंद्रे होगी।" लेकिन जब मैंने यह खत पोस्ट कर दिया, तो अचानक मेरे मन में यह शक पैदा हुआ कि जब अल्बर्टिन ने मुझे लिखा था: "अगर तुमने खुद मुझे खत लिखा होता, तो मैं वापस आने में बहुत खुश होती," तो उसने यह बात सिर्फ इसलिए कही थी क्योंकि मैंने उसे खत नहीं लिखा था; और अगर मैंने ऐसा किया होता, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे यह जानकर खुशी होती कि एंड्री मेरे साथ रह रही है, और वह उसे मेरी पत्नी मानकर खुश होती—बशर्ते कि वह खुद आज़ाद रहे—क्योंकि अब वह, पिछले एक

हफ्ते की तरह, पेरिस में छह महीने से ज़्यादा समय तक मैंने जो हर पल की सावधानियाँ बरती थीं, उन्हें बेकार साबित करते हुए, खुद को अपनी बुराइयों के हवाले कर सकती थी, और वह सब कर सकती थी जिससे मैंने उसे पल-पल रोका था। मैंने खुद से कहा कि शायद वह वहाँ अपनी आज़ादी का गलत इस्तेमाल कर रही है। बेशक, यह विचार जो मैंने बनाया, मुझे दुखद लगा, लेकिन यह एक आम विचार ही रहा; इसने मुझे कोई खास ब्योरा नहीं दिखाया। और, उन अनगिनत संभावित प्रेमिकाओं की कल्पना करने की छूट देकर, इसने मुझे उनमें से किसी एक पर भी रुककर सोचने से रोक दिया। इसने मेरे मन को एक तरह की लगातार चलने वाली गति में उलझाए रखा—जो दर्द से खाली तो नहीं थी, लेकिन उस दर्द में एक ऐसा रंग था जिसे किसी ठोस तस्वीर के न होने ने सहने लायक बना दिया था। हालाँकि, जब सेंट-लूप आया, तो यह दर्द सहने लायक नहीं रहा, बल्कि बेहद भयानक हो गया। इससे पहले कि मैं यह बताऊँ कि सेंट-लूप द्वारा दी गई जानकारी ने मुझे इतना दुखी क्यों किया, मुझे एक घटना के बारे में बताना चाहिए— एक ऐसी घटना जिसे मैं उसके आने से ठीक पहले की मानता हूँ, और जिसकी याद ने बाद में मुझे इतना परेशान किया कि उसने—अगर सेंट-लूप के साथ हुई बातचीत से मुझ पर पड़े दर्दनाक असर को पूरी तरह खत्म नहीं भी किया, तो भी—उस बातचीत के व्यावहारिक असर को कम ज़रूर कर दिया। वह घटना कुछ इस प्रकार थी। सेंट-लूप से मिलने की बेताबी में, मैं सीढ़ियों पर उसका इंतज़ार कर रहा था (ऐसा मैं तब नहीं कर पाता अगर मेरी माँ घर पर होतीं, क्योंकि उन्हें यह बात बिल्कुल पसंद नहीं थी—'खिड़की से बात करने' के बाद, उन्हें सबसे ज़्यादा नफ़रत इसी बात से थी)—तभी मैंने ये बातें सुनीं: "क्या तुम्हारा मतलब यह है कि तुम्हें यह नहीं पता कि जिस आदमी को तुम पसंद नहीं करते, उसे नौकरी से कैसे निकलवाया जाए? यह मुश्किल

नहीं है। तुम्हें बस वे चीज़ें छिपा देनी हैं जो उसे अंदर लानी होती हैं। फिर, जब उन्हें जल्दी होगी और वे उसे बुलाने के लिए घंटी बजाएँगे, तो उसे कुछ भी नहीं मिलेगा, और वह घबरा जाएगा। मेरी मौसी उस पर बहुत गुस्सा होंगी, और तुमसे कहेंगी: 'अरे, यह आदमी कर क्या रहा है?' जब वह अपना चेहरा दिखाएगा, तो हर कोई गुस्से से आग-बबूला होगा, और उसके पास वह चीज़ नहीं होगी जिसकी ज़रूरत है। जब ऐसा चार-पाँच बार हो जाएगा, तो तुम पक्का मान लेना कि वे उसे नौकरी से निकाल देंगे—खासकर तब, जब तुम इस बात का ध्यान रखो कि जिन चीज़ों को उसे साफ़-सुथरा लाना है, उन्हें तुम गंदा कर दो, और इस तरह की दूसरी चीज़ें भी करो।" मैं हैरानी से अवाक रह गया, क्योंकि ये क्रूर, मक्कारी भरी बातें सेंट-लूप की आवाज़ में कही गई थीं। मैंने हमेशा उसे इतना अच्छा, इतना कोमल-हृदय इंसान माना था कि इन बातों का मुझ पर वैसा ही असर हुआ, मानो वह किसी नाटक में शैतान का किरदार निभा रहा हो: ऐसा लग ही नहीं रहा था कि वह अपनी असली पहचान में बोल रहा है। "लेकिन आखिर इंसान को अपनी रोज़ी-रोटी तो कमानी ही पड़ती है," दूसरे आदमी ने कहा— जिसे मैंने तब देखा, और जो डचेस डी गुएरमांटेस के नौकरों में से एक था। "तुम्हें इससे क्या फ़र्क पड़ता है—जब तक तुम्हारा अपना काम ठीक चल रहा है?" सेंट-लूप ने बेपरवाही से जवाब दिया। "तुम्हारे लिए यह और भी मज़ेदार होगा, कि तुम्हारे पास एक 'बलि का बकरा' हो। तुम आसानी से उसकी वर्दी पर स्याही गिरा सकती हो, ठीक उसी समय जब उसे किसी बड़ी डिनर-पार्टी में जाकर इंतज़ार करना हो; और उसे एक पल के लिए भी चैन से न रहने देना, जब तक कि वह खुद ही नौकरी छोड़ने का नोटिस देने के लिए राज़ी न हो जाए। खैर, मैं उसके काम में अड़ंगा डाल सकती हूँ; मैं अपनी मौसी से कहूँगी कि मैं तुम्हारी उस जैसे बड़े बेवकूफ़ और गंदे आदमी के साथ काम

करने की हिम्मत की तारीफ़ करती हूँ।" मैं सामने आ गया; सेंट-लूप मुझसे मिलने आया, लेकिन उस पर मेरा भरोसा हिल गया था, क्योंकि मैंने उसे जिस तरह से बात करते सुना था, वह मेरे जाने-पहचाने अंदाज़ से बिल्कुल अलग था। और मैंने खुद से पूछा कि क्या कोई ऐसा इंसान, जो एक गरीब और बेसहारा आदमी के साथ इतनी बेरहमी से पेश आ सकता हो, उसने मैडम बोंटेम्प्स के पास अपने काम के दौरान, मेरे साथ भी कोई गद्दारी तो नहीं की? इस सोच ने मुझे सबसे ज़्यादा इस बात में मदद की कि मैं उसकी नाकामी को इस बात का सबूत न मानूँ कि उसके जाने के बाद मैं खुद भी कामयाब नहीं हो पाऊँगा। लेकिन जब तक वह मेरे साथ था, मैं फिर भी पुराने ज़माने के सेंट-लूप के बारे में, और खासकर उस दोस्त के बारे में सोच रहा था जो अभी-अभी मैडम बोंटेम्प्स के यहाँ से आया था। उसने यह कहकर बात शुरू की: "तुम्हें लगता है कि मुझे तुम्हें ज़्यादा बार फ़ोन करना चाहिए था, लेकिन मुझे हमेशा यही बताया गया कि तुम किसी काम में व्यस्त हो।" लेकिन जिस पल मेरा दर्द असहनीय हो गया, वह तब था जब उसने कहा: "जहाँ से मेरा पिछला टेलीग्राम छूटा था, वहीं से शुरू करता हूँ—एक तरह के छप्पर (shed) से गुज़रने के बाद, मैं घर के अंदर गया और एक लंबे गलियारे के आखिर में मुझे एक ड्राइंग-रूम में ले जाया गया।" इन शब्दों—छप्पर, गलियारा, ड्राइंग-रूम — को सुनते ही, और इससे पहले कि वह उन्हें पूरी तरह कह भी पाता, मेरा दिल बिजली के झटके से भी ज़्यादा तेज़ी से टूट गया; क्योंकि वह ताक़त जो एक सेकंड में कई बार पूरी धरती का चक्कर लगा लेती है, वह बिजली नहीं, बल्कि दर्द है। सेंट-लूप के जाने के बाद, मैं उन शब्दों—छप्पर, गलियारा, ड्राइंग-रूम—को अपने मन में बार-बार कैसे दोहराता रहा, और अपनी मर्ज़ी से उस सदमे को फिर से महसूस करता रहा! एक छप्पर में, एक लड़की दूसरी लड़की के साथ

लेट सकती है। और उस ड्राइंग-रूम में, कौन कह सकता था कि जब अल्बर्टाइन की मौसी वहाँ नहीं होती थीं, तो वह क्या करती थी? यह सब क्या था? क्या मैंने तब उस घर के बारे में सोचा था जिसमें वह रह रही थी—कि उसमें न तो कोई शेड होगा और न ही कोई ड्राइंग-रूम? नहीं, मैंने इसके बारे में बिल्कुल भी नहीं सोचा था, सिवाय एक धुंधली सी जगह के रूप में। शुरू में मुझे उस जगह की भौगोलिक पहचान जानकर बहुत तकलीफ़ हुई थी, जहाँ अल्बर्टिन थी। जब मुझे पता चला कि दो-तीन संभावित जगहों में से किसी एक में होने के बजाय, वह टूरेन में है, तो उसके दरबान के कहे उन शब्दों ने मेरे दिल पर—जैसे किसी नक्शे पर—उस जगह को अंकित कर दिया था, जहाँ मुझे अंततः तकलीफ़ झेलनी थी। लेकिन जब मैं इस विचार का आदी हो गया कि वह टूरेन के किसी घर में है, तो मैंने उस घर को कभी देखा नहीं था। मेरे मन में कभी भी ड्राइंग-रूम, शेड या गलियारे का वह भयानक विचार नहीं आया था—जो अब मुझे सेंट-लूप की आँखों की पुतलियों में साफ़ दिखाई दे रहा था; सेंट-लूप ने उन कमरों को देखा था—वे कमरे जिनमें अल्बर्टिन आती-जाती थी, अपनी ज़िंदगी जी रही थी—खास तौर पर वे ही कमरे, न कि अनगिनत संभावित कमरे जो एक-दूसरे को काटते रहते थे। 'शेड', 'गलियारा' और 'ड्राइंग-रूम' शब्दों को सुनकर मुझे अपनी उस बेवकूफ़ी का एहसास हुआ कि मैंने अल्बर्टिन को एक हफ़्ते के लिए इस मनहूस जगह पर छोड़ दिया था— एक ऐसी जगह जिसका अस्तित्व (केवल संभावना नहीं) मुझे अभी-अभी पता चला था। हाय! जब सेंट-लूप ने मुझे यह भी बताया कि उस ड्राइंग-रूम में उसने बगल वाले कमरे से किसी को ज़ोर-ज़ोर से गाते हुए सुना था, और वह गाने वाली अल्बर्टिन ही थी, तो मैंने हताशा के साथ महसूस किया कि—मुझसे पीछा छूट जाने के बाद—वह अब खुश थी! उसे अपनी आज़ादी वापस मिल गई थी। और मैं—जो यह सोच रहा था कि वह

आकर एंड्री की जगह ले लेगी! मेरा दुख सेंट-लूप पर गुस्से में बदल गया। "दुनिया में बस एक ही चीज़ थी जिसके लिए मैंने तुमसे मना किया था—कि उसे तुम्हारे आने के बारे में पता न चले।" "अगर तुम्हें लगता है कि यह आसान था! उन्होंने मुझे यकीन दिलाया था कि वह घर में नहीं है। ओह, मुझे अच्छी तरह पता है कि तुम मुझसे खुश नहीं हो; तुम्हारे टेलीग्राम देखकर ही मैं यह समझ गया था। लेकिन तुम मेरे साथ नाइंसाफ़ी कर रहे हो; मैंने वह सब कुछ किया जो मैं कर सकता था।" एक बार फिर आज़ाद होकर, उस पिंजरे से बाहर निकलकर—जहाँ घर पर रहते हुए मैं उसे अपने कमरे में बुलाए बिना ही दिनों-दिनों तक बंद रहता था—अल्बर्टिन ने मेरी नज़रों में अपना सारा महत्व फिर से पा लिया था; वह एक बार फिर वही इंसान बन गई थी जिसके पीछे हर कोई भागता था, शुरुआती दिनों की वह अद्भुत चिड़िया। "खैर, चलिए अब काम की बात पर आते हैं। जहाँ तक पैसे के सवाल की बात है, मुझे समझ नहीं आ रहा कि आपसे क्या कहूँ; मैं एक ऐसी महिला से बात कर रहा था जो मुझे इतनी ज़्यादा सिद्धांतवादी लगी कि मुझे डर था कि कहीं मेरी बात से उसे ठेस न पहुँच जाए। फिर भी, जब मैंने उससे पैसे की बात की, तो उसने मना नहीं किया। असल में, थोड़ी देर बाद उसने मुझसे कहा कि उसे यह देखकर बहुत अच्छा लगा कि हम एक-दूसरे को इतनी अच्छी तरह समझते हैं। और फिर भी, उसके बाद उसने जो कुछ भी कहा, वह इतना नाज़ुक और इतना सलीकेदार था कि मुझे यह मानना नामुमकिन सा लगा कि जब उसने कहा था, 'हम एक-दूसरे को इतनी अच्छी तरह समझते हैं,' तो उसका इशारा मेरे पैसे के प्रस्ताव की तरफ़ रहा होगा—क्योंकि, आख़िरकार, मैं तो एक घटिया इंसान की तरह बर्ताव कर रहा था।" "लेकिन शायद उसे यह एहसास ही नहीं हुआ कि आपका मतलब क्या था; हो सकता है उसने आपकी बात सुनी ही न हो। आपको अपना प्रस्ताव दोहराना चाहिए था, क्योंकि अगर आप

ऐसा करते, तो यकीनन आप यह बाज़ी जीत जाते।" "लेकिन जब आप यह कहते हैं कि हो सकता है उसने मेरी बात सुनी ही न हो, तो आपका मतलब क्या है? मैंने उससे ठीक वैसे ही बात की थी, जैसे मैं अभी आपसे बात कर रहा हूँ…"
"तुम्हारे लिए, वह न तो बहरी है और न ही पागल।" "और उसने कोई टिप्पणी नहीं की?" "बिल्कुल नहीं।" "तुम्हें वह प्रस्ताव दोहराना चाहिए था।" "दोहराने से तुम्हारा क्या मतलब है? जैसे ही हम मिले, मैंने देख लिया कि वह किस तरह की इंसान है; मैंने मन ही मन कहा कि तुमने गलती की है, कि तुम मुझे एक बहुत बड़ी भूल में फंसा रहे हो, और कि उसे इस तरह पैसे देने का प्रस्ताव देना बेहद मुश्किल होगा। फिर भी, तुम्हारी खातिर मैंने ऐसा किया, इस बात का पूरा यकीन होते हुए भी कि वह मुझे घर से बाहर निकाल देगी।" "लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। इसलिए, या तो उसने तुम्हारी बात सुनी नहीं थी और तुम्हें फिर से शुरुआत करनी चाहिए थी, या तुम उस विषय को आगे बढ़ा सकते थे।" "तुम कहते हो: 'उसने सुना नहीं,' क्योंकि तुम यहाँ पेरिस में थे; लेकिन, मैं फिर कहता हूँ, अगर तुम हमारी बातचीत के दौरान वहाँ मौजूद होते—जहाँ हमें टोकने वाली कोई आवाज़ नहीं थी—तो तुम देखते कि मैंने अपनी बात कितनी साफ़-साफ़ कही थी; यह मुमकिन ही नहीं है कि वह समझ न पाई हो।" "लेकिन, खैर, क्या उसे अब पूरा यकीन हो गया है कि मैं हमेशा से उसकी भतीजी से शादी करना चाहता था?" "नहीं, जहाँ तक इस बात का सवाल है—अगर तुम मेरी राय जानना चाहते हो—तो उसे इस बात पर यकीन नहीं हुआ कि लड़की से शादी करने का तुम्हारा कोई इरादा भी है। उसने मुझे बताया कि तुमने खुद ही अपनी भतीजी को यह बताया था कि तुम उसे छोड़ देना चाहते हो। मुझे सच में नहीं पता कि अब उसे इस बात का यकीन हुआ है या नहीं कि तुम शादी करना चाहते हो।" इस

बात से मुझे थोड़ी राहत मिली, क्योंकि इससे मुझे यह एहसास हुआ कि मेरी बेइज्ज़ती उतनी ज़्यादा नहीं हुई थी—और इसलिए, इस बात की गुंजाइश अब भी बाकी थी कि कोई मुझसे प्यार करे, और मैं कोई ठोस कदम उठाने के लिए ज़्यादा आज़ाद महसूस कर सकूँ। फिर भी, मैं अंदर ही अंदर बहुत ज़्यादा परेशान था। "मुझे अफ़सोस है, क्योंकि मैं देख सकता हूँ कि तुम खुश नहीं हो।" "हाँ, तुम्हारी इस मेहरबानी से मेरा दिल भर आया है; मैं तुम्हारा एहसानमंद हूँ; लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि तुम शायद..." "मैंने अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश की। कोई और इंसान इससे ज़्यादा—या यहाँ तक कि इतना भी— नहीं कर सकता था।" "किसी और को भेजने की कोशिश करो।" "नहीं, असल में, अगर मुझे पता होता, तो मैं तुम्हें नहीं भेजता; लेकिन तुम्हारी कोशिश नाकाम रही, इसलिए मैं अब दूसरी कोशिश नहीं कर सकता।" मैंने उस पर खूब इल्ज़ाम लगाए: उसने मेरी मदद करने की कोशिश की थी, पर कामयाब नहीं हो पाया। सेंट-लूप जब घर से बाहर निकल रहा था, तो उसे कुछ लड़कियाँ अंदर आते हुए मिलीं। मैंने पहले भी कई बार सोचा था कि अल्बर्टिन देश में दूसरी लड़कियों को जानती होगी; लेकिन यह पहली बार था जब मुझे इस सोच से इतनी तकलीफ़ हुई। हमें सच में यह मानने पर मजबूर होना पड़ता है कि कुदरत ने हमारे दिमाग को एक ऐसा 'प्राकृतिक इलाज' बनाने की ताकत दी है, जो हमारी बनाई हुई गलतफहमियों को तुरंत, बिना किसी रुकावट और बिना किसी खतरे के खत्म कर देता है। लेकिन सेंट-लूप को जो लड़कियाँ मिली थीं, उनसे मुझे बचाने वाला कोई 'इलाज' मेरे पास नहीं था। ये सारी बातें—क्या ये ठीक वही नहीं थीं जो मैं अल्बर्टिन के बारे में हर किसी से जानना चाहता था? क्या मैं ही वह इंसान नहीं था जिसने सेंट-लूप से—जिसे उसके कर्नल ने वापस पेरिस बुला लिया था — मिन्नतें की थीं कि वह किसी भी कीमत पर आकर मुझसे मिले, ताकि

मैं ये बातें और अच्छे से जान सकूँ? तो फिर क्या मैं ही वह इंसान नहीं था जिसने इन बातों की चाहत की थी—या यूँ कहूँ कि मेरा भूखा दुख, जो इन बातों को खाकर और भी बड़ा और मज़बूत होना चाहता था? आखिर में, सेंट-लूप ने मुझे बताया कि उसे घर के पास ही एक जाना- पहचाना चेहरा देखकर बड़ी खुशी हुई—एक ऐसा चेहरा जिसने उसे बीते हुए कल की याद दिला दी। वह रैचेल की एक पुरानी सहेली थी—एक खूबसूरत अदाकारा जो उन दिनों उसी इलाके में छुट्टियाँ मना रही थी। और उस अदाकारा का नाम सुनते ही मैं खुद से कहने लगा: "शायद अल्बर्टिन उसी के साथ है।" बस इतना सोचना ही काफी था कि मैं अपनी आँखों के सामने अल्बर्टिन को देख सकूँ—भले ही वह किसी ऐसी औरत की बाहों में हो जिसे मैं जानता भी न हूँ—फिर भी वह मुस्कुरा रही हो और खुशी से उसका चेहरा दमक रहा हो। और आखिर, ऐसा सच क्यों नहीं हो सकता था? जब से मैं अल्बर्टिन को जानने लगा था, क्या मैंने कभी दूसरी औरतों के बारे में सोचने के लिए खुद को कोसा था? प्रिंसेस डी गुएरमांटेस से मेरी पहली मुलाकात की शाम को, जब मैं घर लौटा था, तो क्या मैं उसके बारे में कम और उस लड़की के बारे में ज़्यादा नहीं सोच रहा था जिसके बारे में सेंट-लूप ने मुझे बताया था—वह लड़की जो 'बदनाम घरों' (वेश्यालयों) में आती- जाती थी—और साथ ही, क्या मैं मैडम पुटबस की नौकरानी के बारे में भी नहीं सोच रहा था? क्या मैं इन्हीं दोनों में से किसी एक से मिलने की उम्मीद में ही तो बालबेक वापस नहीं आया था? और हाल ही में, क्या मैं इसी उम्मीद में वेनिस जाने का प्लान नहीं बना रहा था? ऐसा सच क्यों नहीं हो सकता था? क्या अल्बर्टिन टूरेन जाने का प्लान बना रही थी? बस, जब असल में जाने का समय आया—जैसा कि अब मुझे एहसास हुआ—तो मैं उसे छोड़कर नहीं जा पाता; मैं वेनिस नहीं जा पाता। यहाँ तक कि अपने मन की गहराइयों में भी, जब मैं

खुद से कहता था: "मैं उसे अभी छोड़ दूँगा," तो मैं जानता था कि मैं उसे कभी नहीं छोड़ पाऊँगा—ठीक वैसे ही, जैसे मैं जानता था कि मैं फिर से काम पर नहीं लौट पाऊँगा, या सेहत के नियमों के हिसाब से ज़िंदगी नहीं जी पाऊँगा, या उन चीज़ों में से कोई भी चीज़ नहीं कर पाऊँगा जिनके लिए मैं हर रोज़ कसम खाता था कि मैं उन्हें अगले दिन ज़रूर करूँगा। बस, मेरे दिल में जो भी भावनाएँ हों, मुझे यही ज़्यादा समझदारी भरा लगा कि मैं उसे हमेशा जुदाई के डर के साए में ही रहने दूँ। और इसमें कोई शक नहीं कि अपनी इसी घिनौनी चालाकी की बदौलत, मैंने उसे इस बात का पक्का यकीन दिला दिया था। खैर, अब हालात ऐसे ही नहीं चल सकते थे। मैं उसे टूरेन में उन लड़कियों और उस अभिनेत्री के साथ अकेला नहीं छोड़ सकता था; मैं उस तरह की ज़िंदगी के बारे में सोच भी नहीं सकता था जो अब मेरे काबू से बाहर होती जा रही थी। मैं अपने खत के जवाब का इंतज़ार करूँगा: अगर वह कुछ गलत कर भी रही थी, तो भी—अफ़सोस!— एक-दो दिन से कोई खास फ़र्क नहीं पड़ने वाला था (और शायद मैंने खुद से यह इसलिए कहा, क्योंकि अब मुझे उसकी ज़िंदगी के हर पल पर नज़र रखने की आदत नहीं रही थी—जबकि पहले अगर एक पल भी ऐसा गुज़र जाता जब मैं उस पर नज़र न रख पाता, तो मैं पागल हो जाता—लेकिन अब मेरी ईर्ष्या समय के इतने बारीक बँटवारे पर ध्यान नहीं देती थी)। लेकिन जैसे ही मुझे उसका जवाब मिलेगा…
उसका जवाब यह था कि अगर वह वापस नहीं आती, तो मैं उसे लेने चला जाता; चाहे वह चाहे या न चाहे, मैं उसे उसकी सहेलियों से अलग करके ले आता। इसके अलावा, क्या मेरे लिए खुद नीचे जाना बेहतर नहीं था—खासकर अब जब मुझे सेंट-लूप की उस दोहरी चाल का पता चल गया था, जिस पर मुझे अब तक ज़रा भी शक नहीं था? क्या पता, हो सकता है उसने मुझे अल्बर्टिन से अलग करने की कोई साज़िश ही रच ली हो।

और साथ ही, अगर मैंने उसे वैसे ही लिखा होता, जैसे मैं पेरिस में उससे कहा करता था, कि मैं उसके साथ कोई दुर्घटना न होने की कामना करता हूँ, तो मैं अब झूठ बोल रहा होता। आह! अगर कोई दुर्घटना हो जाती, तो मेरा जीवन, इस निरंतर ईर्ष्या से हमेशा के लिए दूषित होने के बजाय, यदि सुख नहीं तो कम से कम पीड़ा के दमन से शांति की स्थिति में पहुँच जाता।
दुख का दमन? क्या मैं सचमुच इस पर विश्वास कर सकता था, क्या मैं यह मान सकता था कि मृत्यु केवल अस्तित्व को मिटा देती है और उसकी जगह सब कुछ छोड़ देती है, कि यह उस व्यक्ति के हृदय से दुःख को दूर कर देती है जिसके लिए दूसरे व्यक्ति का अस्तित्व दुःख के स्रोत के अलावा कुछ नहीं रह गया है, कि यह दुःख को दूर कर देती है और उसकी जगह कुछ भी नहीं छोड़ती। दुःख का दमन! अखबारों में छपे अनुच्छेदों पर नज़र डालते हुए, मुझे अफसोस हुआ कि मुझमें स्वान जैसी इच्छा रखने का साहस नहीं था। अगर अल्बर्टीन किसी दुर्घटना का शिकार हुई होती, तो अगर वह जीवित होती तो मेरे पास उसके पास जाने का बहाना होता, अगर वह मर गई होती तो मुझे, जैसा कि स्वान ने कहा था, अपनी इच्छानुसार जीने की स्वतंत्रता वापस मिल जाती। क्या मैं इस पर विश्वास करता था? उसने तो इस पर विश्वास किया था, वह सबसे धूर्त व्यक्ति जो सोचता था कि वह खुद को अच्छी तरह जानता है। हम अपने दिल में क्या है, यह कितना कम जानते हैं। अगर वह कुछ देर बाद जीवित होता, तो मैं उसे कितनी स्पष्टता से साबित कर सकता था कि उसकी इच्छा न केवल अपराध थी बल्कि बेतुकी भी थी, कि जिसे वह प्यार करता था उसकी मृत्यु उसे किसी भी चीज से मुक्त नहीं कर सकती थी।

मैंने अल्बर्टीन के प्रति अपना सारा अहंकार त्याग दिया। मैंने उसे एक हताशा भरा टेलीग्राम भेजा, जिसमें मैंने उससे किसी भी शर्त पर वापस आने की विनती की। मैंने उससे कहा कि वह जो चाहे कर सकती है, बस मुझे हफ्ते में तीन बार, सोने से पहले, एक मिनट के लिए उसे अपनी बाहों में लेने की अनुमति दे दी जाए। और अगर वह मुझे हफ्ते में एक बार ही अनुमति देती, तो मैं वह भी मान लेता। लेकिन वह कभी वापस नहीं लौटी। मेरा टेलीग्राम अभी उसके पास पहुँचा ही था कि मुझे खुद एक टेलीग्राम मिला। यह श्रीमती बोंटेम्प्स की ओर से था। यह दुनिया हममें से हर एक के लिए एक बार में एक बार नहीं बनी है। हमारे जीवन के दौरान इसमें ऐसी चीजें जुड़ती जाती हैं जिनके बारे में हमें कभी कोई आशंका भी नहीं होती। अफसोस! टेलीग्राम की पहली दो पंक्तियों ने मेरे भीतर जो पीड़ा उत्पन्न की, वह केवल उसे दबाना नहीं था: "मेरे प्यारे दोस्त, हमारी छोटी अल्बर्टाइन अब नहीं रही; मुझे क्षमा करें कि मैं आपको यह भयानक समाचार दे रहा हूँ, क्योंकि आप उससे बहुत प्यार करते थे। घुड़सवारी करते समय उसका घोड़ा उसे एक पेड़ से टकराकर गिरा दिया। उसे बचाने के हमारे सभी प्रयास व्यर्थ रहे। काश, मैं उसकी जगह मर गया होता!" नहीं, यह पीड़ा को दबाना नहीं था, बल्कि एक ऐसी पीड़ा थी जिसकी मैंने तब तक कल्पना भी नहीं की थी, यह जानने की पीड़ा कि वह वापस नहीं आएगी। और फिर भी, क्या मैंने खुद से कई बार यह नहीं कहा था कि शायद वह वापस नहीं आएगी? मैंने सचमुच खुद से ऐसा कहा था, लेकिन अब मुझे एहसास हुआ कि मैंने एक पल के लिए भी इस पर विश्वास नहीं किया था। चूंकि मुझे उसकी उपस्थिति, उसके चुंबन की आवश्यकता थी, ताकि मैं अपने संदेह से उत्पन्न दर्द को सहन कर सकूँ, इसलिए बालबेक के दिनों से ही मैंने हमेशा उसके साथ रहने की आदत बना ली थी। यहां तक कि जब वह

बाहर जाती थी, जब मैं अकेला रह जाता था, तब भी मैं उसे चूमता था। उसके टूरेन जाने के बाद से मैंने ऐसा करना जारी रखा था। मुझे उसकी वफादारी से ज़्यादा उसकी वापसी की ज़रूरत थी। और भले ही मेरा विवेक कभी-कभार उस पर शक करता, मेरी कल्पना उसे पल भर के लिए भी मेरे सामने लाती रही। सहज ही मैंने अपना हाथ अपने गले पर, अपने होठों पर फेरा, जो उसके चले जाने के बाद भी उसके होठों के स्पर्श को महसूस कर रहे थे, और अब कभी नहीं सह पाएंगे; मैंने अपने हाथों को उन पर ऐसे फेरा जैसे दादी की मृत्यु के समय माँ ने मुझे सहलाया था, जब उन्होंने कहा था: "मेरे प्यारे बेटे, तुम्हारी दादी, जो तुमसे इतना प्यार करती थीं, अब तुम्हें कभी नहीं चूमेंगी।" ऐसा लगा जैसे मेरा सारा जीवन मेरे दिल से छिन गया हो। मेरा आने वाला जीवन? क्या मैंने कभी अल्बर्टीन के बिना जीने के बारे में नहीं सोचा था? अरे नहीं! क्या मैं इतने समय से अपने जीवन के हर पल, अपनी मृत्यु तक, उसकी सेवा करने का वादा कर रहा था? अरे हाँ! उसका भविष्य उससे इस कदर घुलमिल गया था कि मैं उसे कभी देख नहीं पाई थी, लेकिन अब जब वह चकनाचूर हो गया था, तो मैं अपने खाली दिल में उसकी जगह को महसूस कर सकती थी। फ्रांस्वा, जिसे अभी भी कुछ पता नहीं था, मेरे कमरे में आई; अचानक गुस्से में मैंने उस पर चिल्लाकर पूछा: "तुम्हें क्या चाहिए?" फिर (कभी-कभी कुछ शब्द ऐसे होते हैं जो हमारे सामने मौजूद वास्तविकता के स्थान पर एक अलग ही वास्तविकता रख देते हैं; वे हमें उसी तरह स्तब्ध कर देते हैं जैसे अचानक चक्कर आने पर होता है) उसने मुझसे कहा: "महाशय को नाराज़ होने की ज़रूरत नहीं है। मेरे पास कुछ ऐसा है जिससे वे बहुत खुश होंगे। ये मैडमोजेल अल्बर्टीन के दो पत्र हैं।" बाद में मुझे लगा कि मैं उसे ऐसे घूर रही थी जैसे मेरा दिमाग खराब हो गया हो। मैं न तो

खुश थी और न ही अविश्वास से भरी हुई। मैं उस व्यक्ति की तरह थी जो अपने कमरे में एक ही जगह पर सोफा और एक गुफा देखता है: उसे कुछ भी इतना वास्तविक नहीं लगता, और वह ज़मीन पर गिर पड़ता है। अल्बर्टीन के दोनों पत्र कुछ घंटों के अंतराल पर, संभवतः एक ही समय पर लिखे गए होंगे, और किसी भी तरह से, उस घातक यात्रा से कुछ ही समय पहले। पहले पत्र में लिखा था: "मेरे प्रिय, एंड्री को अपने साथ ठहराने की अपनी योजना के बारे में बताकर आपने मुझ पर जो विश्वास जताया है, उसके लिए मैं आपका धन्यवाद करती हूँ। मुझे पूरा विश्वास है कि वह इसे स्वीकार करके प्रसन्न होगी, और मुझे लगता है कि यह उसके लिए बहुत अच्छा होगा। अपनी प्रतिभा के बल पर, वह आप जैसे व्यक्ति की संगति का भरपूर लाभ उठाना जानती है, और दूसरों पर आपके अद्भुत प्रभाव का भी। मुझे लगता है कि आपको ऐसा विचार आया है जिससे उसे और आपको दोनों को ही उतना ही लाभ होगा। इसलिए, यदि वह ज़रा भी आनाकानी करे (जिसकी मुझे उम्मीद नहीं है), तो मुझे टेलीग्राम भेज देना, मैं उस पर दबाव डालने का वादा करती हूँ।" दूसरा पत्र अगले दिन लिखा गया था। (वास्तव में, उसने अपने दोनों पत्र कुछ मिनटों के अंतराल पर, संभवतः बिना किसी अंतराल के लिखे होंगे, और पहले पत्र की तारीख पहले की होगी। क्योंकि, मैं लगातार उसके इरादों के बारे में एक बेतुका अनुमान लगा रहा था, जो केवल यही था: मेरे पास लौटना, और जिसे इस मामले में प्रत्यक्ष रुचि न रखने वाला कोई भी व्यक्ति, कल्पनाहीन व्यक्ति, शांति संधि का पूर्ण अधिकार प्राप्त प्रतिनिधि, या किसी सौदे की जांच करने वाला व्यापारी, मुझसे कहीं अधिक सटीक रूप से समझ सकता था।) उसमें केवल ये शब्द थे: "क्या मेरे लिए आपके पास लौटने में बहुत देर हो चुकी है? यदि आपने अभी तक एंड्री को पत्र नहीं लिखा है, तो क्या आप मुझे वापस लेने के लिए

तैयार होंगे? मैं आपके निर्णय का पालन करूंगी, लेकिन मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि मुझे बताने में देर न करें, आप कल्पना कर सकते हैं कि मैं कितनी बेसब्री से प्रतीक्षा कर रही हूं। यदि यह मुझे लौटने का संकेत दे रहा है, तो मैं तुरंत ट्रेन पकड़ लूंगी। हार्दिक शुभकामनाओं सहित, आपकी, अल्बर्टीन।"
अल्बर्टीन की मृत्यु से मेरे दुख को दबाने के लिए, गिरने के आघात ने उसे न केवल टूरेन में, बल्कि मुझमें भी मार डाला होता। वहाँ, वह पहले कभी इतनी जीवंत नहीं थी। हमारे भीतर प्रवेश करने के लिए, किसी अन्य व्यक्ति को पहले रूप धारण करना होता है, उस क्षण के परिवेश में प्रवेश करना होता है; क्षणिक चमक की एक श्रृंखला में ही हमारे सामने प्रकट होकर, वह हमें एक समय में अपने एक से अधिक पहलू नहीं दिखा पाता, अपने एक से अधिक चित्र प्रस्तुत नहीं कर पाता। किसी व्यक्ति के लिए केवल क्षणों के संग्रह में सिमट जाना निस्संदेह एक बड़ी कमजोरी है; एक बड़ी ताकत भी: यह स्मृति पर निर्भर है, और किसी क्षण की हमारी स्मृति में उसके बाद घटी हर बात की जानकारी नहीं होती; यह क्षण जो इसमें दर्ज है, वह अभी भी कायम है, अभी भी जीवित है, और इसके साथ ही वह व्यक्ति भी जीवित है जिसका रूप इसमें समाहित है। और इसके अलावा, यह विघटन न केवल मृत व्यक्ति को जीवित करता है, बल्कि उसे कई गुना बढ़ा देता है। सांत्वना पाने के लिए, मुझे पहले एक नहीं, बल्कि अनगिनत अल्बर्टीन को भूलना होगा। जब मैं इस अल्बर्टाइन को खोने के दुख को सहने की अवस्था में पहुँच गया, तो मुझे एक और अल्बर्टाइन के साथ, और फिर सौ अन्य अल्बर्टाइन के साथ नए सिरे से शुरुआत करनी पड़ी।
तो, इस तरह मेरा जीवन पूरी तरह बदल गया। जो बात इसे आकर्षक बनाती थी—और यह अल्बर्टीन की वजह से नहीं, बल्कि उसके साथ-साथ

में हमारे लिए लाई थीं, 'ऐसी चीज़ें' जिनके साथ मैं उन दिनों चिलचिलाती गर्मी के दिनों में बंद भोजनालयों की इंद्रधनुषी चमक के साथ सबसे उत्तम जुड़ाव महसूस करता। तब मुझे पहली बार लेस इकोरेस नाम के फार्म का ख्याल आया और मैंने मन ही मन सोचा कि कुछ दिनों जब अल्बर्टीन ने बालबेक में मुझसे कहा था कि वह खाली नहीं होगी, कि उसे अपनी चाची के साथ कहीं जाना पड़ेगा, तो शायद वह अपनी किसी सहेली के साथ किसी ऐसे फार्म में रही होगी जहाँ वह जानती थी कि मैं अक्सर नहीं जाती थी। और जब मैं मैरी-एंटोनेट में बेसब्री से उसका इंतज़ार कर रही थी, जहाँ मुझे बताया गया था: "नहीं, हमने उसे आज नहीं देखा," तब वह अपनी सहेली से वही शब्द कह रही थी जो वह मुझसे तब कहा करती थी जब हम साथ बाहर जाते थे: "वह हमें यहाँ ढूंढने के बारे में कभी नहीं सोचेगा, इसलिए हमें परेशान होने का कोई डर नहीं है।" मैंने फ्रांस्वा से पर्दे खींचने को कहा ताकि मुझे सूरज की वह किरण न दिखाई दे। लेकिन वह लगातार रिसती रही, उतनी ही तीक्ष्ण, मेरी यादों में समाती रही। "मुझे इसमें कोई रुचि नहीं है, इसका जीर्णोद्धार हो चुका है, लेकिन हम कल सेंट-मार्स ले वेटू जाएंगे, और परसों..." कल, परसों, यह एक साझा जीवन की संभावना थी, शायद हमेशा के लिए, जो खुल रही थी; मेरा दिल इसकी ओर उछल पड़ा, लेकिन अब वह नहीं था, अल्बर्टीन मर चुकी थी।
मैंने फ्रांस्वा से समय पूछा। छह बज रहे थे। आखिरकार, ईश्वर का शुक्र है, वह असहनीय गर्मी छंटने वाली थी जिसकी शिकायत मैं पहले अल्बर्टीन से किया करती थी, और जिसका हम दोनों ने खूब आनंद लिया था। दिन ढल रहा था। लेकिन इससे मुझे क्या लाभ हुआ? शाम की ठंडी हवा अंदर आई; मेरी यादों में डूबता हुआ सूरज, उस सड़क के अंत में, जिस पर हम दोनों घर लौटते हुए गए थे, अब मुझे दिखाई दे रहा था,

विवेकपूर्ण परंपरा के कारण उसने अपने दुःख का कोई दिखावा नहीं किया। परन्तु उसके अनादि काल के अलिखित नियम और मध्ययुगीन किसान स्त्री की परंपरा, जो वीरगाथाओं में वर्णित स्त्री की तरह रोती है, अल्बर्टीन और यहाँ तक कि यूलाली के प्रति उसकी घृणा से भी पुरानी थी। और इसलिए, एक शाम जब मैं अपना दुःख छिपाने में शीघ्रता नहीं कर पाया, तो उसने मेरे आँसू देख लिए। एक छोटी बूढ़ी किसान स्त्री की सहज प्रवृत्ति ने उसे ऐसा करने के लिए प्रेरित किया, जिसने कभी उसे जानवरों को पकड़ने और यातना देने, मुर्गियों की गर्दन मरोड़ने और झींगों को जिंदा उबालने में आनंद लेने के लिए प्रेरित किया था, और जब मैं बीमार था, तो उसने मेरे पीड़ामय चेहरे को देखा, मानो वह किसी उल्लू को दिए गए घाव हों, जिसे उसने बाद में एक गंभीर स्वर में आने वाली विपत्ति का संकेत बताया। लेकिन कॉम्ब्रे की उनकी 'रीति-रिवाज' उन्हें आँसू, शोक जैसी चीज़ों को हल्के में लेने की इजाज़त नहीं देती थी, जो उनकी नज़र में वसंत ऋतु में अपने ऊनी कपड़े उतारने या भूख न लगने पर भी खाने जितनी ही घातक थीं। "अरे नहीं, महोदय, इस तरह रोना ठीक नहीं है, यह आपके लिए अच्छा नहीं है।" और मेरे आँसू रोकने की कोशिश में उन्होंने उतनी ही बेचैनी दिखाई, मानो वे खून की धाराएँ हों। दुर्भाग्य से मैंने एक ठंडा रवैया अपना लिया, जिससे उनके उन भावों का प्रवाह रुक गया, जिनमें वे डूबना चाहती थीं और जो शायद सचमुच सच्चे भी थे। अल्बर्टीन के प्रति उनका रवैया शायद यूलाली के प्रति उनके रवैये जैसा ही था, और अब जब मेरी मालकिन मुझसे कोई लाभ नहीं उठा सकती थीं, तो फ्रांस्वा ने उनसे नफरत करना छोड़ दिया था। फिर भी, उन्होंने मुझे यह दिखाना अपना कर्तव्य समझा कि उन्हें अच्छी तरह पता था कि मैं रो रहा हूँ, और मेरे परिवार द्वारा स्थापित निंदनीय उदाहरण का अनुसरण

करते हुए, मैं इसे किसी को दिखाना नहीं चाहता था। “आपको रोना नहीं चाहिए, महोदय,” उसने इस बार शांत स्वर में मुझसे विनती की, और उसका इरादा मुझ पर दया दिखाने के बजाय अपनी दूरदर्शिता साबित करना था। फिर उसने आगे कहा: “ऐसा होना ही था; वह बहुत खुश थी, बेचारी, उसे कभी पता ही नहीं चला कि वह कितनी खुश थी।” गर्मी की इन अंतहीन शामों में दिन कितनी धीमी गति से ढलता है। सामने वाले घर का एक धुंधला सा साया आसमान पर अपनी निरंतर सफेदी बिखेरता रहा। आखिरकार घर के अंदर अंधेरा छा गया; मैं हॉल में रखे फर्नीचर से टकरा गया, लेकिन सीढ़ियों की ओर खुलने वाले दरवाजे पर, उस घोर अंधेरे के बीच जिसे मैंने पूरी तरह से अंधेरा मान लिया था, कांच का पैनल पारदर्शी और नीला था, फूल के नीले रंग जैसा, किसी कीड़े के पंख के नीले रंग जैसा, एक ऐसा नीला रंग जो मुझे सुंदर लगता अगर मुझे यह आखिरी प्रतिबिंब न लगता, लोहे की धार की तरह तीखा, एक ऐसा प्रहार जो दिन अपनी अथक क्रूरता से मुझ पर कर रहा था। अंत में, अंधेरा पूरी तरह से छा गया, लेकिन तभी आंगन में एक पेड़ के पीछे एक तारे की झलक ने मुझे याद दिला दिया कि कैसे हम रात के खाने के बाद चांदनी से ढके चैंटेपी के जंगलों के लिए गाड़ी में बैठकर जाया करते थे। और गलियों में भी कभी-कभी ऐसा होता था कि मैं किसी कुर्सी के पीछे बैठकर एकांत में बैठ जाती, पेरिस की कृत्रिम रोशनी के बीच चाँदनी की प्राकृतिक पवित्रता को महसूस कर लेती, उस पेरिस को जिस पर वह राज करती थी, कल्पना में शहर को एक पल के लिए प्रकृति की अवस्था में लौटा देती, खेतों की अनंत शांति में, अल्बर्टीन के साथ उनमें की गई सैर की दिल दहला देने वाली यादों में। आह! रात कब खत्म होगी? लेकिन भोर की पहली ठंडी हवा के झोंके से ही मैं सिहर उठी, क्योंकि इसने मुझे उस गर्मी के आनंद से भर दिया था जब बालबेक से

कुछ देर बाद गलियों से आवाज़ें आने लगीं, जिनकी गूंज से मुझे उस गर्मी की तीव्रता का अंदाज़ा लगने लगा जो लगातार बढ़ती जा रही थी। लेकिन इस गर्मी में, जो कुछ घंटों बाद चेरी की खुशबू से भर जाती, मुझे (जैसे किसी दवा में एक तत्व को दूसरे से बदलने पर वह उत्तेजक और टॉनिक से कमज़ोर करने वाली दवा बन जाती है) महिलाओं की चाहत नहीं, बल्कि अल्बर्टीन के बिछड़ने का दर्द महसूस होने लगा। इसके अलावा, मेरी सारी इच्छाओं की याद भी उतनी ही अल्बर्टीन और उसके दर्द से भरी हुई थी, जितनी मेरी खुशियों की। वह वेनिस, जहाँ मैंने सोचा था कि उसकी संगति एक परेशानी होगी (शायद इसलिए क्योंकि मुझे उलझन में यह महसूस हुआ था कि यह मेरे लिए ज़रूरी है), अब जब अल्बर्टीन नहीं रही, तो मैं वहाँ जाना पसंद नहीं करता था। अल्बर्टीन मुझे हर चीज़ से अलग एक बाधा लगती थी, क्योंकि वह मेरे लिए सब कुछ थी, और उसी से मुझे सब कुछ मिलता था, मानो किसी कलश से। अब जब वह कलश टूट चुका था, तो मुझमें कुछ भी पाने का साहस नहीं बचा था; अब ऐसा कुछ भी नहीं था जिससे मैं मुंह मोड़ लेता, बेजान होकर, उसका स्वाद न चखना ही बेहतर समझता। इसलिए उससे अलग होने से मेरे लिए उन सुखों के द्वार ज़रा भी नहीं खुले जिन्हें मैंने उसकी उपस्थिति के कारण बंद मान लिया था। इसके अलावा, उसकी उपस्थिति शायद मेरे सफ़र में, जीवन का आनंद लेने में जो बाधा थी, वह (जैसा कि हमेशा होता है) केवल अन्य बाधाओं का मुखौटा थी, जो पहली बाधा हट जाने के बाद फिर से वैसी ही प्रकट हो गईं। ठीक उसी तरह, पहले जब कोई मित्र मुझसे मिलने आता और मुझे काम करने से रोक देता, और अगले दिन मुझे कोई बाधा नहीं मिलती, तो मेरा काम पहले से बेहतर नहीं होता था। चाहे कोई बीमारी हो, कोई द्वंद्वयुद्ध हो, या कोई बेकाबू घोड़ा, मौत को हमारे सामने ला खड़ा करे, तब हम सुखमय जीवन का कितना भरपूर आनंद

उठा सकते थे, उन अनजानी जगहों की यात्राओं का कितना लुत्फ़ उठा सकते थे जो हमसे छिनने वाली हैं। और जैसे ही खतरा टलता है, हमारे सामने फिर से वही नीरस जीवन आ जाता है जिसमें उन सुखों का कोई अस्तित्व ही नहीं होता।
निस्संदेह ये छोटी रातें बस एक छोटे से मौसम के लिए ही होती हैं। सर्दियाँ अंततः लौट आएँगी, जब मुझे उसके साथ सुबह होने तक चलने वाली यात्राओं की यादों से डरने की ज़रूरत नहीं होगी। लेकिन क्या पहली बर्फ़बारी मुझे अपनी ठंडी जगह में सुरक्षित रखे हुए, मेरी पहली इच्छाओं के बीज वापस नहीं लाएगी, जब मैं आधी रात को उसे बुलवाया करता था, जब घंटी बजने का इंतज़ार करना बहुत लंबा लगता था: एक ऐसी आवाज़ जिसका मैं अब व्यर्थ ही इंतज़ार करता रहूँ? क्या वे मुझे मेरी पहली बेचैनी के बीज वापस नहीं लाएँगी, जब दो मौकों पर मुझे लगा कि वह नहीं आ रही है? उस समय मैं उसे बहुत कम देखता था, लेकिन उसके आने के बीच के वे अंतराल भी, जो उसे कई हफ़्तों बाद एक अनजान जीवन के दिल से बाहर लाते थे, जिसे पाने का मैंने कोई प्रयास नहीं किया, मेरे मन की शांति सुनिश्चित करते थे, क्योंकि वे मेरी ईर्ष्या की पहली झलक को, जो लगातार बाधित होती रहती थी, मेरे दिल में ठोस रूप लेने से रोकते थे। उस समय वे बातें भले ही मुझे सुकून देती थीं, लेकिन अब पीछे मुड़कर देखने पर वे दुख की छाप छोड़ जाती हैं, क्योंकि उन अंतरालों के दौरान वह जो भी अनसुलझी बातें करती रही होंगी, वे मेरे लिए महत्वहीन हो गई थीं, और खासकर अब जब उसका आना मेरे नसीब में कभी नहीं होगा; इसलिए जनवरी की वे शामें, जिन पर वह आती थी और जो इसी वजह से मुझे इतनी प्यारी थीं, अब अपनी चुभती हवाओं से मुझमें एक ऐसी बेचैनी भर देंगी जिसे मैं तब नहीं जानता था, और मेरे प्यार के पहले बीज को (अब घातक रूप में) वापस ले आएंगी। और

था, कि यह अंतिम वर्ष, जिसमें अल्बर्टीन का भाग्य बदलना शुरू हो गया था और उसे शांति प्राप्त हुई थी, मुझे पूर्ण, बहुआयामी, विशाल, एक पूरी सदी की तरह प्रतीत हुआ। तब यह उन दिनों की स्मृति होगी जो पुनर्जीवित होने में अधिक धीमी हैं लेकिन उससे भी पहले के वर्षों से संबंधित हैं; बरसाती रविवारों को, जब फिर भी हर कोई बाहर चला गया होता था, दोपहर के सन्नाटे में, जब हवा और बारिश की आवाज़ें मुझे घर पर रहने और 'अपने कमरे में बैठकर चिंतन करने' के लिए प्रेरित करती थीं, मैं कितनी बेचैनी से उस घड़ी का इंतज़ार करता था जब अल्बर्टीन, जिसकी मुझे बिल्कुल उम्मीद नहीं थी, मुझसे मिलने आई थी, पहली बार मुझे प्यार से छुआ था, और फिर फ्रांकोइस के दीपक लाने पर रुक गई थी। वह समय अब पूरी तरह से मृत हो चुका था जब अल्बर्टीन मुझमें रुचि रखती थी, जब उसके लिए मेरा स्नेह एक मजबूत आशा को जन्म दे सकता था। यहाँ तक कि मौसम के बाद के दिनों में भी, वे शानदार शामें जब रसोई और लड़कियों के स्कूलों की खिड़कियाँ, सड़क के किनारे बने मंदिरों की तरह खुली रहती थीं, और सड़क को उन देवियों के मुकुट से सुशोभित करती थीं जो अपने साथियों से इतनी नज़दीक से बातें करती हुई, हमें उनके पौराणिक अस्तित्व में प्रवेश करने की तीव्र इच्छा से भर देती थीं, अब मुझे अल्बर्टीन के स्नेह के अलावा कुछ भी याद नहीं दिलाती थीं, जिसकी संगति उनके पास पहुँचने में एक बाधा थी। इसके अलावा, विशुद्ध प्राकृतिक क्षणों की स्मृति में भी नैतिक पृष्ठभूमि अनिवार्य रूप से जुड़ जाती थी, जो उनमें से प्रत्येक को विशिष्ट बनाती थी। बाद में, जब मैं किसी सुहावनी, लगभग इतालवी सुबह में चरवाहे का सींग सुनता, तो अगले दिन की धूप के साथ-साथ यह चिंता भी घुलमिल जाती कि अल्बर्टीन ट्रोकाडेरो में है, संभवतः लीया और दोनों लड़कियों के साथ, फिर उसकी दयालु,

पदार्थों में से एक जो, जैसे अन्य शरीर के लिए लाभकारी होते हैं, वैसे ही आत्मा के लिए भी अच्छा होता है। फिर आधे घंटे बाद अल्बर्टीन लौट आई, फिर अल्बर्टीन के साथ गाड़ी में सफर शुरू हुआ, एक ऐसा सफर जिसे मैंने उबाऊ समझा था क्योंकि यह मेरे लिए निश्चितता से भरा हुआ था, लेकिन उसी निश्चितता के कारण, फ्रांस्वा के मुझे फोन करने के क्षण से ही कि वह अल्बर्टीन को घर ला रही है, अगले घंटों पर एक सुनहरी शांति छा गई, मानो वह एक दूसरा दिन बन गया हो, पहले दिन से बिल्कुल अलग, क्योंकि उसका एक बिल्कुल अलग नैतिक आधार था, एक ऐसा नैतिक आधार जिसने उसे एक मौलिक दिन बना दिया, जो आया और मेरे पहले से ज्ञात दिनों की विविधता में जुड़ गया, एक ऐसा दिन जिसकी मैं कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था - ठीक वैसे ही जैसे हम गर्मियों के किसी दिन की सुखद निष्क्रियता की कल्पना नहीं कर सकते थे यदि ऐसे दिन हमारे जीवन के कैलेंडर में मौजूद न होते - एक ऐसा दिन जिसके बारे में मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता कि मुझे वह याद है, क्योंकि इस शांति में अब एक ऐसी पीड़ा जुड़ गई थी जिसे मैंने उस समय महसूस नहीं किया था। लेकिन बहुत बाद में, जब मैंने धीरे-धीरे, उल्टे क्रम में, उन समयों को याद किया जो अल्बर्टाइन के प्रेम में डूबने से पहले बीते थे, जब मेरा घायल हृदय अल्बर्टाइन की मृत्यु से दुखी हुए बिना उससे अलग हो सका, तब मैं उस दिन को बिना किसी पीड़ा के याद कर पाया जब अल्बर्टाइन ट्रोकाडेरो में रहने के बजाय फ्रांस्वा के साथ खरीदारी करने गई थी; मैंने उसे खुशी से याद किया, मानो वह एक ऐसे नैतिक दौर का हिस्सा हो जिसे मैंने तब तक नहीं जाना था; मैंने उसे पूरी तरह से याद किया, बिना उसमें कोई पीड़ा जोड़े, बल्कि इसके विपरीत, जैसे हम गर्मियों के कुछ दिनों को याद करते हैं जो हमें बहुत गर्म लगे थे जब तक वे रहे, और

जिनसे हम उनके शुद्ध सुनहरे और अविनाशी नीले रंग के मानक को तभी प्राप्त कर पाते हैं जब वे बीत चुके होते हैं।
परिणामस्वरूप, इन कई वर्षों ने अल्बर्टीन की मेरी स्मृति पर जो प्रभाव डाला, जिसने उन्हें इतना दर्दनाक बना दिया, वह था क्रमिक रंग, न केवल उनके मौसमों या उनके घंटों के विभिन्न परिवर्तन, जून की देर दोपहर से लेकर सर्दियों की शाम तक, चांदनी रात में समुद्र से लेकर उस भोर तक जो मेरे घर लौटते समय हुई, पेरिस में बर्फ से लेकर सेंट-क्लाउड में गिरे हुए पत्तों तक, बल्कि अल्बर्टीन के प्रत्येक विशेष विचार जो मैंने क्रमिक रूप से बनाए, वह शारीरिक रूप जिसमें मैंने उन प्रत्येक क्षणों में उसकी कल्पना की, उस मौसम के दौरान मैंने उसे कितनी बार देखा था, जो स्वयं परिणामस्वरूप कमोबेश बिखरा हुआ या सघन प्रतीत होता था, वे चिंताएँ जो उसने मुझे प्रतीक्षा करवाकर उत्पन्न की होंगी, वह इच्छा जो मैंने किसी दिए गए क्षण में उसके लिए महसूस की थी, वे आशाएँ जो बनीं और फिर चकनाचूर हो गईं; इन सभी चीजों ने मेरे अतीत के दुख के स्वरूप को उतना ही बदल दिया जितना कि उससे जुड़ी रोशनी या सुगंध की छाप ने, और मेरे द्वारा जिए गए प्रत्येक सौर वर्ष को पूरा किया—वे वर्ष जो केवल अपनी वसंत ऋतुओं, अपने वृक्षों, अपनी हवाओं के साथ ही उसकी अविभाज्य स्मृति के कारण इतने उदास थे—प्रत्येक वर्ष को एक प्रकार के भावुक वर्ष से पूरक किया जिसमें घंटे सूर्य की स्थिति से नहीं, बल्कि एक मुलाकात की प्रतीक्षा के तनाव से परिभाषित होते थे, जिसमें दिनों की लंबाई, जिसमें तापमान में परिवर्तन ऋतुओं से नहीं, बल्कि मेरी आशाओं की उड़ान, हमारी घनिष्ठता की प्रगति, उसके चेहरे के धीरे-धीरे बदलते स्वरूप, उसके द्वारा किए गए अभियानों, उसकी अनुपस्थिति के दौरान मुझे लिखे गए पत्रों की

आवृत्ति और शैली, और उसकी वापसी पर मुझे देखने की उसकी कमोबेश उत्सुकता से निर्धारित होते थे। और अंत में, यदि ऋतुओं के इन परिवर्तनों, यदि इन अलग-अलग दिनों ने मुझे प्रत्येक बार एक नई अल्बर्टाइन प्रदान की, तो यह केवल मुझे समान क्षणों की याद दिलाकर ही नहीं था। पाठक को याद होगा कि प्रेम में आने से पहले भी, हर दिन मुझे एक अलग इंसान बना देता था, अलग-अलग इच्छाओं से प्रभावित, अलग-अलग धारणाओं वाला इंसान। एक ऐसा इंसान जो रात भर सिर्फ़ चट्टानों और तूफ़ानों के सपने देखता था, लेकिन अगर वसंत की सुबह की हल्की-हल्की खुशबू उसके नींद के घर के खुले दरवाज़ों से गुलाबों की महक बिखेर देती, तो वह इटली जाने के लिए जाग उठता। यहाँ तक कि मेरे प्रेम में भी, क्या मेरे बदलते नैतिक वातावरण, मेरे विश्वासों के बदलते दबाव ने, क्या एक दिन मेरे प्रेम की तीव्रता को कम नहीं कर दिया, क्या दूसरे दिन उसे सारी सीमाओं से परे नहीं फैला दिया, क्या एक दिन उसे मुस्कान में बदल दिया, दूसरे दिन उसे तूफ़ान में? हम केवल अपने पास मौजूद चीज़ों के बल पर ही अस्तित्व में हैं, हमारे पास केवल वही है जो वास्तव में हमारे सामने मौजूद है, और हमारी कितनी ही यादें, हमारे मिजाज़, हमारे विचार हमसे दूर यात्रा पर निकल पड़ते हैं, यहाँ तक कि वे हमारी नज़रों से ओझल हो जाते हैं! तब हम उन्हें अपने व्यक्तित्व के संपूर्ण आकलन में शामिल नहीं कर पाते। लेकिन वे गुप्त रास्ते जानते हैं जिनसे वे हमारे पास लौट सकते हैं। और कुछ रातों को, जब मैं अल्बर्टीन के लिए लगभग बिना किसी पछतावे के सो जाती थी—हम केवल उसी बात का पछतावा कर सकते हैं जो हमें याद रहती है—जागने पर मुझे यादों का एक पूरा समूह मिला जो मेरी स्पष्ट चेतना की सतह पर मंडराने लगा था, और आश्चर्यजनक रूप से स्पष्ट प्रतीत हो रहा था। तब मैं उस बात पर रो पड़ी जो मुझे इतनी

प्रमाण देख पाता, अतीत में मुझ पर पड़े उसके प्रभाव के प्रतिबिंब के स्थान पर, जो स्वयं भी मिटने के लिए नियत था। एक ऐसी स्त्री जो अब दूसरों के साथ किसी भी प्रकार का आनंद नहीं ले सकती थी, उसे मेरी ईर्ष्या को नहीं जगाना चाहिए था, यदि मेरा स्नेह सतह पर आ पाता। लेकिन यही असंभव था, क्योंकि यह अपने लक्ष्य, अल्बर्टीन को, उन यादों के अलावा कहीं नहीं पा सकता था जिनमें वह अभी भी जीवित थी। चूंकि, केवल उसके बारे में सोचने मात्र से ही मैं उसे फिर से जीवित कर देता था, इसलिए उसकी बेवफ़ाइयाँ कभी भी एक मृत स्त्री की नहीं हो सकती थीं; जिन क्षणों में वह दोषी थी, वे क्षण न केवल अल्बर्टीन के लिए, बल्कि मेरे उन अनेक स्वरूपों में से एक के लिए भी वर्तमान क्षण बन जाते थे जो उसके बारे में सोच रहे थे। इस प्रकार कोई भी कालभ्रम उस अटूट जोड़े को अलग नहीं कर सकता था, जिसमें प्रत्येक नए दोषी के साथ तुरंत एक ईर्ष्यालु प्रेमी जुड़ जाता था, जो दयनीय और हमेशा समकालीन होता था। पिछले कुछ महीनों से मैंने उसे अपने ही घर में बंद रखा था। लेकिन अब मेरी कल्पना में, अल्बर्टीन स्वतंत्र थी, वह अपनी स्वतंत्रता का दुरुपयोग कर रही थी, कभी इस दोस्त के साथ तो कभी उस दोस्त के साथ वेश्यावृत्ति कर रही थी। पहले, मैं लगातार उस अनिश्चित भविष्य के सपने देखता था जो हमारे सामने खुल रहा था, मैं उसके संदेश को पढ़ने का प्रयास करता था। और अब, जो मेरे सामने था, भविष्य के प्रतिरूप की तरह—भविष्य जितना ही लुभावना क्योंकि वह उतना ही अनिश्चित, उतना ही समझना कठिन, उतना ही रहस्यमय, और उससे भी अधिक क्रूर क्योंकि भविष्य की तरह मेरे पास उसे प्रभावित करने की कोई संभावना या भ्रम नहीं था, और इसलिए भी क्योंकि यह मेरे साथी की अनुपस्थिति में मेरे जीवन के पूर्ण विस्तार में प्रकट हो रहा था, जो मेरे द्वारा

उत्पन्न पीड़ा को कम कर सके—अब अल्बर्टीन का भविष्य नहीं था, वह उसका अतीत था। उसका अतीत? यह शब्द उपयुक्त नहीं है, क्योंकि ईर्ष्या के लिए न तो अतीत होता है और न ही भविष्य, और वह जो कल्पना करती है वह हमेशा वर्तमान ही होता है।
वातावरण में होने वाले परिवर्तन, जो मन में भी बदलाव लाते हैं, स्वयं के भूले हुए स्वरूपों को जगाते हैं, आदतों के सुस्त प्रवाह को भंग करते हैं, और कुछ यादों, कुछ पीड़ाओं को उनका पुराना बल प्रदान करते हैं। मेरे साथ तो यह और भी अधिक होता है, अगर मौसम के इस बदलाव ने मुझे उस मौसम की याद दिला दी, जिसमें अल्बर्टीन, बालबेक में, बारिश के खतरे के साये में, पता नहीं क्यों, अपने वाटरप्रूफ जैकेट के कवच में लंबी यात्राओं पर जाया करती थी। अगर वह आज जीवित होती, और मौसम भी कुछ ऐसा ही होता, तो वह टूरेन में इसी तरह के अभियान पर निकली होती। चूंकि अब वह ऐसा नहीं कर सकती थी, इसलिए मुझे इस विचार से दुखी नहीं होना चाहिए था; लेकिन, अपंगों की तरह, मौसम में जरा सा भी बदलाव मेरे उस अंग में दर्द को फिर से जगा देता है, जो अब मेरा नहीं रहा।
अचानक एक ऐसी अनुभूति हुई जो मुझे लंबे समय से महसूस नहीं हुई थी—क्योंकि यह मेरी स्मृति के तरल और अदृश्य विस्तार में विलीन पड़ी हुई थी—और वह एकदम स्पष्ट हो गई। कई साल पहले, जब किसी ने उसके बाथ-रैप का ज़िक्र किया, तो अल्बर्टीन शर्मा गई थी। उस समय मुझे उससे जलन नहीं हुई थी। लेकिन तब से मेरा इरादा उससे यह पूछने का था कि क्या उसे वह बातचीत याद है और वह क्यों शर्मा गई थी। यह बात मुझे और भी परेशान कर रही थी क्योंकि मुझे बताया गया था कि लीया की दो सहेलियाँ होटल के स्नानघर में अक्सर आती थीं, और कहा जाता था कि वे केवल स्नान करने के लिए नहीं आती थीं। लेकिन, अल्बर्टीन को नाराज़ करने के डर से, या शायद किसी और

में मेरे बगल में उसका हिलना-डुलना, या मेरे कमरे में मेरे सामने बैठना, मेरे मन में मिठास और दुःख का एक भंवर पैदा कर देती थीं, जो धीरे-धीरे उसे पूरी तरह से घेर लेती थीं।
जिस कमरे में हम खाना खाते थे, वह मुझे कभी आकर्षक नहीं लगा था। मैंने अल्बर्टीन से कहा था कि यह कमरा सिर्फ इसलिए आकर्षक है ताकि मेरी प्रेमिका इसमें रहकर संतुष्ट हो सके। अब पर्दे, कुर्सियाँ, किताबें, सब कुछ महत्वहीन नहीं रह गया था। कला ही एकमात्र ऐसी शक्ति नहीं है जो सबसे तुच्छ चीजों को भी आकर्षण और रहस्य प्रदान करती है; यही शक्ति उन्हें हमारे साथ घनिष्ठ संबंध में लाने की भी है, और यही शक्ति दुःख को भी प्रदान करती है। उस समय मैंने उस भोजन पर ध्यान नहीं दिया था जो हमने जंगल से लौटने के बाद, वर्दुरिन्स के घर जाने से पहले साथ में किया था, और अब जब मैंने उस सुंदरता, उस गंभीर मिठास की ओर देखा, तो मेरी आँखें आँसुओं से भर गईं। प्रेम का अनुभव जीवन के अन्य अनुभवों से कहीं अधिक होता है, लेकिन जब वह उनके बीच खो जाता है, तभी हम उसे समझ पाते हैं। यह गिरजाघर की तलहटी से, गली के शोरगुल और भीड़भाड़ वाले घरों के बीच से नहीं, बल्कि जब हम बहुत दूर होते हैं, पास की किसी पहाड़ी की ढलान से, इतनी दूरी पर जहाँ से पूरा शहर गायब हो जाता है, या केवल ज़मीन पर एक अव्यवस्थित समूह के रूप में दिखाई देता है, तब हम एकांत और संध्याकाल की शांत एकांतता में, एक गिरजाघर की अनूठी, शाश्वत और शुद्ध ऊँचाई का अनुभव कर सकते हैं। मैंने आँसुओं के बीच से अल्बर्टीन की छवि को अपने भीतर समेटने की कोशिश की, क्योंकि मैं उस शाम उसके द्वारा कही गई सभी गंभीर और अर्थपूर्ण बातों के बारे में सोच रही थी। एक सुबह मुझे ऐसा लगा जैसे मैं कोहरे में लिपटी एक पहाड़ी की आयताकार आकृति देख पा रही हूँ, जैसे मैं एक कप चॉकलेट की

गर्माहट का स्वाद महसूस कर पा रही हूँ, जबकि मेरा दिल उस दोपहर की याद से बुरी तरह दुख रहा था जब अल्बर्टीन मुझसे मिलने आई थी और मैंने उसे पहली बार चूमा था: असलियत तो यह थी कि मैंने अभी- अभी गर्म पानी के पाइपों की हल्की सी आवाज सुनी थी, भट्टी अभी- अभी चालू हुई थी। और मैंने गुस्से में वह निमंत्रण पत्र फेंक दिया जो फ्रांस्वा मैडम वर्दुरिन की तरफ से मेरे लिए लाई थी; ला रास्पेलियर में पहली बार भोजन करने पर मुझे जो एहसास हुआ था, कि मृत्यु हम सभी को एक ही उम्र में नहीं आती, वह अब और भी ज़ोर से मुझ पर हावी हो गया था क्योंकि अल्बर्टीन इतनी कम उम्र में मर गई थी, जबकि ब्रिचोट मैडम वर्दुरिन के साथ भोजन करना जारी रखे हुए थे, जो अभी भी मेहमानों का स्वागत कर रही थीं और शायद आने वाले कई वर्षों तक करती रहेंगी। ब्रिचोट का नाम सुनते ही मुझे उस शाम की पार्टी का अंत याद आ गया, जब वह मुझे घर तक छोड़ने आया था, जब मैंने सड़क से अल्बर्टीन के दीपक की रोशनी देखी थी। मैंने इसके बारे में पहले भी कई बार सोचा था, लेकिन इस याद को मैंने उस नजरिए से नहीं देखा था। फिर जब मैंने घर लौटने पर मिलने वाले खालीपन के बारे में सोचा, कि मैं अब सड़क से अल्बर्टीन के कमरे को फिर कभी नहीं देख पाऊंगी, जिसकी रोशनी हमेशा के लिए बुझ गई थी, तब मुझे एहसास हुआ कि उस शाम ब्रिचोट से विदा लेते समय मैंने सोचा था कि मैं ऊब गई हूँ, कि मुझे सड़कों पर घूमने और कहीं और प्रेम करने में असमर्थता का अफसोस है, मुझे एहसास हुआ कि मैं कितनी बड़ी गलती पर थी, कि सड़क पर जिस खजाने की परछाई मुझे दिखाई दे रही थी, वह पूरी तरह से मेरे अधिकार में प्रतीत हो रहा था, इसलिए मैं उसके मूल्य को नहीं समझ पाई थी, जिसका अर्थ यह था कि वह मुझे सुखों से कमतर लगता था, चाहे वे कितने भी छोटे क्यों न हों, जिन्हें कल्पना करने की कोशिश में

मैंने उनका मूल्य बढ़ा दिया था। मुझे एहसास हुआ कि वह प्रकाश, जो मुझे किसी जेल से निकलता हुआ प्रतीत हुआ था, मेरे लिए परिपूर्णता, जीवन और मिठास से भरपूर था, जो उस चीज़ की अनुभूति मात्र थी जिसने मुझे एक पल के लिए मदहोश कर दिया था और फिर हमेशा के लिए असंभव प्रतीत हुआ था: मैं समझने लगा कि पेरिस में जिस घर में मैंने जीवन व्यतीत किया, जो उसका भी घर था, वह वास्तव में उस गहन शांति की अनुभूति थी जिसका मैंने उस रात सपना देखा था जब अल्बर्टीन बालबेक में मेरे साथ एक ही छत के नीचे सोई थी। वर्दुरिन्स के यहाँ उस पार्टी से पहले, बोइस से लौटने के बाद अल्बर्टीन के साथ हुई बातचीत, अगर वह न हुई होती तो मुझे सांत्वना नहीं मिलती, वह बातचीत जिसने कुछ हद तक अल्बर्टीन को मेरे बौद्धिक जीवन से परिचित कराया और कुछ मायनों में हमें एक कर दिया। निस्संदेह, अगर मैं उसके ज्ञान और मेरे प्रति उसकी दयालुता के प्रति पिघलते स्नेह के साथ लौटा, तो यह इसलिए नहीं था कि वे उन अन्य व्यक्तियों से कहीं अधिक थे जिन्हें मैं जानता था। क्या श्रीमती... बालबेक में डी कैम्ब्रेमर ने मुझसे कहा: "क्या! तुम अपना दिन एल्स्टिर जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति के साथ बिता सकते थे, और तुम उसे अपनी चचेरी बहन के साथ बिता रहे हो!" अल्बर्टीन की बुद्धिमत्ता मुझे प्रसन्न करती थी क्योंकि, उससे जुड़ाव के कारण, मेरे भीतर वह अनुभूति जागृत हो जाती थी जिसे मैं उसकी मिठास कहता था, ठीक वैसे ही जैसे हम किसी फल की मिठास को एक ऐसी अनुभूति कहते हैं जो केवल हमारे तालू में ही मौजूद होती है। और वास्तव में, जब मैंने अल्बर्टीन की बुद्धिमत्ता के बारे में सोचा, तो मेरे होंठ अनायास ही आगे बढ़ गए और एक ऐसी स्मृति का स्वाद चखा जिसकी वास्तविकता को मैं अपने से बाहर रखना पसंद करता था और उसे किसी दूसरे व्यक्ति की वस्तुनिष्ठ

के आकर्षण का आकलन उसी तरह नहीं कर सकते जो हर किसी की तरह हमसे परे है, हमारे मन के क्षितिज पर चित्रित है, और उस व्यक्ति के आकर्षण का आकलन उसी तरह नहीं कर सकते जो किसी आकस्मिक घटना के कारण हुई स्थान संबंधी त्रुटि के परिणामस्वरूप हमारे शरीर में इतनी गहराई से समा गई है कि जब हम पीछे मुड़कर यह सोचते हैं कि क्या उसने किसी खास दिन समुद्र किनारे की एक छोटी रेलवे-ट्राम के गलियारे में किसी महिला को नहीं देखा था, तो हमें वही पीड़ा महसूस होती है जो किसी सर्जन को हमारे दिल में गोली ढूंढते समय होती है। रोटी का एक साधारण टुकड़ा, जिसे हम खा रहे हैं, हमें लुई XV के सामने परोसे गए सभी ऑर्टोलन, युवा खरगोश और बारबावेल से कहीं अधिक आनंद देता है, और घास का वह तिनका जो पहाड़ की ढलान पर लेटे हुए हमारी आंखों के सामने कुछ इंच की दूरी पर कांपता है, भले ही वह कई मील दूर हो, हमसे किसी अन्य चोटी के शिखर को छिपा सकता है।
इसके अलावा, हमारी गलती यह है कि हम जिस स्त्री से प्रेम करते हैं, उसकी बुद्धिमत्ता और दयालुता को महत्व नहीं देते, चाहे वह कितनी भी मामूली क्यों न हो। हमारी गलती यह है कि हम दूसरों की दयालुता और बुद्धिमत्ता के प्रति उदासीन रहते हैं। झूठ हमें आक्रोशित करने लगता है, और दयालुता हमें कृतज्ञता का भाव तभी जगाती है, जब वह उस स्त्री से आती है जिससे हम प्रेम करते हैं, और शारीरिक इच्छा में बुद्धिमत्ता को उसका महत्व और नैतिक जीवन को एक ठोस आधार प्रदान करने की अद्भुत क्षमता होती है। मुझे वह दिव्य वस्तु, वह व्यक्ति, जिससे मैं खुलकर हर बात कर सकूँ, जिस पर मैं भरोसा कर सकूँ, फिर कभी नहीं मिलेगी। भरोसा? लेकिन क्या अन्य लोगों ने मुझे अल्बर्टीन से अधिक विश्वास नहीं दिलाया? क्या मैंने दूसरों के साथ अधिक खुलकर बातचीत नहीं की थी? असल

बात यह है कि विश्वास, बातचीत, अपने आप में तुच्छ चीजें हैं, इससे क्या फर्क पड़ता है कि वे कमोबेश अपूर्ण हैं, बशर्ते उनमें प्रेम समाहित हो, जो कि एकमात्र दिव्य वस्तु है। अब मैं अल्बर्टीन को देख सकता था, अपने पियानोला पर बैठी हुई, उसके काले बालों के नीचे गुलाबी रंगत लिए हुए, मैं अपने होठों पर उसकी जीभ को महसूस कर सकता था, जिसे वह खोलने की कोशिश कर रही थी, उसकी मातृत्वपूर्ण, अभौतिक, पोषण देने वाली और पवित्र जीभ जिसकी गुप्त लौ और ओस का अर्थ यह था कि जब अल्बर्टीन इसे मेरे गले या पेट की सतह पर फिसलने देती थी, तो वे स्पर्श, सतही होते हुए भी, एक अर्थ में उसके अंतर्मन द्वारा दिए गए, एक कपड़े की तरह बाहर की ओर मुड़ जाते थे जो अपनी अंतर्वस्त्रता दिखाने के लिए पलटा जाता है, सबसे बाहरी स्पर्शों में भी मानो एक प्रवेश के रहस्यमय आनंद का अनुभव करते थे।
ये सभी सुखद क्षण, जिन्हें मैं कभी वापस नहीं पा सकता, मैं यह नहीं कह सकता कि इनके खोने का कारण निराशा थी। निराशा महसूस करने के लिए, हमें उस जीवन से जुड़ा रहना चाहिए जिसका अंत केवल विपत्ति में ही हो सकता है। बालबेक में जब मैंने सूर्योदय देखा और महसूस किया कि आने वाले दिनों में से कोई भी दिन मेरे लिए कभी भी सुखद नहीं हो सकता, तब मैं निराशा में डूब गया था। तब से मैं काफी स्वार्थी रहा था, लेकिन जिस स्व से मैं अब जुड़ा हुआ था, वह स्व जो आत्म-रक्षा की प्रवृत्ति से प्रेरित उन जीवनदायी शक्तियों का निर्माण करता था, वह स्व अब जीवित नहीं था; जब मैंने अपनी शक्ति, अपनी जीवन शक्ति, अपने भीतर के सर्वोत्तम तत्वों के बारे में सोचा, तो मैंने एक ऐसे खजाने के बारे में सोचा जो मेरे पास था (जिस पर केवल मेरा ही अधिकार था क्योंकि अन्य लोग उस भावना को ठीक से नहीं जान सकते थे, जो मेरे भीतर छिपी हुई थी और

जिसने मुझे प्रेरित किया था) और जिसे अब कोई मुझसे कभी नहीं छीन सकता क्योंकि वह अब मेरे पास नहीं है।
और सच कहूँ तो, जब भी मैंने इसे पाया था, तो केवल इसलिए कि मैं खुद को इसे पाने वाला समझता था। मैंने केवल अल्बर्टीन को देखकर और उसे अपने दिल में बसाकर उसे अपने भीतर बसाने की मूर्खता ही नहीं की थी, न ही घरेलू स्नेह को कामुक सुख के साथ मिलाने की मूर्खता की थी। मैंने खुद को यह समझाने की भी कोशिश की थी कि हमारा रिश्ता प्रेम है, कि हम एक-दूसरे के साथ प्रेम का अभ्यास कर रहे हैं, क्योंकि वह आज्ञाकारी रूप से मेरे दिए गए चुंबनों का जवाब देती थी। और समय के साथ इस बात पर विश्वास करने के कारण, मैंने न केवल उस स्त्री को खोया जिससे मैं प्रेम करता था, बल्कि उस स्त्री को भी खोया जो मुझसे प्रेम करती थी, मेरी बहन, मेरी बच्ची, मेरी कोमल प्रेमिका। संक्षेप में, मुझे एक ऐसा आशीर्वाद और अभिशाप मिला था जिसे स्वान नहीं जानता था, क्योंकि ओडेट से प्रेम करने और उससे ईर्ष्या करने के पूरे समय के दौरान, उसने उसे मुश्किल से ही देखा था, क्योंकि कुछ दिनों में जब वह उसे आखिरी क्षण में टाल देती थी, तो उसके लिए उससे मिलना बहुत मुश्किल हो जाता था। लेकिन बाद में उसने उसे अपनी पत्नी के रूप में अपने पास रखा, और अपनी मृत्यु तक उसी के साथ रहा। इसके विपरीत, मैं अल्बर्टीन से ईर्ष्या करता था, जो स्वान से कहीं अधिक भाग्यशाली थी, और उसे अपने घर में अपने साथ रखा था। मैंने उस स्थिति को साकार कर लिया था जिसका स्वान अक्सर सपना देखता था, और जिसे उसने तब तक भौतिक रूप से महसूस नहीं किया जब तक कि उसमें उसकी रुचि समाप्त नहीं हो गई। लेकिन अंततः मैं अल्बर्टीन को वैसे अपने पास नहीं रख पाया जैसे उसने ओडेट को रखा था। वह मुझसे दूर चली गई, वह मर गई। क्योंकि कुछ भी हूबहू दोहराया नहीं

जाता, और सबसे समान जीवन, जिन्हें हम व्यक्तियों के रिश्ते और परिस्थितियों की समानता के कारण सममित रूप से प्रस्तुत करने के लिए चुनते हैं, कई मायनों में एक दूसरे के विपरीत रहते हैं। अपनी जान गंवाकर मैंने कुछ खास नहीं खोया; अब तो मैंने सिर्फ एक खाली ढांचा, एक कलाकृति का खाली ढांचा ही खोया है। भविष्य में मैं उसमें क्या भरूंगा, इसकी मुझे कोई परवाह नहीं, लेकिन उसमें समाहित बातों को सोचकर मुझे खुशी और गर्व महसूस हो रहा था। मैं उन सुखद पलों की यादों में खोया रहा, और इस नैतिक सहारे ने मुझे एक ऐसा सुकून दिया जिसे मृत्यु भी भंग नहीं कर सकती थी।

जब मैं बालबेक में उसे बुलाता था, तो वह मुझसे मिलने के लिए कितनी जल्दी में आती थी—बस अपने बालों पर इत्र छिड़कने के लिए ही थोड़ी देर रुकती थी, ताकि मुझे खुश कर सके। बालबेक और पेरिस की ये तस्वीरें, जिन्हें मैं दोबारा देखना पसंद करता था, उसकी छोटी सी ज़िंदगी के ऐसे पन्ने थे जो अभी भी ताज़ा थे, और कितनी तेज़ी से पलट गए थे। यह सब, जो मेरे लिए महज़ एक याद थी, उसके लिए एक कर्म था—एक ऐसा कर्म जो किसी दुखद नाटक की तरह, अचानक आने वाली मौत की ओर तेज़ी से बढ़ता हुआ था। लोग हमारे अंदर एक तरह से विकसित होते हैं, लेकिन हमारे बाहर दूसरी तरह से (मैंने सचमुच उन शामों में ऐसा महसूस किया था, जब मैंने अल्बर्टिन में गुणों की एक ऐसी समृद्धि देखी थी, जो केवल मेरी यादों की वजह से नहीं थी), और ये दोनों तरीके एक-दूसरे पर असर डाले बिना नहीं रहते। हालाँकि, अल्बर्टिन को जानने की कोशिश में—और फिर उसे पूरी तरह से अपना बनाने की चाह में—मैंने बस एक ऐसी ज़रूरत का पालन किया था, जिसके तहत मैं प्रयोगों के ज़रिए किसी भी दूसरे इंसान के रहस्य को, अपने ही अस्तित्व के साधारण तत्वों में बदल देना

चाहता था; लेकिन मैं ऐसा किए बिना, अल्बर्टिन की ज़िंदगी पर अपना असर डाले बिना ऐसा नहीं कर सका। शायद मेरी दौलत, या किसी शानदार शादी की उम्मीद ने उसे मेरी ओर खींचा था; मेरी ईर्ष्या ने उसे मेरे पास रोके रखा; उसकी अच्छाई, या उसकी बुद्धिमत्ता, या उसका अपराध-बोध, या उसकी चालाकी ने उसे यह सब स्वीकार करने पर मजबूर किया; और इन्हीं सबने मुझे एक ऐसी कैद को और भी ज़्यादा कठोर बनाने की ओर धकेला, जिसकी ज़ंजीरें मैंने अपनी मानसिक उथल-पुथल की अंदरूनी प्रक्रिया से खुद ही गढ़ी थीं—और इन ज़ंजीरों का अल्बर्टिन की ज़िंदगी पर ऐसा असर हुआ कि, नियति के पेंडुलम की स्वाभाविक गति के चलते, मेरी अपनी मानसिकता के सामने नई और भी ज़्यादा तकलीफ़देह समस्याएँ खड़ी हो गईं; क्योंकि वह मेरी इस कैद से भाग निकली थी—और जाकर एक ऐसे घोड़े पर सवार होकर अपनी जान दे दी, जो अगर मैं न होता तो उसके पास कभी न होता—और इस तरह, अपनी मौत के बाद भी, वह मेरे लिए ऐसे संदेह छोड़ गई, जिनकी सच्चाई अगर कभी सामने आती, तो शायद वह मेरे लिए बालबेक में हुई उस खोज से भी ज़्यादा तकलीफ़देह होती, जब मुझे पता चला था कि अल्बर्टिन, मैडम विंटुइल को जानती थी—क्योंकि तब अल्बर्टिन मुझे सांत्वना देने के लिए मेरे पास मौजूद नहीं होती। तो आत्मा की वह लंबी शिकायत, जो यह सोचती है कि वह अपने आप में ही कैद होकर जी रही है, देखने में तो एकतरफ़ा बातचीत (monologue) लगती है, लेकिन असल में ऐसा नहीं है; क्योंकि वास्तविकता की गूँजें इसका रास्ता बदल देती हैं। ऐसा जीवन, मानो व्यक्तिपरक मनोविज्ञान (subjective psychology) पर लिखा कोई निबंध हो, जो अपने आप आगे बढ़ता है; लेकिन दूर से ही, किसी दूसरी वास्तविकता या दूसरे अस्तित्व पर आधारित विशुद्ध यथार्थवादी उपन्यास के लिए 'कथानक' (action) का काम करता है। और उस उपन्यास के उतार-चढ़ाव, बारी-बारी

से, इस मनोवैज्ञानिक निबंध की दिशा और गति को भी प्रभावित करते हैं। हमारी प्रेम-कहानी का तंत्र कितना जटिल और व्यवस्थित था! हमारे प्रेम का विकास कितनी तेज़ी से हुआ! और शुरुआत में हुई तमाम देरी, रुकावटों और हिचकिचाहटों के बावजूद—ठीक वैसे ही जैसे बाल्ज़ाक की कुछ कहानियों या शूमान के गीतों में होता है— अचानक वह दुखद अंत (catastrophe) आ गया! यह सब पिछले एक साल के दौरान हुआ—जो मुझे एक सदी जितना लंबा लगा। बाल्बेक से लेकर पेरिस छोड़ने तक, अल्बर्टिन की छवि मेरे मन में कितनी बार बदली! और न सिर्फ़ मेरे मन में, बल्कि मुझसे स्वतंत्र होकर—और अक्सर मेरी जानकारी के बिना ही—वह खुद भी कितनी बदल गई थी! मुझे उस पूरे सुखद प्रेम-जीवन को—जो चला तो बहुत कम समय के लिए था, लेकिन मुझे बेहद विशाल और असीम प्रतीत होता था—अब हमेशा के लिए खो देना पड़ा; और फिर भी, वह मेरे लिए अपरिहार्य (indispensable) था। अपरिहार्य—भले ही शुरुआत में या अपने आप में वह कोई ऐसी चीज़ न रही हो जिसकी सख़्त ज़रूरत हो। क्योंकि अगर मैंने किसी पुरातात्विक ग्रंथ में बाल्बेक के चर्च का वर्णन न पढ़ा होता, तो मैं अल्बर्टिन से कभी न मिल पाता। अगर स्वान ने मुझे यह न बताया होता कि वह चर्च लगभग फ़ारसी शैली का है—जिससे मेरा रुझान बाइजेंटाइन-नॉर्मन शैली की ओर मुड़ा—तो शायद यह सब न होता। और अगर किसी वित्तीय समूह ने बाल्बेक में एक साफ़-सुथरा और आरामदायक होटल न बनवाया होता, जिससे मेरे माता-पिता ने मेरी मिन्नतें मानकर मुझे बाल्बेक भेजने का फ़ैसला किया—तो भी यह सब कभी न होता। सच कहूँ तो, जिस बाल्बेक की मैंने इतने लंबे समय से कामना की थी, वहाँ मुझे न तो अपने सपनों वाला फ़ारसी शैली का चर्च मिला, और न ही वह 'शाश्वत कोहरा' जिसकी मैंने कल्पना की थी। यहाँ तक कि वह मशहूर 'एक बजकर बाईस मिनट वाली ट्रेन' भी, मेरी

कल्पना में बनी उसकी छवि से बिल्कुल अलग थी। लेकिन हमारी कल्पना हमें जिन चीज़ों से वंचित रखती है—और जिन्हें पाने के लिए हम व्यर्थ ही इतनी तकलीफ़ उठाते हैं—उनकी भरपाई के तौर पर, जीवन हमें कुछ ऐसा ज़रूर दे देता है, जिसकी हमने दूर-दूर तक कल्पना भी नहीं की होती। कॉम्ब्रे में, जब मैं अपनी माँ की 'शुभ-रात्रि' की प्रतीक्षा में भारी मन से लेटा रहता था, तब मुझे कौन बताता कि वे चिंताएँ ठीक हो जाएँगी, और फिर एक दिन वे दोबारा उभर आएँगी—इस बार मेरी माँ के लिए नहीं, बल्कि एक ऐसी लड़की के लिए जो शुरू में समुद्र के क्षितिज पर मेरे लिए एक फूल से ज़्यादा कुछ नहीं होगी—एक ऐसा फूल जिस पर मेरी आँखें रोज़ टिकी रहतीं, लेकिन एक ऐसा फूल जो सोच भी सकता था; और जिसके मन में एक खास जगह बनाने के लिए मैं इतना बचकाना तौर पर बेचैन रहता कि इस बात से ही दुखी हो जाता कि उसे यह पता नहीं था कि मैं मैडम डी विलेपैरिस को जानता हूँ? हाँ, वह 'शुभ-रात्रि'—एक अजनबी का वह चुंबन—ही था, जिसने आने वाले सालों में मुझे उतना ही गहरा कष्ट दिया, जितना मुझे बचपन में तब होता था जब मेरी माँ मेरे कमरे में नहीं आती थीं। खैर, यह अल्बर्टिन—जो मेरे लिए इतनी ज़रूरी थी, और जिसके प्रति प्रेम से अब मेरी आत्मा लगभग पूरी तरह भर चुकी थी—अगर स्वान ने मुझे बालबेक के बारे में न बताया होता, तो मैं उसे कभी जान ही न पाता। शायद उसकी ज़िंदगी और लंबी होती, और मेरी ज़िंदगी उस चीज़ से वंचित रह जाती, जो अब उसे एक तरह का 'शहादत' (martyrdom) बना रही थी। और साथ ही मुझे ऐसा भी लगा कि, अपने पूरी तरह से…
अपनी स्वार्थी भावना के कारण, मैंने अल्बर्टिन को मरने दिया, ठीक वैसे ही जैसे मैंने अपनी दादी की हत्या की थी। बाद में भी, जब मैं बालबेक में उसे जान चुका था, तब भी मैं उससे उस तरह प्यार

न करने में सक्षम हो सकता था, जैसा कि मैंने बाद में उससे किया। जब मैंने गिल्बर्ट को छोड़ दिया और जान गया कि एक दिन मैं किसी दूसरी औरत से प्यार कर सकूंगा, तो मैंने शायद ही कभी इस बात पर शक करने की हिम्मत की कि, सिर्फ़ अतीत को देखते हुए, क्या गिल्बर्ट ही वह अकेली औरत थी जिससे मैं प्यार करने में सक्षम था। खैर, अल्बर्टिन के मामले में मुझे अब कोई शक नहीं था; मुझे यकीन था कि ज़रूरी नहीं कि मैं उसी से प्यार करता, बल्कि वह कोई और भी हो सकती थी। इसे साबित करने के लिए, बस इतना ही काफ़ी होता कि मैडम डी स्टरमारिया, जिस शाम मैं उसे बोइस के द्वीप पर रात का खाना खिलाने ले जाने वाला था, वह मुझे मना न करती। तब भी बहुत देर नहीं हुई थी, और वह मैडम डी स्टरमारिया ही होती जिस पर मैं अपनी कल्पना की उस शक्ति को केंद्रित करता, जो हमें किसी औरत से उसके व्यक्तित्व का एक ऐसा अनोखा एहसास दिलाती है कि वह हमें अपने आप में अद्वितीय, हमारे लिए पहले से तय और ज़रूरी लगने लगती है। ज़्यादा से ज़्यादा, लगभग शारीरिक दृष्टिकोण अपनाते हुए, मैं कह सकता हूं कि मैं किसी दूसरी औरत के लिए भी ऐसा ही अनन्य प्यार महसूस कर सकता था, लेकिन किसी भी दूसरी औरत के लिए नहीं। क्योंकि अल्बर्टिन, जो गोल-मटोल और सांवली थी, गिल्बर्ट जैसी नहीं दिखती थी, जो लंबी और गोरी थी; फिर भी वे दोनों एक ही तरह के स्वस्थ तत्वों से बनी थीं, और उन्हीं कामुक गालों पर दोनों की आँखों में एक ऐसी चमक थी जिसे समझना मुश्किल था। वे ऐसी औरतें थीं जो उन मर्दों का ध्यान कभी आकर्षित नहीं करतीं, जो अपनी तरफ़ से, उन दूसरी औरतों के लिए बेहद अजीबोगरीब हरकतें करते थे, जो मुझे बिल्कुल भी आकर्षित नहीं करती थीं। किसी भी मर्द को लगभग हमेशा एक ही तरह से ज़ुकाम होता है, वगैरह-वगैरह; कहने का मतलब यह है कि, किसी घटना के घटने के लिए उसे कुछ खास

परिस्थितियों के मेल की ज़रूरत होती है; यह स्वाभाविक है कि जब वह प्यार में पड़ता है, तो वह एक खास तरह की औरत से प्यार करता है
— एक ऐसा वर्ग जो, देखा जाए तो, काफ़ी बड़ा है। अल्बर्टिन की वे
पहली दो नज़रें, जिन्होंने मुझे सपनों की दुनिया में खो दिया था, गिल्बर्ट की पहली नज़रों से बिल्कुल भी अलग नहीं थीं। मुझे लगभग यकीन हो चला था कि गिल्बर्ट की वह रहस्यमयी शख्सियत, वह कामुकता, वह बेबाक और चालाक मिजाज मुझे लुभाने के लिए फिर लौट आया है—इस बार अल्बर्टिन के शरीर में, एक ऐसा शरीर जो काफी अलग था, फिर भी जिसमें कुछ समानताएँ भी थीं। अल्बर्टिन के मामले में
— मेरे साथ बिताए गए एक बिल्कुल अलग जीवन की बदौलत, जिसमें कोई
बाहरी दखल नहीं हो पाया था—विचारों के एक ऐसे समूह के बीच, जिसमें एक कष्टदायक सोच ने हमेशा एक मज़बूत जुड़ाव बनाए रखा था
— भटकाव या विस्मृति की कोई दरार नहीं पड़ पाई थी। सच तो यह है
कि उसका जीता-जागता शरीर, गिल्बर्ट के शरीर की तरह, किसी दिन अचानक वह शरीर बनना बंद नहीं हुआ था, जिसमें मुझे वे चीज़ें मिलीं जिन्हें मैंने बाद में अपने लिए (जो शायद दूसरे पुरुषों के लिए वैसी न होतीं) 'नारी-सुलभ आकर्षण' के रूप में पहचाना। लेकिन वह अब मर चुकी थी। समय के साथ, मैं उसे भूल जाऊँगा। कौन कह सकता था कि तब, वही गुण—वह समृद्ध रक्त, वह बेचैन कर देने वाली गहन सोच—किसी दिन फिर लौटकर मेरी ज़िंदगी में तबाही मचा देंगे? लेकिन इस बार वे किस नारी-रूप में प्रकट होंगे, इसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। गिल्बर्ट का उदाहरण मुझे अल्बर्टिन के बारे में कोई अंदाज़ा लगाने या यह सोचने में उतनी ही कम मदद कर पाता कि मुझे उससे प्यार हो जाएगा, जितनी कि विंटुइल की 'सोनाटा' की याद मुझे उसके 'सेप्टेट' की कल्पना करने में मदद कर पाती। सच तो यह है कि, इससे भी बढ़कर, अल्बर्टिन से अपनी पहली

ही स्त्री 'अद्वितीय' होती। हम उसे 'अद्वितीय' मानते हैं; पर असल में वह अनगिनत है। और फिर भी, हमारी प्यार भरी नज़रों में वह एक ठोस, अविनाशी रूप में बसी है, और आने वाले लंबे समय तक कोई दूसरी स्त्री उसकी जगह नहीं ले सकती। सच तो यह है कि उस स्त्री में जान तो बस एक तरह के जादू से ही आई है।
मैं स्नेह के उन हज़ारों तत्वों को शब्दों में पिरोता हूँ जो पहले से ही हमारे भीतर बिखरी हुई अवस्था में मौजूद थे; जिन्हें उसने इकट्ठा किया, आपस में जोड़ा, और उनके बीच की हर खाई को पाट दिया। यह हम ही हैं जिन्होंने उसे अपनी कल्पना के रंग-रूप देकर, उस प्रिय वस्तु को एक ठोस आकार प्रदान किया है। इसी कारण से, भले ही उसके लिए हम हज़ारों पुरुषों में से केवल एक हों—और शायद उन सबमें भी सबसे आख़िरी—लेकिन हमारे लिए वह एकमात्र स्त्री है; वह स्त्री जिसकी ओर हमारा संपूर्ण जीवन प्रवाहित होता है। यह सच था कि मैं इस बात से भली-भांति अवगत था कि यह प्रेम अनिवार्य नहीं था—क्योंकि यह प्रेम तो 'मदमोइज़ेल डी स्टरमारिया' के साथ भी हो सकता था। लेकिन, इस संभावना के परे भी, स्वयं प्रेम के स्वरूप की अपनी समझ के आधार पर—जब मैंने पाया कि यह प्रेम, उन अनुभवों से बहुत अधिक मिलता-जुलता है जो मैंने अन्य स्त्रियों के साथ जिए थे—और जब मुझे यह भी महसूस हुआ कि यह प्रेम 'अल्बर्टाइन' से कहीं अधिक विशाल है; उसे अपने आगोश में समेटे हुए, फिर भी उससे बेख़बर—ठीक वैसे ही, जैसे कोई विशाल ज्वार किसी नन्ही-सी चट्टान के चारों ओर चक्कर लगाता है। परंतु धीरे- धीरे, अल्बर्टाइन के साथ निरंतर रहने के कारण, वे बेड़ियाँ जिन्हें मैंने स्वयं अपने हाथों से गढ़ा था, उन्हें मैं चाहकर भी तोड़ न सका। अल्बर्टाइन के व्यक्तित्व को उस प्रेम-भावना से जोड़ने की आदत—जिसकी प्रेरणा वास्तव में अल्बर्टाइन से नहीं

मिली थी—ने मुझे फिर भी यह विश्वास दिला दिया कि यह प्रेम केवल उसी के लिए विशिष्ट है। ठीक वैसे ही, जैसे दर्शनशास्त्र की एक विशेष विचारधारा के अनुसार, 'आदत' दो अलग-अलग घटनाओं के बीच विचारों के मात्र संयोग को ही, 'कार्य-कारण' (causation) के किसी अटल नियम की शक्ति और अनिवार्यता का भ्रम प्रदान कर देती है। मैंने सोचा था कि मेरे सामाजिक संबंध और मेरी धन-संपत्ति मुझे जीवन के कष्टों से मुक्ति दिला देंगे; और शायद उन्होंने ऐसा कुछ ज़्यादा ही प्रभावी ढंग से किया—क्योंकि ऐसा प्रतीत होता था कि उन्होंने मुझे 'महसूस करने', 'प्रेम करने' और 'कल्पना करने' की क्षमता से ही वंचित कर दिया था। मुझे उस गरीब ग्रामीण युवती से ईर्ष्या होती थी, जिसके पास सामाजिक संपर्कों का अभाव होने के कारण—यहाँ तक कि तार (telegram) भेजने की सुविधा न होने के कारण भी—उसे अपने किसी दुख पर महीनों तक एकांत में चिंतन करने का अवसर मिल जाता था; एक ऐसा दुख, जिसे वह किसी कृत्रिम उपाय से भुला या सुला नहीं सकती थी। और अब मुझे यह एहसास होने लगा था कि — 'मदाम डी गुएरमांटेस' के प्रसंग में—जिनके पास वह सब कुछ मौजूद था जो उनके और मेरे बीच एक अनंत खाई पैदा कर सकता था— मैंने देखा था कि वह खाई अचानक ही इस विचार के द्वारा पट गई थी कि 'सामाजिक लाभ' और कुछ नहीं, बल्कि केवल एक जड़ और परिवर्तनशील पदार्थ मात्र हैं। ठीक उसी प्रकार—यद्यपि विपरीत दिशा में— मेरे सामाजिक संबंधों, मेरी धन-संपत्ति और उन समस्त भौतिक साधनों ने—जिनके बल पर न केवल मेरी अपनी सामाजिक स्थिति, बल्कि मेरे युग की संपूर्ण सभ्यता ने भी मुझे लाभ उठाने का अवसर दिया था—और कुछ नहीं किया, सिवाय इसके कि उन्होंने अल्बर्टाइन की उस अडिग और विपरीत इच्छाशक्ति के विरुद्ध मेरे संघर्ष के अंतिम परिणाम को केवल कुछ समय के लिए टाल दिया था; एक ऐसी इच्छाशक्ति,

जिस पर किसी भी प्रकार के दबाव का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था। यह सच है कि मैं सेंट-लूप के साथ टेलीग्राम और टेलीफ़ोन संदेशों का आदान-प्रदान कर पाया था, और टूर्स स्थित ऑफ़िस के साथ लगातार संपर्क में रह पाया था; लेकिन क्या उनके इंतज़ार में हुई देरी बेकार साबित नहीं हुई? क्या उसका नतीजा शून्य नहीं निकला? और गाँव की लड़कियाँ—जिनके पास न तो कोई सामाजिक लाभ होते हैं, न ही कोई रिश्तेदार, और न ही वे लोग जो सभ्यता की पूर्णताओं का आनंद लेते हैं—क्या वे कम दुख नहीं उठातीं? ऐसा इसलिए है क्योंकि हम सभी की इच्छाएँ कम होती हैं; हम उन चीज़ों के लिए कम पछताते हैं जिन्हें हमने हमेशा से ही अपनी पहुँच से बाहर माना है—और इसी वजह से वे चीज़ें हमें हमेशा अवास्तविक ही लगती रही हैं। हम उस व्यक्ति को ज़्यादा शिद्दत से चाहते हैं जो खुद को हमें सौंपने वाला होता है; आशा ही हमें उस पर अधिकार मिलने का पूर्वाभास कराती है; लेकिन पछतावा भी हमारी इच्छा को और भी तीव्र बना देता है। मैडम डी स्टरमारिया ने जब 'बोइस' (Bois) के द्वीप पर मेरे साथ रात का खाना खाने से इनकार कर दिया, तो इसी बात ने उन्हें मेरे प्रेम का पात्र बनने से रोक दिया। अगर बाद में, बहुत देर हो जाने से पहले, मैं उन्हें दोबारा देख पाया होता, तो शायद यही बात मुझे उनसे प्रेम करने के लिए काफ़ी होती। जैसे ही मुझे पता चला कि वह नहीं आ रही हैं—और मैंने यह असंभव-सी लगने वाली कल्पना की (जो बाद में सही साबित हुई) कि शायद उनका कोई ईर्ष्यालु प्रेमी है जो उन्हें दूसरे पुरुषों से मिलने से रोकता है, और यह कि मैं उन्हें फिर कभी नहीं देख पाऊँगा—तो मुझे इतना गहरा दुख हुआ कि मैं उन्हें देखने के लिए दुनिया की कोई भी चीज़ दाँव पर लगाने को तैयार था। यह मेरे जीवन के सबसे तीव्र कष्टों में से एक था, जिसे सेंट-लूप के आगमन ने कुछ हद तक शांत

कि अल्बर्टिन, मैडमोइसेल विंटुइल को जानती है)—कि वह क्या सोचती है कि मैं उससे क्या कहने वाला हूँ?

बिना किसी सच्ची भावना के, बस एक मकसद से, मैंने वही बात कही होगी—और ठीक उन्हीं शब्दों में—जो मैंने एक दिन पहले अल्बर्टिन के साथ समय बिताते हुए कही होती: "अफ़सोस! काश तुम थोड़ा पहले आ गई होती, अब तो मुझे किसी और से प्यार हो गया है।" फिर, एंड्री के मामले में—जिसकी जगह बाद में अल्बर्टिन ने ले ली, जब मुझे पता चला कि अल्बर्टिन, मैडम विंटुइल को जानती थी— मेरा प्यार उन दोनों के बीच बदलता रहा; इस तरह, असल में, एक समय में मुझे सिर्फ़ एक ही लड़की से प्यार रहा। लेकिन पहले एक ऐसा वाकया भी हुआ था, जब मेरा दो लड़कियों से कुछ-कुछ झगड़ा हो गया था। उन दोनों में से जो भी लड़की पहले सुलह की पहल करती, उससे मुझे मानसिक शांति मिल जाती; लेकिन प्यार मुझे दूसरी लड़की से होता—खासकर तब, जब वह मुझसे नाराज़ रहती। इसका यह मतलब नहीं कि मैं पहली लड़की के साथ कोई पक्का रिश्ता नहीं बनाता; क्योंकि दूसरी लड़की की बेरुखी से मुझे जो तकलीफ़ होती, उसे कम करने की कोशिश पहली लड़की ही करती—भले ही उसकी कोशिश पूरी तरह कामयाब न होती। और अगर दूसरी लड़की वापस न आती, तो मैं उसे धीरे-धीरे भूल ही जाता। अब हुआ यह कि, मुझे पूरा यकीन था कि उन दोनों में से कम-से-कम कोई एक तो ज़रूर वापस आएगी; लेकिन कुछ समय तक, उनमें से कोई भी वापस नहीं आई। इसलिए, मेरी तकलीफ़ भी दोगुनी हो गई, और मेरा प्यार भी दोगुना हो गया। मैंने अपने लिए यह अधिकार सुरक्षित रखा था कि जो लड़की वापस आएगी, उससे मैं प्यार करना छोड़ दूँगा; लेकिन जब तक ऐसा नहीं हुआ, मैं उन दोनों की वजह से तकलीफ़ झेलता रहा। ज़िंदगी का एक ऐसा दौर आता है—जो शायद काफ़ी कम उम्र में

ही आ सकता है—जब हमें किसी इंसान से उतना प्यार नहीं होता, जितना कि उसके बिछड़ने से होता है। इस दौर में, हम उस इंसान के बारे में बस एक ही बात जान पाते हैं—और सिर्फ़ वही एक बात— क्योंकि उसका चेहरा हमारी यादों में धुंधला पड़ चुका होता है, उसके दिल का हमारे लिए कोई वजूद नहीं रह जाता, और उसके प्रति हमारा झुकाव भी बिल्कुल नया और समझ से परे होता है। वह एक बात यह है कि हमारी तकलीफ़ को मिटाने के लिए हमें बस उस इंसान का एक संदेश चाहिए होता है: "क्या मैं तुमसे मिलने आ सकती हूँ?" जिस दिन फ्रांस्वा ने मुझे बताया कि "मैडम अल्बर्टिन चली गई हैं," उस दिन अल्बर्टिन से मेरा बिछड़ना, अनगिनत दूसरे बिछड़ने के पलों का एक प्रतीक जैसा था। क्योंकि अक्सर ऐसा होता है कि हमें यह एहसास दिलाने के लिए कि हम किसी से प्यार करते हैं—या शायद, सच कहूँ तो, हमें किसी के प्यार में डालने के लिए—पहले बिछड़ने का दिन आना ज़रूरी होता है। जब कोई अपॉइंटमेंट पूरा नहीं होता, और हमें लिखित रूप में मना कर दिया जाता है—जो हमारे चुनाव को तय करता है—तो हमारी कल्पना, जो दुख से घायल होती है, बहुत तेज़ी से अपना काम शुरू कर देती है। वह इतनी पागलपन भरी तेज़ी से एक ऐसे प्यार को गढ़ लेती है जो अभी शुरू ही हुआ था, और जिसका कोई खास रूप भी नहीं था—जो पिछले कई महीनों से बस एक कच्चे खाके के रूप में रहने के लिए ही बना था। यह सब देखकर हमारी बुद्धि—जो हमारे दिल की रफ़्तार से तालमेल नहीं बिठा पाती—कभी-कभी हैरानी से चिल्ला उठती है: "अरे, तुम तो पागल हो गए हो! ये कैसे अजीब विचार हैं जो तुम्हें इतना दुखी कर रहे हैं? असली ज़िंदगी ऐसी नहीं होती।" और सच कहूँ तो, उस पल अगर उस बेवफ़ा इंसान ने हमें हरकत में न लाया होता, तो कुछ सेहतमंद चीज़ों में ध्यान बँटाने से ही—जो हमारे दिल को शारीरिक रूप से शांत कर देतीं—

हमारा प्यार खत्म हो जाता। खैर, अल्बर्टिन के साथ यह ज़िंदगी, भले ही अपने मूल रूप में ज़रूरी न रही हो, लेकिन मेरे लिए यह अब बेहद ज़रूरी बन गई थी। जब मैं मैडम डी गुएरमांटेस के प्यार में था, तो मैं काँप उठता था; क्योंकि मैं खुद से कहता था कि उनके पास आकर्षण के इतने ज़्यादा साधन हैं—न सिर्फ़ खूबसूरती, बल्कि ऊँचा ओहदा और दौलत भी—कि उन्हें किसी भी आम-खास इंसान के साथ घुलने-मिलने की पूरी आज़ादी होगी, और उन पर मेरा कोई ज़ोर नहीं चलेगा। अल्बर्टिन के पास न पैसा था, न कोई पहचान; उसे तो मुझसे शादी करने की चाहत रही होगी। और फिर भी, मैं उसे पूरी तरह से अपना नहीं बना पाया। हमारी सामाजिक हैसियत चाहे जो भी हो, हम कितनी भी समझदारी भरी सावधानियाँ क्यों न बरत लें—जब सच सामने आता है, तो पता चलता है कि किसी दूसरे इंसान की ज़िंदगी पर हमारा कोई ज़ोर नहीं चलता। उसने मुझसे यह क्यों नहीं कहा: "मेरी पसंद-नापसंद ऐसी है"? अगर वह कहती, तो मैं मान जाता और उसे अपनी पसंद पूरी करने की आज़ादी दे देता। मैं एक उपन्यास पढ़ रहा था, जिसमें एक ऐसी औरत थी जिसे उसका प्रेमी—चाहे कितनी भी डाँट-फटकार क्यों न लगा ले—बोलने पर मजबूर नहीं कर पाता था। जब मैंने वह किताब पढ़ी थी, तो मुझे वह स्थिति बेतुकी लगी थी; मैंने खुद से कहा था कि अगर मैं उस कहानी का हीरो होता, तो सबसे पहले उस औरत को बोलने पर मजबूर करता, और फिर हम आपस में बात करके कोई हल निकाल लेते; भला इस बेवजह के दुख का क्या फ़ायदा? लेकिन अब मुझे समझ आया कि हम अपनी ही तकलीफ़ों की ज़ंजीरें गढ़ने से खुद को रोक नहीं सकते; और यह भी कि हम अपनी मर्ज़ी को चाहे कितनी भी अच्छी तरह क्यों न जानते हों, दूसरे लोग हमारी मर्ज़ी के मुताबिक नहीं चलते।

फिर भी, वे पीड़ादायक, वे अटल सत्य जिन्होंने हम पर प्रभुत्व जमाया और जिनसे हम अनभिज्ञ थे, हमारी भावनाओं का सत्य, हमारे भाग्य का सत्य, कितनी बार अनजाने में, अनजाने में, हमने उन्हें ऐसे शब्दों में व्यक्त किया जिनमें निस्संदेह हमने सोचा होगा कि हम झूठ बोल रहे हैं, लेकिन जिनका भविष्यसूचक महत्व बाद की घटनाओं से सिद्ध हो चुका है। मुझे वे अनेक शब्द याद आ सकते हैं जो हममें से प्रत्येक ने उस समय अपने भीतर छिपे सत्य को जाने बिना कहे थे, वास्तव में हमने यह सोचकर कहे थे कि हम एक-दूसरे को धोखा दे रहे हैं, वे शब्द जिनका झूठ बहुत मामूली, बिल्कुल नीरस, पूरी तरह से हमारी दयनीय बेईमानी तक ही सीमित था, उस सत्य की तुलना में जो हमें ज्ञात नहीं था। झूठ, गलतियाँ, वास्तविकता से परे, जिसे हममें से किसी ने भी नहीं समझा, वह सत्य जो उससे भी आगे तक फैला हुआ है, हमारे स्वभाव का सत्य जिसके मूलभूत नियम हमसे परे हैं और जिन्हें प्रकट होने में समय लगता है, हमारे भाग्य का सत्य भी। मैंने सोचा था कि जब मैंने बालबेक में उससे कहा था, "जितना ज़्यादा मैं तुम्हें देखता हूँ, उतना ही ज़्यादा तुमसे प्यार करता हूँ" (और फिर भी हर पल की वो आत्मीयता ही थी जिसने ईर्ष्या के माध्यम से मुझे उससे इतना मज़बूती से जोड़ दिया था), "मैं जानता हूँ कि मैं बौद्धिक रूप से तुम्हारे काम आ सकता हूँ"; और पेरिस में: "सावधान रहना। याद रखना कि अगर तुम्हारे साथ कोई दुर्घटना हो गई, तो मेरा दिल टूट जाएगा।" और उसने कहा: "लेकिन मेरे साथ दुर्घटना हो सकती है"; और पेरिस में उस शाम जब मैंने उससे विदा होने का नाटक किया, मैंने कहा: "मुझे तुम्हें एक बार फिर देखने दो क्योंकि अब मैं तुम्हें फिर कभी नहीं देख पाऊँगा, और यह हमेशा के लिए होगा!" और जब उसी शाम उसने कमरे में चारों ओर देखा: "यह सोचकर कि मैं इस कमरे को, उन किताबों को, उस पियानोला

को, पूरे घर को फिर कभी नहीं देख पाऊँगी, मुझे विश्वास नहीं हो रहा है और फिर भी यह सच है।" अपने आखिरी पत्रों में, जब उन्होंने लिखा—शायद मन ही मन सोच रही थीं: "यही वो बातें हैं जो मुझे उसे बतानी हैं"—"मैं अपना सबसे अच्छा हिस्सा तुम्हारे साथ छोड़ रही हूँ" (और क्या सच में अब उनकी बुद्धिमत्ता, उनकी अच्छाई, उनकी सुंदरता मेरी स्मृति की वफ़ादारी, उसकी शक्ति, जो दुर्भाग्यवश कमज़ोर थी, के भरोसे ही नहीं सौंपी गई थी?) और "वह दोहरा गोधूलि (क्योंकि रात हो रही थी और हम बिछड़ने वाले थे) मेरे विचारों से तभी मिटेगा जब अंधेरा पूरी तरह छा जाएगा," ये वाक्य उन्होंने उस दिन की पूर्व संध्या पर लिखे थे जब उनका मन सचमुच घोर अंधकार में डूब गया था, और जब, शायद, आखिरी झलक में, जो क्षण भर की चिंता से अनंत तक खिंची हुई थी, उन्होंने शायद हमारी आखिरी यात्रा को फिर से देखा था और उस पल में जब सब कुछ हमें छोड़ देता है और हम अपने लिए एक आस्था गढ़ लेते हैं, जैसे नास्तिक युद्ध के मैदान में ईसाई बन जाते हैं, उन्होंने शायद उस दोस्त को अपनी मदद के लिए बुलाया था जिसे उन्होंने अक्सर कोसा था लेकिन जिसका उन्होंने बहुत सम्मान किया था, जो स्वयं—सभी धर्मों के लिए हम दोनों एक जैसे हैं—यह सोचना इतना क्रूर था कि काश उसे भी खुद को वैसे ही देखने का समय मिला होता जैसी वह थी, उसे अपना अंतिम विचार देने का, अपने पापों को अंत में उसके सामने स्वीकार करने का, और उसी में मरने का। लेकिन इसका क्या फायदा, क्योंकि भले ही उस क्षण उसे खुद को वैसे ही देखने का समय मिला होता जैसी वह थी, हम दोनों में से किसी को भी यह समझ नहीं आया था कि हमारी खुशी कहाँ है, हमें क्या करना चाहिए, जब तक कि वह खुशी न मिल जाए, क्योंकि वह खुशी अब संभव नहीं थी, जब तक और क्योंकि हम उसे अब और प्राप्त नहीं कर सकते थे। जब तक चीजें

जानते जो इसके स्थान पर हो सकता था। मैंने मन ही मन दोहराया: "काश उसने मुझसे यह न कहा होता: 'मेरी ये पसंद हैं,' तो मैं मान जाता, उसे अपनी पसंद पूरी करने देता, इस समय मैं उसे चूम रहा होता।" मुझे यह याद दिलाना कितना दुखद लगता है कि उसने मुझसे झूठ बोला था, जब उसने मुझे छोड़ने से तीन दिन पहले मुझसे कसम खाई थी कि मैडम विंटेइल की सहेली के साथ उसके वे संबंध कभी नहीं थे, जिन्हें अल्बर्टीन के कसम खाते समय शर्म से उसने कबूल कर लिया था। बेचारी बच्ची, उसमें कम से कम इतनी ईमानदारी तो थी कि वह यह कसम खाने से इनकार कर दे कि मैडम विंटेइल को फिर से देखने की खुशी का उस दिन वर्दुरिन्स के घर जाने की उसकी इच्छा में कोई हाथ नहीं था। उसने अपनी बात पूरी तरह से क्यों नहीं मानी, उसने वह अकल्पनीय कहानी क्यों गढ़ी? शायद यह आंशिक रूप से मेरी गलती थी कि मेरे तमाम आग्रहों के बावजूद, जो उसके इनकार के आगे बेअसर थे, वह मुझसे कभी यह कहने को तैयार नहीं हुई: "मेरी भी ऐसी रुचियां हैं।" शायद यह आंशिक रूप से मेरी गलती थी क्योंकि बालबेक में, उस दिन जब मैडम के बाद... डी कैम्ब्रेमर के फोन के बाद, मैंने अल्बर्टीन से अपनी पहली बातचीत की थी, और जब मैं यह कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि एंड्री के साथ उसका किसी भी तरह से ज़रूरत से ज़्यादा भावुक दोस्ती से बढ़कर कुछ और हो सकता है, तब मैंने उस तरह की नैतिक चूक पर अपनी घृणा को ज़रूरत से ज़्यादा उग्रता से व्यक्त किया था, उसकी बहुत ही स्पष्ट निंदा की थी। मुझे याद नहीं आ रहा कि जब मैंने मासूमियत से उस तरह की बात पर अपनी घृणा व्यक्त की थी, तब अल्बर्टीन शरमाई थी या नहीं, मुझे याद नहीं आ रहा, क्योंकि अक्सर बहुत बाद में ही हमें यह जानने की इच्छा होती है कि किसी व्यक्ति ने उस समय क्या रवैया अपनाया था जब हम उस पर ध्यान नहीं दे रहे थे, एक ऐसा रवैया जो बाद में, जब हम

अपनी बातचीत के बारे में फिर से सोचते हैं, तो एक मार्मिक समस्या को स्पष्ट कर देता है। लेकिन हमारी स्मृति में एक खालीपन है, उसका कोई निशान नहीं है। और अक्सर हम उस समय उन चीजों पर पर्याप्त ध्यान नहीं देते जो उस समय भी हमारे लिए महत्वपूर्ण हो सकती थीं, हमने एक वाक्य को ठीक से नहीं सुना होता, एक हावभाव पर ध्यान नहीं दिया होता, या फिर हम उन्हें भूल गए होते हैं। और बाद में, जब सच्चाई जानने की उत्सुकता में हम एक के बाद एक अनुमान लगाते हुए, लिखित प्रमाणों के गट्ठे की तरह अपनी याददाश्त को पलटते फिरते हैं, और उस वाक्य, उस हावभाव पर पहुँचते हैं जिसे याद करना नामुमकिन है, तो हम उसी प्रक्रिया को बीस बार दोहराते हैं, लेकिन व्यर्थ: रास्ता आगे नहीं बढ़ता। क्या वह शरमाई थी? मुझे नहीं पता कि वह शरमाई थी या नहीं, लेकिन वह सुन ज़रूर सकती थी, और मेरे शब्दों की याद ने उसे बाद में रोक दिया था, शायद जब वह मुझसे अपना गुनाह कबूल करने ही वाली थी। और अब वह कहीं भी मौजूद नहीं थी, मैं पृथ्वी को ध्रुव से ध्रुव तक छान सकता था, लेकिन अल्बर्टीन नहीं मिलती। जिस वास्तविकता ने उसे घेर लिया था, वह एक बार फिर अटूट हो गई थी, उसने उस प्राणी के हर निशान को मिटा दिया था जो उसकी गहराई में समा गया था। अब वह महज़ एक नाम थी, उस श्रीमती डी चार्लस की तरह, जिनके बारे में उन्हें जानने वाले लोग उदासीनता से कहते थे: "वह आकर्षक थीं।" लेकिन मैं एक पल के लिए भी उस वास्तविकता के अस्तित्व की कल्पना नहीं कर सका जिसके बारे में अल्बर्टीन को कोई जानकारी नहीं थी, क्योंकि मुझमें मेरी प्रेमिका का अस्तित्व बहुत जीवंत था, मुझमें हर भावना, हर विचार उसके जीवन से किसी न किसी रूप में जुड़ा हुआ था। शायद अगर उसे पता होता, तो वह यह देखकर भावुक हो जाती कि उसका प्रेमी उसे भूला नहीं है, अब जबकि उसका अपना जीवन

समाप्त हो चुका है, और उन चीजों से प्रभावित हो जाती जिन पर अतीत में उसे कोई फर्क नहीं पड़ता था। लेकिन जिस तरह हम बेवफाई से बचना चाहते हैं, चाहे वह कितनी भी गुप्त क्यों न हो, क्योंकि हमें डर रहता है कि जिसे हम प्यार करते हैं वह उससे नहीं बच रही है, मुझे इस विचार से चिंता हुई कि अगर मृत कहीं मौजूद हैं, तो मेरी दादी मेरी विस्मृति से उतनी ही परिचित होंगी जितनी अल्बर्टीन मेरी यादों से। और अंत में, एक मृत व्यक्ति के मामले में भी, क्या हम निश्चित हो सकते हैं कि यह जानकर जो खुशी हमें होगी कि वह कुछ बातें जानती है, वह इस विचार से होने वाली हमारी चिंता की भरपाई कर पाएगी कि वह सब कुछ जानती है? और, चाहे बलिदान कितना भी कष्टदायी क्यों न हो, क्या हम कभी-कभी अपने प्रियजनों की मृत्यु के बाद उन्हें मित्र के रूप में रखने से परहेज नहीं करेंगे, इस डर से कि कहीं वे हमारे न्यायाधीश न बन जाएं? अल्बर्टीन ने क्या किया होगा, यह जानने की मेरी उत्सुकता असीम थी। मैंने कई महिलाओं से पूछताछ की, लेकिन मुझे कुछ भी पता नहीं चला। अगर यह जिज्ञासा इतनी तीव्र थी, तो इसका कारण यह था कि लोग हमारे लिए तुरंत नहीं मरते, वे जीवन के एक ऐसे आवरण में लिपटे रहते हैं जिसमें सच्ची अमरता तो नहीं होती, लेकिन इसका अर्थ यह है कि वे जीवित रहते हुए भी हमारे विचारों में बने रहते हैं। ऐसा लगता है जैसे वे कहीं दूर यात्रा कर रहे हों। यह एक विशुद्ध रूप से अमानवीय अस्तित्व है। इसके विपरीत, जब हम उससे प्रेम करना बंद कर देते हैं, तो उस व्यक्ति के प्रति जिज्ञासा उसकी मृत्यु से पहले ही समाप्त हो जाती है। इसलिए, मैं यह जानने के लिए कोई कदम नहीं उठाता कि गिलबर्ट चैंप्स-एलिसी में उस शाम किसके साथ टहल रही थी। अब मुझे ऐसा लगने लगा था कि ये सारी जिज्ञासाएँ बिल्कुल एक जैसी हैं, इनका अपने आप में कोई मूल्य

नहीं है, ये टिकने में असमर्थ हैं, लेकिन फिर भी मैं इस क्षणिक जिज्ञासा की क्रूर संतुष्टि के लिए सब कुछ कुर्बान करता रहा, हालाँकि मुझे पहले से ही पता था कि अल्बर्टीन की मृत्यु के कारण उससे मेरा जबरन अलगाव मुझे उसी उदासीनता की ओर ले जाएगा जो गिल्बर्ट से मेरे जानबूझकर किए गए अलगाव के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई थी।
अगर उसे पता होता कि क्या होने वाला है, तो वह मेरे साथ ही रहती। लेकिन इसका मतलब सिर्फ इतना था कि, जब वह खुद को मरा हुआ देख लेती, तो वह मेरे साथ रहना ही बेहतर समझती। इस विरोधाभास को देखते हुए, ऐसी कल्पना बेतुकी थी। लेकिन यह हानिरहित भी नहीं थी, क्योंकि यह सोचकर कि अगर अल्बर्टीन को पता होता, अगर वह पीछे मुड़कर देख पाती, तो वह मेरे पास वापस आकर कितनी खुश होती, मैंने उसे अपने सामने देखा, मैं उसे चूमना चाहता था; और अफसोस, यह नामुमकिन था, वह कभी वापस नहीं आएगी, वह मर चुकी थी। मेरी कल्पना उसे आकाश में, उन रातों में ढूंढ रही थी, जिनमें हम साथ रहते हुए आकाश को निहारते थे; उस चांदनी से परे, जिसे वह प्यार करती थी, मैंने उसके प्रति अपना स्नेह जगाने की कोशिश की ताकि उसके लिए यह सांत्वना बन सके कि वह अब जीवित नहीं है, और इतनी दूर के प्राणी के लिए यह प्यार एक धर्म जैसा था, मेरे विचार प्रार्थनाओं की तरह उसकी ओर उठते थे। इच्छा बहुत शक्तिशाली होती है, यह विश्वास पैदा करती है; मैंने विश्वास किया था कि अल्बर्टीन मुझे नहीं छोड़ेगी क्योंकि मैं चाहता था कि वह मुझे न छोड़े। क्योंकि मेरी यही इच्छा थी, इसलिए मुझे विश्वास होने लगा कि वह मरी नहीं है; मैं किताबों को पलट-पलट कर पढ़ने लगा, मुझे आत्मा की अमरता की संभावना पर विश्वास होने लगा। लेकिन इससे मुझे संतुष्टि नहीं मिली। मैं चाहता था कि अपनी मृत्यु के

बाद, मैं उसे उसके शरीर में फिर से पाऊं, मानो अनंतकाल ही जीवन हो। जीवन! मैं और भी अधिक अपेक्षा रखता था। मैं नहीं चाहता था कि मृत्यु मुझे उन सुखों से हमेशा के लिए वंचित कर दे, जिन्हें छीनने में वह अकेली नहीं है। क्योंकि उसकी मृत्यु के बिना वे सुख धीरे-धीरे फीके पड़ जाते, वे लंबे समय से चली आ रही आदतों और नई जिज्ञासाओं के कारण पहले ही फीके पड़ने लगे थे। इसके अलावा, अगर वह जीवित होती, तो अल्बर्टीन, शारीरिक रूप से भी, धीरे-धीरे बदल जाती, मैं दिन-प्रतिदिन उस बदलाव के अनुकूल ढल जाता। लेकिन मेरी स्मृति, उसके जीवन के केवल कुछ क्षणों को याद करते हुए, उसे फिर से देखने की इच्छा रखती थी, जैसे वह जीवित रहने पर अब तक नश्वर हो चुकी होती; उसे एक ऐसे चमत्कार की आवश्यकता थी जो स्मृति की स्वाभाविक और मनमानी सीमाओं को संतुष्ट कर सके, जो अतीत से उत्पन्न नहीं हो सकती। पुराने धर्मशास्त्रियों की सरलता के साथ, मैंने कल्पना की कि वह मुझे वे स्पष्टीकरण नहीं दे रही है जो वह शायद दे सकती थी, बल्कि अंततः विरोधाभास के रूप में, वे स्पष्टीकरण दे रही है जो उसने अपने जीवनकाल में मुझे देने से हमेशा इनकार किया था। और इस प्रकार, उसकी मृत्यु एक प्रकार का स्वप्न थी, और मेरा प्रेम उसके लिए एक अनपेक्षित सुख प्रतीत होता; मैंने मृत्यु में केवल एक ऐसे समाधान की सुविधा और आशावाद देखा जो सब कुछ सरल और व्यवस्थित कर देता है। कभी-कभी यह इतना दूर नहीं था, यह किसी दूसरी दुनिया में नहीं था जहाँ मैंने हमारे पुनर्मिलन की कल्पना की थी। जैसे पहले, जब मैं गिलबर्ट को केवल शैंप्स-एलिसी में उसके साथ खेलते हुए जानता था, शाम को घर पर मैं कल्पना करता था कि मुझे उसका एक पत्र मिलेगा जिसमें वह मेरे लिए अपने प्यार का इज़हार करेगी, कि वह कमरे में आ रही है, ठीक उसी तरह की इच्छा की प्रबलता, प्रकृति के नियमों से

बेपरवाह, जैसा कि पहले गिलबर्ट के मामले में हुआ था, जब अंततः उसकी बात ही अंतिम थी, मुझे यह सोचने पर मजबूर कर रही थी कि मुझे अल्बर्टीन का एक संदेश मिलेगा, जिसमें वह मुझे बताएगी कि घुड़सवारी करते समय उसका वास्तव में एक्सीडेंट हो गया था, लेकिन प्रेमपूर्ण कारणों से (और जैसा कि कभी-कभी उन लोगों के साथ होता है जिन्हें हम लंबे समय से मृत मान चुके होते हैं) वह नहीं चाहती थी कि मुझे उसके ठीक होने की खबर मिले और अब, पश्चाताप करते हुए, वह मुझसे हमेशा के लिए मेरे साथ रहने की अनुमति मांग रही है। और, जो लोग अन्यथा स्वस्थ प्रतीत होते हैं, उनमें पाए जाने वाले कुछ हानिरहित उन्मादों की प्रकृति को स्वयं स्पष्ट करते हुए, मैंने अपने भीतर इस बात की निश्चितता को महसूस किया कि वह मर चुकी है और इस निरंतर आशा को भी कि मैं उसे कमरे में आते हुए देख सकूँ।
ऐमे से अभी तक कोई खबर नहीं मिली थी, हालांकि वह अब तक बालबेक पहुँच चुका होगा। निस्संदेह मेरी पूछताछ एक गौण मुद्दे पर केंद्रित थी, और वह भी बिल्कुल मनमाने ढंग से चुना गया। अगर अल्बर्टीन का जीवन सचमुच दोषी था, तो उसमें कई और भी महत्वपूर्ण बातें शामिल रही होंगी, जिन्हें संयोगवश मैं छू नहीं पाया था, जैसा कि अल्बर्टीन के शरमाने के कारण मुझे उस रैपर के बारे में हुई बातचीत का मौका मिला था। वह खास दिन भी बिल्कुल मनमाने ढंग से मेरे सामने आया था, जिसे मैं कई साल बाद फिर से याद करने की कोशिश कर रहा था। अगर अल्बर्टीन महिलाओं की शौकीन थी, तो उसके जीवन में ऐसे हजारों दिन रहे होंगे जिनके बारे में मुझे पता नहीं था और जिनके बारे में जानना मेरे लिए उतना ही दिलचस्प हो सकता था; मैं ऐमे को बालबेक में कई और जगहों पर, बालबेक के अलावा कई और शहरों में भेज सकता था। लेकिन ये दूसरे दिन, ठीक इसलिए

क्योंकि मुझे नहीं पता था कि उसने उन्हें कैसे बिताया था, मेरी कल्पना में उभरे ही नहीं। उनका कोई अस्तित्व ही नहीं था। मेरे लिए वस्तुएँ और लोग तब तक अस्तित्व में नहीं आए जब तक उन्होंने मेरी कल्पना में एक अलग अस्तित्व ग्रहण नहीं कर लिया। यदि उनके जैसे हजारों अन्य लोग भी थे, तो वे मेरे लिए बाकी सभी के प्रतिनिधि बन गए। यदि अल्बर्टीन के संबंध में मेरे संदेहों के बारे में, स्नानघरों में वास्तव में क्या हुआ था, यह जानने की मेरी इच्छा लंबे समय से थी, तो ठीक उसी तरह जैसे महिलाओं के प्रति मेरी इच्छाओं के मामले में, और यद्यपि मैं जानता था कि कई लड़कियाँ और दासियाँ थीं जो उन्हें संतुष्ट कर सकती थीं और जिनके बारे में मुझे संयोग से पता चल सकता था, मैं उस लड़की के बारे में जानना चाहता था - क्योंकि सेंट-लूप ने उन्हीं के बारे में मुझसे बात की थी - जो वेश्यालयों में जाती थी और श्रीमती पुटबस की दासी थी। मेरी सेहत, मेरा अनिर्णय, और मेरी 'टालमटोल' (जैसा कि एम. डी चार्लस ने इसे कहा था) ने किसी भी परियोजना को पूरा करने में जो बाधाएँ डालीं, उनके कारण मैं कुछ संदेहों के स्पष्टीकरण के साथ-साथ कुछ इच्छाओं की पूर्ति को भी दिन-प्रतिदिन, महीने-दर-महीने, वर्ष-दर-वर्ष टालता रहा। लेकिन मैंने उन्हें अपनी स्मृति में संजोकर रखा और खुद से वादा किया कि मैं उनके बारे में सच्चाई जानना नहीं भूलूंगा, क्योंकि केवल वे ही मुझे मोहित करते थे (क्योंकि बाकी सब मेरी नजरों में निराकार थे, उनका कोई अस्तित्व नहीं था), और इसलिए भी कि जिस संयोग ने उन्हें आसपास की वास्तविकता से अलग किया था, उसने मुझे यह गारंटी दी थी कि वास्तव में उन्हीं में मुझे वास्तविकता का, सच्चे और प्रशंसित जीवन का एक अंश मिलेगा।

इसके अलावा, यदि कोई तथ्य निश्चित हो, तो क्या हम एक वैज्ञानिक की तरह प्रयोग करके उससे सभी प्रकार के समान तथ्यों के बारे में सत्य नहीं निकाल सकते? क्या एक छोटा सा तथ्य, यदि सावधानीपूर्वक चुना जाए, तो प्रयोगकर्ता को एक सामान्य नियम निकालने में सक्षम नहीं बना सकता जिससे उसे हजारों समान तथ्यों के बारे में सत्य का पता चल सके?
शायद अल्बर्टीन मेरी स्मृति में केवल उसी रूप में विद्यमान थी जिस रूप में वह अपने जीवनकाल में मुझे बार-बार दिखाई दी थी, यानी समय के विभिन्न अंशों में विभाजित। मेरा मन, उसमें एकता स्थापित करते हुए, उसे एक व्यक्ति बना देता था, और इसी व्यक्ति पर मैं एक सामान्य निर्णय लेने की कोशिश करता था, यह जानने की कि क्या उसने मुझसे झूठ बोला था, क्या वह स्त्रियों से प्रेम करती थी, या क्या उसने उनके साथ स्वतंत्र रूप से मेलजोल करने के लिए मुझे छोड़ा था। स्नानघर में बैठी उस स्त्री की बात शायद अल्बर्टीन के नैतिक मूल्यों के बारे में मेरे संदेहों को हमेशा के लिए समाप्त कर दे।
मेरे संदेह! अफसोस! मैंने सोचा था कि अल्बर्टीन को दोबारा न देखना मेरे लिए कोई मायने नहीं रखेगा, बल्कि सुखद होगा, जब तक कि उसके जाने ने मुझे मेरी गलती का एहसास नहीं करा दिया। इसी तरह उसकी मृत्यु ने मुझे दिखाया कि मैं कितना बड़ा गलत था जब मैंने कभी-कभी उसकी मृत्यु की कामना की थी और सोचा था कि यह मेरी मुक्ति होगी। इसलिए, जब मुझे ऐमे का पत्र मिला, तो मुझे एहसास हुआ कि अगर मैंने तब तक अल्बर्टीन के सद्गुणों के बारे में अपने संदेहों से इतना कष्ट नहीं सहा था, तो इसका कारण यह था कि वास्तव में वे संदेह थे ही नहीं। मेरी खुशी, मेरा जीवन यह चाहता था कि अल्बर्टीन गुणी हो, यह बात हमेशा के लिए तय हो चुकी थी कि वह

गुणी थी। इस विश्वास के सहारे, मैं बिना किसी खतरे के अपने मन को उन अनुमानों के साथ उदास होकर खेलने दे सकता था जिन्हें वह आकार तो देता था लेकिन उनमें कोई विश्वास नहीं जोड़ता था। मैंने खुद से कहा, "शायद वह औरतों से प्यार करती है," जैसा कि हम कहते हैं, "मैं आज रात मर सकता हूँ"; हम कहते तो हैं, लेकिन विश्वास नहीं करते, हम कल के लिए योजना बनाते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि क्यों, यह गलत धारणा रखते हुए कि मुझे इस बात का यकीन नहीं था कि अल्बर्टीन महिलाओं से प्यार करती थी या नहीं, और परिणामस्वरूप यह मानते हुए कि अल्बर्टीन के अपराध का प्रमाण मुझे कुछ ऐसा नहीं देगा जिसे मैंने पहले से ध्यान में नहीं रखा था, मैं ऐमे के पत्र द्वारा मेरे सामने लाई गई उन तस्वीरों के सामने, जो किसी और के लिए महत्वहीन थीं, एक अप्रत्याशित पीड़ा महसूस करने में सक्षम था, जो मैंने अब तक महसूस की थी, और वह पीड़ा उन तस्वीरों के साथ, और अफसोस! स्वयं अल्बर्टीन की तस्वीर के साथ, एक प्रकार का अवक्षेप बन गई, जैसा कि रसायनशास्त्री कहते हैं, जिसमें संपूर्ण अदृश्य था और जिसके बारे में ऐमे के पत्र का पाठ, जिसे मैं विशुद्ध रूप से पारंपरिक तरीके से अलग करता हूं, कोई भी जानकारी नहीं दे सकता, क्योंकि इसे बनाने वाले प्रत्येक शब्द तुरंत बदल गए, उस पीड़ा से हमेशा के लिए रंग गए जो इसने जगाई थी। "महोदय,
"महोदय, मुझे क्षमा करें कि मैंने आपको पहले पत्र नहीं लिखा। जिस व्यक्ति से मुझे मिलने के लिए कहा गया था, वह कुछ दिनों के लिए बाहर गया हुआ था, और महज़ ने मुझ पर जो भरोसा जताया था, उसे सही साबित करने के लिए मैं खाली हाथ नहीं लौटना चाहता था। मैंने अभी-अभी उस व्यक्ति से बात की है जो (श्रीमती ए.) को अच्छी तरह से याद करता है।" ऐमे, जो कुछ हद तक शिष्टता का ज्ञान रखता था, ने

'श्रीमती ए.' को इनवर्टेड कॉमा के बीच इटैलिक में लिखने का इरादा किया था। लेकिन जब वह इनवर्टेड कॉमा लिखना चाहता था, तो वह ब्रैकेट लिख देता था, और जब वह ब्रैकेट में कुछ लिखना चाहता था, तो उसे इनवर्टेड कॉमा के बीच रख देता था। इसी तरह, फ्रांस्वा कहती थी कि कोई मेरी गली में रहता है, जिसका अर्थ है कि वह वहाँ निवास करता है, और कोई कुछ मिनटों के लिए रह सकता है, जिसका अर्थ है ठहरना। आम बोलचाल की ये गलतियाँ अक्सर शब्दों के अदला-बदली में ही होती हैं—जैसा कि फ्रांसीसी भाषा में भी होता आया है— जो सदियों से एक-दूसरे की जगह लेते रहे हैं। "उसके अनुसार, जो बात महाशय ने सोची थी, वह बिलकुल निश्चित है। एक बात तो यह है कि जब भी (श्रीमती ए.) स्नानघर आती थीं, तो वही उनकी देखभाल करती थीं। (श्रीमती ए.) अक्सर अपने से बड़ी एक लंबी महिला के साथ स्नान करने आती थीं, जो हमेशा भूरे रंग के कपड़े पहनती थीं। स्नानघर की महिला, जिसका नाम जाने बिना भी, उसे अक्सर लड़कियों के पीछे जाते हुए देखकर पहचानती थी। लेकिन (श्रीमती ए.) से मिलने के बाद उसने उनमें से किसी पर भी ध्यान नहीं दिया। वह और (श्रीमती ए.) हमेशा खुद को ड्रेसिंग बॉक्स में बंद कर लेती थीं, वहाँ बहुत देर तक रहती थीं, और भूरे रंग के कपड़े पहनने वाली महिला उस व्यक्ति को कम से कम 10 फ्रैंक टिप के रूप में देती थी जिससे मैंने बात की थी। जैसा कि उस व्यक्ति ने मुझसे कहा, आप कल्पना कर सकते हैं कि अगर वे सिर्फ मोतियों की माला बना रही होतीं, तो वे 10 फ्रैंक की टिप नहीं देतीं। (श्रीमती ए.) कभी-कभी बहुत गहरे रंग की त्वचा और लंबे हैंडल वाले चश्मे वाली एक महिला के साथ भी आती थीं। लेकिन (श्रीमती ए.) अक्सर अपने से छोटी लड़कियों के साथ आती थीं, खासकर एक गोरी रंगत वाली लड़की के साथ। इसके अलावा ग्रे रंग के कपड़े पहनी महिला से मुझे पता चला

कि जिन लोगों को (श्रीमती ए.) अक्सर साथ लाती थीं, वे बालबेक के नहीं थे और वास्तव में काफी दूर से आते होंगे। वे कभी एक साथ नहीं आते थे, लेकिन (श्रीमती ए.) अंदर आती थीं और अपने कमरे का दरवाजा खुला छोड़ने के लिए कहती थीं—क्योंकि वह किसी दोस्त का इंतजार कर रही होती थीं, और जिस व्यक्ति से मैंने बात की, वह समझ गया था कि इसका क्या मतलब है। वह व्यक्ति मुझे और कोई जानकारी नहीं दे सका, क्योंकि उसे ठीक से याद नहीं है, जो इतने लंबे समय के बाद स्वाभाविक है। इसके अलावा, इस व्यक्ति ने पता लगाने की कोशिश नहीं की, क्योंकि वह बहुत ही विवेकशील है और यह उसके फायदे में था, क्योंकि (श्रीमती ए.) ने उसे बहुत सारा पैसा दिलाया था। उसकी मृत्यु की खबर सुनकर वह बहुत दुखी हुई। यह सच है कि इतनी कम उम्र में यह उसके और उसके दोस्तों के लिए बहुत बड़ी विपत्ति है। मैं श्रीमान के आदेश की प्रतीक्षा कर रही हूँ कि क्या मैं बालबेक छोड़ सकती हूँ, जहाँ मुझे नहीं लगता कि मैं और कुछ जान पाऊँगी। श्रीमान ने मुझे जो छोटी सी छुट्टी दिलवाई है, उसके लिए मैं उन्हें फिर से धन्यवाद देती हूँ, जो बहुत सुखद रही, खासकर इसलिए क्योंकि मौसम बहुत अच्छा है। इस साल मौसम अच्छा रहने की उम्मीद है। हमें उम्मीद है कि श्रीमान आएंगे और थोड़ी देर के लिए मिलेंगे।
"महामहिम को रुचिकर लगने वाली और कोई बात मुझे सूझ नहीं रही है।"
इन शब्दों ने मेरे भीतर कितनी गहराई तक प्रवेश किया, यह समझने के लिए पाठक को यह ध्यान रखना होगा कि अल्बर्टीन के संबंध में मैं स्वयं से जो प्रश्न पूछ रहा था, वे गौण, महत्वहीन प्रश्न नहीं थे, न ही वे सतही प्रश्न थे जो हम आमतौर पर किसी अन्य व्यक्ति के बारे में स्वयं से पूछते हैं, जिनके द्वारा हम एक

अभेद्य विचार में लिपटे हुए, पीड़ा, झूठ, बुराई या मृत्यु के बीच से आगे बढ़ पाते हैं। नहीं, अल्बर्टीन के मामले में, वे मूलभूत प्रश्न थे: "अपने हृदय में वह क्या थी? उसके विचार क्या थे? उसका प्रेम क्या था? क्या उसने मुझसे झूठ बोला था? क्या उसके साथ मेरा जीवन उतना ही दुखद था जितना स्वान का ओडेट के साथ जीवन?" और इसलिए ऐमे के उत्तर का निष्कर्ष, भले ही वह एक सामान्य उत्तर नहीं था—और ठीक इसी कारण से—वास्तव में अल्बर्टीन में, मुझमें, मेरी आत्मा की परम गहराई तक पहुँच गया था।
अंततः मैंने अपनी आँखों के सामने, संकरी गली से स्नानघर की ओर आती अल्बर्टीन के उस दृश्य में, जहाँ उसके साथ वह धूसर वस्त्रधारी महिला भी थी, अतीत का एक अंश देखा, जो मुझे उतना ही रहस्यमय और उतना ही भयावह लगा जितना कि मैंने अल्बर्टीन की स्मृति में, उसके चेहरे के भावों में समाहित होने की कल्पना करते समय आशंका जताई थी। निस्संदेह, मेरे सिवा कोई भी इन विवरणों को महत्वहीन मान सकता था, जिन पर अल्बर्टीन की मृत्यु के बाद, उससे खंडन प्राप्त करने में मेरी असमर्थता ने एक प्रकार की संभावना का आभास प्रदान किया। यह वास्तव में संभव है कि अल्बर्टीन के लिए, भले ही वे सत्य रहे हों, उसके अपने कुकर्म, यदि उसने उन्हें स्वीकार किया होता, चाहे उसका विवेक उन्हें निर्दोष मानता हो या निंदनीय, चाहे उसकी कामुकता उन्हें उत्कृष्ट मानती हो या स्पष्ट रूप से नीरस, उस अवर्णनीय भय की भावना से युक्त नहीं होते जिससे मैं उन्हें अलग नहीं कर सका। मैं स्वयं, स्त्रियों के प्रति अपने प्रेम की सहायता से, यद्यपि वे अल्बर्टीन के लिए समान नहीं रही होंगी, कमोबेश यह कल्पना कर सकता हूँ कि उसने क्या महसूस किया होगा। और सचमुच, यह पहले दर्जे की पीड़ा थी, बस उसे अपने मन में यह कल्पना करना कि वह भी

निस्संदेह, अल्बर्टीन और उस धूसर वस्त्रधारी महिला के उस मौन और सुनियोजित आगमन में ही मैंने उनके बीच हुए गुप्त समझौते को समझ लिया था, ड्रेसिंग रूम में प्रेम करने की उस प्रथा को, जो भ्रष्टाचार के अनुभव और दोहरे जीवन के सुनियोजित संचालन का संकेत देती थी। इन छवियों ने ही मुझे अल्बर्टीन के अपराध की भयानक खबर दी थी, और इन्हीं छवियों ने मुझे तत्काल एक ऐसा शारीरिक कष्ट दिया था जिससे मैं भविष्य में कभी विमुख नहीं हो सका। लेकिन मेरा दुःख उन पर भी तुरंत ही प्रभाव डालने लगा: एक वस्तुनिष्ठ तथ्य, जैसे कि कोई छवि, उस आंतरिक स्थिति के अनुसार बदल जाता है जिसमें हम उसे देखते हैं। और दुःख वास्तविकता को बदलने में उतना ही शक्तिशाली होता है जितना कि नशा। इन छवियों के साथ मिलकर, पीड़ा ने उन्हें तुरंत ही किसी और के लिए धूसर वस्त्रधारी महिला, एक उपहार, एक स्नानघर, या उस सड़क से बिल्कुल अलग बना दिया था जहाँ अल्बर्टीन और उस धूसर वस्त्रधारी महिला का सुनियोजित आगमन हुआ था। ये सभी छवियां—झूठ और दुराचार के ऐसे जीवन से मुक्ति, जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी— मेरे दुख को उनके मूल स्वरूप में ही बदल दिया था। मैंने उन्हें उस प्रकाश में नहीं देखा जो सांसारिक दृश्यों को रोशन करता है; वे किसी दूसरी दुनिया का एक अंश थीं, एक अज्ञात और शापित ग्रह का, नरक की एक झलक। मेरा नरक वह सारा बालबेक था, वे सभी पड़ोसी गाँव जहाँ से, ऐमे के पत्र के अनुसार, वह अक्सर खुद से छोटी लड़कियों को इकट्ठा करती थी और उन्हें स्नानघर ले जाती थी। वह रहस्य जिसकी मैंने बहुत पहले बालबेक के आसपास के ग्रामीण इलाकों में कल्पना की थी और जो वहाँ रहने के बाद दूर हो गया था, जिसे मैंने अल्बर्टीन से मिलने पर फिर से समझने की आशा की थी, क्योंकि जब मैंने उसे समुद्र तट पर अपने पास से गुजरते देखा, जब

मैं इतना पागल हो गया था कि मैं चाहता था कि वह सदाचारी न हो, तो मैंने सोचा कि वह उसी रहस्य का अवतार है। अब बालबेक से जुड़ी हर चीज कितनी भयावह रूप से उससे भरी हुई थी। टौटेनविले, एप्रेविले, पारविले, उन स्टेशनों के नाम इतने परिचित और सुकून देने वाले हो गए थे, जब मैं रात में वर्दुरिन्स से लौटते समय उन्हें पुकारता था। अब जब मैं सोचता हूँ कि अल्बर्टीन आखिरी स्टेशन पर रुकी थी, वहाँ से दूसरे स्टेशन पर गई होगी, और अक्सर अपनी साइकिल से पहले स्टेशन पर जाती होगी, तो ये नाम मेरे अंदर पहले से कहीं ज़्यादा तीव्र चिंता जगा देते हैं, जब मैंने उन जगहों को इतने संदेह के साथ देखा था, बालबेक पहुँचने से पहले, जिसे मैं अभी तक नहीं जानता था। ईर्ष्या की एक क्षमता यह है कि वह हमें यह दिखाती है कि बाहरी तथ्यों की वास्तविकता और हृदय की भावनाएँ कितनी अज्ञात हैं, जो अनगिनत अनुमानों को जन्म देती हैं। हम मान लेते हैं कि हम जानते हैं कि चीजें क्या हैं और लोग क्या सोचते हैं, क्योंकि हमें उनकी परवाह नहीं होती। लेकिन जैसे ही हमारे अंदर जानने की इच्छा जागती है, जो ईर्ष्यालु व्यक्ति में होती है, तो यह एक चकरा देने वाला बहुरूपदर्शक बन जाता है जिसमें हम कुछ भी समझ नहीं पाते। क्या अल्बर्टीन ने मेरे साथ बेवफाई की थी? किसके साथ? किस घर में? किस दिन? जिस दिन उसने मुझसे ये या वो कहा था? या जब मुझे याद आया कि मैंने भी उसी दौरान ये या वो कह दिया था? मैं बता नहीं सकता था। न ही मुझे पता था कि मेरे प्रति उसके क्या विचार थे, चाहे वो आर्थिक स्वार्थ से प्रेरित थे या स्नेह से। और अचानक मुझे कोई छोटी-सी घटना याद आ गई, जैसे कि अल्बर्टीन सेंट-मार्स ले वेटू जाना चाहती थी, यह कहते हुए कि उसे यह नाम दिलचस्प लगा, और शायद इसलिए भी क्योंकि उसकी वहाँ रहने वाली किसी किसान लड़की से जान-पहचान हो गई थी। लेकिन ऐमे

इन संबंधों से अनजान रखने में सफल रही है। जब हम अपनी मृत्यु के बाद अपने साथ क्या होता है, इस पर विचार करने का प्रयास करते हैं, तो क्या यह अभी भी हमारा जीवित स्वरूप ही नहीं है जिसे हम गलती से अपने सामने प्रस्तुत करते हैं? और क्या यह कहीं अधिक बेतुका है, अंततः, उस महिला के लिए खेद व्यक्त करना जो अब अस्तित्व में नहीं है और जिसे यह पता नहीं है कि हमें छह साल पहले उसके कार्यों के बारे में पता चल गया है, बजाय इसके कि हम स्वयं, जो मर चुके होंगे, के बारे में एक सदी बाद भी जनता प्रशंसा के साथ बात करे? यदि बाद वाले मामले में पहले वाले की तुलना में अधिक वास्तविक आधार है, तो मेरी पूर्वव्यापी ईर्ष्या का खेद भी अन्य पुरुषों की तरह ही उसी दृष्टिगत त्रुटि से उत्पन्न हुआ था - मरणोपरांत प्रसिद्धि की इच्छा। और फिर भी, अल्बर्टीन से मेरे अलगाव में निहित इस गंभीर अंतिमता की छाप, यदि क्षण भर के लिए भी उसके कुकर्मों के मेरे विचार के स्थान पर रखी जाती, तो केवल उन्हें एक अपूरणीय चरित्र प्रदान करके उन्हें और भी गंभीर बना देती।
मैंने खुद को जीवन में भटका हुआ पाया, मानो मैं एक अंतहीन समुद्र तट पर अकेला था और चाहे मैं किसी भी दिशा में मुड़ूँ, उससे कभी नहीं मिल पाऊँगा। सौभाग्य से, मुझे अपनी स्मृति में— क्योंकि स्मृतियों के उस ढेर में हमेशा तरह-तरह की चीजें होती हैं, कुछ हानिकारक तो कुछ लाभकारी—जैसे कोई शिल्पकार अपनी मनचाही वस्तु बनाने के लिए सामग्री खोजता है—अपनी दादी का एक वचन मिला। उन्होंने मुझसे कहा था, उस अविश्वसनीय कहानी के संदर्भ में जो स्नान कराने वाली महिला ने श्रीमती डी विलेपारिसिस को सुनाई थी: "वह एक ऐसी महिला है जिसे झूठ बोलने की बीमारी है।" यह स्मृति मेरे लिए बहुत सुकून देने वाली थी। उस

महिला ने ऐमे को जो कहानी सुनाई थी, उसका क्या महत्व हो सकता है? खासकर तब जब ऐमे ने कुछ देखा ही नहीं था। कोई लड़की बिना किसी बुरे इरादे के भी अपनी सहेलियों के साथ स्नान करने आ सकती है। शायद अपनी महिमा के लिए उस महिला ने इनाम की राशि बढ़ा-चढ़ाकर बताई थी। मैंने एक बार फ्रांस्वा को यह कहते सुना था कि मेरी चाची लियोनी ने उसके सामने कहा था कि उसके पास 'हर महीने दस लाख खर्च करने के लिए हैं', जो सरासर बकवास था; एक बार उसने यह भी सुना था कि मेरी चाची लियोनी ने यूलाली को चार हज़ार फ्रैंक के नोट दिए थे, जबकि पचास फ्रैंक का नोट चार टुकड़ों में मोड़कर देना मुझे शायद ही संभव लगा। इसलिए मैंने उस पीड़ादायक निश्चितता से छुटकारा पाने की कोशिश की—और समय के साथ मैं इसमें सफल भी हो गई—जिसे पाने के लिए मैंने इतनी मेहनत की थी, क्योंकि मैं अब भी जानने की इच्छा और पीड़ा के भय के बीच उलझी हुई थी। तब मेरा स्नेह शायद फिर से जागृत हो जाता, लेकिन साथ ही साथ अल्बर्टीन से बिछड़ने का दुख भी, जिसके दौरान मैं शायद उन कुछ पलों से भी ज़्यादा दुखी थी जब ईर्ष्या मुझे सता रही थी। लेकिन बालबेक के बारे में सोचते ही मेरी ईर्ष्या अचानक फिर से जागृत हो गई, क्योंकि बालबेक के भोजन कक्ष का वह दृश्य तुरंत मेरे सामने आ गया (जो तब तक मुझे कभी परेशान नहीं करता था और वास्तव में मेरी स्मृति में सबसे हानिरहित दृश्यों में से एक प्रतीत होता था)। खिड़कियों के दूसरी ओर, शाम के धुंधलके में वह सारी भीड़ जमा थी, मानो किसी मछलीघर के चमकदार शीशे के सामने हो, जिससे मछुआरों और निम्न वर्ग की लड़कियों तथा बालबेक की उस नई शान-शौकत से ईर्ष्या करने वाली युवतियों के बीच एक ऐसा संपर्क (जिसके बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था) बन रहा था। बालबेक की वह शान-शौकत जिससे उनके माता-पिता, यदि उनके पास साधन नहीं तो

राजनीति के बिना भी वह जीवन मेरे लिए बेहद कष्टदायक होता, और अगर अल्बर्टीन फिर से जीवित होतीं तो राजनीति के साथ भी वह जीवन मुझे आनंददायक लगता। खेल संवाददाता ने कहा (हम मई के महीने में थे): "साल का यह मौसम सच्चे खिलाड़ी के लिए सचमुच कष्टदायक, बल्कि कहें तो विपत्तिपूर्ण है, क्योंकि खेल के नाम पर कुछ भी नहीं है, बिलकुल कुछ भी नहीं है," और कला समीक्षक ने सैलून के बारे में कहा: "प्रदर्शनी आयोजित करने के इस तरीके को देखकर हम अत्यधिक निराशा और असीम खेद से भर जाते हैं…।" यदि मेरे भीतर व्याप्त खेद की तीव्रता ने मुझे उन लोगों की अभिव्यक्तियों को असत्य और रंगहीन मानने पर मजबूर कर दिया, जिनके जीवन में कोई सच्चा सुख या दुःख नहीं था, तो दूसरी ओर वे तुच्छ पंक्तियाँ, जो किसी भी तरह से नॉर्मंडी, या टूरेन, या जलरोग चिकित्सा संस्थानों, या लीया, या प्रिंसेस डी गुएरमांटेस, या प्रेम, या अनुपस्थिति, या बेवफाई से जुड़ी हो सकती थीं, तुरंत मेरी आँखों के सामने अल्बर्टाइन की छवि प्रस्तुत कर देती थीं, और मुझे उनसे नज़र हटाने का समय भी नहीं मिलता था, और मेरी आँखों से फिर से आँसू बहने लगते थे। इसके अलावा, सामान्य तौर पर मैं इन अखबारों को कभी पढ़ नहीं पाता था, क्योंकि उनमें से एक को खोलते ही मुझे तुरंत याद आ जाता था कि मैं इन्हें अल्बर्टीन के जीवित रहते खोला करता था, और अब वह इस दुनिया में नहीं थी; मैं उन्हें बिना पन्ने खोले ही छोड़ देता था। हर खबर एक जैसी, लेकिन विकृत याद दिलाती थी, क्योंकि उसमें से अल्बर्टीन का अस्तित्व ही गायब था, इसलिए मुझमें उन अधूरे पलों को अंत तक जीने का साहस कभी नहीं था। वास्तव में, जब धीरे-धीरे अल्बर्टीन मेरे विचारों से और मेरे दिल पर अपने सर्वाधिकार से ओझल होती चली गई, तो मुझे तुरंत गहरा दर्द महसूस होता था जब भी मुझे, जैसा कि उसके जीवित रहते

में आता है जब वह हमारे साथ नहीं होती। इस तरह हमें एक अनुपस्थित व्यक्ति को अपने ध्यान का केंद्र बनाने की आदत पड़ जाती है, और वह व्यक्ति, भले ही कुछ घंटों के लिए ही अनुपस्थित रहे, उन पलों में महज़ एक स्मृति बनकर रह जाता है। इसलिए मृत्यु से कोई खास फर्क नहीं पड़ता। जब ऐमे लौटा, तो मैंने उससे चैटेलराउल्ट जाने को कहा, और इस प्रकार न केवल मेरे विचारों, मेरे दुखों, एक नाम से उत्पन्न भावनाओं के कारण, जो किसी व्यक्ति से, चाहे दूर से ही सही, जुड़ा हुआ था, बल्कि उससे भी कहीं अधिक मेरे सभी कार्यों, मेरे द्वारा की गई जाँच-पड़ताल, मेरे द्वारा अपने धन के उपयोग के कारण, जो सब कुछ अल्बर्टीन के कार्यों का पता लगाने के लिए समर्पित था, मैं कह सकता हूँ कि इस पूरे वर्ष मेरा जीवन प्रेम से, स्नेह के एक सच्चे बंधन से भरा रहा। और वह, जिसका मैं पात्र था, एक मृत शरीर थी। हम कभी-कभी कहते हैं कि किसी व्यक्ति की मृत्यु के बाद भी उसका कुछ अंश शेष रह सकता है, यदि वह व्यक्ति एक कलाकार था और उसने अपने काम में कुछ परिश्रम किया था। शायद इसी तरह, एक व्यक्ति से लिया गया एक टुकड़ा दूसरे के हृदय पर प्रत्यारोपित किया जाता है और वह अपना अस्तित्व बनाए रखता है, भले ही वह व्यक्ति जिससे इसे अलग किया गया था, मर चुका हो। ऐमे ने श्रीमती बोंटेम्प्स के विला के पास के क्वार्टर में अपना ठिकाना बनाया; उसकी जान-पहचान एक नौकरानी से हुई, जो एक ऐसे मालिक की नौकरानी थी जिससे अल्बर्टीन अक्सर दिन के हिसाब से गाड़ी किराए पर लेती थी। इन लोगों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। दूसरे पत्र में, ऐमे ने मुझे बताया कि उसने कस्बे की एक युवा धोबिन से सुना था कि अल्बर्टीन साफ कपड़े लाते समय उसकी बांह को अजीब तरीके से पकड़ती थी। "लेकिन," उसने कहा, "उस युवती ने इससे ज्यादा कुछ नहीं किया।" मैंने ऐमे को उसकी

यात्रा का खर्च और उसके पत्र से मुझे हुए नुकसान की भरपाई के लिए पैसे भेज दिए, और साथ ही मैं खुद को यह कहकर शांत करने की कोशिश कर रहा था कि यह सिर्फ एक जान-पहचान थी जिससे किसी बुरी इच्छा का कोई सबूत नहीं मिलता, तभी मुझे ऐमे का एक टेलीग्राम मिला: "मुझे बहुत ही दिलचस्प बातें पता चली हैं, मेरे पास पर्याप्त सबूत हैं, पत्र साथ में भेज रहा हूँ।" अगले दिन एक ऐसा पत्र आया जिसका लिफाफा ही मुझे कंपकंपा देने के लिए काफी था; मैंने अनुमान लगाया था कि यह ऐमे की ओर से आया है, क्योंकि हममें से हर एक, यहां तक कि सबसे साधारण व्यक्ति भी, कागज पर उन छोटी- छोटी परिचित आत्माओं को अपने नियंत्रण में रखता है जो एक साथ जीवित रहती हैं और एक प्रकार की समाधि की अवस्था में स्थित होती हैं, उसकी लिखावट के अक्षर जिन पर केवल उसका ही अधिकार होता है। "शुरुआत में उस युवा धोबिन ने मुझे कुछ भी बताने से इनकार कर दिया। उसने मुझे यकीन दिलाया कि मैडम अल्बर्टीन ने उसकी बांह पर चुटकी काटने के अलावा कुछ नहीं किया था। लेकिन उससे बात निकलवाने के लिए, मैं उसे खाने पर ले गई, मैंने उसे शराब पिलाई। तब उसने मुझे बताया कि मैडम अल्बर्टीन अक्सर उससे लोइरे नदी के किनारे मिलती थीं, जब वह नहाने जाती थीं। मैडम अल्बर्टीन, जिन्हें सुबह बहुत जल्दी उठकर नहाने जाने की आदत थी, अक्सर नदी के किनारे, घने पेड़ों वाली जगह पर उनसे मिलती थीं, जहाँ कोई उन्हें देख नहीं सकता था, और वैसे भी सुबह के उस समय कोई उन्हें देख ही नहीं सकता। फिर वह युवा धोबिन अपनी सहेलियों को ले आतीं और वे नहातीं। बाद में, क्योंकि यहाँ पहले से ही बहुत गर्मी होती थी और सूरज पेड़ों के बीच से भी झुलसा देता था, वे घास पर लेटकर खुद को सुखातीं, खेलतीं और एक-दूसरे को सहलातीं। उस युवा धोबिन ने मुझे बताया कि उसे अपनी युवा सहेलियों के साथ मस्ती

अनुमान के विपरीत, मृत्यु ने समाप्त नहीं किया था—मुझे एक अलग ही लड़की मिली, जो झूठ और धोखे का पुलिंदा बुन रही थी, उसी जगह पर जहाँ पहले वाली ने मुझे बड़ी मीठी बातों से आश्वस्त किया था कि उसने कभी उन सुखों का स्वाद नहीं चखा था, जिनका आनंद उसने अपनी पुनः प्राप्त स्वतंत्रता के नशे में इस हद तक लिया था कि वह बेहोश होने की कगार पर पहुँच गई थी, उस युवा धोबिन को काट लिया था जिससे वह लोइरे नदी के किनारे सूर्योदय के समय मिलती थी, और जिससे वह कहा करती थी: "ओह, यह तो स्वर्ग जैसा है।" एक अलग अल्बर्टाइन, न केवल उस अर्थ में जिसमें हम 'अलग' शब्द को अन्य लोगों के संदर्भ में समझते हैं। यदि लोग हमारे अनुमान से अलग हैं, क्योंकि यह अंतर हमें गहराई से प्रभावित नहीं कर सकता, क्योंकि अंतर्ज्ञान का पेंडुलम अपनी आंतरिक गति से अधिक बाहरी दोलन नहीं कर सकता, तो हम इन अंतरों को केवल लोगों के सतही क्षेत्रों में ही पाते हैं। पहले, जब मुझे पता चलता था कि कोई स्त्री दूसरी स्त्री से प्रेम करती है, तो वह मुझे किसी अलग स्त्री या विशेष स्वभाव की नहीं लगती थी। लेकिन जब बात किसी ऐसी स्त्री की आती है जिससे हम प्रेम करते हैं, तो इस बात के ख्याल से होने वाले दुख से उबरने के लिए, हम न केवल यह जानने की कोशिश करते हैं कि उसने क्या किया, बल्कि यह भी कि वह करते समय कैसा महसूस कर रही थी, उसके मन में उस काम को लेकर क्या विचार थे; फिर अपने गहरे दुख के सहारे हम रहस्य और सार तक पहुँचते जाते हैं। मेरे शरीर और हृदय में इतना दर्द था - जीवन खोने के डर से भी कहीं अधिक - इस जिज्ञासा ने, जिसमें मेरी बुद्धि और अवचेतन मन की सारी शक्ति ने सहयोग किया; और इसी प्रकार, अल्बर्टीन के बारे में जो कुछ भी मैंने जाना, उसे मैंने उसके अस्तित्व के मूल में ही समाहित कर लिया। और अल्बर्टीन के दुराचार के कारण जो दुःख मेरे

भीतर इतनी गहराई तक समा गया था, वही आगे चलकर मेरे लिए एक अंतिम वरदान साबित हुआ। जिस प्रकार मैंने अपनी दादी को दुख पहुँचाया था, उसी प्रकार अल्बर्टीन द्वारा मुझे पहुँचाया गया दुख, हम दोनों के बीच एक ऐसा अंतिम बंधन बन गया जो स्मृति से भी परे था, क्योंकि भौतिक जगत में ऊर्जा के संरक्षण के कारण, दुःख को स्मृति के पाठों की आवश्यकता नहीं होती। इसी प्रकार, जो व्यक्ति जंगल में चाँदनी रात में बिताई गई उस मनमोहक रात को भूल गया है, वह आज भी उस गठिया से पीड़ित है जो उसे उस समय हुआ था। जिन स्वादों को उसने नकार दिया था, लेकिन जो उसके थे, जिन स्वादों की खोज मुझे तर्क की ठंडी प्रक्रिया से नहीं, बल्कि उन शब्दों को पढ़कर हुई तीव्र पीड़ा से हुई थी: "ओह, यह तो सचमुच स्वर्ग जैसा है," एक ऐसी पीड़ा जिसने उन्हें एक विशेष गुण प्रदान किया, वे स्वाद अल्बर्टीन की छवि में केवल वैसे ही नहीं जुड़ गए जैसे एक साधु-केकड़ा अपने पीछे घसीटता हुआ नया खोल जोड़ता है, बल्कि, जैसे एक नमक दूसरे नमक के संपर्क में आता है, उसका रंग बदल जाता है, और उससे भी बढ़कर, उसका स्वभाव बदल जाता है। जब उस युवा धोबिन ने अपनी युवा सहेलियों से कहा होगा: "ज़रा सोचो, मैं तो कभी विश्वास ही नहीं करती, खैर, वह युवती भी एक है!" मेरे लिए यह केवल एक ऐसा दोष नहीं था जिसका उन्हें अब तक संदेह नहीं था और जिसे उन्होंने अल्बर्टीन के व्यक्तित्व में जोड़ दिया था, बल्कि यह खोज कि वह एक अलग व्यक्ति थी, उन्हीं की तरह एक व्यक्ति, वही भाषा बोलने वाली, जिसने उसे अन्य महिलाओं की हमवतन बनाकर मुझे और भी पराया बना दिया, यह साबित कर दिया कि जो कुछ मैंने उसके बारे में जाना था, जो कुछ मैंने अपने दिल में संजोया था, वह उसका केवल एक छोटा सा हिस्सा था, और वह शेष भाग जो केवल उस रहस्यमय रूप से महत्वपूर्ण चीज, एक व्यक्तिगत इच्छा, न होकर

जीवित हो उठी थी, सचमुच जीवित, उस युवा धोबिन के स्पर्श में अकड़ी हुई, जिससे वह कह रही थी: "ओह, यह तो स्वर्ग जैसा है।" चूंकि वह उस क्षण जीवित थी जब उसने अपने कुकर्म किए, यानी उस क्षण जब मैं खुद उस कुकर्म में था, तो केवल उसके कुकर्म के बारे में जानना ही काफी नहीं था, मैं चाहता था कि उसे पता चले कि मुझे पता है। और इसलिए, अगर उन क्षणों में मैंने अफसोस के साथ सोचा कि मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊंगा, तो इस अफसोस पर मेरी ईर्ष्या की छाप थी, और उन क्षणों के कष्टदायक अफसोस से बहुत अलग, जब मैंने उससे प्यार किया था, यह केवल इस बात का अफसोस था कि मैं उससे यह नहीं कह सका: "तुमने सोचा था कि मुझे कभी पता नहीं चलेगा कि तुमने मुझे छोड़ने के बाद क्या किया, खैर, मुझे सब पता है, लोइरे नदी के किनारे वाली धोबिन, तुमने उससे कहा: 'ओह, यह तो स्वर्ग जैसा है,' मैंने वह घाव देखा है।" मैंने मन ही मन कहा, "मैं खुद को क्यों परेशान करूँ? जिसने धोबिन के साथ आनंद लिया, वह अब जीवित नहीं है, और इसलिए उसके कार्यों का कोई महत्व नहीं है। वह खुद से यह नहीं कह रही है कि मैं जानता हूँ। लेकिन वह खुद से यह भी नहीं कह रही है कि मैं नहीं जानता, क्योंकि वह खुद से कुछ नहीं कहती।" लेकिन इस तर्क ने मुझे उतना आश्वस्त नहीं किया जितना कि उसके आनंद की उस छवि ने, जिसने मुझे उस क्षण में वापस ला दिया जब उसने उस आनंद का अनुभव किया था। जो हम महसूस करते हैं, वही हमारे लिए एकमात्र अस्तित्व है, और हम उसे अतीत और भविष्य में प्रक्षेपित करते हैं, मृत्यु की काल्पनिक बाधाओं से खुद को रोके बिना। यदि उसके मरने का मेरा दुःख ऐसे क्षणों में मेरी ईर्ष्या के प्रभाव में आकर इस विचित्र रूप में प्रकट हुआ, तो वह प्रभाव मेरे रहस्यवाद और अमरता के सपनों पर भी पड़ा, जो मेरी इच्छा को साकार करने का एक प्रयास मात्र थे। और इसलिए उन

क्षणों में, यदि मैं बर्गोटे के एक समय के विचार के अनुसार मेज पलटकर उसे याद करने में सफल हो पाता, या एब्बे X के विचार के अनुसार परलोक में उससे मिल पाता, तो मैं ऐसा केवल उससे यह दोहराने के लिए करना चाहता: "मैं धोबिन के बारे में जानता हूँ। आपने उससे कहा था: 'ओह, यह तो स्वर्ग जैसा है,' मैंने उसका काटने का दृश्य देखा है।" धोबिन की इस छवि से जो चीज़ मेरी मदद करती थी, वह थी—निश्चित रूप से जब यह छवि कुछ समय तक बनी रहती थी—स्वयं वह छवि, क्योंकि हम वास्तव में केवल वही जानते हैं जो नया है, जो अचानक हमारी संवेदनशीलता में एक ऐसा परिवर्तन लाता है जो हमें झकझोर देता है, वे चीजें जिनके लिए आदत ने अभी तक अपनी रंगहीन नकलें नहीं बनाई हैं। लेकिन सबसे बढ़कर, अल्बर्टाइन का कई टुकड़ों में, कई अल्बर्टाइनों में यह विभाजन ही मेरे भीतर उसके अस्तित्व का एकमात्र तरीका था। ऐसे क्षण बार-बार आते थे जिनमें वह केवल अच्छी, या बुद्धिमान, या गंभीर, या यहाँ तक कि केवल खेल में मग्न रहती थी। और क्या यह उपविभाजन मुझे शांत करने के लिए उचित नहीं था? क्योंकि यदि यह अपने आप में कुछ वास्तविक नहीं था, यदि यह उन घंटों के क्रमिक रूप पर निर्भर था जिनमें यह मुझे दिखाई दिया था, एक ऐसा रूप जो मेरी स्मृति में इस प्रकार बना रहा जैसे मेरे मैजिक लैंटर्न के प्रक्षेपणों का वक्र रंगीन स्लाइडों के वक्र पर निर्भर करता है, तो क्या यह अपने तरीके से एक सत्य का प्रतिनिधित्व नहीं करता, एक पूर्णतः वस्तुनिष्ठ सत्य का भी, अर्थात् कि हममें से प्रत्येक एक व्यक्ति नहीं है, बल्कि अनेक व्यक्तियों को समाहित करता है जिनके नैतिक मूल्य समान नहीं हैं और यदि एक दुष्ट अल्बर्टाइन अस्तित्व में थी, तो इसका अर्थ यह नहीं था कि अन्य नहीं थीं, वह जो अपने कमरे में मुझसे सेंट-साइमन के बारे में बात करने का आनंद लेती थी, वह

जिसने उस रात जब मैंने उसे बताया था कि हमें अलग होना होगा, बड़े दुख से कहा था: "वह पियानोला, यह कमरा, यह सोचकर कि मैं इनमें से कुछ भी फिर कभी नहीं देख पाऊंगी" और, जब उसने वह भावना देखी जो मेरे झूठ ने अंततः मुझ तक पहुँचाई थी, तो उसने सच्ची दया के साथ कहा: "ओह, नहीं, आपको दुखी करने के बजाय, मैं वादा करती हूँ कि मैं आपसे फिर कभी मिलने की कोशिश नहीं करूँगी।" तब मैं अब अकेला नहीं था। मुझे ऐसा लगा जैसे हमारे बीच की दीवार गायब हो गई हो। जिस क्षण मेरी प्यारी अल्बर्टीन लौटी, मुझे वह एक व्यक्ति फिर से मिल गया जिससे मैं उन कष्टों का इलाज मांग सकती थी जो अल्बर्टीन मुझे दे रही थी। सच है, मैं अब भी उससे धोबी की कहानी के बारे में बात करना चाहती थी, लेकिन अब यह किसी क्रूर जीत का प्रदर्शन करने या उसे यह दिखाने के लिए नहीं था कि मुझे कितना पता है। जैसा कि मैं अल्बर्टीन के जीवित होने पर करती, मैंने उससे कोमल भाव से पूछा कि क्या धोबी की कहानी सच है। उसने कसम खाकर कहा कि यह सच नहीं है, ऐमे झूठ बोल रहा था और जो पैसे मैंने उसे दिए थे, उन्हें कमाने का दिखावा करने के लिए वह खाली हाथ लौटना नहीं चाहता था, इसलिए उसने धोबी से वही कहलवाया जो वह सुनना चाहता था। निस्संदेह अल्बर्टीन मुझसे शुरू से ही झूठ बोल रही थी। फिर भी, उसके विरोधाभासों के उतार-चढ़ाव में, मुझे लगा कि मेरे लिए भी कुछ प्रगति हुई है। मुझे पक्का यकीन नहीं था कि उसने शुरू में मुझसे कोई बात कबूल नहीं की थी (शायद, यह सच है कि अनजाने में उसके मुंह से ये शब्द निकल गए थे)। मुझे अब याद नहीं था। और वैसे भी, वह कुछ चीजों को अजीब तरीके से नाम देती थी, जिससे उनका अलग-अलग अर्थ निकाला जा सकता था, लेकिन मेरी ईर्ष्या के एहसास ने उसे बाद में उस बात से घबराकर पीछे हटने पर मजबूर कर दिया, जिसे उसने पहले बड़ी सहजता से स्वीकार किया था। खैर,

जीवित थी, इसलिए मेरे लिए तुरंत वही करना आसान था जो मुझे अनिवार्य रूप से करना चाहिए था यदि वह अपने जीवित शरीर में मेरे साथ होती (जो मुझे करना चाहिए था यदि मैं कभी दूसरे जीवन में उससे फिर से मिलूं), मैंने उसे माफ कर दिया।
मैंने अल्बर्टीन के साथ जो पल बिताए थे, वे मेरे लिए इतने अनमोल थे कि मैं उनमें से एक भी पल खोना नहीं चाहती थी। अब, कभी-कभी, जब हम अपनी खोई हुई दौलत के बचे-खुचे अंशों को समेट रहे हैं, तो मुझे वे पल फिर से याद आ जाते हैं जिन्हें मैं खो चुकी थी; जब मैंने अपने गले के आगे की बजाय पीछे स्कार्फ बांधा, तो मुझे वह प्रेम प्रसंग याद आया जिसके बारे में मैंने फिर कभी नहीं सोचा था, उससे पहले, ताकि ठंडी हवा मेरे गले तक न पहुंचे, अल्बर्टीन ने मुझे चूमने के बाद मेरा स्कार्फ इस तरह से बांधा था। उस साधारण से प्रेम प्रसंग को, जो उस विनम्र भाव से मेरी यादों में ताजा हो गया, ने मुझे वही आनंद दिया जो किसी प्रिय मृत महिला की निजी वस्तुओं को देखकर मिलता है, जिन्हें उसका बूढ़ा नौकर हमारे लिए लाता है और जो हमारे लिए बहुत अनमोल होती हैं; मेरा दुख इससे और भी बढ़ गया, खासकर इसलिए क्योंकि मैंने उस स्कार्फ के बारे में फिर कभी नहीं सोचा था।
और अब अल्बर्टीन, एक बार फिर आज़ाद होकर, अपनी उड़ान पर लौट आई थी; पुरुष, स्त्रियाँ उसके पीछे-पीछे चल रहे थे। वह मेरे भीतर जीवित थी। मुझे एहसास हुआ कि अल्बर्टीन के प्रति यह निरंतर प्रेम, उसके लिए मेरे मन में बसी भावना के भूत की तरह था, जो उसके विभिन्न तत्वों को पुन: उत्पन्न करता था और मृत्यु के बाद की उस भावनात्मक वास्तविकता के समान नियमों का पालन करता था। क्योंकि मुझे पूरा विश्वास था कि यदि मैं अल्बर्टीन के बारे में सोचने के बीच कुछ अंतराल रख पाता, या दूसरी ओर, यदि मैंने

बहुत लंबा अंतराल बीतने दिया होता, तो मैं उससे प्रेम करना छोड़ देता; एक पूर्ण विराम मुझे उसके प्रति उदासीन बना देता, जैसा कि मैं अब अपनी दादी के प्रति था। उसके बारे में सोचे बिना बिताया गया कोई भी समय मेरी स्मृति में उस निरंतरता को तोड़ देता जो जीवन का मूल सिद्धांत है, जिसे हालांकि कुछ समय बाद पुनः आरंभ किया जा सकता है। क्या अल्बर्टीन के जीवित रहते हुए उसके प्रति मेरे प्रेम के साथ ऐसा ही नहीं हुआ था, एक ऐसा प्रेम जो एक लंबे अंतराल के बाद पुनर्जीवित हो सका था, जिस दौरान मैंने उसके बारे में कभी सोचा भी नहीं था? खैर, मेरी स्मृति भी उन्हीं नियमों का पालन करती होगी, लंबे अंतराल को सहन करने में असमर्थ रही होगी, क्योंकि अल्बर्टीन की मृत्यु के बाद इसने केवल एक ऑरोरा बोरेलिस की तरह, उसके लिए मेरे मन में जो भावना थी उसे प्रतिबिंबित किया, यह मेरे प्यार के प्रेत की तरह था।
कई बार मेरा दुःख इतने रूप धारण कर लेता था कि कभी-कभी मैं उसे पहचान ही नहीं पाती थी; मैं सच्चे प्रेम की लालसा रखती थी, किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढने का निश्चय करती थी जो मेरे साथ रहे; मुझे लगता था कि यही इस बात का संकेत है कि मैं अब अल्बर्टीन से प्रेम नहीं करती, जबकि वास्तव में इसका अर्थ यही था कि मैं अब भी उससे प्रेम करती थी; क्योंकि सच्चे प्रेम की आवश्यकता, ठीक उसी तरह जैसे अल्बर्टीन के गोल-मटोल गालों को चूमने की इच्छा, मेरे पश्चाताप का ही एक हिस्सा थी। जब मैं उसे भूल चुकी थी, तभी मुझे प्रेम के बिना जीना अधिक बुद्धिमानी और सुख का अनुभव हुआ। और इसलिए अल्बर्टीन के लिए मेरा पश्चाताप, क्योंकि इसी ने मेरे भीतर एक बहन की आवश्यकता को जगाया था, उस आवश्यकता को अतृप्त बना दिया। और जैसे-जैसे अल्बर्टीन के लिए मेरा पश्चाताप कम होता गया, एक बहन की आवश्यकता, जो उस पश्चाताप का ही एक अचेतन

था, जबकि उसका ऊपरी सिरा पहले से ही कठोर और ठंडा था, उसका निचला हिस्सा अब भी जल रहा था जब भी कोई चिंगारी उसमें से पुरानी धारा को गुजार देती थी, भले ही मेरे मन ने अल्बर्टीन की कल्पना करना बहुत पहले ही छोड़ दिया था। और चूंकि उसकी कोई छवि उन तीव्र धड़कनों के साथ नहीं थी, जो ठंडी हवा के कारण मेरी आँखों में आ रही थीं, ठीक वैसे ही जैसे बालबेक में खिले हुए गुलाबी सेब के पेड़ों पर ठंडी हवा चल रही थी, मैं खुद से यह पूछने के लिए विवश हुआ कि क्या मेरे शोक का नवीनीकरण पूरी तरह से रोग संबंधी कारणों से तो नहीं था और क्या जिसे मैं एक स्मृति का पुनरुद्धार और प्रेम की अंतिम अवस्था समझ रहा था, वह कहीं हृदय रोग का पहला चरण तो नहीं था।
कुछ बीमारियों में कुछ ऐसी आकस्मिक घटनाएं होती हैं जिन्हें पीड़ित अक्सर बीमारी ही समझ लेता है। जब वे समाप्त होती हैं, तो पीड़ित यह देखकर आश्चर्यचकित रह जाता है कि वह जितना सोच रहा था उससे कहीं अधिक ठीक होने के करीब है। इसी तरह का कष्ट मुझे ऐमे के स्नानघर और उस युवती धोबिन के बारे में लिखे पत्रों से हुआ था। लेकिन अगर कोई हृदय विदारक मुझसे मिलने आता, तो वह पाता कि अन्य दृष्टियों से मेरा दुःख स्वयं ठीक होने की राह पर था। निस्संदेह, चूंकि मैं एक पुरुष था, उन उभयचर प्राणियों में से एक जो एक ही समय में अतीत और वर्तमान की वास्तविकता में डूबे रहते हैं, इसलिए मुझमें अल्बर्टीन की जीवंत स्मृति और उसकी मृत्यु के प्रति मेरी चेतना के बीच एक विरोधाभास मौजूद था। लेकिन यह विरोधाभास, एक तरह से, पहले जैसा था उसका ठीक विपरीत था। यह विचार कि अल्बर्टीन मर चुकी है, यह विचार जो पहले उसके जीवित होने के विचार से इतनी ज़ोरदार टक्कर लेता था कि मैं इससे ऐसे भागता था जैसे बच्चे लहरों से भागते हैं, उसकी मृत्यु का यह

विचार, अपने निरंतर प्रहार से, मेरे मन में उस स्थान को पूरी तरह से ग्रहण कर चुका था, जो कुछ समय पहले तक उसके जीवन के विचार से आच्छादित था। बिना ठीक से जाने-समझे, अब अल्बर्टीन की मृत्यु का यही विचार—उसके जीवन की वर्तमान स्मृति नहीं—मेरे अवचेतन चिंतन का मुख्य विषय बन गया था, जिसके परिणामस्वरूप यदि मैं अचानक अपने चिंतन को रोककर खुद पर विचार करता, तो मुझे आश्चर्य इस बात पर नहीं होता था, जैसा कि पहले होता था, कि मेरे भीतर इतनी जीवंत अल्बर्टीन अब इस धरती पर विद्यमान नहीं हो सकती, मर सकती है, बल्कि इस बात पर होता था कि अल्बर्टीन, जो अब इस धरती पर विद्यमान नहीं है, जो मर चुकी है, वह मेरे भीतर इतनी जीवंत कैसे रह सकती है। एक के बाद एक आती यादों की निरंतरता से बनी वह काली सुरंग, जिसमें मेरे विचार इतने लंबे समय से भटक रहे थे कि उन्हें खुद भी इसका एहसास नहीं रहा था, अचानक सूरज की रोशनी से टूट गई, जिससे मुझे दूर एक नीला और मुस्कुराता हुआ ब्रह्मांड दिखाई दिया, जिसमें अल्बर्टीन महज़ एक स्मृति बनकर रह गई थी, महत्वहीन और आकर्षण से भरपूर। क्या यही सच्ची अल्बर्टीन है, मैंने खुद से पूछा, या क्या यह वही व्यक्ति है जो उस अंधेरे में, जिसमें मैं इतने लंबे समय से भटक रहा था, मुझे एकमात्र वास्तविकता प्रतीत होती थी? वह व्यक्ति जो मैं कुछ ही समय पहले था, जो केवल उस पल की निरंतर प्रतीक्षा में जीता था जब अल्बर्टीन आकर उसे शुभ रात्रि कहेगी और उसे चूमेगी, मेरे ही एक रूप के गुणन ने इस व्यक्ति को मेरे लिए एक कमजोर हिस्से से ज्यादा कुछ नहीं बना दिया था, जो पहले से ही मुझसे आधा अलग हो चुका था, और एक मुरझाते फूल की तरह मुझे त्वचा की ऊपरी परत को हटाने से मिलने वाली ताजगी का अहसास हुआ। हालांकि, इन संक्षिप्त विचारों से शायद मुझे अल्बर्टीन के प्रति अपने

प्रेम का और अधिक एहसास ही हुआ, जैसा कि हर उस विचार के साथ होता है जो बहुत स्थिर होता है और जिसे अपनी पुष्टि के लिए विरोध की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, 1870 के युद्ध के दौरान जीवित रहे लोग कहते हैं कि युद्ध का विचार उन्हें स्वाभाविक लगने लगा, इसलिए नहीं कि वे युद्ध के बारे में पर्याप्त रूप से नहीं सोच रहे थे, बल्कि इसलिए कि वे किसी और चीज़ के बारे में सोच ही नहीं सकते थे। और यह समझने के लिए कि युद्ध कितना विचित्र और महत्वपूर्ण तथ्य है, यह आवश्यक था कि कोई अन्य चीज़ उन्हें उनके स्थायी जुनून से विचलित कर दे, वे एक क्षण के लिए भूल जाएं कि युद्ध चल रहा है, वे स्वयं को फिर से शांति की स्थिति में पाएं, जब तक कि अचानक उस क्षणिक खालीपन पर वह भयावह वास्तविकता स्पष्ट रूप से उभर न आए जिसे वे लंबे समय से देखना बंद कर चुके थे, क्योंकि तब तक कुछ और दिखाई ही नहीं दे रहा था।
अगर अल्बर्टीन के बारे में मेरी अलग-अलग धारणाओं का यह विमुखीकरण एक क्रम में नहीं, बल्कि एक साथ, समान रूप से, मेरी स्मृति की पूरी धारा में होता, और उसकी बेवफ़ाई की धारणाएँ उसकी दयालुता की धारणाओं के साथ-साथ विमुख हो जातीं, तो विस्मृति मुझे सुकून देती। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। जैसे किसी समुद्र तट पर जहाँ ज्वार असमान रूप से पीछे हटता है, वैसे ही मेरे मन में किसी संदेह का सैलाब उमड़ आता, जबकि उसकी कोमल उपस्थिति की छवि मुझसे इतनी दूर जा चुकी होती कि उसका निवारण भी न कर पाती। जहाँ तक बेवफ़ाइयों की बात है, उन्होंने मुझे पीड़ा दी, क्योंकि चाहे वे जिस भी वर्ष में घटी हों, मेरे लिए वे कभी पुरानी नहीं थीं; लेकिन जब वे विचार दूर हो गए, यानी जब मैंने उन्हें अपने मन में कम स्पष्ट रूप से चित्रित किया, तो मुझे उनसे कम कष्ट हुआ, क्योंकि किसी वस्तु की दूरी वास्तविक दिनों के अंतराल से अधिक

बना पाता था, तभी संयोग से एक नाम मेरे मन में दर्द भरी प्रतिक्रियाएँ जगा देता था, जिन्हें मैं असंभव समझता था, ठीक वैसे ही जैसे मरणासन्न लोग जिनका मस्तिष्क सोचने-समझने की क्षमता खो चुका होता है और जिन्हें सुई चुभोकर मांसपेशियों को सिकोड़ने के लिए मजबूर किया जाता है। और लंबे समय तक, ये भावनाएँ इतनी कम बार आती थीं कि मैं स्वयं शोक और ईर्ष्या के संकट के अवसरों की तलाश करने के लिए विवश हो जाता था, ताकि अतीत से फिर से जुड़ सकूँ, उसे बेहतर ढंग से याद कर सकूँ। चूंकि किसी स्त्री के लिए पछतावा केवल प्रेम का पुनरुत्थान है और उसी नियम के अधीन रहता है, इसलिए मेरे पछतावे की तीव्रता उन्हीं कारणों से बढ़ गई थी जिन्होंने अल्बर्टीन के जीवनकाल में उसके प्रति मेरे प्रेम को बढ़ाया था और जिनमें ईर्ष्या और शोक हमेशा सबसे आगे रहे थे। लेकिन आम तौर पर ये घटनाएं—जैसे कि कोई बीमारी, कोई युद्ध, हमेशा सबसे दूरदर्शी बुद्धिमत्ता द्वारा अनुमानित समय से कहीं अधिक समय तक चल सकती हैं—मुझे अचानक घेर लेती थीं और मुझे इतने तीव्र आघात पहुँचाती थीं कि मैं उनसे स्मृति के लिए अपील करने की बजाय खुद को पीड़ा से बचाने के बारे में अधिक सोचता था।
इसके अलावा, किसी शब्द को संदेह से जोड़ने की भी आवश्यकता नहीं थी, जैसे 'चाउमोंट' (विभिन्न नामों में समान एक अक्षर भी मेरी स्मृति के लिए पर्याप्त था - जैसे एक इलेक्ट्रीशियन किसी भी अच्छे चालक पदार्थ का उपयोग करने के लिए तैयार रहता है - अल्बर्टाइन और मेरे दिल के बीच संपर्क को बहाल करने के लिए)। यह संदेह को पुनः जागृत करने, एक पासवर्ड बनने, विजयी 'ओपन, सेसम' की तरह अतीत के द्वार खोलने के लिए पर्याप्त था, जिसे मैंने ध्यान में रखना बंद कर दिया था, क्योंकि इसे पर्याप्त से अधिक देखने

के बाद, वास्तव में अब मेरे पास यह नहीं था; मैं इससे वंचित हो गया था, मैंने मान लिया था कि इस कमी से मेरे स्वयं के व्यक्तित्व का रूप बदल गया है, जैसे एक ज्यामितीय आकृति जो एक कोण को हटाने से अपनी एक भुजा खो देती है; उदाहरण के लिए, कुछ वाक्यांश जिनमें किसी गली या सड़क का नाम आता था, जहाँ अल्बर्टाइन हो सकती थी, एक संभावित, गैर-मौजूद ईर्ष्या को मूर्त रूप देने के लिए पर्याप्त थे, एक शरीर, एक निवास, किसी भौतिक स्थान, किसी विशेष अनुभूति की खोज में। अक्सर नींद में ही ये 'पुनरावृति', ये सपनों के वो 'अचानक' जो पल भर में हमारी यादों के कई पन्ने, कैलेंडर के कई पत्ते पलट देते हैं, मुझे वापस उस दर्दनाक लेकिन दूर के एहसास में ले आते थे, जो बहुत पहले ही भुला दिया गया था, लेकिन अब फिर से मेरे सामने आ गया था। आमतौर पर, इसके साथ एक पूरा दृश्य होता था, भद्दा लेकिन आकर्षक, जो मुझे वास्तविकता का भ्रम देता था, और मेरी आँखों के सामने उस रात से शुरू हुई घटना को गूंजने देता था, मेरे कानों में गूंजने देता था। इसके अलावा, किसी प्रेम प्रसंग के इतिहास और विस्मृति के विरुद्ध उसके संघर्षों में, क्या हमारे सपने हमारी जागृत अवस्था से भी अधिक महत्वपूर्ण स्थान नहीं रखते? हमारे सपने जो समय के सूक्ष्म विभाजनों का ध्यान नहीं रखते, बदलावों को दबा देते हैं, तीखे विरोधाभासों का विरोध करते हैं, दिन भर धीरे- धीरे बुने गए सांत्वना के जाल को पल भर में बिखेर देते हैं, और रात में हमारे लिए उससे मुलाकात का इंतजाम कर देते हैं जिसे हम अंततः भूल जाते, बशर्ते कि हम उसे फिर कभी न देखें। कोई कुछ भी कहे, सपने में हमें ऐसा लग सकता है कि जो हो रहा है वह सच है। ऐसा होना तभी असंभव हो सकता है जब हमारे अनुभव से जुड़ी कोई बात उस समय हमसे छिपी हो। इसी वजह से यह असंभावित जीवन हमें सच लगने

लगता है। कभी-कभी, आंतरिक प्रकाश व्यवस्था में खराबी के कारण, जिससे नाटक का प्रदर्शन प्रभावित होता है, मंच पर मेरी यादों के प्रकट होने से मुझे वास्तविक जीवन का भ्रम होता है। मुझे सचमुच विश्वास हो जाता है कि मैंने अल्बर्टीन से मिलने का इंतज़ाम किया था, कि मैं उसे फिर से देख रहा हूँ, लेकिन फिर मैं उससे मिलने के लिए आगे बढ़ने में, उससे वो शब्द कहने में जो मैं कहना चाहता था, उसे देखने के लिए बुझ चुकी उम्मीद की लौ को फिर से जलाने में असमर्थ हो जाता हूँ। ये असंभवताएँ मेरे सपने में मात्र थीं - सोने वाले की गतिहीनता, गूंगापन, अंधापन - जैसे अचानक किसी मैजिक लैंटर्न के दोषपूर्ण प्रक्षेपण में एक विशाल छाया दिखाई देती है, जो दिखाई नहीं देनी चाहिए, और स्लाइड पर मौजूद आकृतियों को मिटा देती है, जो लैंटर्न की ही छाया होती है, या उसे चलाने वाले की। कई बार अल्बर्टीन मेरे सपने में आती और मुझे फिर से छोड़ने का प्रस्ताव रखती, लेकिन मैं उसके इस दृढ़ निश्चय से विचलित नहीं होता। ऐसा इसलिए था क्योंकि मेरी स्मृति से सपने के अंधेरे में एक चेतावनी भरी किरण छनकर आ जाती, जो अल्बर्टीन के भीतर समा जाती और उसके भविष्य के कार्यों को, जिनके बारे में उसने मुझे बताया था, महत्वहीन बना देती; यह ज्ञान था कि वह मर चुकी है। अक्सर अल्बर्टीन की मृत्यु की यह स्मृति, उसे नष्ट किए बिना, उसके जीवित होने की अनुभूति के साथ जुड़ जाती थी। मैं उससे बातें करता था; जब मैं बोल रहा था, मेरी दादी कमरे के दूसरे छोर पर आती-जाती रहती थीं। उनकी ठुड्डी का एक हिस्सा जंग लगे संगमरमर की तरह टूट गया था, लेकिन मुझे इसमें कुछ भी असामान्य नहीं लगा। मैंने अल्बर्टीन से कहा कि मुझे बालबेक के स्नानघर और टूरेन की एक धोबिन के बारे में उससे कई सवाल पूछने हैं, लेकिन मैंने उन्हें बाद के लिए टाल दिया

में, वे शब्द मेरे कान के बहुत करीब से गुजरे होंगे क्योंकि उन्हें मैंने ही कहा था।
सारा दिन मैं अल्बर्टीन से बातें करता रहा, उससे सवाल पूछता रहा, उसे माफ़ करता रहा, और उन बातों को भूलने की भरपाई करता रहा जो मैं उसके जीवनकाल में उससे कहना चाहता था। और अचानक मुझे यह सोचकर झटका लगा कि स्मृति द्वारा पुकारी गई उस प्राणी के लिए, जिसे ये सारी बातें कही गई थीं, अब कोई वास्तविकता नहीं रह गई थी, कि मृत्यु ने चेहरे के उन विभिन्न हिस्सों को नष्ट कर दिया था जिन्हें जीने की निरंतर इच्छाशक्ति, जो अब समाप्त हो चुकी थी, ने ही एक व्यक्ति का स्वरूप दिया था। कभी-कभी, बिना सपने देखे, जैसे ही मैं जागा, मुझे लगा कि मेरे भीतर हवा बदल गई है; यह ठंडी और स्थिर रूप से दूसरी दिशा से बह रही थी, सुदूर अतीत से आ रही थी, और मुझे दूर के घंटों की घड़ी की आवाज़, उन ट्रेनों की सीटी की आवाज़ याद दिला रही थी जिन्हें मैं आमतौर पर नहीं सुनता था। एक दिन मैंने एक किताब, बर्गोट के एक उपन्यास में रुचि लेने की कोशिश की, जो मुझे विशेष रूप से पसंद था। इसके मनमोहक पात्रों ने मुझे बेहद आकर्षित किया, और जल्द ही, पुस्तक के जादू में फिर से खोकर, मैं निजी सुख के लिए यह आशा करने लगी कि उस दुष्ट स्त्री को दंड मिले; युवा प्रेमियों की खुशी सुनिश्चित होते देख मेरी आँखें नम हो गईं। "लेकिन फिर," मैंने निराशा में कहा, "अल्बर्टीन ने जो किया होगा, उसे इतना महत्व देने के कारण, मुझे यह निष्कर्ष निकालना होगा कि उसका व्यक्तित्व कुछ ऐसा वास्तविक है जिसे नष्ट नहीं किया जा सकता, कि मैं उसे एक दिन स्वर्ग में उसके असली रूप में पाऊँगी, यदि मैं इतनी प्रार्थनाएँ करूँ, इतनी बेसब्री से प्रतीक्षा करूँ, इतने आँसुओं के साथ उस व्यक्ति की सफलता के बारे में जानूँ जो बर्गोट

में कोई भी अन्य महिला भी सक्षम हो सकती थी, सपनों, इच्छाओं, आदतों, स्नेहों के आपस में मिलने और सुख-दुखों के आवश्यक हस्तक्षेप का परिणाम थी? और यह उसकी मृत्यु के बाद भी जारी रहा, स्मृति ही वास्तविक जीवन को चलाने के लिए पर्याप्त थी, जो मानसिक है। मुझे याद आया कि अल्बर्टीन एक रेलगाड़ी के डिब्बे से उतरी और मुझसे कहा कि वह सेंट-मार्स ले वेटू जाना चाहती है, और मैंने उसे फिर से देखा, उसके गालों पर उसका पोलो शर्ट नीचे खींचा हुआ था, मुझे एक बार फिर सुख की संभावनाएं दिखाई दीं, जिनकी ओर मैं यह कहते हुए उछल पड़ा: "हम साथ में इनकार्विल, डोनसिएरेस जा सकते थे।" बालबेक के आसपास ऐसा कोई अड्डा नहीं था जहाँ मैंने उसे न देखा हो, और नतीजा यह हुआ कि वह इलाका, किसी पौराणिक भूमि की तरह संरक्षित, मेरे लिए जीवंत और क्रूर रूप से, सबसे प्राचीन, सबसे मनमोहक कहानियों को फिर से जीवित कर दिया, वे कहानियाँ जो मेरे प्रेम के कारण लगभग मिट गई थीं। ओह! मुझे कितना कष्ट सहना पड़ेगा जब मुझे फिर से बालबेक के उस पलंग पर लेटना पड़ेगा जिसके पीतल के फ्रेम के चारों ओर, एक अचल धुरी, एक स्थिर छड़ की तरह, मेरा जीवन घूमता रहा, विकसित होता रहा, और अपने दायरे में दादी के साथ खुशनुमा बातचीत, उनकी मृत्यु का दुःस्वप्न, अल्बर्टीन का सुखदायक स्पर्श, उसकी बुराई का पता चलना, और अब एक नया जीवन जिसमें, समुद्र के प्रतिबिंब वाली चमकदार किताबों की अलमारियों को देखते हुए, मैं जानता था कि अल्बर्टीन फिर कभी कमरे में नहीं आएगी! क्या यह वही बालबेक होटल नहीं था, जो किसी प्रांतीय रंगमंच के इकलौते इनडोर सेट की तरह था, जिसमें वर्षों से तरह-तरह के नाटक खेले जाते रहे थे, जो एक कॉमेडी, एक त्रासदी, एक विशुद्ध काव्यात्मक नाटक के लिए इस्तेमाल होता रहा था, वही होटल जो मेरे अतीत में काफी दूर तक

समा चुका था? यह तथ्य कि इसका केवल यही हिस्सा, अपनी दीवारों, अपनी किताबों की अलमारियों, अपने कांच के शीशों के साथ, मेरे जीवन के नए युगों के दौरान हमेशा एक जैसा रहा, मुझे इस बात का और अधिक एहसास दिलाता था कि कुल मिलाकर, बाकी सब कुछ, मैं खुद बदल गया था, और इस तरह मुझे यह आभास देता था कि जीवन, प्रेम, मृत्यु के रहस्य, जिनमें बच्चे अपने आशावाद में सोचते हैं कि उनका कोई हिस्सा नहीं है, अलग नहीं हैं, बल्कि हम एक दुख भरे गर्व के साथ महसूस करते हैं कि वे वर्षों के दौरान हमारे अपने जीवन में साकार हो गए हैं।
मैंने कभी-कभी अखबारों में दिलचस्पी लेने की कोशिश की। लेकिन मुझे उन्हें पढ़ना अरुचिकर लगा, और उससे भी बढ़कर, यह मेरे लिए खतरनाक था। असल बात यह है कि हमारे हर विचार से, जैसे जंगल में एक खाली जगह से, इतने रास्ते अलग-अलग दिशाओं में बंट जाते हैं कि जिस क्षण मुझे इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं होती, उसी क्षण मैं एक ताजा याद से रूबरू हो जाता हूँ। फोर्रे की धुन 'ले सीक्रेट' के शीर्षक ने मुझे ड्यूक डी ब्रोगली की 'सीक्रेट डू रोई' तक पहुँचाया, ब्रोगली नाम ने चौमोंट तक, या फिर 'गुड फ्राइडे' शब्दों ने मुझे गोलगोथा की याद दिला दी, गोलगोथा ने मुझे उस शब्द की व्युत्पत्ति की याद दिला दी जो, लगता है, कैल्वस मॉन्स, चौमोंट के समतुल्य है। लेकिन, चाहे मैं जिस भी रास्ते से चौमोंट तक पहुँचा हो, उस क्षण मुझे इतना गहरा सदमा लगा कि मैं केवल यही सोच पा रहा था कि खुद को दर्द से कैसे बचाऊँ। सदमे के कुछ क्षण बाद, मेरी बुद्धि ने, जो गरज की आवाज की तरह धीमी गति से चलती है, मुझे इसका कारण बताया। चौमोंट ने मुझे बुटे-चौमोंट की याद दिला दी, जिसके बारे में श्रीमती बोंटेम्प्स ने मुझे बताया था कि एंड्री अक्सर अल्बर्टीन के साथ वहाँ जाया करती थी, जबकि

अल्बर्टीन ने मुझे बताया था कि उसने बुटे-चौमोंट कभी नहीं देखा था। एक निश्चित उम्र के बाद हमारी यादें एक-दूसरे से इतनी जुड़ जाती हैं कि जिस चीज़ के बारे में हम सोच रहे होते हैं, जिस किताब को हम पढ़ रहे होते हैं, उसका शायद ही कोई महत्व रह जाता है। हमने अपना कुछ अंश हर जगह डाल दिया होता है, हर चीज़ उपजाऊ होती है, हर चीज़ खतरनाक होती है, और हम साबुन के विज्ञापन में भी उतनी ही अनमोल खोजें कर सकते हैं जितनी पास्कल के विचारों में होती हैं।
इसमें कोई शक नहीं कि ब्यूटेस-चामोंट जैसी घटना, जो उस समय मुझे निरर्थक लग रही थी, अपने आप में स्नानागार वाली महिला या धोबिन की कहानी की तुलना में कहीं कम गंभीर और अल्बर्टाइन के खिलाफ कहीं कम निर्णायक सबूत थी। लेकिन, एक बात तो यह है कि जो स्मृति हमें संयोग से मिलती है, उसमें कल्पना करने की क्षमता, यानी इस मामले में पीड़ा सहने की क्षमता, बरकरार रहती है, जिसे हम तब आंशिक रूप से समाप्त कर देते हैं जब हम स्वयं जानबूझकर किसी स्मृति को फिर से रचने के लिए अपने दिमाग का इस्तेमाल करते हैं। और इन बाद की स्मृतियों (स्नानगार वाली महिला और धोबिन से संबंधित) से, जो मेरी चेतना में हमेशा मौजूद रहती थीं, भले ही धुंधली हों, जैसे किसी गैलरी के अर्ध-अंधेरे में रखा फर्नीचर, जिसे हम देख न पाने के कारण गुजरते समय अनदेखा कर देते हैं, मैं अभ्यस्त हो गया था। इसके विपरीत, बहुत समय हो गया था जब मैंने बुटेस-चाउमोंट के बारे में सोचा था, या, एक और उदाहरण लें, बालबेक के कैसीनो में अल्बर्टीन द्वारा दर्पण की बारीकी से जांच करने के बारे में, या उस शाम उसकी अस्पष्ट देरी के बारे में जब मैं गुएरमांटेस पार्टी के बाद इतनी देर तक उसका इंतजार करता रहा था, उसके जीवन के उन पहलुओं के बारे में जो मेरे दिल से बाहर

रहे और जिन्हें मैं जानना चाहता था ताकि वे उसमें समाहित हो सकें, उससे जुड़ सकें, उन सुखद यादों के साथ जुड़ सकें जिन्होंने उसमें एक अल्बर्टीन की आंतरिक और वास्तविक पहचान बनाई थी। जब मैंने आदत के भारी पर्दे का एक कोना उठाया (वह सुस्त आदत जो हमारे पूरे जीवन में हमसे लगभग पूरे ब्रह्मांड को छुपाए रखती है, और आधी रात को, बिना नाम बदले, जीवन के सबसे खतरनाक या मादक जहरों की जगह एक ऐसी दवा रख देती है जिससे कोई आनंद नहीं मिलता), तो ऐसी स्मृति मेरे सामने लौट आती जैसे घटना वाले दिन ही, एक नए मौसम के आगमन की ताजगी और तीक्ष्ण नवीनता के साथ, हमारे घंटों की दिनचर्या में बदलाव के साथ, जो सुखों के क्षेत्र में भी, यदि हम वसंत के पहले सुहावने दिन किसी गाड़ी में बैठते हैं, या सूर्योदय के समय घर से निकलते हैं, तो हमें अपने तुच्छ कार्यों को एक स्पष्ट उत्साह के साथ देखने पर मजबूर कर देती है, जिससे वह गहन क्षण पिछले दिनों के कुल योग से कहीं अधिक मूल्यवान हो जाता है। मैंने खुद को एक बार फिर प्रिंसेस डी गुएरमांटेस की पार्टी से लौटते हुए और अल्बर्टीन के आने की प्रतीक्षा करते हुए पाया। बीते दिन धीरे-धीरे बीते दिनों को ढक लेते हैं और स्वयं आने वाले दिनों के नीचे दब जाते हैं। लेकिन बीता हुआ हर दिन हमारे भीतर इस प्रकार समाहित है, जैसे किसी विशाल पुस्तकालय में पुरानी किताबों का भंडार, जिसे शायद ही कोई देखना चाहेगा। फिर भी, यदि अतीत का वह दिन, आने वाले युगों की स्पष्टता को पार करते हुए, सतह पर आ उठे और हम पर पूरी तरह छा जाए, तो एक क्षण के लिए नाम अपना पुराना अर्थ ग्रहण कर लेते हैं, लोग अपना पुराना रूप धारण कर लेते हैं, हम स्वयं उस समय की अपनी मनस्थिति में आ जाते हैं, और हम एक अस्पष्ट पीड़ा के साथ, जो हालांकि सहनीय है और लंबे समय तक नहीं रहेगी, उन समस्याओं को

मेरा सबसे अच्छा दिखने का, हर सुविधा का लाभ उठाने का जुनून, मेरे पसीने छूट जाते थे। खुद को तड़पाने के लिए, मैं बस अल्बर्टीन में भी वही कामुक भावना की कल्पना कर लेता था। और यह मुझे तड़पाने के लिए काफी था, अगर मैं खुद से कहता कि इस दूसरी बात की तुलना में, स्टेंडहल और विक्टर ह्यूगो के बारे में उसकी मेरे साथ गंभीर बातचीत का उसके लिए बहुत कम महत्व रहा होगा, अगर मुझे लगता है कि उसका दिल दूसरे लोगों की ओर आकर्षित हो रहा है, मुझसे अलग हो रहा है, कहीं और साकार हो रहा है। लेकिन इस इच्छा का उसके लिए जो महत्व रहा होगा और जिस संयम से उसने इसे घेरा हुआ था, वह भी मुझे यह नहीं बता सका कि असल में यह क्या थी, और न ही यह कि जब वह इसके बारे में खुद से बात करती थी तो वह इसे कैसे परिभाषित करती थी। शारीरिक पीड़ा में, कम से कम हम अपने दर्द को खुद नहीं चुन सकते। बीमारी ही इसे तय करती है और हम पर थोपती है। लेकिन ईर्ष्या में हमें उचित पीड़ा तक पहुँचने से पहले हर प्रकार और स्तर की पीड़ाओं का कुछ हद तक अनुभव करना पड़ता है। और इससे अधिक कठिन क्या हो सकता है, जब बात इस तरह की पीड़ा की हो कि जिसे हम प्यार करते हैं, वह हमसे भिन्न व्यक्तियों के साथ आनंद पा रही है, जो उसे ऐसी भावनाएँ देते हैं जो हम उसे देने में सक्षम नहीं हैं, या जो कम से कम अपने शारीरिक गठन, अपने रूप, अपने व्यवहार से, उसके सामने हमसे बिल्कुल अलग दिखते हैं। आह! काश अल्बर्टीन को सेंट-लूप से प्यार हो जाता! मुझे लगता है कि मुझे कितना कम कष्ट सहना पड़ता! यह सच है कि हम अपने साथी मनुष्यों की विशिष्ट संवेदनशीलता से अनभिज्ञ होते हैं, लेकिन आमतौर पर हमें यह भी पता नहीं होता कि हम इससे अनभिज्ञ हैं, क्योंकि दूसरों की यह संवेदनशीलता हमें उदासीन कर देती है। जहाँ तक अल्बर्टीन का सवाल है, मेरा दुख या सुख इस संवेदनशीलता की प्रकृति पर निर्भर

करता; मैं यह बात अच्छी तरह से जानती थी कि यह मेरे लिए अज्ञात था, और यह तथ्य कि यह मेरे लिए अज्ञात था, अपने आप में एक दुख था - अल्बर्टीन की अज्ञात इच्छाएँ और सुख, जिन्हें मैंने उस समय देखा था जब अल्बर्टीन की मृत्यु के कुछ समय बाद एंड्री मुझसे मिलने आई थी।
पहली बार वह मुझे खूबसूरत लगी, मैंने मन ही मन कहा कि उसके लगभग ऊनी बाल, उसकी गहरी, छायादार आंखें, निस्संदेह वही थीं जिनसे अल्बर्टीन को बेहद प्यार था, मेरे सामने उस चीज का साकार रूप जो वह अपने प्रेममय सपनों में अपने साथ ले जाया करती थी, वह चीज जिसे उसने उस दिन इच्छा की भविष्यसूचक आंखों से देखा था जब उसने अचानक बालबेक छोड़ने का फैसला किया था।
जैसे कोई अजीब, गहरा फूल कब्र के पार से, किसी ऐसे व्यक्ति के अंतर्मन से, जिसे मैं खोज नहीं पाया था, मेरे सामने आ गया हो, मानो कोई अनमोल अवशेष अप्रत्याशित रूप से प्रकट हो रहा हो - अल्बर्टीन की साकार इच्छा, जो एंड्री मेरे लिए वैसी ही थी जैसे शुक्र ग्रह बृहस्पति की इच्छा था। एंड्री को अल्बर्टीन की मृत्यु का दुख था, पर मुझे तुरंत एहसास हुआ कि उसे उसकी कमी खल रही है। मृत्यु द्वारा अपनी सहेली से विमुख होकर, उसने उस अंतिम वियोग को सहजता से स्वीकार कर लिया, जिसे मैं अल्बर्टीन के जीवित रहते उससे पूछने की हिम्मत नहीं करता, क्योंकि मुझे एंड्री की सहमति न मिलने का डर रहता। इसके विपरीत, उसने इस त्याग को सहजता से स्वीकार कर लिया, लेकिन ठीक उसी क्षण जब इससे मुझे कोई लाभ नहीं हो सकता था। एंड्री ने अल्बर्टाइन को मेरे हवाले कर दिया, लेकिन मृत अवस्था में, और जब उसने मेरे लिए न केवल अपना जीवन खो दिया, बल्कि पूर्वव्यापी रूप से अपनी वास्तविकता का एक छोटा सा हिस्सा भी खो दिया, क्योंकि मैंने

दुःख का विश्लेषण करने के लिए नहीं बैठा जो उसने मुझे दिया था। मैं महसूस कर सकता था कि यह दुःख मेरे शरीर, मेरी नसों, मेरे हृदय में तीव्र अशांति पैदा कर रहा था, जिसे मैंने शिष्टाचारवश अनदेखा करने का नाटक किया और इसके विपरीत, अपनी आंतरिक घटनाओं पर ध्यान दिए बिना, अपनी मेहमान लड़की से अत्यंत सौहार्दपूर्ण ढंग से बात की। एंड्री को अल्बर्टीन के बारे में यह कहते हुए सुनना मेरे लिए विशेष रूप से कष्टदायक था: "ओह हाँ, उसे हमेशा शेवरूज़ घाटी जाना बहुत पसंद था।" उस अस्पष्ट और काल्पनिक दुनिया में, जिसमें एंड्री के साथ अल्बर्टीन की सैर होती थी, मुझे ऐसा लगा जैसे एंड्री ने किसी शैतानी रचना से एक शापित घाटी जोड़ दी हो। मुझे ऐसा लगा कि एंड्री मुझे वो सब कुछ बताने वाली है जो वो अल्बर्टीन के साथ किया करती थी, और यद्यपि मैंने शिष्टाचारवश, आदतवश, आत्मसम्मान से, शायद कृतज्ञता से, अधिकाधिक स्नेह दिखाने का प्रयास किया, जबकि अल्बर्टीन की मासूमियत के प्रति मेरे मन में बची हुई जगह धीरे-धीरे कम होती जा रही थी, मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरे प्रयासों के बावजूद, मैं एक ऐसे जानवर की तरह लकवाग्रस्त दिख रही थी जिसके चारों ओर एक सम्मोहित शिकारी पक्षी धीरे-धीरे एक संकरा घेरा बना रहा हो, जो कोई जल्दी नहीं करता क्योंकि उसे पूरा विश्वास होता है कि जब वह ऐसे शिकार को चुनता है जो अब बच नहीं सकता, तो वह उस तक पहुँच जाएगा। फिर भी मैंने उसे निहारा, और उतनी ही जीवंतता, सहजता और आत्मविश्वास के साथ, जितना कोई व्यक्ति दिखा सकता है कि वह दूसरे की निगाहों से सम्मोहित होने से नहीं डरता, मैंने एंड्री से लापरवाही से कहा: "मैंने तुम्हें नाराज़ करने के डर से इस विषय पर कभी बात नहीं की, लेकिन अब जब हम दोनों को उसके बारे में बात करने में आनंद आता है, तो मैं तुम्हें बता ही देता हूँ कि

मुझे बहुत पहले ही पता चल गया था कि तुम अल्बर्टीन के साथ किस तरह की बातें करती थीं। और मैं तुम्हें एक ऐसी बात बता सकता हूँ जिसे सुनकर तुम्हें खुशी होगी, हालाँकि तुम इसे पहले से ही जानती हो: अल्बर्टीन तुम्हें बहुत पसंद करती थी।" मैंने एंड्री से कहा कि अगर वह मुझे उससे मिलने दे, तो मुझे बहुत दिलचस्पी होगी, भले ही वह केवल ऐसे स्पर्श तक ही सीमित रहे जिससे मेरी उपस्थिति में उसे ज़्यादा शर्मिंदगी न हो, और अल्बर्टीन की उन सहेलियों के साथ ऐसा करे जो उसकी पसंद साझा करती थीं। मैंने रोज़मोंडे, बर्थे, अल्बर्टीन की हर सहेली का ज़िक्र किया, इस उम्मीद में कि शायद कुछ पता चल जाए। “मैं दुनिया में किसी भी कीमत पर आपके सामने वो सब काम नहीं करूँगी जिनका आप ज़िक्र कर रहे हैं,” एंड्री ने जवाब दिया, “मुझे नहीं लगता कि आपने जिन लड़कियों का नाम लिया है, उनमें से किसी की भी ऐसी पसंद है।” उस राक्षस की ओर अनजाने में खिंची चली गई जो मुझे अपनी ओर खींच रहा था, और मैंने कहा: “क्या! आप मुझसे ये उम्मीद तो नहीं कर रहे कि मैं मान लूँ कि आपके पूरे समूह में से अल्बर्टीन ही अकेली ऐसी थी जिसके साथ आपने ऐसा किया!” “लेकिन मैंने अल्बर्टीन के साथ कभी ऐसा कुछ नहीं किया।” “अरे, मेरी प्यारी एंड्री, उन बातों से इनकार क्यों कर रही हो जो मुझे कम से कम तीन साल से पता हैं, मुझे उनमें कोई बुराई नहीं दिखती, बिलकुल नहीं। ऐसी बातों की बात करें तो, वो शाम जब वो अगले दिन आपके साथ श्रीमती वर्दुरिन के घर जाने के लिए इतनी बेताब थी, शायद आपको याद हो…।” मेरे वाक्य पूरा होने से पहले ही, मैंने एंड्री की आँखों में एक क्षणिक, चिंतित निगाह देखी। उसकी आँखें उन पत्थरों की तरह नुकीली थीं, जिन्हें इसी कारण जौहरी इस्तेमाल करने में मुश्किल महसूस करते हैं। उसकी निगाहें उन लोगों की तरह थीं जिन्हें पर्दे के पीछे

जाने का विशेष अधिकार प्राप्त होता है और जो नाटक शुरू होने से पहले ही पर्दा हटाकर तुरंत छिप जाते हैं ताकि कोई उन्हें देख न सके। यह बेचैन निगाह गायब हो गई, सब कुछ सामान्य हो गया, लेकिन मुझे लगा कि अब मैं जो कुछ भी देखूंगा, वह विशेष रूप से मेरे फायदे के लिए ही होगा। उसी क्षण मेरी नज़र आईने में पड़ी; मुझे अपने और एंड्री के बीच एक अजीब सी समानता दिखी। अगर मैंने बहुत पहले ही अपने होंठ शेव करना बंद न किया होता और हल्की सी मूंछें न होतीं, तो यह समानता लगभग पूरी होती। शायद जब उसने बालबेक में मेरी मूंछें देखीं, जो अभी-अभी उगनी शुरू हुई थीं, तभी अल्बर्टीन को अचानक पेरिस लौटने की वह बेचैन, उग्र इच्छा हुई होगी। "पर फिर भी मैं ऐसी बातें नहीं कह सकती जो सच न हों, क्योंकि आपको उनमें कोई बुराई नहीं दिखती। मैं कसम खाकर कहती हूँ कि मैंने अल्बर्टीन के साथ कभी कुछ नहीं किया, और मुझे पूरा यकीन है कि वह इस तरह की बातों से नफरत करती थी। जिन लोगों ने आपको ये बातें बताईं, वे आपसे झूठ बोल रहे थे, शायद किसी छिपे हुए मकसद से," उसने सवालिया और चुनौती भरे लहजे में कहा। "अच्छा, ठीक है, क्योंकि तुम मुझे बताओगी नहीं," मैंने जवाब दिया। मैं ऐसा दिखाना चाहता था कि मैं कोई सबूत नहीं देना चाहता, जो मेरे पास था ही नहीं। फिर भी मैंने अस्पष्ट रूप से और बेतरतीब ढंग से बुटेस-चामोंट का नाम लिया। "हो सकता है मैं अल्बर्टीन के साथ बुटेस-चामोंट गया होऊँ, लेकिन क्या वह कोई बदनाम जगह है?" मैंने उससे पूछा कि क्या वह इस विषय पर गिज़ेल से बात नहीं कर सकती, जो कभी अल्बर्टीन के साथ घनिष्ठ संबंध रखती थी। लेकिन एंड्री ने मुझे भरोसा दिलाया कि हाल ही में गिज़ेल ने उसके साथ जिस तरह का अपमानजनक व्यवहार किया था, उसके बाद उससे कोई मदद मांगना वह बिल्कुल भी नहीं चाहेगी। उसने आगे कहा, "अगर तुम उससे मिलो, तो

उन्हें सुनाता है, उनके उपन्यास से अधिक या कम कुछ नहीं होती। इसी प्रकार, फैब्रिस डेल डोंगो का जीवन पडुआ के एक कैनन द्वारा स्टेंडहल को सुनाया गया था। जब हम प्रेम में होते हैं, यानी जब किसी दूसरे व्यक्ति का अस्तित्व हमें रहस्यमय लगता है, तो हम कितने प्रसन्न होते हैं कि हमें कोई ऐसा जानकार कथावाचक मिल जाए! और निःसंदेह, ऐसा कथावाचक मौजूद है। क्या हम स्वयं भी अक्सर, बिना किसी भावना के, किसी स्त्री की कहानी अपने किसी मित्र या किसी अजनबी को नहीं सुनाते, जिसे उसके प्रेम प्रसंगों के बारे में कुछ भी पता नहीं होता और वह हमें बड़ी दिलचस्पी से सुनता है? मैं वह व्यक्ति था जब मैंने ब्लोच से डचेस डी गुएरमांटेस और श्रीमती स्वान के बारे में बात की थी, वह व्यक्ति अभी भी मौजूद है, जो मुझसे अल्बर्टाइन के बारे में बात कर सकता था, वह व्यक्ति हमेशा मौजूद रहता है... लेकिन हम उससे कभी नहीं मिलते। मुझे ऐसा लगा कि अगर मैं उन महिलाओं को ढूंढ पाता जो उसे जानती थीं, तो मुझे वह सब पता चल जाता जो मुझे नहीं पता था। फिर भी अजनबियों को शायद ऐसा ही लगता होगा कि उसके जीवन के बारे में मुझसे ज़्यादा कोई नहीं जानता होगा। क्या मैं उसकी सबसे प्यारी दोस्त एंड्री को जानता भी था? इसी तरह हम मान लेते हैं कि किसी मंत्री के दोस्त को किसी राजनीतिक मामले की सच्चाई पता होनी चाहिए, वरना वह किसी घोटाले में नहीं फंस सकता। कोशिश करने और नाकाम होने के बाद, दोस्त ने पाया कि जब भी उसने मंत्री से राजनीति पर चर्चा की, तो मंत्री ने सिर्फ़ सामान्य बातें कीं और उसे वही बताया जो पहले ही अखबारों में छप चुका था, या फिर अगर वह किसी मुसीबत में होता, तो मंत्री की मदद पाने की उसकी बार-बार की कोशिशें हमेशा "यह मेरे बस में नहीं है" में ही खत्म होतीं, जिसके आगे दोस्त खुद बेबस हो जाता है। मैंने मन ही मन कहा: "काश

मैं ऐसे-ऐसे गवाहों को जानता!" जिनसे, अगर मैं उन्हें जानता होता, तो शायद मैं एंड्री से ज़्यादा कुछ नहीं निकलवा पाता, जो खुद एक ऐसे राज़ की रखवाली कर रही थी जिसे उसने छोड़ने से इनकार कर दिया था। इस मामले में भी स्वान से भिन्न, जिसने ईर्ष्या शांत होने के बाद, ओडेट ने फोर्शेविल के साथ क्या किया होगा, इस बारे में कोई जिज्ञासा नहीं रखी, यहाँ तक कि मेरी ईर्ष्या शांत हो जाने के बाद भी, अल्बर्टीन की धोबी से, उसके पड़ोस के लोगों से, उसके जीवन को, उसकी साज़िशों को फिर से रचने का विचार ही मेरे लिए आकर्षक था। और जैसा कि अतीत में गिल्बर्ट और डचेस डी गुएरमांटेस के साथ हुआ था, इच्छा हमेशा मूल्य की प्रारंभिक भावना से उत्पन्न होती है, इसलिए जिन इलाकों में अल्बर्टीन अतीत में रही थी, वहाँ की उसी वर्ग की महिलाओं को मैं जानना चाहता था, और केवल उन्हीं की उपस्थिति की मैं कामना कर सकता था। उनसे कुछ भी न सीख पाने के बावजूद, वे एकमात्र ऐसी महिलाएं थीं जिनकी ओर मैं आकर्षित हुई, क्योंकि वे अल्बर्टीन को जानती थीं या जान सकती थीं, उनके वर्ग की महिलाएं या उन वर्गों की महिलाएं जिनके साथ वह मेलजोल रखना पसंद करती थीं, दूसरे शब्दों में, वे महिलाएं जो मेरी नज़र में उनसे मिलती-जुलती थीं या उस प्रकार की थीं जो उन्हें आकर्षित करती थीं। जब मैंने अल्बर्टीन को या उस प्रकार की महिलाओं को याद किया जिनके प्रति उनका निश्चित रूप से विशेष लगाव रहा होगा, तो इन महिलाओं ने मेरे भीतर ईर्ष्या या पछतावे की एक पीड़ादायक भावना जगाई, जो बाद में जब मेरा दुख कम हुआ तो एक आकर्षक जिज्ञासा में बदल गई। और उनमें विशेष रूप से श्रमिक वर्ग की महिलाएं, उनके जीवन के कारण, जो मेरे जाने- पहचाने जीवन से बहुत अलग था। निस्संदेह, हम केवल अपने मन में ही चीजों पर अधिकार रखते हैं, और हम किसी चित्र पर अधिकार नहीं

जताते यदि वह हमारे भोजन कक्ष में टंगा है और हम उसे समझ नहीं पाते, या किसी परिदृश्य पर केवल इसलिए अधिकार नहीं जताते क्योंकि हम उसके सामने रहते हैं और उसे देखते भी नहीं। लेकिन फिर भी अतीत में मुझे बालबेक को पुनः प्राप्त करने का भ्रम हुआ था, जब पेरिस में अल्बर्टीन मुझसे मिलने आई और मैंने उसे अपनी बाहों में भर लिया था। इसी तरह, जब मैंने एक दर्जी को चूमा, तो मुझे अल्बर्टीन के जीवन, कार्यशालाओं के माहौल, काउंटर के पार हुई बातचीत और झुग्गी-झोपड़ियों की भावना से एक सीमित और गुप्त संपर्क प्राप्त हुआ। एंड्री, ये अन्य महिलाएं, ये सभी अल्बर्टाइन से संबंधित थीं—जैसे अल्बर्टाइन स्वयं बालबेक से संबंधित थीं—उन्हें उन सुखों के विकल्प के रूप में गिना जाना चाहिए, जो एक दूसरे को धीरे-धीरे कमज़ोर करते हुए प्रतिस्थापित करते हैं, जिससे हम उस सुख से छुटकारा पा सकते हैं जिसे हम अब प्राप्त नहीं कर सकते, जैसे बालबेक में छुट्टियां बिताना या अल्बर्टाइन का प्रेम (जैसे लूव्र जाकर टिटियन की उस पेंटिंग को देखना जो मूल रूप से वेनिस में थी, हमें वहां न जा पाने की कमी को पूरा करती है), उन सुखों के लिए जो अविभाज्य क्रमिकताओं द्वारा एक दूसरे से अलग होकर, हमारे जीवन को संकेंद्रित, सन्निहित, सामंजस्यपूर्ण और क्रमिक क्षेत्रों की एक श्रृंखला में बदल देते हैं, जो एक प्रारंभिक इच्छा को घेर लेते हैं जिसने स्वर निर्धारित किया है, उससे मेल न खाने वाली हर चीज को समाप्त कर दिया है और प्रमुख रंग फैला दिया है (जैसा कि, उदाहरण के लिए, मुझे डचेस डी गुएरमांटेस और गिल्बर्ट के मामलों में भी लगा था)। एंड्री, ये महिलाएं उस इच्छा के लिए थीं, जिसकी पूर्ति के लिए मैं जानती थी कि अब प्रार्थना करना असंभव है, कि अल्बर्टीन मेरे

साथ हो, जो एक शाम, अल्बर्टीन को केवल देखने से पहले, अंगूर के गुच्छे की बहुआयामी और ताज़ा चमक थी।
अब मेरे प्रेम की स्मृति से जुड़ी अल्बर्टीन की शारीरिक और सामाजिक विशेषताओं ने, जिनके बावजूद मैंने उससे प्रेम किया था, मेरी इच्छा को उस ओर मोड़ दिया जिसे वह कभी आसानी से नहीं चुनती: निम्न मध्यम वर्ग की सांवली लड़कियां। वास्तव में, मेरे भीतर वह तीव्र इच्छा फिर से जागृत होने लगी थी जिसे अल्बर्टीन के प्रति मेरा प्रेम शांत नहीं कर पाया था, जीवन को जानने की वह तीव्र इच्छा जो मैं बालबेक के आसपास की सड़कों पर, पेरिस की गलियों में महसूस करता था, वह इच्छा जिसने मुझे बहुत पीड़ा दी थी जब मैंने यह मानकर कि यह अल्बर्टीन के हृदय में भी मौजूद है, उसे मेरे अलावा किसी और से इसे संतुष्ट करने के साधनों से वंचित करने का प्रयास किया था। अब जब मैं उसकी इच्छा के विचार को सहन कर पा रहा था, क्योंकि वह विचार मेरी अपनी इच्छा से तुरंत जागृत हो गया था, ये दो तीव्र इच्छाएँ एक साथ मिल गईं, तो मैं चाहता था कि हम दोनों मिलकर उन्हें पूरा कर सकें, मैंने मन ही मन कहा: "वह लड़की उसे पसंद आती," और अचानक उसके और उसकी मृत्यु के बारे में सोचने से प्रेरित होकर, मैं इतना दुखी हो गया कि अपनी इच्छा को आगे नहीं बढ़ा सका। जैसे बहुत पहले, मेसेग्लिस और गुएरमांटेस के तौर-तरीकों ने ग्रामीण जीवन के प्रति मेरी पसंद की शर्तें तय कर दी थीं और मुझे ऐसे गाँव में कोई वास्तविक आकर्षण खोजने से रोक दिया था जहाँ न कोई पुराना चर्च था, न कॉर्नफ्लावर, न बटरकप, ठीक वैसे ही अतीत के आकर्षण से खुद को जोड़कर, अल्बर्टीन के लिए मेरे प्यार ने मुझे एक खास तरह की महिला की तलाश करने के लिए मजबूर किया; मैं फिर से, उससे प्यार करने से पहले की तरह, उसके साथ सामंजस्य बिठाने वाली चीजों की आवश्यकता महसूस करने लगा,

में समाहित हो गई थीं - अल्बर्टीन को अन्य महिलाओं के साथ देखना, शायद इसलिए कि जब वे उसे छोड़कर चली जाएँगी, तो मैं उसके साथ अकेला रह जाऊँगा, आखिरी और स्वामिनी। और जब मैंने उसकी झिझक देखी, उसकी अनिश्चितता देखी जब वह खुद से पूछ रही थी कि क्या इस या उस लड़की के साथ शाम बिताना उसके लिए उचित होगा, दूसरी के चले जाने पर उसकी संतुष्टि देखी, शायद उसकी निराशा देखी, तो मुझे अल्बर्टाइन द्वारा मुझमें जगाई गई ईर्ष्या को उसके सही अनुपात में लाना चाहिए था, क्योंकि उसे इस तरह इन सब का अनुभव करते देखकर मैं उसके सुखों की सीमा जान लेता। उसने हमें कितने सुखों से, कितने आसान जीवन से वंचित कर दिया है, मैंने मन ही मन कहा— अपनी सहज प्रवृत्ति को नकारने की उस हठधर्मिता से! और जब मैंने एक बार फिर उसकी हठधर्मिता का कारण जानने की कोशिश की, तो अचानक मुझे बालबेक में कही गई वह बात याद आ गई जो मैंने उससे उस दिन कही थी जब उसने मुझे पेंसिल दी थी। जब मैंने उसे मुझे चूमने न देने के लिए डांटा था, तो मैंने उससे कहा था कि मुझे चुंबन उतना ही स्वाभाविक लगता है जितना कि एक स्त्री का दूसरी स्त्री के साथ संबंध रखना अपमानजनक। अफसोस, शायद अल्बर्टाइन उस नासमझी भरी बात को कभी नहीं भूली थी।
मैं उन लड़कियों को अपने साथ घर ले आया जो मुझे सबसे कम पसंद आई थीं। मैंने उनके कुंवारे बालों को सहलाया, उनकी सुडौल छोटी नाक और स्पेनिश रंगत की तारीफ की। बेशक, अतीत में, यहाँ तक कि पेरिस की एक गली में बालबेक के पास एक सड़क पर बस एक झलक देखने वाली महिला के साथ भी, मैंने अपनी इच्छा की विशिष्टता को महसूस किया था और यह भी कि किसी और से उसे संतुष्ट करने की कोशिश करना उसे दूषित करना होगा। लेकिन जीवन ने, धीरे-धीरे हमारी ज़रूरतों की निरंतरता को उजागर करते हुए, मुझे सिखाया था कि एक व्यक्ति के न

प्रेम था, तो मैं अपने प्रेम की इस व्यक्तिपरक प्रकृति से कई निष्कर्ष निकाल सकता था। यह भी कि एक मानसिक अवस्था होने के कारण, यह व्यक्ति से लंबे समय तक अविचलित रह सकती है, लेकिन उस व्यक्ति से कोई वास्तविक संबंध न होने के कारण, हर मानसिक अवस्था की तरह, यहाँ तक कि सबसे स्थायी अवस्था की तरह भी, एक दिन यह अप्रचलित हो जाएगी, 'प्रतिस्थापित' हो जाएगी, और जब वह दिन आएगा, तो अल्बर्टीन की स्मृति से मुझे जो कुछ भी सुखद और अटूट रूप से जोड़ता हुआ प्रतीत होता था, वह मेरे लिए अस्तित्वहीन हो जाएगा। अन्य लोगों की त्रासदी यही है कि वे हमारे लिए केवल हमारे अपने मन के क्षणभंगुर संग्रहों के प्रदर्शन मात्र होते हैं। इसी कारण हम उन पर ऐसी परियोजनाएँ आधारित करते हैं जिनमें हमारे मन का सारा उत्साह समाहित होता है; लेकिन हमारा मन थक जाता है, हमारी स्मृति कमजोर पड़ जाती है, वह दिन आ जाएगा जब मैं अल्बर्टीन के कमरे में पहले आने वाले किसी भी व्यक्ति को सहर्ष प्रवेश दे दूँगा, जैसे मैंने बिना किसी पछतावे के अल्बर्टीन को गिल्बर्ट से प्राप्त अगेट संगमरमर या अन्य उपहार दिए थे।* [*अनुवादक का नोट: अल्बर्टाइन डिस्पारू के फ्रेंच पाठ में, खंड I इसी अध्याय के साथ समाप्त होता है।]

अध्याय II
मैडमोजेल डी फोर्शेविल
ऐसा नहीं था कि मैं अल्बर्टीन से अब भी प्यार नहीं करता था, लेकिन अब पहले की तरह नहीं। नहीं, यह शुरुआती दिनों जैसा था, जब उससे जुड़ी हर चीज़, चाहे जगह हो या लोग, मुझे एक ऐसी जिज्ञासा से भर देती थी जिसमें पीड़ा से कहीं ज़्यादा आकर्षण होता था। और सच में, अब मैं अच्छी तरह जानता था कि उसे पूरी तरह भूलने से पहले, उदासीनता की शुरुआती अवस्था में पहुँचने से पहले, मुझे एक यात्री की तरह, जो अपने शुरुआती बिंदु पर उसी रास्ते से लौटता है, वापसी की दिशा में उन सभी भावनाओं से गुज़रना होगा जिनसे मैं अपने महान प्रेम तक पहुँचने से पहले गुज़रा था। लेकिन ये टुकड़े, अतीत के ये क्षण स्थिर नहीं हैं, उन्होंने उस भयानक शक्ति, उस आशा की सुखद अनभिज्ञता को बरकरार रखा है जो उस समय एक ऐसे समय की ओर तड़प रही थी जो अब अतीत बन चुका है, लेकिन जिसे एक भ्रम हमें क्षण भर के लिए अतीत से भविष्य समझने पर मजबूर कर देता है। मैंने अल्बर्टीन का एक पत्र पढ़ा, जिसमें उसने लिखा था कि वह उस शाम मुझसे मिलने आ रही है, और एक पल के लिए मुझे उम्मीद की खुशी महसूस हुई। जिस जगह से हम कभी वापस नहीं लौटेंगे, उसी मार्ग पर लौटते समय, जब हम उन सभी स्थानों के नाम और रूप-रंग को याद करते हैं जिनसे हम जाते समय गुज़रे थे, तो कभी-कभी किसी स्टेशन पर ट्रेन के रुकने के दौरान हमें एक पल के लिए ऐसा भ्रम होता है कि हम फिर से उसी दिशा में चल रहे हैं जहाँ से हम आए थे, ठीक वैसे ही जैसे पिछली यात्रा में चले थे। जल्द ही यह भ्रम दूर हो जाता है, लेकिन एक पल के लिए हम फिर से उसी जगह पर पहुँच जाते हैं: स्मृति की यही क्रूरता है।

कभी-कभी किसी दुखद उपन्यास को पढ़ने से मैं एकदम से अतीत में लौट जाता था, क्योंकि कुछ उपन्यास महान लेकिन क्षणिक शोक की तरह होते हैं, वे हमारी आदतों को मिटा देते हैं, हमें जीवन की वास्तविकता से एक बार फिर रूबरू कराते हैं, लेकिन केवल कुछ घंटों के लिए, एक बुरे सपने की तरह, क्योंकि आदत की शक्ति, उससे उत्पन्न विस्मृति, और वह उल्लास जो वह हमें लौटाती है क्योंकि हमारा मस्तिष्क उससे लड़ने और सत्य को पुनः सृजित करने में असमर्थ होता है, एक अच्छी किताब के लगभग सम्मोहक सुझाव पर असीम रूप से हावी हो जाती है, जिसका, सभी सुझावों की तरह, केवल क्षणिक प्रभाव होता है।
फिर भी, यदि हम उस उदासीनता की अवस्था में लौटने से पहले, जहाँ से हमने शुरुआत की थी, प्रेम तक पहुँचने के लिए तय की गई दूरी को विपरीत दिशा में तय करने से खुद को मुक्त नहीं कर पाते, तो हमारा मार्ग, हमारी राह, आवश्यक रूप से एक जैसी नहीं होती। उनमें यह समानता है कि वे सीधी नहीं होतीं, क्योंकि विस्मृति भी प्रेम की तरह सीधी रेखा में आगे बढ़ने में असमर्थ है। लेकिन वे आवश्यक रूप से एक ही रास्ते पर नहीं चलतीं। और अपनी वापसी यात्रा के दौरान, एक भ्रमित मार्ग में तीन पड़ाव आए, जो मुझे याद हैं, क्योंकि मेरे चारों ओर प्रकाश चमक रहा था, जब मैं अपने लक्ष्य के निकट पहुँच रहा था। ये चरण मुझे विशेष रूप से याद हैं, निस्संदेह इसलिए क्योंकि मैंने उनमें ऐसी चीजें देखीं जिनका अल्बर्टीन के प्रति मेरे प्रेम में कोई स्थान नहीं था, या अधिक से अधिक वे उससे केवल उस हद तक जुड़ी थीं जिस हद तक हमारे हृदय में किसी तीव्र जुनून से पहले मौजूद भावनाएँ उससे जुड़ती हैं, चाहे उसे पोषित करके, या उससे लड़कर, या हमारे विश्लेषणात्मक मन को उसके साथ एक विरोधाभास प्रस्तुत करके।

इन ठहरावों में से पहला पड़ाव सर्दियों के आगमन के साथ शुरू हुआ, एक सुहावने रविवार के दिन, जो कि ऑल सेंट्स डे भी था, जब मैं घर से बाहर निकला था। जैसे ही मैं बोइस की ओर बढ़ा, मुझे दुख के साथ याद आया कि अल्बर्टीन ट्रोकाडेरो से मेरे पास वापस आई थी, क्योंकि यह वही दिन था, बस अल्बर्टीन नहीं थी। दुख के साथ-साथ कुछ हद तक आनंद भी था, क्योंकि उसी धुन का एक उदास स्वर में, निराशा भरे लहजे में दोहराव, जिसने मेरे दिन को पहले भर दिया था, यहाँ तक कि फ्रांस्वा के टेलीफोन संदेश की अनुपस्थिति, अल्बर्टीन का वह आगमन जो कोई नकारात्मक बात नहीं थी, बल्कि वास्तव में उस याद का दमन था, जिसने दिन को एक दुखद रूप दिया था, ने इसे एक साधारण, निर्मल दिन से कहीं अधिक सुंदर बना दिया, क्योंकि जो अब वहाँ नहीं था, जो उससे छीन लिया गया था, वह उस पर एक साँचे की तरह अंकित रह गया था।
जंगल में, मैं विंटेइल के सोनाटा की धुनें गुनगुना रहा था। अब मुझे इस बात से कोई दुख नहीं हो रहा था कि अल्बर्टीन ने मुझे धोखा दिया था, क्योंकि उसकी लगभग सभी यादें उस द्वितीयक रासायनिक अवस्था में पहुँच चुकी थीं, जिसमें वे अब हृदय में कोई चिंताजनक पीड़ा नहीं, बल्कि सुकून देती थीं। कभी-कभी, उन धुनों पर जिन्हें वह अक्सर बजाती थी, जब वह कुछ ऐसी बातें कहती थी जो मुझे उस समय मनमोहक लगती थीं, या कोई पुरानी याद दिलाती थी, तो मैं मन ही मन कहता था: "बेचारी छोटी बच्ची," लेकिन बिना किसी उदासी के, बस उस संगीतमय धुन में एक अतिरिक्त मूल्य जोड़ते हुए, एक ऐसा मूल्य जो ऐतिहासिक और अनोखा था, ठीक वैसे ही जैसे वैन डाइक द्वारा बनाया गया चार्ल्स प्रथम का चित्र, जो अपने आप में ही इतना सुंदर है, इस तथ्य से प्राप्त करता है कि श्रीमती डू बैरी की राजा को प्रभावित करने की इच्छा के कारण वह राष्ट्रीय

संग्रह में शामिल हो गया। जब वह छोटा सा वाक्यांश, पूरी तरह लुप्त होने से पहले, अपने विभिन्न तत्वों में विलीन हो गया, जिनमें वह बिखरे हुए टुकड़ों के रूप में क्षण भर के लिए स्थिर रहा, तो मेरे लिए वह वैसा नहीं था जैसा स्वान के लिए था - अल्बर्टीन का कोई संदेशवाहक जो लुप्त हो रहा था। उस छोटे से वाक्यांश ने मेरे भीतर और स्वान के भीतर जो विचारों का जुड़ाव जगाया था, वह पूरी तरह से एक जैसा नहीं था। मैं सबसे अधिक उस वाक्यांश के विस्तार, प्रयासों, पुनरावृत्तियों और 'परिणाम' से प्रभावित हुआ था, जो पूरी सोनाटा में उसी तरह बना रहा जैसे वह प्रेम मेरे जीवन भर बना रहा। और अब, जब मुझे एहसास हुआ कि कैसे, दिन-प्रतिदिन, मेरे प्रेम का एक-एक तत्व मुझसे विदा होता जा रहा है, उसका ईर्ष्यालु पक्ष, फिर कोई दूसरा, धीरे-धीरे धुंधली याद के रूप में पहले आरंभ के कमजोर आकर्षण की ओर लौट रहा है, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा प्रेम ही उस छोटे से वाक्यांश के बिखरे हुए स्वरों में मेरी आँखों के सामने विलीन हो रहा है।
जैसे-जैसे मैं झाड़ियों से अलग किए गए रास्तों पर चलता रहा, जो घास से ढके हुए थे और धीरे-धीरे कम होते जा रहे थे, मुझे उस यात्रा की याद सताने लगी, जिसमें अल्बर्टीन मेरे साथ गाड़ी में बैठी थी, जिससे वह मुझे घर लेकर लौटी थी, और जिसके दौरान मैंने महसूस किया था कि वह मेरे जीवन को अपने घेरे में ले रही है। ये यादें अब मेरे चारों ओर तैर रही थीं, अंधेरे होते पेड़ों की शाखाओं की धुंध में, जिनके बीच डूबता सूरज चमक रहा था, मानो खाली हवा में लटकी हुई हों, सुनहरे पत्तों से बुनी हुई एक क्षैतिज जाली। इसके अलावा, मेरा दिल हर पल धड़कता रहा, जैसा कि किसी भी ऐसे व्यक्ति के साथ होता है जिसकी आँखों में एक गहरी छवि हर उस महिला की झलक देती है जो रास्ते के अंत में रुकी हो, उस महिला की

शक्ल, उसकी संभावित पहचान जिसके बारे में वह सोच रहा है। "शायद यह वही है!" हम मुड़ते हैं, गाड़ी अपने रास्ते पर चलती रहती है और हम उस जगह पर वापस नहीं लौटते। ये पत्ते, मैंने उन्हें केवल अपनी यादों की आँखों से नहीं देखा, उन्होंने मुझे आकर्षित किया, मुझे छुआ, उन विशुद्ध वर्णनात्मक पन्नों की तरह जिनमें एक कलाकार, उन्हें और अधिक पूर्ण बनाने के लिए, एक काल्पनिक कहानी, एक पूरा रोमांस जोड़ देता है; और प्रकृति की इस रचना ने उदासी का वह अनूठा आकर्षण धारण कर लिया जो मेरे हृदय तक पहुँचने में सक्षम था। इस आकर्षण का कारण मुझे यह प्रतीत हुआ कि मैं अब भी अल्बर्टीन से उतना ही प्रेम करता था जितना पहले करता था, जबकि वास्तव में कारण इसके विपरीत था कि विस्मृति मुझमें इस कदर घर कर रही थी कि अल्बर्टीन की स्मृति अब मेरे लिए पीड़ादायक नहीं रही, अर्थात् वह बदल गई थी; परन्तु हम अपने भावों को चाहे कितनी भी स्पष्ट रूप से समझ लें, जैसा कि मैंने तब सोचा था कि मैं अपनी उदासी का कारण समझ सकता हूँ, हम उन्हें उनके गहरे अर्थ तक नहीं पहुँचा सकते। जैसे वे रोग जिनका इतिहास चिकित्सक अपने रोगी से सुनता है और उसकी सहायता से वह उस गहरे कारण तक पहुँचता है जिसके बारे में रोगी अनभिज्ञ होता है, उसी प्रकार हमारे भाव, हमारे विचार, केवल लक्षणात्मक मूल्य रखते हैं। मेरे भीतर व्याप्त आकर्षण और सुखद उदासी के भाव से मेरी ईर्ष्या कुछ समय के लिए विवश हो गई और मेरी इंद्रियाँ फिर से जागृत हो गईं। एक बार फिर, ठीक वैसे ही जैसे गिलबर्ट से मिलना बंद होने पर हुआ था, मेरे भीतर स्त्री प्रेम जागृत हुआ, किसी विशेष स्त्री से पहले से प्रेम किए जाने के बंधन से मुक्त होकर, उन आत्माओं की तरह जो पिछली तबाही से मुक्त होकर बसंत ऋतु की हवा में भटकती हैं, बस एक नए प्राणी में समाहित होने की अनुमति मांगती हैं। कब्रिस्तान

में जितने फूल खिलते हैं, उतने कहीं और नहीं खिलते, चाहे उन्हें 'भूलना नहीं' कहा जाए। मैंने उन लड़कियों को देखा जिनके साथ यह सुहावना दिन अनगिनत फूलों से खिल उठा था, मानो मैं उन्हें बहुत पहले श्रीमती डी विलेपारिसिस की गाड़ी से या उस गाड़ी से देखता जिसमें मैं एक ऐसे ही रविवार को अल्बर्टीन के साथ वहाँ आया था। पल भर में, मेरी जो निगाह अभी-अभी उनमें से किसी एक पर पड़ी थी, ठीक उसी तरह अल्बर्टीन की जिज्ञासु, दबी हुई, उद्यमशील निगाह ने उन पर चुपके से डाली, जिसमें अकल्पनीय विचार झलक रहे थे। वह निगाह मेरी निगाहों की नकल करते हुए एक रहस्यमय, तेज, स्टील-नीले पंख की तरह उन रास्तों पर फैल गई जो अब तक इतने स्वाभाविक थे - एक अज्ञात तत्व का कंपन, जिसे केवल मेरी इच्छा से ही उनमें जान नहीं डाली जा सकती थी, क्योंकि मेरे लिए उसमें कुछ भी अज्ञात नहीं था।
इसके अलावा, बालबेक में, जब मैंने पहली बार अल्बर्टीन को जानने की इच्छा की थी, तो क्या यह इसलिए नहीं था कि वह मुझे उन लड़कियों की तरह लगी थी, जिन्हें देखकर मैं अक्सर गलियों में, ग्रामीण सड़कों पर ठहर जाता था, और क्या इसलिए कि वह मुझे उनके जीवन का एक नमूना दे सकती थी? और क्या यह स्वाभाविक नहीं था कि अब मेरे प्रेम का वह ठंडा तारा, जिसमें वे समाहित थीं, इस बिखरी हुई धूल में फिर से चमक उठे? वे सभी मुझे अल्बर्टीन जैसी लगती थीं—वह छवि जो मेरे भीतर थी, मुझे हर जगह उसकी नकल खोजने पर मजबूर करती थी—और वास्तव में, एक मोड़ पर, एक मोटर-कार में बैठ रही लड़की ने मुझे उसकी इतनी याद दिला दी, वह इतनी सटीक रूप से उसी आकृति की थी, कि मैंने एक पल के लिए खुद से पूछा कि क्या यह वही लड़की नहीं थी जिसे मैंने अभी देखा था, क्या लोगों ने मुझे धोखा तो नहीं दिया था जब उन्होंने मुझे उसकी मृत्यु की खबर भेजी

थी। मैंने उसे फिर से एक मोड़ पर देखा, शायद जैसे वह बालबेक में थी, उसी तरह कार में बैठते हुए, जब वह जीवन में इतनी आत्मविश्वास से भरी हुई थी। और उस दूसरी लड़की का कार में चढ़ना, मैंने केवल अपनी आँखों से ही नहीं देखा, मानो सैर के दौरान होने वाली उन सतही घटनाओं में से एक हो: यह एक तरह की स्थायी क्रिया बन गई, मानो अतीत में भी उस स्मृति की ओर बढ़ रही हो जो उस पर अंकित हो गई थी और जो मेरे हृदय को बड़े ही मधुर और दुखद ढंग से झकझोर रही थी। लेकिन तब तक वह लड़की गायब हो चुकी थी।
थोड़ी दूर आगे जाकर मैंने तीन लड़कियों का एक समूह देखा, जो मुझसे थोड़ी बड़ी थीं, शायद युवा महिलाएं। उनका फैशनेबल और जोशीला अंदाज़ मुझे उस दिन बहुत आकर्षित कर गया था जब मैंने पहली बार अल्बर्टीन और उसकी सहेलियों को देखा था। मैं उन तीनों नई लड़कियों के पीछे दौड़ पड़ा और जब उन्होंने एक गाड़ी रोकी, तो मैं दूसरी गाड़ी की तलाश में हर दिशा में बेतहाशा देखने लगा। मुझे एक मिली, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। मैं उन्हें पकड़ नहीं पाया। हालांकि, कुछ दिनों बाद, जब मैं घर लौट रहा था, तो मैंने अपने घर के बरामदे से उन तीनों लड़कियों को निकलते देखा, जिनका मैंने जंगल में पीछा किया था। वे बिल्कुल वैसी ही थीं, खासकर सांवली दो लड़कियां, बस फर्क इतना था कि वे मुझसे थोड़ी बड़ी थीं। वे उन युवतियों जैसी थीं, जिन्हें अक्सर मेरी खिड़की से देखकर या सड़क पर देखकर मैं हजारों सपने देखता था, जीवन से प्यार करने लगता था, और जिन्हें मैं कभी जान नहीं पाया था। गोरी लड़की में थोड़ी नाजुकता थी, मानो वह बीमार हो, जो मुझे कम पसंद आई। फिर भी, वही थी जिसकी वजह से मैं उन्हें पल भर के लिए देखकर संतुष्ट नहीं हुआ, बल्कि जड़वत होकर उन्हें इस तरह घूरने लगा जैसे उनकी स्थिर निगाहें, जो किसी समस्या को सुलझाने जैसी थीं,

मानो उन्हें पता हो कि असली मकसद उनकी नज़रों से कहीं ज़्यादा दूर छिपा है। मैं निस्संदेह उन्हें भी वैसे ही जाने देता जैसे मैंने कई और लोगों को जाने दिया था, अगर (जब वे मेरे पास से गुज़रे) उस सुंदरी ने—क्या इसलिए कि मैं उन्हें इतनी बारीकी से देख रहा था?—चुपके से मेरी तरफ न देखा होता, और फिर मेरे पास से गुज़रकर अपना सिर घुमाकर दूसरी नज़र न डाली होती, जिससे मेरा खून खौल उठा। हालाँकि, जैसे ही उसने मेरी तरफ ध्यान देना बंद किया और अपने दोस्तों से बातचीत में लग गई, मेरा जोश शायद शांत हो जाता, अगर अगली घटना ने उसे सौ गुना न बढ़ा दिया होता। जब मैंने चौकीदार से पूछा कि वे कौन हैं: "उन्होंने श्रीमती ला डचेस के बारे में पूछा था," उसने मुझे बताया। "मुझे लगता है कि उनमें से केवल एक ही उसे जानती है और बाकी लोग बस उसे दरवाजे तक छोड़ने आए थे। ये रहा नाम, मुझे नहीं पता कि मैंने इसे ठीक से लिखा है या नहीं।" और मैंने पढ़ा: 'श्रीमती डेपोर्शविल,' जिसे आसानी से 'डी'एपोर्शविल' में सुधारा जा सकता था, यानी लगभग वही नाम, जहाँ तक मुझे याद था, उस अच्छे परिवार की लड़की का, जिसका गुएरमांटे परिवार से कुछ-कुछ संबंध था, जिसके बारे में रॉबर्ट ने मुझे बताया था कि वह उससे एक अव्यवस्थित घर में मिला था और जिसके साथ उसके संबंध थे। अब मैं उसकी नज़र का मतलब समझ गई, कि वह अपने साथियों को देखे बिना क्यों मुड़ गई थी। मैंने कितनी बार उसके बारे में सोचा था, रॉबर्ट द्वारा दिए गए नाम के आधार पर उसकी कल्पना की थी। और, आश्चर्य की बात है, मैंने उसे देख लिया था, वह अपनी सहेलियों से बिल्कुल अलग नहीं थी, सिवाय उस छिपी हुई नज़र के जिसने मेरे और उसके बीच उसके जीवन के उन हिस्सों में एक गुप्त प्रवेश द्वार खोल दिया था, जो स्पष्ट रूप से उसकी सहेलियों से छिपे हुए थे, और जिसने उसे अधिक सुलभ बना दिया था—

लगभग मेरे जैसी—कुलीन जन्म की लड़कियों की तुलना में अधिक सौम्य। इस लड़की के मन में, मेरे और उसके बीच, उन पलों की चर्चा पहले से ही थी जो हम साथ बिता सकते थे, अगर वह मुझसे मिलने का समय निकाल पाती। क्या यही वह बात नहीं थी जो उसकी नज़र मुझसे उस वाक्पटुता से कहना चाहती थी जो केवल मुझे ही समझ आ रही थी? मेरा दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था कि मानो फट ही जाएगा, मैं मैडम डी'एपोर्शविल के रूप का सटीक वर्णन नहीं कर सकता था, मैं किनारे से देखने पर धुंधली सी एक गोरे रंग की छवि बना सकता था, लेकिन मैं उससे पागलों की तरह प्यार करता था। अचानक मुझे एहसास हुआ कि मैं इस तरह सोच रहा था मानो तीनों लड़कियों में से, मैडम डी'एपोर्शविल... डी'एपोर्शविल वही खूबसूरत लड़की हो सकती थी जिसने मुड़कर मुझे दो बार देखा था। लेकिन चौकीदार ने मुझे यह नहीं बताया था। मैं उसके लॉज में लौटा, उससे फिर पूछा, उसने कहा कि वह मुझे कुछ नहीं बता सकता, लेकिन वह अपनी पत्नी से पूछेगा जिसने उन्हें एक बार पहले देखा था। वह इस समय सर्विस सीढ़ी साफ करने में व्यस्त थी। हममें से किसने अपने जीवन में कमोबेश मेरी जैसी इन अनिश्चितताओं का अनुभव नहीं किया है, और ये सभी एक जैसी ही सुखद हैं? एक दयालु मित्र जिसे हम किसी बॉल में देखी गई लड़की के बारे में बताते हैं, हमारे वर्णन से यह निष्कर्ष निकालता है कि वह उसकी सहेलियों में से एक होगी और हमें उससे मिलने के लिए आमंत्रित करता है। लेकिन इतनी सारी लड़कियों के बीच, और केवल मौखिक वर्णन के आधार पर, क्या कोई गलती नहीं हो सकती? जिस लड़की से हम मिलने वाले हैं, क्या वह हमारी चाहत से अलग नहीं होगी? या इसके विपरीत, क्या हम मुस्कुराते हुए हाथ बढ़ाते हुए ठीक उसी लड़की को देखने वाले नहीं हैं जिसकी हमने उम्मीद की थी? यह दूसरा मामला, जो अक्सर होता है, हालांकि हमेशा

मैडम डी'एपोर्शविल के मामले की तरह निर्णायक तर्कों से उचित नहीं ठहराया जा सकता, एक प्रकार की अंतर्ज्ञान और कभी-कभी हमारे पक्ष में आने वाली भाग्य की हवा से उत्पन्न होता है। तब, जब हम उसे देखते हैं, तो हम खुद से कहते हैं: "यही वह लड़की है।" मुझे याद है कि समुद्र तट पर घूमने वाली लड़कियों के छोटे समूह में से, मैंने सही अनुमान लगाया था कि किसका नाम अल्बर्टीन सिमोनट था। इस स्मृति ने मुझे एक तीव्र लेकिन क्षणिक पीड़ा दी, और जब कुली अपनी पत्नी की तलाश में गया, तो मेरी मुख्य चिंता - जैसा कि मैंने मैडम डी'एपोर्शविल के बारे में सोचा और चूंकि प्रतीक्षा में बिताए उन मिनटों में, जिसमें एक नाम, एक जानकारी का विवरण जो हमारे पास है, हम नहीं जानते क्यों, एक चेहरे से जुड़ा हुआ, एक पल के लिए खुद को स्वतंत्र पाता है, यदि वह किसी नए चेहरे से जुड़ जाए, तो पूर्वव्यापी रूप से, उस मूल चेहरे को, जिसके बारे में उसने हमें बताया था, अजीब, निर्दोष, अगोचर बना देगा - यह थी कि कुली की पत्नी शायद मुझे यह बताने वाली थी कि मैडम डी'एपोर्शविल... इसके विपरीत, डी'एपोर्शविल उन दो सांवली लड़कियों में से एक थी। उस स्थिति में, वह शख्सियत गायब हो जाएगी जिसके अस्तित्व में मैं विश्वास करता था, जिसे मैं पहले से ही प्यार करता था, जिसे अब मैं केवल पाने का सपना देखता था - वह सुंदर और चालाक मैडम डी'एपोर्शविल, जिसे घातक उत्तर तब दो अलग-अलग तत्वों में विभाजित कर देगा, जिन्हें मैंने एक उपन्यासकार की तरह मनमाने ढंग से मिला दिया था, जो वास्तविकता से उधार लिए गए विभिन्न तत्वों को मिलाकर एक काल्पनिक चरित्र बनाता है, वे तत्व, अलग-अलग लेने पर - नाम दृष्टि के कथित इरादे की पुष्टि करने में विफल रहने पर - अपना सारा अर्थ खो देते हैं। उस स्थिति में मेरे तर्क निरर्थक हो जाते, लेकिन इसके विपरीत,

वे कितने मजबूत हो गए जब कुली ने लौटकर मुझे बताया कि मैडम डी'एपोर्शविल वास्तव में वही सुंदर लड़की थी।
उस क्षण से मेरा विश्वास नामों की समानता पर टिक नहीं पाया। यह संयोग इतना असाधारण था कि इन तीन लड़कियों में से एक का नाम मैडम डी'एपोर्शविल था, और वह ठीक वही थी (और यही मेरे अनुमान का पहला पुख्ता सबूत था) जिसने मुझे उस तरह से देखा था, लगभग मुस्कुराते हुए, और वह उन अय्याशी के अड्डों में आने-जाने वाली लड़की नहीं थी।
फिर शुरू हुआ उन्माद से भरा दिन। दो दिन बाद जब मैं श्रीमती डी गुएरमांटेस से मिलने जाऊँगा (जैसा कि पोर्टर ने मुझे बताया था), तो उन पर अच्छा प्रभाव डालने के लिए मुझे जो भी साज-सज्जा आवश्यक लगी, उसे खरीदने से पहले ही, मैंने एहतियात के तौर पर रॉबर्ट को टेलीग्राम भेजकर लड़की का सही नाम और उसका विवरण माँग लिया। मुझे उम्मीद थी कि उनका जवाब अड़तालीस घंटों के भीतर मिल जाएगा (मैंने एक पल के लिए भी किसी और चीज़ के बारे में नहीं सोचा, यहाँ तक कि अल्बर्टीन के बारे में भी नहीं)। मैंने ठान लिया था कि चाहे कुछ भी हो जाए, चाहे मैं चलने में असमर्थ होने पर कुर्सी पर बिठाकर ही क्यों न ले जाना पड़े, मैं डचेस से मिलने ज़रूर जाऊँगा। अगर मैंने सेंट-लूप को टेलीग्राम भेजा, तो इसका कारण यह नहीं था कि मुझे उस व्यक्ति की पहचान को लेकर कोई संदेह था, या यह कि जिस लड़की को मैंने देखा था और जिसके बारे में उसने बात की थी, वे दोनों मेरे मन में अलग-अलग व्यक्तित्व थे। मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि वे एक ही व्यक्ति थे। लेकिन अड़तालीस घंटों के अनिवार्य अंतराल से मेरी बेचैनी में, उसके बारे में विस्तृत जानकारी से भरा टेलीग्राम पाकर मुझे खुशी हुई, बल्कि मुझे उस पर एक तरह की गुप्त शक्ति का एहसास हुआ।

मुस्कुराता था, मानो कोई निश्चित आशीर्वाद हो जिससे मुझे कोई वंचित नहीं कर सकता, शायद कभी न आएँ। कुछ दार्शनिकों का दावा है कि बाहरी दुनिया का अस्तित्व नहीं है, और यह हमारे भीतर ही है कि हम अपना जीवन विकसित करते हैं। चाहे जो भी हो, प्रेम, अपने सबसे सरल रूप में भी, इस बात का एक अद्भुत उदाहरण है कि वास्तविकता हमारे लिए कितनी कम मायने रखती है। यदि मुझे मैडम डी'एपोर्शविल का चित्र स्मृति से बनाना पड़ता... डी'एपोर्शविले का वर्णन करना, उसके बारे में कोई संकेत देना, या उसे सड़क पर पहचानना भी मेरे लिए नामुमकिन था। मैंने उसे चलते-फिरते देखा था, वह मुझे सीधी- सादी, सुंदर, लंबी और गोरी लगी थी, मैं इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह सकता था। लेकिन इच्छा की सारी प्रतिक्रियाएँ, चिंता, और इस डर से कि अगर मेरे पिता मुझे ले गए तो मैं उसे दोबारा नहीं देख पाऊँगा, ये सब बातें, एक ऐसी छवि के साथ जुड़ गईं जिसे मैं याद नहीं कर पा रहा था और जिसके बारे में इतना जानना ही काफी था कि वह सुखद थी, और इन सबने मिलकर प्रेम की भावना पैदा कर दी। आखिरकार, अगली सुबह, एक सुखद नींदहीन रात के बाद मुझे सेंट-लूप का टेलीग्राम मिला: "डी ल'ऑर्गेविले, डी प्रीपोज़िशन, ऑर्गे अनाज, जौ, विले शहर, छोटी, सांवली, गोल-मटोल, इस समय स्विट्जरलैंड में है।" वह तो वह नहीं थी!
फ्रांस्वा के मुझे टेलीग्राम देने से ठीक पहले, मेरी माँ मेरे कमरे में मेरे पत्र लेकर आई थीं और उन्हें लापरवाही से मेरे बिस्तर पर रख दिया था, मानो वह किसी और बात में मग्न हों। और मुझे अकेला छोड़कर तुरंत कमरे से बाहर निकल गईं, जाते समय उन्होंने मुस्कुरा दिया। मैं, जो अपनी प्यारी माँ की छोटी-छोटी चालों से परिचित थी और जानती थी कि उनके चेहरे पर सच्चाई हमेशा पढ़ी जा सकती है, बिना किसी गलती के, अगर कोई उनकी दूसरों को

खुशी देने की इच्छा को एक संकेत मान ले, तो मैं मुस्कुराई और सोचा: "डाक में मेरे लिए कुछ दिलचस्प जरूर होगा, और माँ ने यह उदासीनता का भाव इसलिए अपनाया है ताकि मेरा आश्चर्य पूरा हो और उन लोगों की तरह न हो जो पहले से बताकर आपकी आधी खुशी छीन लेते हैं। और वह मेरे साथ इसलिए नहीं रुकीं क्योंकि उन्हें डर है कि मैं अपने अहंकार में अपनी खुशी को छिपा लूँगी और उसे उतनी तीव्रता से महसूस नहीं कर पाऊँगी।" इसी बीच, जैसे ही वह दरवाजे पर पहुँचीं, उनकी मुलाकात फ्रांस्वा से हुई जो टेलीग्राम हाथ में लिए कमरे में आ रही थीं। जैसे ही उसने मुझे वह दिया, मेरी माँ ने फ़्रांस्वा को पीछे मुड़ने के लिए मजबूर किया और उसे चौंकाते, नाराज़ और हैरान करते हुए कमरे से बाहर ले गई। फ़्रांस्वा समझती थी कि उसके पद के कारण उसे दिन के किसी भी समय मेरे कमरे में आने और अपनी मर्ज़ी से वहाँ रहने का अधिकार प्राप्त है। लेकिन अब उसके चेहरे पर हैरानी और गुस्सा गायब हो चुका था, और उसकी मुस्कान में एक अलौकिक दया और दार्शनिक व्यंग्य झलक रहा था, एक गाढ़ा तरल पदार्थ जो उसके घाव को भरने के लिए उसके आहत आत्मसम्मान द्वारा स्रावित किया गया था। ताकि वह खुद को तिरस्कृत महसूस न करे, उसने हम सब को तिरस्कृत किया। साथ ही, वह सोचती थी कि हम मालिक हैं, यानी मनमौजी प्राणी हैं, जो अपनी बुद्धिमत्ता से चमकते नहीं और चतुर लोगों, नौकरों को डराकर यह जताने में आनंद लेते हैं कि वे मालिक हैं। वे हमसे बेतुके काम करवाते थे, जैसे घर में बीमारी होने पर पानी उबालना, मेरे कमरे का फर्श गीले कपड़े से पोंछना और ठीक उसी समय कमरा छोड़ देना जब वे उसमें रहने वाले थे। माँ ने अखबार मेरे पास ही छोड़ दिया था ताकि मैं उसे नज़रअंदाज़ न करूँ। लेकिन मैंने देखा कि उसमें अखबारों के सिवा कुछ नहीं था। निस्संदेह उसमें

किसी ऐसे लेखक का लेख होगा जिसकी मैं प्रशंसा करता था, और चूंकि वह कम ही लिखता था, इसलिए यह मेरे लिए आश्चर्य की बात होगी। मैं खिड़की के पास गया और पर्दे हटाए। धुंधली और मंद रोशनी के ऊपर, आकाश पूरी तरह से लाल था, जैसे कि उसी समय रसोई में नई जलाई गई आग लाल हो जाती है, और इसे देखकर मैं आशा से भर गया और ट्रेन में रात बिताने और उस छोटे से ग्रामीण स्टेशन पर जागने की लालसा से भर गया जहाँ मैंने गुलाबी गालों वाली दूधवाली को देखा था।
इसी बीच मुझे फ्रांस्वा की आवाज सुनाई दी, जो मेरे कमरे से निकाले जाने पर बहुत नाराज थी, जबकि वह समझती थी कि मेरे कमरे में प्रवेश करने का उसे पूरा अधिकार है। वह बड़बड़ा रही थी: "अगर यह त्रासदी नहीं है, तो एक लड़का जिसे मैंने दुनिया में आते देखा। यह सच है कि मैंने उसे उसकी माँ के जन्म के समय नहीं देखा था। लेकिन जब मैंने उसे पहली बार देखा, तो कम से कम इतना तो कह ही सकती हूँ कि उसके जन्म को पाँच साल भी नहीं हुए थे!"
मैंने फिगारो अखबार खोला। कितना उबाऊ! पहले ही लेख का शीर्षक वही था जो मैंने अखबार को भेजा था और जो छपा ही नहीं था, और सिर्फ शीर्षक ही नहीं… बल्कि कई शब्द बिल्कुल एक जैसे थे। यह तो वाकई बहुत बुरा हुआ। मुझे लिखकर शिकायत करनी चाहिए। लेकिन बात सिर्फ कुछ शब्दों की नहीं थी, पूरा लेख ही छपा था, नीचे मेरा हस्ताक्षर था। आखिरकार मेरा लेख छप ही गया! लेकिन मेरा दिमाग, जो उस समय भी उम्र के लक्षण दिखाने लगा था और जल्दी थक जाता था, एक पल के लिए ऐसे ही सोचता रहा जैसे उसे समझ ही नहीं आया हो कि यह मेरा लेख है, ठीक वैसे ही जैसे कोई बूढ़ा व्यक्ति किसी काम को पूरा करने के लिए मजबूर हो जाता है, भले ही अब उसकी कोई ज़रूरत न हो, भले ही कोई अनचाही बाधा आ जाए, जिसके सामने उसे तुरंत पीछे हट जाना चाहिए, और वह काम खतरनाक हो। फिर मैंने अखबार को जीवन की

आध्यात्मिक रोटी के रूप में देखा, जो सुबह की धुंधली हवा में छपाई से निकलने के बाद अभी भी गर्म और नम होती है, जब इसे दिन निकलने के समय उन नौकरानियों को वितरित किया जाता है जो इसे अपनी सुबह की कॉफी के साथ अपने मालिकों के लिए लाती हैं, एक चमत्कारी, स्वयं-गुणनशील रोटी जो एक ही समय में एक और दस हजार है, जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान रहती है जबकि एक ही समय में अनगिनत रूप से हर घर में प्रवेश करती है।
मेरे हाथ में जो है, वह अखबार की कोई खास प्रति नहीं है, बल्कि दस हज़ार प्रतियों में से कोई एक है। यह सिर्फ मेरे लिए लिखा गया लेख नहीं है, बल्कि मेरे और सबके लिए लिखा गया लेख है। इस समय अन्य घरों में जो घटना घट रही है, उसे ठीक से समझने के लिए यह ज़रूरी है कि मैं इस लेख को इसके लेखक के रूप में नहीं, बल्कि अखबार के एक आम पाठक के रूप में पढ़ूँ। क्योंकि मेरे हाथ में जो था, वह सिर्फ मेरा लिखा हुआ नहीं था, बल्कि अनगिनत मनों में उसकी अभिव्यक्ति थी। इसलिए, इसे पढ़ने के लिए यह ज़रूरी था कि मैं एक पल के लिए इसका लेखक होना छोड़ दूँ, कि मैं बस फिगारो के पाठकों में से एक बन जाऊँ। लेकिन तभी मन में एक चिंता हुई। क्या बिना सूचना के कोई पाठक इस लेख को देख लेगा? मैंने अखबार को लापरवाही से खोला, ठीक वैसे ही जैसे कोई अनजान पाठक खोलता, यहाँ तक कि ऐसा दिखावा भी किया जैसे मुझे पता ही नहीं कि आज सुबह मेरे अखबार में क्या है, मैं सामाजिक और राजनीतिक समाचारों को जल्दी-जल्दी देखना चाहता हूँ। लेकिन मेरा लेख इतना लंबा है कि मेरी नज़र, जो इसे नज़रअंदाज़ करती है (सत्य की सीमाओं में रहने के लिए और संयोग पर भरोसा न करने के लिए, जैसे कोई प्रतीक्षारत व्यक्ति जानबूझकर धीरे-धीरे गिनती करता है), फिर भी इसका एक अंश ही देख पाती है। लेकिन कई पाठक जो पहला लेख देखते हैं और उसे पढ़ते भी

हैं, वे हस्ताक्षर पर ध्यान नहीं देते; मैं स्वयं यह बताने में असमर्थ हूँ कि कल का पहला लेख किसने लिखा था। और अब मैं स्वयं से वादा करता हूँ कि मैं हमेशा उन्हें पढ़ूँगा, लेखक के नाम सहित, लेकिन एक ईर्ष्यालु प्रेमी की तरह जो अपनी प्रेमिका की वफ़ादारी पर विश्वास करने के लिए उसे धोखा देने से बचता है, मैं दुखी होकर सोचता हूँ कि मेरा भविष्य का ध्यान दूसरों को भी वैसा ही ध्यान देने के लिए बाध्य नहीं करेगा। और इसके अलावा, कुछ लोग शिकार पर जा रहे हैं, कुछ लोग जल्दी में घर से निकले हैं। फिर भी, उनमें से कुछ इसे पढ़ेंगे ही। मैं भी उनकी तरह ही करता हूँ, मैं शुरू करता हूँ। मुझे भली-भांति पता है कि इस लेख को पढ़ने वाले कई लोगों को यह घृणित लगेगा, लेकिन पढ़ते समय मुझे हर शब्द का अर्थ कागज पर छपा हुआ सा लगता है। मैं यह विश्वास नहीं कर सकता कि आंखें खोलते ही हर पाठक को वही चित्र सीधे दिखाई न दें जो मुझे दिखाई देते हैं, क्योंकि वह लेखक के विचार को पाठक द्वारा सीधे ग्रहण किए जाने की उम्मीद करता है, जबकि वास्तव में उसके मन में एक अलग ही विचार आकार लेता है। ठीक उसी सरलता से जैसे लोग मानते हैं कि उनके द्वारा बोले गए शब्द ही टेलीफोन के तारों के माध्यम से आगे बढ़ते हैं। जिस क्षण मैं एक पाठक के रूप में मौजूद होता हूं, मेरा मन, एक लेखक के रूप में, मेरे लेख को पढ़ने वालों के दृष्टिकोण को अपना लेता है। यदि एम. डी गुएरमांटेस को कुछ वाक्य समझ में नहीं आए जो ब्लोच को पसंद आ सकते हैं, तो दूसरी ओर, वे किसी ऐसे विचार से प्रसन्न हो सकते हैं जिसका ब्लोच उपहास करेंगे। इस प्रकार, लेख के प्रत्येक उस भाग के लिए जिसे पिछले पाठक ने अनदेखा कर दिया था, एक नया प्रशंसक सामने आ जाता था, और लेख समग्र रूप से पाठकों की भीड़ द्वारा आसमान छू जाता था, जिससे मेरे स्वयं के अविश्वास पर विजय प्राप्त होती थी

और अब मुझे इसका विश्लेषण करने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती थी। सच्चाई यह है कि किसी लेख का मूल्य, चाहे वह कितना भी उल्लेखनीय क्यों न हो, संसदीय रिपोर्टों के उन अंशों के समान है जिनमें मंत्री द्वारा बोले गए शब्द: "प्रतीक्षा करो और देखो!" का महत्व केवल उनके संदर्भ में प्रकट होने से ही प्राप्त होता है: परिषद के अध्यक्ष, गृह मंत्री और धार्मिक निकायों के मंत्री: "प्रतीक्षा करो और देखो!" (अति वामपंथियों की ओर से विरोध। वामपंथियों और मध्यमार्गियों की ओर से "सुनो, सुनो!") - उनकी सुंदरता का मुख्य भाग पाठकों के मन में बसता है। और इस प्रकार के साहित्य का मूल दोष, जिससे प्रसिद्ध लुंडी भी अछूते नहीं हैं, यही है कि उनका गुण पाठकों पर पड़ने वाले प्रभाव में निहित होता है। यह एक कृत्रिम शुक्र ग्रह है, जिसका केवल एक अधूरा हिस्सा ही हमें लेखक के विचारों तक सीमित रहने पर दिखाई देता है, क्योंकि यह अपने पूर्ण स्वरूप में केवल उसके पाठकों के मन में ही साकार होता है। उन्हीं में इसे पूर्णता प्राप्त होती है। और चूंकि भीड़, चाहे वह चुनिंदा भीड़ ही क्यों न हो, कलाकार नहीं होती, इसलिए लेख पर लगाई गई यह अंतिम स्वीकृति हमेशा कुछ हद तक भद्दी लगती है। इस प्रकार, सैंटे-ब्यूव सोमवार को कल्पना कर सकते थे कि श्रीमती डी बोइग्ने अपने बिस्तर पर, आठ स्तंभों वाले कॉन्स्टिट्यूशनल में उनका लेख पढ़ रही हैं, और उस आकर्षक वाक्यांश की सराहना कर रही हैं जिसमें वे लंबे समय से आनंदित थे और जो शायद उनकी कलम से कभी नहीं निकलता यदि उन्होंने अपने लेख को व्यापक बनाने के लिए उसमें ऐसे वाक्यांशों को शामिल करना उचित न समझा होता। निःसंदेह, चांसलर स्वयं इसे पढ़कर, कुछ समय बाद अपने पुराने मित्र से मिलने के दौरान इसका उल्लेख करेंगे। और जब वह उस शाम उसे अपनी गाड़ी में बाहर ले जा रहा था, तो ग्रे

रंग की पैंट पहने ड्यूक डी नोएल्स उसे बताता कि समाज में इसके बारे में क्या सोचा गया था, जब तक कि श्रीमती डी'हर्बोविल द्वारा कही गई कोई बात उसे पहले ही सूचित न कर दे।
मैंने उसी क्षण देखा कि बहुत से लोगों के लिए, मेरा विचार, या मेरे विचार के विफल होने पर भी, उन लोगों के लिए जो इसे समझने में असमर्थ थे, मेरे नाम की पुनरावृत्ति और मानो मेरे व्यक्तित्व का एक महिमामंडित संकेत, उन पर चमक रहा था, एक ऐसे सूर्योदय में जिसने मुझे उस समय हर खिड़की पर चमक रहे अनगिनत सूर्योदय की तुलना में कहीं अधिक शक्ति और विजयी आनंद से भर दिया।
मैंने ब्लोच, एम. डी. गुएरमांटेस, लेग्रैंडिन को देखा, हर वाक्य से उसमें समाहित बिम्बों को बारी-बारी से निकालते हुए; जिस क्षण मैं एक साधारण पाठक बनने का प्रयास करता हूँ, उसी क्षण मैं एक लेखक की तरह पढ़ता हूँ, परन्तु केवल एक लेखक की तरह नहीं। ताकि वह असंभव प्राणी जो मैं बनने का प्रयास कर रहा हूँ, उन सभी विपरीत तत्वों को समाहित कर सके जो मेरे लिए सबसे अनुकूल हो सकते हैं, यदि मैं एक लेखक की तरह पढ़ता हूँ, तो मैं स्वयं को एक पाठक के रूप में परखता हूँ, बिना किसी संकोच के जो किसी लिखित पाठ के बारे में उस व्यक्ति द्वारा महसूस किया जा सकता है जो उसमें उस आदर्श का सामना करता है जिसे उसने व्यक्त करने का प्रयास किया है। मेरे लेख के वे वाक्यांश, जब मैंने उन्हें लिखा था, मेरे विचार की तुलना में इतने रंगहीन थे, मेरी सामंजस्यपूर्ण और स्पष्ट दृष्टि की तुलना में इतने जटिल और अस्पष्ट थे, इतने अंतरालों से भरे थे जिन्हें मैं भर नहीं पाया था, कि उन्हें पढ़ना मेरे लिए एक यातना थी, उन्होंने केवल मुझमें अपनी अक्षमता और प्रतिभा की असाध्य कमी की भावना को और

तीव्र कर दिया था। लेकिन अब, खुद को एक पाठक बनने के लिए मजबूर करते हुए, अगर मैंने दूसरों पर अपनी आलोचना करने का कष्टदायक दायित्व डाल दिया, तो कम से कम मैं उस प्रयास को पूरी तरह से विफल करने में सफल रहा जो मैंने अपने लिखे हुए को पहली बार पढ़कर किया था। मैंने लेख को यह कल्पना करते हुए पढ़ा कि इसे किसी और ने लिखा है। तब मेरी सारी छवियां, मेरे सारे विचार, मेरे सारे विशेषण, अपने आप में और मेरे इरादों पर लगाए गए नियंत्रण की स्मृति के बिना, अपनी चमक, अपनी व्यापकता और अपनी गहराई से मुझे मंत्रमुग्ध कर गए। और जब मुझे एक साधारण और आश्चर्यचकित पाठक की भावना में एक अत्यधिक स्पष्ट कमजोरी महसूस हुई, तो मैंने खुद से कहा: "अरे! एक पाठक यह कैसे देख सकता है कि इसमें कुछ कमी है, यह बिल्कुल संभव है। लेकिन, अगर वे संतुष्ट नहीं हैं तो उन्हें भाड़ में जाने दो! इसमें बहुत सारे सुंदर अंश हैं, जितने उन्हें आमतौर पर मिलते हैं उससे कहीं अधिक।" और मुझे मिले इस दस हजार गुना समर्थन के सहारे, मुझे उस लेख से अपनी ताकत और अपनी प्रतिभा पर उतना ही भरोसा और उम्मीद मिली, जितना मुझे अपने लिखे लेख से अविश्वास मिला था, जो केवल मेरे लिए ही था।
इस सुखद पठन के समाप्त होते ही, मैं, जिसने अपनी पांडुलिपि को दोबारा पढ़ने का साहस नहीं किया था, उसे तुरंत फिर से पढ़ने के लिए उत्सुक हो गई, क्योंकि स्वयं द्वारा लिखे गए पुराने लेख जैसा कुछ नहीं होता जिसके बारे में यह कहना बिल्कुल सही है कि "एक बार पढ़ लेने के बाद दोबारा भी पढ़ा जा सकता है।" मैंने तय किया कि मैं फ्रांस्वा को नई प्रतियां खरीदने भेजूँगी, ताकि मैं उन्हें अपने दोस्तों को दे सकूँ। मैं उससे कहूँगी कि मैं वास्तव में अपने विचारों के गुणन के चमत्कार को अपनी उंगलियों से छू सकूँगी और पढ़ सकूँगी, मानो मैं कोई और व्यक्ति हूँ जिसने

अभी-अभी फिगारो पत्रिका खोली हो और उसी वाक्यों को किसी दूसरी प्रति में पढ़ा हो। संयोगवश, मुझे गुएरमांटे परिवार से मिले हुए बहुत समय हो गया था। मुझे अगले दिन उनसे मिलना ही था, जिसकी योजना मैंने सेंट-लूप को टेलीग्राम भेजते समय मैडम डी'एपोर्चेविल से मिलने की उम्मीद में बड़ी उत्सुकता से बनाई थी। मुझे उनसे यह पता लगाना था कि लोगों को मेरा लेख कैसा लगा। मैंने कल्पना की कि कोई महिला पाठक होगी जिसके कमरे में मैं प्रवेश करना चाहता, और अखबार उसे, अगर मेरे विचार नहीं तो कम से कम मेरा नाम तो पहुंचा देता, मानो मेरे लिए एक श्रद्धांजलि हो। लेकिन जिसे हम प्यार नहीं करते, उसके लिए दी गई ये श्रद्धांजलि हमारे दिल को उतना ही मोहित नहीं करतीं, जितना कि किसी ऐसे व्यक्ति के विचार, जिसे हम समझ नहीं पाते। अन्य मित्रों के बारे में मैंने खुद से कहा कि अगर मेरी सेहत बिगड़ती रही और मैं उनसे दोबारा न मिल पाऊं, तो उन्हें पत्र लिखना अच्छा रहेगा, ताकि इस तरह से उनसे जुड़ाव बना रहे, उनसे इशारों में बात कर सकूं, उन्हें अपने विचार बता सकूं, उन्हें खुश कर सकूं और उनके दिलों में जगह पा सकूं। मैंने खुद से ये कहा क्योंकि सामाजिक संबंध पहले मेरे दैनिक जीवन का हिस्सा थे, और भविष्य में उनका न होना मुझे चिंतित कर रहा था। साथ ही, ये उपाय मुझे तसल्ली दे रहा था, जिससे मैं अपने मित्रों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित रख सकूँ, शायद उनकी प्रशंसा प्राप्त कर सकूँ, जब तक कि मैं ठीक होकर उनसे दोबारा मिलने लायक न हो जाऊँ। मैंने खुद से ये कहा, लेकिन मैं भली-भांति जानता था कि ये सच नहीं है। अगर मैं उनकी ओर से मिलने को ही अपनी खुशी का स्रोत मान लूँ, तो वो खुशी एक आंतरिक, आध्यात्मिक, परम सुख होगी जो वे मुझे स्वयं नहीं दे सकते, और जो मुझे उनसे बातचीत करने में नहीं, बल्कि उनसे दूर रहकर लिखने में

मिल सकती है। और अगर मैं उनसे परोक्ष रूप से मिलने की आशा में लिखना शुरू कर दूँ, ताकि वे मुझे बेहतर ढंग से जान सकें, और समाज में अपनी बेहतर स्थिति बना सकूँ, तो शायद लिखने का काम ही उनमें मिलने की मेरी इच्छा को नष्ट कर देगा, और उस स्थिति को भी जो साहित्य मुझे समाज में दिला सकता था। मुझे आनंद लेने की कोई इच्छा नहीं रहेगी, क्योंकि मेरी खुशी समाज में नहीं, बल्कि साहित्य में होगी।
दोपहर के भोजन के बाद जब मैं श्रीमती डी गुएरमांटेस के पास गया, तो यह श्रीमती डी'एपोर्शविल के लिए कम था, जिनकी सेंट-लूप के टेलीग्राम ने उनके व्यक्तित्व के एक बड़े हिस्से को छीन लिया था, बल्कि इस उम्मीद में अधिक था कि डचेस स्वयं मेरे लेख के उन पाठकों में से एक होंगी जो मुझे यह समझने में मदद करेंगी कि फिगारो के ग्राहकों और खरीदारों पर इसका क्या प्रभाव पड़ा था। हालाँकि, श्रीमती डी गुएरमांटेस से मिलने जाना मेरे लिए खुशी की बात थी। मैंने खुद को यह समझाना तो ठीक था कि उनके घर को बाकी सभी घरों से अलग बनाने वाली बात यह थी कि यह इतने लंबे समय से मेरी कल्पना में बसा हुआ था, लेकिन इस अंतर का कारण जानने से यह अंतर खत्म नहीं हुआ। इसके अलावा, गुएरमांटेस नाम मेरे लिए कई रूपों में मौजूद था। यदि वह रूप जिसे मेरी स्मृति ने केवल एक पता-पुस्तिका की तरह नोट किया था, किसी कविता के साथ नहीं था, तो पुराने रूप, वे जो उस समय के थे जब मैं श्रीमती को नहीं जानता था, भी मौजूद थे। डी गुएरमांटेस की यादें मेरे मन में बार-बार ताज़ा हो जाती थीं, खासकर तब जब मैंने उन्हें कुछ समय से नहीं देखा होता था और जब उनके मानवीय स्वरूप की चमक भी उनके नाम की रहस्यमयी आभा को कम नहीं कर पाती थी। तब एक बार फिर मैं श्रीमती डी गुएरमांटेस के घर के बारे में सोचने लगता था, मानो वह

वास्तविकता से परे हो, ठीक वैसे ही जैसे मैं अपने बचपन के सपनों के धुंधले बालबेक के बारे में सोचने लगता था, मानो मैंने तब से वह यात्रा की ही न हो, मानो मैंने वह 122 नंबर की ट्रेन कभी ली ही न हो। एक पल के लिए मैं यह भूल जाता था कि ऐसी चीजें अस्तित्व में नहीं होतीं, जैसे कभी-कभी हम किसी प्रिय मित्र के बारे में सोचते हैं और एक पल के लिए भूल जाते हैं कि वह मर चुका है। फिर जैसे ही मैंने डचेस के हॉल में कदम रखा, वास्तविकता का एहसास लौट आया। लेकिन मैंने खुद को इस विचार से तसल्ली दी कि इन सबके बावजूद, यही मेरे लिए वास्तविकता और सपनों के बीच का वास्तविक संपर्क बिंदु था।
जब मैं ड्राइंग रूम में दाखिल हुआ, तो मैंने उस सुंदरी को देखा जिसे मैं चौबीस घंटे से वही लड़की समझ रहा था जिसके बारे में सेंट-लूप ने मुझसे बात की थी। उसी ने डचेस से मुझे उससे दोबारा मिलवाने का अनुरोध किया था। और सचमुच, कमरे में आते ही मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उसे अच्छी तरह जानता हूँ, लेकिन डचेस ने यह कहकर मेरी शंका दूर कर दी: "ओह! आप मैडम डी फोर्शेविल से पहले मिल चुके हैं।" इसके विपरीत, मुझे पूरा यकीन था कि मुझे उस नाम की किसी लड़की से कभी नहीं मिलवाया गया था, जो निश्चित रूप से मुझे प्रभावित करती, क्योंकि ओडेट के प्रेम प्रसंगों और स्वान की ईर्ष्या का ब्यौरा सुनने के बाद से यह नाम मेरी यादों में इतना परिचित था। नाम को लेकर मेरी दोहरी गलती, 'डी ल'ऑर्गेविल' को 'डी'एपोर्शविल' समझ लेने और 'फोर्शेविल' को 'डी'एपोर्शविल' के रूप में याद करने में, कोई असाधारण बात नहीं थी। हमारी गलती इस धारणा में निहित है कि चीजें आमतौर पर वास्तविकता में जैसी होती हैं, नाम जैसे लिखे होते हैं, और लोग जैसे फोटोग्राफी और मनोविज्ञान द्वारा दी गई अपरिवर्तनीय छवि में प्रस्तुत होते

हैं। वास्तव में, यह बिल्कुल वैसा नहीं है जैसा हम आमतौर पर देखते हैं। हम दुनिया को पूरी तरह उलटा-पुल्टा देखते हैं, सुनते हैं और समझते हैं। हम किसी नाम को वैसे ही दोहराते हैं जैसे हमने उसे सुना होता है, जब तक कि अनुभव हमारी गलती को सुधार नहीं देता, जो हमेशा नहीं होता। कॉम्ब्रे में सभी लोग फ्रांस्वा से पच्चीस वर्षों तक श्रीमती सजेरात के नाम से बात करते रहे थे और फ्रांस्वा लगातार 'श्रीमती सजेरात' कहती रहीं। सैज़ेरिन', उसकी उस जानबूझकर और गर्व से भरी गलतियों में दृढ़ता के कारण नहीं, जो उसकी आदत थी, बल्कि हमारे विरोधाभास से मजबूत हुई और यही वह सब था जो उसने सेंट-आंद्रे-डेस-चैम्प्स के फ्रांस में जोड़ा था (1789 के समतावादी सिद्धांतों में से उसने केवल एक नागरिक अधिकार का दावा किया था, वह था शब्दों का उच्चारण हमारे जैसा न करना और यह मानना कि 'होटल', 'एटे' और 'एयर' स्त्रीलिंग हैं), बल्कि इसलिए कि वह वास्तव में 'सैज़ेरिन' सुनती रही। * यह निरंतर त्रुटि, जो वास्तव में 'जीवन' है, अपने हजारों रूप केवल दृश्य और श्रव्य ब्रह्मांड पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक ब्रह्मांड, भावनात्मक ब्रह्मांड, ऐतिहासिक ब्रह्मांड आदि पर भी डालती है। मुख्य मजिस्ट्रेट की पत्नी की नजर में लक्ज़मबर्ग की राजकुमारी एक वेश्या से बेहतर नहीं है, जो संयोगवश बहुत कम महत्व रखती है; इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि ओडेट स्वान के लिए एक कठिन महिला है, जिसके कारण वह एक प्रेम कहानी बुनता है जो उसकी गलती का पता चलने पर और भी दर्दनाक हो जाती है; इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि जर्मनों की नज़र में फ्रांसीसी केवल बदला लेने के बारे में सोच रहे हैं। हमारे पास ब्रह्मांड की केवल निराकार, खंडित छवियां हैं, जिन्हें हम मनमानी धारणाओं के संयोजन से पूरा करते हैं, जो खतरनाक सुझाव

पैदा करती हैं। इसलिए मुझे फोर्शेविल नाम सुनकर आश्चर्य नहीं होना चाहिए था (और मैं पहले से ही खुद से पूछ रहा था कि क्या वह उस फोर्शेविल से संबंधित है जिसके बारे में मैंने अक्सर सुना था) यदि उस सुंदर लड़की ने तुरंत मुझसे यह न कहा होता, निस्संदेह चतुराई से उन सवालों को टालने की कोशिश में जो उसे अप्रिय लग सकते थे: "आपको याद नहीं है कि आप मुझे बहुत पहले अच्छी तरह से जानते थे... आप हमारे घर आते थे... आपकी दोस्त गिल्बर्ट। मैं देख सकती थी कि आपने मुझे पहचाना नहीं। मैंने आपको तुरंत पहचान लिया।" (उसने यह बात ऐसे कही मानो उसने मुझे ड्राइंग रूम में देखते ही पहचान लिया हो, लेकिन सच तो यह है कि उसने मुझे सड़क पर पहचाना था और मेरा अभिवादन किया था, और बाद में श्रीमती डी गुएरमांटेस ने मुझे बताया कि उसने उन्हें यह बात बहुत अजीब और असाधारण बताते हुए कही थी कि मैं उसका पीछा कर रहा था और उससे टकरा गया था, क्योंकि मैंने उसे वेश्या समझ लिया था।) उसके कमरे से चले जाने के बाद ही मुझे पता चला कि उसे श्रीमती डी फोर्शेविल क्यों कहा जाता था। स्वान की मृत्यु के बाद, ओडेट, जिसने अपने गहरे, लंबे और सच्चे शोक से सभी को चकित कर दिया था, एक बेहद अमीर विधवा बन गई। फोर्शेविल ने कई ग्रामीण घरों का दौरा करने और यह सुनिश्चित करने के बाद कि उसका परिवार उसकी पत्नी को स्वीकार करेगा, उससे शादी कर ली। (परिवार ने कुछ आपत्तियाँ उठाईं, लेकिन एक जरूरतमंद रिश्तेदार के खर्चों को पूरा न करने के भौतिक लाभ के आगे झुक गए, जो तुलनात्मक गरीबी से समृद्धि की ओर अग्रसर होने वाला था।) इसके कुछ ही समय बाद, स्वान के एक चाचा, जिनके सिर पर कई रिश्तेदारों की क्रमिक मृत्यु से एक विशाल संपत्ति जमा हो गई थी, का निधन हो गया और उन्होंने अपनी पूरी संपत्ति गिल्बर्ट को दे दी, जिससे वह फ्रांस की सबसे धनी

उत्तराधिकारियों में से एक बन गईं। लेकिन यही वह क्षण था जब ड्रेफस मामले के प्रभावों से एक यहूदी-विरोधी आंदोलन उभरा, जो समाज में इस्राएलियों के प्रवेश की दिशा में एक व्यापक आंदोलन के समानांतर था। राजनेताओं का यह सोचना गलत नहीं था कि न्यायिक त्रुटि का पता चलने से यहूदी-विरोध को घातक आघात लगेगा। लेकिन कम से कम अस्थायी रूप से, इसके विपरीत सामाजिक यहूदी-विरोध को बढ़ावा मिला और वह और भी बढ़ गया। फोर्शेविल, जो हर छोटे रईस की तरह, पारिवारिक चर्चाओं से इस बात को लेकर आश्वस्त था कि उसका नाम ला रोशेफौकॉल्ड से भी पुराना है, यह मानता था कि एक यहूदी विधवा से विवाह करके उसने वही परोपकार का कार्य किया है जो एक करोड़पति सड़क पर किसी वेश्या को उठाकर उसे गरीबी और दलदल से बचाता है; वह गिलबर्ट पर भी अपना अनुग्रह बरसाने को तैयार था, जिसकी शादी की संभावनाएँ उसके पास मौजूद लाखों की संपत्ति से तो बढ़ रही थीं, लेकिन उस बेतुके नाम 'स्वान' के कारण अड़चन बन रही थीं। उसने घोषणा की कि वह उसे गोद ले लेगा। हम जानते हैं कि मैडम डी गुएरमांटेस ने, अपने दोस्तों को आश्चर्यचकित करते हुए (हालांकि उन्हें आश्चर्य पैदा करना पसंद था और वे ऐसा करने की आदी थीं), स्वान की शादी के बाद उसकी बेटी और उसकी पत्नी दोनों से मिलने से इनकार कर दिया था। यह इनकार और भी क्रूर प्रतीत होता था क्योंकि स्वान को ओडेट से शादी संभव लगने का एकमात्र कारण मैडम डी गुएरमांटेस से अपनी बेटी का परिचय कराना था। और निःसंदेह, जीवन का इतना लंबा अनुभव रखने वाले व्यक्ति को यह अवश्य ही पता होना चाहिए था कि हमारे मन में बनने वाली ये छवियां अनेक कारणों से कभी साकार नहीं होतीं। इनमें से एक कारण यह भी था कि वह उस छवि को साकार न कर पाने पर शायद ही कभी पछताता था। कारण यह है कि छवि चाहे जो भी हो, सूर्यास्त के समय खाई जाने

वाली मछली जो एक आलसी व्यक्ति को ट्रेन से यात्रा करने के लिए प्रेरित करती है, या किसी शाम को कैश काउंटर पर बैठी अभिमानी महिला को एक शानदार गाड़ी में उसके दरवाजे के बाहर रुककर आश्चर्यचकित करने की इच्छा जो एक बेईमान व्यक्ति को हत्या करने के लिए प्रेरित करती है, या धनी रिश्तेदारों की मृत्यु की कामना करना, चाहे वह साहसी हो या आलसी, चाहे वह अपने विचारों के क्रम में आगे बढ़े या श्रृंखला की पहली कड़ी को ही उलझाए रखे, वह कार्य जो हमें उस छवि तक पहुँचाने के लिए नियत है, चाहे वह यात्रा हो, विवाह हो, अपराध हो... वह कार्य हमें इतना गहराई से बदल देता है कि हम उस कारण को कोई महत्व नहीं देते जिसके कारण हमने वह कार्य किया। ऐसा भी हो सकता है कि उनके मन में उस व्यक्ति की छवि कभी न आए जो उस समय न तो यात्री था, न पति, न अपराधी, न संन्यासी (जिसने प्रसिद्धि की चाह में काम किया हो और साथ ही प्रसिद्धि की सारी इच्छा त्याग दी हो)। इसके अलावा, अगर हम व्यर्थ में काम करने की इच्छा न दिखाने के हठ को भी शामिल कर लें, तो भी संभव है कि धूप का प्रभाव दोबारा न दिखे, उस समय ठंड लगने पर हम चिमनी के पास बैठकर सूप का कटोरा पीना चाहें, न कि खुली हवा में मछली, और हमारी गाड़ी देखकर कैशियर अप्रभावित रहे, जो शायद बिल्कुल अलग कारणों से हमारे प्रति बहुत सम्मान रखता था और जिसे इस अचानक धन-दौलत पर शक हो। संक्षेप में, हमने देखा है कि स्वान ने शादी के बाद अपनी पत्नी और बेटी के मैडम बोंटेम्प्स के साथ संबंधों को सबसे अधिक महत्व दिया।
[* स्वान की राह, I. 92 देखें, जहाँ यह त्रुटि यूलाली सी. के. एस. एम. को सौंपी गई है।]
गुएरमांटे परिवार के सामाजिक जीवन के प्रति दृष्टिकोण से उपजे उन सभी कारणों में, जिनके चलते डचेस ने श्रीमती स्वान और

करने गया, तो मैंने डचेस को चिंतित पाया। मुझे लगा कि राजनीति में हमेशा दखल देने के कारण वह युद्ध से डरना दिखाना चाहती थी, क्योंकि एक दिन जब वह खाने की मेज पर इतनी उदास बैठी थी कि किसी के दबे स्वर में पूछने पर उसने मुश्किल से एक-एक शब्द में जवाब दिया, तो उसने गंभीर स्वर में कहा: "मैं चीन को लेकर चिंतित हूँ।" लेकिन कुछ ही देर बाद, श्रीमती डी गुएरमांटेस ने खुद ही उस चिंतित स्वर का स्पष्टीकरण देते हुए, जिसे मैंने युद्ध की घोषणा के डर से जोड़ा था, श्री डी ब्रेउटे से कहा: "मुझे पता चला है कि मैरी-ऐनार्ड स्वान्स परिवार को स्थापित करना चाहती है। मुझे कल ही मैरी-गिल्बर्ट से मिलने जाना होगा और उनसे इसे रोकने में मदद मांगनी होगी। अन्यथा, समाज का कोई अस्तित्व ही नहीं बचेगा। ड्रेफस का मामला तो ठीक है। लेकिन फिर, कोने में रहने वाली दुकानदार की पत्नी को बस खुद को राष्ट्रवादी कहना है और बदले में हमसे अपने घर पर आमंत्रित किए जाने की उम्मीद करनी है।" और इस भाषण को सुनकर, जो मेरी उम्मीद से कहीं अधिक हल्का था, मुझे उस पाठक की हैरानी हुई जो रूस-जापान युद्ध की ताज़ा ख़बरों के लिए फिगारो के नियमित कॉलम को पलटता है, और उसे मैडम डी मोर्टेमार्ट को शादी के तोहफ़े देने वालों की सूची मिलती है, क्योंकि ज़मीन और समुद्र पर चल रही कागज़ी लड़ाइयों के आगे एक कुलीन विवाह का महत्व कहीं पीछे छूट गया है। समय के साथ, डचेस ने इस लगन से, जो सामान्य सीमाओं से परे थी, अपने गौरव को संतुष्ट किया और इसे व्यक्त करने का कोई अवसर नहीं छोड़ा। उन्होंने कहा, "बाबल का मानना है कि हम पेरिस के दो सबसे बुद्धिमान लोग हैं, क्योंकि हम दोनों ही ऐसे लोग हैं जो मैडम और मैडम स्वान को अपने सामने झुकने नहीं देते। क्योंकि वह मुझे यकीन दिलाता है कि

नहीं किया; एक बार तो (और यह बात उन सभी लोगों को शर्मिंदा कर देती जो उससे कुछ स्नेह रखते थे) उसने डचेस को पत्र लिखकर यह पूछने का फैसला किया था कि उस लड़की के खिलाफ उसके मन में क्या है जिसने उसे कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाया। उनकी दृष्टि में गुएरमांटे परिवार ने वह प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली थी जो जन्म से भी उन्हें नहीं मिल सकती थी। उन्होंने उन्हें न केवल सभी कुलीनों से ऊपर, बल्कि सभी शाही घरानों से भी ऊपर स्थान दिया। स्वान की कुछ पुरानी सहेलियों ने गिलबर्ट में गहरी दिलचस्पी दिखाई। जब कुलीन वर्ग को उसकी नवीनतम विरासत के बारे में पता चला, तो वे उसकी शिष्टता और एक आकर्षक पत्नी बनने की प्रशंसा करने लगे। लोगों का कहना था कि श्रीमती डी गुएरमांटेस की चचेरी बहन, प्रिंसेस डी नीव्रे, अपने बेटे के लिए गिलबर्ट के बारे में सोच रही थीं। श्रीमती डी गुएरमांटेस, श्रीमती डी नीव्रे से घृणा करती थीं। उन्होंने घोषणा की कि ऐसा विवाह एक कलंक होगा। श्रीमती डी नीव्रे डर गईं और कसम खाई कि उन्होंने ऐसा कभी सोचा भी नहीं था। एक दिन, दोपहर के भोजन के बाद, जब सूरज चमक रहा था और श्री डी गुएरमांटेस अपनी पत्नी को बाहर ले जाने वाले थे, श्रीमती डी गुएरमांटेस दर्पण के सामने अपनी टोपी संवार रही थीं, उनकी नीली आँखें दर्पण में अपने प्रतिबिंब और सुनहरे बालों को निहार रही थीं, उनकी नौकरानी के हाथ में धूप से बचने के लिए कई तरह के चश्मे थे जिनमें से उनकी मालकिन चुन सकती थीं। खिड़की से सूरज की रोशनी अंदर आ रही थी और उन्होंने सुहावने मौसम का फायदा उठाकर सेंट-क्लाउड जाने का फैसला किया। एम. डी गुएरमांटेस, जो रवाना होने के लिए तैयार थे, मोती जैसे भूरे रंग के दस्ताने और सिर पर एक लंबी टोपी पहने हुए, मन ही मन बोले: "ओरियान अब भी वाकई अद्भुत है। मुझे वह बहुत प्यारी लगती है," और

अपनी पत्नी को अच्छे मूड में देखकर, उन्होंने ज़ोर से कहा: "वैसे, मेरे पास मैडम डी विरेलेफ का आपके लिए एक संदेश है। वह आपको सोमवार को ओपेरा में बुलाना चाहती थीं, लेकिन स्वान की बेटी के होने के कारण, उन्होंने हिम्मत नहीं की और मुझसे पता लगाने को कहा। मैं कोई राय नहीं दे रहा हूँ, मैं बस संदेश दे रहा हूँ। लेकिन सच में, मुझे लगता है कि हम..." उन्होंने टालमटोल करते हुए कहा, क्योंकि हर किसी के प्रति उनका रवैया सामूहिक होता है और उनमें से प्रत्येक में एक जैसा होता है। वह अपने अनुभव से जानते थे कि मैडम स्वान के प्रति उनकी पत्नी की शत्रुता कम हो गई थी और वह उनसे मिलने के लिए उत्सुक थीं। डी गुएरमांटेस ने अपने घूंघट को अपनी पसंद के अनुसार ठीक किया और एक सनशेड चुना। "लेकिन जैसा आपको ठीक लगे, इससे मुझे क्या फर्क पड़ता है? मुझे उस लड़की से मिलने में कोई आपत्ति नहीं दिखती। मैं बस इतना चाहती थी कि हम अपने दोस्तों के संदिग्ध संस्थानों का समर्थन करते हुए न दिखें। बस इतना ही।" "और आप बिल्कुल सही थीं," ड्यूक ने उत्तर दिया। "आप ज्ञान की साक्षात मूर्ति हैं, महोदया, और उस टोपी में आप पहले से कहीं अधिक आकर्षक लग रही हैं।" "आप बहुत दयालु हैं," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने अपने पति को मुस्कुराते हुए कहा और दरवाजे की ओर चल पड़ीं। लेकिन, गाड़ी में बैठने से पहले, उन्होंने उन्हें एक और स्पष्टीकरण देना अपना कर्तव्य समझा: "आजकल बहुत से लोग माँ से मिलने आते हैं, इसके अलावा वह साल के नौ महीने बीमार रहने का बहाना करती हैं... ऐसा लगता है कि बच्ची बहुत प्यारी है। सब जानते हैं कि हम स्वान से बहुत लगाव रखते थे। लोग इसे स्वाभाविक ही समझेंगे," और वे दोनों सेंट-क्लाउड के लिए रवाना हो गए।

एक महीने बाद, स्वान की बेटी, जिसने अभी तक फोर्शेविल नाम नहीं अपनाया था, गुएरमांटे परिवार के साथ दोपहर के भोजन पर आई। हर संभव विषय पर चर्चा हुई; भोजन के अंत में, गिलबर्ट ने दबी आवाज़ में कहा: "मुझे लगता है कि आप मेरे पिता को अच्छी तरह जानती थीं।" "हाँ, बिल्कुल," श्रीमती डी गुएरमांटे ने उदास स्वर में कहा, जिससे यह स्पष्ट था कि वह बेटी के दुख को समझती थीं और जानबूझकर अपनी भावनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर व्यक्त कर रही थीं, मानो वह इस तथ्य को छिपा रही हों कि उन्हें यकीन नहीं था कि उन्हें अपने पिता याद हैं या नहीं। "हम उन्हें अच्छी तरह जानते थे, मुझे वे अच्छी तरह याद हैं।" (वास्तव में, ऐसा होना स्वाभाविक था, क्योंकि वे पच्चीस वर्षों तक लगभग हर दिन उनसे मिलने आते थे।) "मैं उन्हें अच्छी तरह जानती हूँ, मैं आपको बताती हूँ," उन्होंने आगे कहा, मानो वह अपनी बेटी को यह समझाना चाह रही हों कि उनके पिता कौन थे और उन्हें उनके बारे में जानकारी देना चाह रही हों, "वे मेरी सास के बहुत अच्छे दोस्त थे और इसके अलावा वे मेरे देवर पालामेडे के भी बहुत करीबी थे।" “वह भी यहाँ आते थे, वास्तव में वे यहाँ दोपहर के भोजन के लिए आते थे,” एम. डी गुएरमांटेस ने दिखावटी विनम्रता और अत्यंत सटीक अंदाज़ में कहा। “तुम्हें याद है ना, ओरियान। तुम्हारे पिता कितने नेक इंसान थे। ऐसा लगता था मानो वे किसी प्रतिष्ठित परिवार से आए हों; वैसे भी, मैंने बहुत पहले उनके माता-पिता को देखा था। वे दोनों, कितने नेक लोग थे!”
ऐसा लगता था मानो अगर माता-पिता और पुत्र जीवित होते, तो ड्यूक डी गुएरमांटेस उन्हें माली के पद के लिए सिफारिश करने में जरा भी संकोच न करते! और इसी तरह फाउबर्ग सेंट-जर्मेन एक बुर्जुआ से दूसरे बुर्जुआ के बारे में बात करता है, चाहे बातचीत के दौरान

इसके अलावा, जब भावनाओं का यह उफान शांत हो गया, तो श्रीमती डी गुएरमांटेस ने एक सांसारिक तुच्छता के साथ गिलबर्ट को संबोधित करते हुए कहा: "अरे, वह न केवल मेरे बहनोई चार्लस के घनिष्ठ मित्र थे, बल्कि वोइसनोन (राजकुमार डी गुएरमांटेस का कंट्री हाउस) में भी उनके प्रिय थे," मानो स्वान का श्री डी चार्लस और राजकुमार से परिचय महज एक संयोग था, मानो डचेस के बहनोई और चचेरे भाई दो ऐसे व्यक्ति थे जिनसे स्वान किसी विशेष कारण से घनिष्ठ हो गए थे, जबकि स्वान उस समूह के सभी लोगों से घनिष्ठ थे, और मानो श्रीमती डी गुएरमांटेस गिलबर्ट को यह समझाने की कोशिश कर रही थीं कि उनके पिता मोटे तौर पर कौन थे, उन्हें उन चरित्र रेखाचित्रों में से एक के माध्यम से 'स्थापित' करने की कोशिश कर रही थीं, जिनका उपयोग हम यह समझाने के लिए करते हैं कि हम किसी ऐसे व्यक्ति को कैसे जानते हैं जिसे हम स्वाभाविक रूप से नहीं जानते, या अपनी कहानी में एक अतिरिक्त बिंदु जोड़ने के लिए, हम उन प्रायोजकों का नाम लेते हैं जिनके द्वारा किसी विशेष व्यक्ति का परिचय कराया गया था।
गिलबर्ट की बात करें तो, इस विषय के समाप्त होने से वह और भी प्रसन्न हुई, क्योंकि वह स्वयं तो इसे बदलना ही चाहती थी। स्वान से उसे उनकी उत्कृष्ट चतुराई और बौद्धिक आकर्षण विरासत में मिले थे, जिनकी ड्यूक और डचेस ने सराहना की और उनसे जल्द ही दोबारा आने का अनुरोध किया। इसके अलावा, जिन लोगों के जीवन का कोई उद्देश्य नहीं होता, वे सूक्ष्म अवलोकन करते हुए अपने आस-पास के लोगों में एक-एक करके सबसे स्पष्ट गुण खोज निकालते थे और उन पर उसी सरल आश्चर्य से अपनी हैरानी व्यक्त करते थे जैसे कोई शहरी ग्रामीण इलाके में जाकर घास का एक तिनका देखता है, या इसके विपरीत उन्हें सूक्ष्मदर्शी से देखते हुए अंतहीन टिप्पणियाँ

करते थे, छोटी-छोटी गलतियों पर भी आपत्ति जताते थे और अक्सर एक ही व्यक्ति पर बारी-बारी से दोनों क्रियाएँ करते थे। गिलबर्ट के मामले में, सबसे पहले इन्हीं मामूली आकर्षणों पर एम. और मैडम डी गुएरमांटेस की क्षणभंगुर दूरदर्शिता का प्रभाव पड़ा: "क्या आपने ध्यान दिया कि वह अपने कुछ शब्दों का उच्चारण किस तरह करती थी?" लड़की के चले जाने के बाद डचेस ने अपने पति से कहा, "बिल्कुल स्वान की तरह, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उसे बोलते हुए सुन रही हूँ।" "मैं भी यही कहने वाला था, ओरियान।" "वह बहुत बुद्धिमान है, बिलकुल अपने पिता जैसी है।" "मुझे लगता है कि वह उनसे कहीं ज़्यादा श्रेष्ठ है। सोचो उसने समुद्र में नहाने की कहानी कितनी अच्छी तरह सुनाई, उसमें एक ऐसी जीवंतता है जो स्वान में कभी नहीं थी।" "ओह! लेकिन वह तो वाकई बहुत बुद्धिमान था।" "मैं यह नहीं कह रहा कि वह बुद्धिमान नहीं था, मैं कह रहा हूँ कि उसमें जीवंतता की कमी थी," एम. डी गुएरमांटेस ने शिकायत भरे लहजे में कहा, क्योंकि गठिया के कारण वह चिड़चिड़ा हो गया था, और जब उसके पास अपनी झुंझलाहट निकालने के लिए कोई और नहीं था, तो उसने डचेस पर ही अपना गुस्सा निकाला। लेकिन इसके कारणों को स्पष्ट रूप से न समझ पाने के कारण, उसने गलतफहमी का नाटक करना बेहतर समझा।
ड्यूक और डचेस के इस दोस्ताना रवैये का मतलब यह था कि भविष्य में वे गिलबर्टे को ज़्यादा से ज़्यादा कभी-कभार 'तुम्हारे बेचारे पिता' कह देते, जो वैसे भी बिल्कुल अनावश्यक था, क्योंकि लगभग इसी समय फोर्शेविल ने उस लड़की को गोद लिया था। वह उन्हें 'पिताजी' कहकर संबोधित करती थी, अपनी विनम्रता और शालीनता से सभी विधवाओं को मोहित कर लेती थी, और यह माना जाता था कि अगर फोर्शेविल ने उसके प्रति अत्यंत उदारता दिखाई होती, तो लड़की

गुएरमांटेस के चेहरे पर निराशा के भाव देखे। "आह, हाँ! वही एल्स्टिर जिनकी मैंने ऊपर प्रशंसा की थी। ये यहाँ उस लेख से कहीं बेहतर दिखते हैं। एल्स्टिर की बात करें तो, मैंने कल फिगारो में एक लेख में उनका जिक्र किया था। क्या आपने उसे पढ़ा था?" "आपने फिगारो में लेख लिखा है?" श्रीमती डी गुएरमांटेस ने उसी जोश से कहा जैसे उन्होंने कहा हो: "अरे, ये तो मेरी चचेरी बहन हैं।" "हाँ, कल।" "फिगारो में, आपको यकीन है? यह तो बहुत आश्चर्य की बात है। क्योंकि हम सभी को अपना-अपना फिगारो मिलता है, और अगर हममें से किसी एक को नहीं मिला होता, तो दूसरे को ज़रूर पता चल जाता। है ना, ओरियान, अखबार में कुछ नहीं था।" ड्यूक ने फिगारो मंगवाया और बात मान ली, मानो पहले यही संभावना थी कि मैंने जिस अखबार के लिए लिखा था, उसके बारे में मुझसे कोई गलती हो गई हो। "यह क्या, मुझे समझ नहीं आया, क्या आप कहना चाह रहे हैं कि आपने फिगारो में लेख लिखा है?" डचेस ने जानबूझकर ऐसी बात करने की कोशिश की जिसमें उनकी कोई दिलचस्पी नहीं थी। "चलो, बेसिन, तुम इसे बाद में पढ़ लेना।" "नहीं, ड्यूक अपनी बड़ी दाढ़ी के साथ अखबार पर ऐसे बहुत अच्छे लग रहे हैं," गिल्बर्ट ने कहा। "मैं घर पहुँचते ही इसे पढ़ लूँगी।" “हाँ, अब जब सब लोग दाढ़ी मुंडवा लेते हैं, तो वो दाढ़ी रखते हैं,” डचेस ने कहा। “वो कभी दूसरों की तरह नहीं करते। जब हमारी शादी हुई थी, तब उन्होंने न सिर्फ अपनी दाढ़ी बल्कि मूंछें भी मुंडवा ली थीं। जो किसान उन्हें जानते भी नहीं थे, उन्हें लगा कि वो फ्रांसीसी नहीं हो सकते। उस समय उन्हें प्रिंस डेस लाउम्स कहा जाता था।” “क्या अब भी कोई प्रिंस डेस लाउम्स हैं?” गिलबर्ट ने पूछा, जिन्हें उन लोगों से जुड़ी हर बात में दिलचस्पी थी जिन्होंने इतने सालों तक उनके सामने झुकने से इनकार कर दिया था। “नहीं!” डचेस ने उदास,

स्नेह भरी निगाहों से जवाब दिया। “कितना प्यारा खिताब! फ्रांस के सबसे बेहतरीन खिताबों में से एक!” गिलबर्ट ने कहा, जैसे घड़ी की सुई घंटे बजाती है, वैसे ही कुछ बुद्धिमान लोगों के होंठों से एक खास तरह की सामान्यता स्वाभाविक रूप से निकल आती है। "हाँ, सचमुच, मुझे भी इसका अफ़सोस है। बेसिन चाहता था कि उसकी बहन का बेटा यह उपाधि ग्रहण करे, लेकिन यह एक ही बात नहीं है; आख़िरकार, यह संभव है, क्योंकि यह ज़रूरी नहीं कि सबसे बड़ा बेटा ही हो, उपाधि छोटे भाई को भी मिल सकती है। मैं आपको बता रही थी कि उन दिनों बेसिन क्लीन शेव्ड रहता था; एक दिन, एक तीर्थयात्रा पर— आपको याद है ना, मेरे प्रिय," वह अपने पति की ओर मुड़ी, "पैरे-ले- मोनियल की वह तीर्थयात्रा—मेरे बहनोई चार्लस, जिन्हें हमेशा किसानों से बात करना अच्छा लगता है, एक-एक करके पूछ रहे थे: 'आप कहाँ से आए हैं?' और क्योंकि वे बहुत उदार हैं, वे उन्हें कुछ देते, उन्हें पीने के लिए ले जाते। क्योंकि मेमे से ज़्यादा सरल और अभिमानी कोई नहीं था। आप देखेंगे कि वे किसी डचेस के सामने झुकने से इनकार कर देते हैं, जिसे वे डचेस के योग्य नहीं समझते, और एक कुत्ते-पालक की तारीफ़ों की बौछार कर देते हैं। इसलिए, मैंने बेसिन से कहा: 'आओ, बेसिन, तुम भी उनसे कुछ कहो।'" मेरे पति, जो हमेशा बहुत रचनात्मक नहीं होते—" "धन्यवाद, ओरियान," ड्यूक ने मेरे लेख को पढ़ते हुए, जिसमें वे मग्न थे, बिना रुके कहा — "एक किसान के पास गए और अपने भाई के प्रश्न को हूबहू दोहराया: 'तुम कहाँ से आए हो?' 'मैं लेस लाउम्स से हूँ।' 'तुम लेस लाउम्स से हो। अरे, मैं तुम्हारा राजकुमार हूँ।' तब किसान ने बेसिन के शांत चेहरे की ओर देखा और उत्तर दिया: ''यह सच नहीं है। तुम एक अंग्रेज हो।'" ** डचेस द्वारा सुनाई गई इन कहानियों में, प्रिंस डेस लाउम्स जैसी महान और प्रतिष्ठित उपाधियाँ, अपने मूल स्वरूप

और स्थानीय रंग में, अपने वास्तविक स्थान पर पहुँचती हुई दिखाई देती हैं, जैसे कुछ धार्मिक पुस्तकों में उस समय की भीड़ के बीच, बोर्जेस का ऊँचा शिखर दिखाई देता है।
[**अनुवादक की टिप्पणी: श्रीमती डी गुएरमांटेस यह भूल जाती हैं कि वह पहले ही प्रिंस डी लियोन के खर्चे पर यह कहानी सुना चुकी हैं। देखें 'कैदी', पृष्ठ 39।]
कुछ कार्ड उसके पास लाए गए जिन्हें एक नौकर ने अभी-अभी दरवाजे पर छोड़ा था। "मुझे समझ नहीं आ रहा कि उसे क्या हो गया है, मैं उसे जानती भी नहीं। इसके लिए मैं तुम्हारी आभारी हूँ, बेसिन। वैसे, इन सब लोगों से तुम्हें कोई फायदा नहीं हुआ, मेरी प्यारी," और गिलबर्ट की ओर मुड़कर उसने कहा: "मैं सचमुच नहीं जानती कि तुम्हें कैसे समझाऊँ कि वह कौन है, तुमने निश्चित रूप से उसका नाम कभी नहीं सुना होगा, वह खुद को लेडी रूफस इज़राइल कहती है।" गिलबर्टे का चेहरा शर्म से लाल हो गया: "मैं उसे नहीं जानती," उसने कहा (जो और भी झूठ था क्योंकि लेडी इज़राइल और स्वान के बीच स्वान की मृत्यु से दो साल पहले सुलह हो गई थी और स्वान गिलबर्टे को उसके ईसाई नाम से पुकारती थी), "लेकिन उसके बारे में सुनकर मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि आप किसकी बात कर रही हैं।" सच तो यह था कि गिलबर्टे बहुत घमंडी हो गई थी। उदाहरण के लिए, एक दिन एक दूसरी लड़की ने, चाहे दुर्भावना से या शिष्टाचार की कमी के कारण, उससे उसके असली पिता का नाम पूछा - न कि उसके दत्तक पिता का - और जैसे अपनी बात को थोड़ा नरम करने के लिए, उसने 'सौआन' के बजाय 'स्वान' कहा, जो कि जल्द ही उसे एहसास हुआ कि एक बुरा बदलाव था, क्योंकि इससे अंग्रेजी मूल का यह नाम जर्मन उपनाम बन गया। और उसने यहाँ तक कह दिया, खुद को नीचा दिखाकर खुद को ऊँचा दिखाने

की कोशिश में: "मेरे जन्म के बारे में तरह-तरह की कहानियाँ सुनाई गई हैं, लेकिन बेशक मुझे इसके बारे में कुछ नहीं पता।" गिलबर्ट को अपने माता-पिता के जीवन के प्रति ऐसे रवैये पर शर्मिंदगी जरूर महसूस हुई होगी (क्योंकि श्रीमती स्वान भी उनके लिए एक आदर्श और अच्छी माँ थीं)। लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि इस रवैये के कुछ तत्व निस्संदेह उनके माता-पिता से ही लिए गए थे, क्योंकि हम अपने व्यक्तित्व का पूर्ण निर्माण स्वयं नहीं करते। माँ में मौजूद अहंकार की एक निश्चित मात्रा के साथ, पिता के परिवार में निहित एक अलग प्रकार का अहंकार भी जुड़ जाता है, जिसका अर्थ यह नहीं है कि यह अहंकार उसमें जुड़ता है, न ही यह किसी गुणक के रूप में कार्य करता है, बल्कि यह एक नए, कहीं अधिक मजबूत और दुर्जेय अहंकार को जन्म देता है। और, संसार की उत्पत्ति के बाद से बीते समय में, जिन परिवारों में किसी दोष का एक रूप विद्यमान रहा है, उनका उन परिवारों से विवाह होता रहा है जिनमें वही दोष दूसरे रूप में विद्यमान रहा है, जिससे संतानों में उस दोष की एक विशिष्ट रूप से जटिल और घृणित विविधता उत्पन्न हुई है। इस दौरान संचित अहंकार (वर्तमान में हम इसी दोष पर ध्यान केंद्रित करें तो) इतना प्रबल हो जाता कि संपूर्ण मानव जाति का विनाश हो जाता, यदि यह रोग स्वयं ही प्राकृतिक अवरोध उत्पन्न न करता, जो इसे इसके वास्तविक आयामों तक सीमित करने की शक्ति रखते हैं, ठीक वैसे ही जैसे वे अवरोध जो अनंत कीटों के प्रसार को हमारे ग्रह को नष्ट करने से रोकते हैं, पौधों के एकलिंगी निषेचन को वनस्पति जगत के विलुप्त होने से रोकते हैं, इत्यादि। समय-समय पर कोई सद्गुण इस अहंकार के साथ मिलकर एक नई और निस्वार्थ शक्ति का सृजन करता है।

पीढ़ियों के क्रम में, नैतिक रासायनिक प्रक्रिया द्वारा स्थिर होकर अत्यधिक दुर्जेय तत्वों को अप्रभावी बनाने के अनगिनत तरीके हैं, जो पारिवारिक इतिहास को एक रोमांचक विविधता प्रदान करते हैं। इसके अलावा, गिलबर्ट में निहित इन संचित अहंकारों के साथ-साथ माता-पिता का कोई मनमोहक सद्गुण भी विद्यमान है; यह क्षण भर के लिए एक विराम की तरह प्रतीत होता है, पूरी ईमानदारी के साथ अपनी मार्मिक भूमिका निभाता है।
इसमें कोई शक नहीं कि गिलबर्टे हमेशा इतनी खुलकर बात नहीं करती थी जितना कि उसने यह इशारा करके कहा कि वह शायद किसी महान व्यक्ति की नाजायज बेटी है, लेकिन आम तौर पर वह अपनी असलियत छुपाती थी। शायद उसके लिए इसे स्वीकार करना बहुत कष्टदायक था और वह चाहती थी कि लोग इसके बारे में दूसरों से जानें। शायद वह सचमुच मानती थी कि वह इसे छुपा रही है, उस अनिश्चित विश्वास के साथ जो एक ही समय में संदेह भी नहीं है, जो उस बात की संभावना बनाए रखता है जिसे हम सच मानना चाहते हैं, जिसका उदाहरण मुसेट ने ईश्वर में आशा की बात करते हुए दिया है। "मैं उसे व्यक्तिगत रूप से नहीं जानती," गिलबर्टे ने आगे कहा। क्या आखिरकार, जब उसने खुद को मैडम डी फोर्शेविल कहा, तो उसे यह उम्मीद थी कि लोग यह नहीं जानेंगे कि वह स्वान की बेटी है? शायद कुछ लोग, जिनके बारे में उसे उम्मीद थी कि समय के साथ वे सभी लोग बन जाएंगे। वह इस समय उनकी संख्या के बारे में किसी भ्रम में नहीं हो सकती थी, और निस्संदेह जानती थी कि बहुत से लोग फुसफुसा रहे होंगे: "क्या वह स्वान की बेटी नहीं है?" लेकिन उसे यह जानकारी केवल उसी तरह मिली थी, जैसे किसी पार्टी में जाते समय हताशा में आत्महत्या करने वाले लोगों के बारे में मिलती है। यानी, यह एक दूर की और अस्पष्ट जानकारी थी, जिसके बदले हम प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित

अधिक सटीक ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश भी नहीं करते। इन वर्षों के दौरान, गिलबर्ट कम से कम, उस तरह के शुतुरमुर्ग की श्रेणी में आती थी, जो अपना सिर छिपा लेता है, इस उम्मीद में कि उसे कोई देख न ले, जिसे वह लगभग असंभव मानती है, बल्कि इस उम्मीद में कि दूसरे लोग उसे न देख लें, जो उसे अच्छा लगता है और उसे बाकी सब कुछ किस्मत पर छोड़ने में सक्षम बनाता है। जैसे दूरी चीजों को छोटा, अधिक अनिश्चित और कम खतरनाक बना देती है, गिलबर्ट उस समय दूसरों के पास न रहना पसंद करती थी, जब उन्हें पता चला कि वह जन्म से स्वान वंश की सदस्य है।
और जैसे हम उन लोगों के करीब होते हैं जिनकी हम कल्पना करते हैं, जैसे हम अखबार पढ़ते लोगों की कल्पना कर सकते हैं, गिलबर्टे ने अखबारों में अपना नाम मैडम डी फोर्शेविल छपवाना पसंद किया। यह सच है कि जिन लेखों के लिए वह स्वयं जिम्मेदार थीं, यानी अपने पत्रों के लिए, उन्होंने कुछ समय तक अपने हस्ताक्षर 'जी. एस. फोर्शेविल' रखकर इस बदलाव को टाला। इस हस्ताक्षर में असली पाखंड 'स्वान' शब्द के अन्य अक्षरों को दबाने से नहीं, बल्कि 'गिलबर्टे' शब्द के अक्षरों को दबाने से ज़ाहिर हुआ। दरअसल, इस सीधे-सादे ईसाई नाम को सिर्फ 'जी' में बदलकर, मैडम डी फोर्शेविल ने अपने दोस्तों को यह जताने की कोशिश की कि 'स्वान' नाम के साथ किया गया ऐसा ही छोटा रूप सिर्फ संक्षिप्तीकरण की ज़रूरत थी। वास्तव में, उन्होंने 'एस' को विशेष महत्व दिया और उसे एक लंबी पूंछ की तरह बना दिया जो 'जी' के ऊपर से गुज़रती थी, लेकिन ऐसा लगता था मानो वह क्षणिक हो और उस पूंछ की तरह गायब हो जाए जो बंदर में अभी भी लंबी है, लेकिन मनुष्य में अब नहीं है।
इसके बावजूद, स्वान के घमंड में भी बुद्धिमत्तापूर्ण जिज्ञासा झलकती थी। मुझे याद है कि उसी दोपहर, उन्होंने श्रीमती डी

गुएरमांटेस से पूछा कि क्या वह श्री डू लाउ से मिल सकती हैं, और जब डचेस ने जवाब दिया कि वह बीमार हैं और कभी बाहर नहीं जाते, तो गिलबर्ट ने पूछा कि वह किस तरह के व्यक्ति थे, क्योंकि उन्होंने थोड़ा शर्माते हुए कहा कि उन्होंने उनके बारे में बहुत कुछ सुना था। (मार्क्विस डू लाउ वास्तव में स्वान के विवाह से पहले उनके सबसे घनिष्ठ मित्रों में से एक थे, और गिलबर्ट ने शायद उन्हें देखा भी होगा, लेकिन उस समय जब उन्हें ऐसे लोगों में कोई दिलचस्पी नहीं थी।) उन्होंने पूछा, "क्या श्री डी ब्रेउटे या प्रिंस डी एग्रीजेंट उनसे बिल्कुल मिलते-जुलते होंगे?" श्रीमती डी गुएरमांटेस ने कहा, "अरे! बिलकुल नहीं," जिन्हें इन प्रांतीय अंतरों की गहरी समझ थी और जो गंभीर चित्र बनाती थीं, लेकिन उनकी कठोर, सुरीली आवाज, उनकी बैंगनी आंखों की कोमल चमक के नीचे, उनमें झलकती थी। नहीं, बिलकुल नहीं। डू लाऊ पेरिगोर्ड के सज्जन थे, आकर्षक, अपने प्रांत के सभी अच्छे शिष्टाचारों और औपचारिकता से दूर रहने वाले। गुएरमांटेस में, जब इंग्लैंड के राजा हमारे यहाँ आते थे, जिनके साथ डू लाऊ के बहुत अच्छे संबंध थे, तो हम लोग शिकार से लौटने के बाद थोड़ा भोजन किया करते थे… यह वह समय था जब डू लाऊ अपने कमरे में जाकर अपने जूते उतारकर ऊनी चप्पलें पहनने की आदत रखते थे। खैर, राजा एडवर्ड और सभी ग्रैंड ड्यूक्स की उपस्थिति से उन्हें ज़रा भी परेशानी नहीं होती थी, वे ऊनी चप्पलों में ही गुएरमांटेस के बड़े हॉल में आते थे, उन्हें लगता था कि वे मार्क्विस डू लाऊ डी'ओलेमैन्स हैं जिन्हें इंग्लैंड के राजा के लिए खुद को परेशान करने की कोई ज़रूरत नहीं है। वे और वह आकर्षक क्वासिमोडो डी ब्रेटुइल, ये दोनों ही मुझे सबसे ज़्यादा पसंद थे। वे तो… (वह “आपके पिता” कहने ही वाली थी कि रुक गई) "नहीं, ग्रि-ग्रि या ब्रेओटे से तो

कोई समानता नहीं है। वह पेरिगोर्ड का असली रईस था। वैसे भी, मेमे ने सेंट-साइमन के एक पन्ने का हवाला दिया है जिसमें मार्क्विस डी'ओलेमैन्स का ज़िक्र है, वह बिल्कुल उसी की तरह दिखता है।" मैंने चित्र के शुरुआती शब्द दोहराए: "श्री डी'ओलेमैन्स, जो पेरिगोर्ड के कुलीनों में अपने जन्म और योग्यता के कारण बहुत प्रतिष्ठित व्यक्ति थे, और वहाँ रहने वाले हर व्यक्ति द्वारा एक सर्वमान्य मध्यस्थ के रूप में माने जाते थे, जिनसे उनकी ईमानदारी, क्षमता और सौम्य व्यवहार के कारण हर कोई सलाह लेता था, मानो वे अपने प्रांत के राजा हों।" "हाँ, वह बिल्कुल वैसा ही दिखता है," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने कहा, "खासकर इसलिए क्योंकि डू लाउ हमेशा मुर्गे की तरह लाल रहता था।" "हां, मुझे वह वर्णन उद्धृत करते हुए याद है," गिलबर्ट ने कहा, लेकिन यह नहीं बताया कि यह उनके पिता द्वारा उद्धृत किया गया था, जो, जैसा कि हम जानते हैं, सेंट-साइमन के बहुत बड़े प्रशंसक थे।
वह एक और कारण से प्रिंस डी'एग्रीजेंट और एम. डी ब्रेउटे के बारे में बात करना पसंद करती थी। प्रिंस डी'एग्रीजेंट आरागॉन राजवंश से वंशानुगत राजकुमार थे, जबकि उनके लॉर्डशिप पोइटेविन थे। जहाँ तक उनके देश के घर की बात है, यानी जिस घर में वे रहते थे, वह उनके अपने परिवार की संपत्ति नहीं थी, बल्कि उनकी माँ के पूर्व पति से उन्हें मिली थी, और मार्टिनविले और गुएरमांटेस के लगभग बीच में स्थित थी। इसलिए गिलबर्ट उनके और एम. डी ब्रेउटे के बारे में ऐसे बात करती थी जैसे वे गाँव के पड़ोसी हों जो उसे अपने पुराने घर की याद दिलाते हों। सच कहें तो इस रवैये में कुछ बनावटीपन था, क्योंकि एम. डी ब्रेउटे से उसकी जान-पहचान पेरिस में ही हुई थी, कॉम्टेस मोले के माध्यम से, हालाँकि वे उसके पिता

के पुराने मित्र थे। जहाँ तक टैनसनविले के आसपास के ग्रामीण इलाकों के बारे में बात करने में उसकी खुशी की बात है, वह शायद सच्ची थी। कुछ लोगों के लिए, घमंड उन स्वादिष्ट पेय पदार्थों के समान होता है जिनमें वे पौष्टिक पदार्थ मिलाते हैं। गिलबर्टे को किसी फैशनेबल महिला में दिलचस्पी इसलिए हुई क्योंकि उसके पास नैटियर की अनमोल किताबें और चित्र थे, जिन्हें मेरी पूर्व मित्र शायद राष्ट्रीय पुस्तकालय या लूव्र में देखने की जहमत भी नहीं उठाती। और मुझे लगता है कि निकटता के बावजूद, टैन्सनविले का चुंबकीय प्रभाव गिलबर्टे को श्रीमती सैज़ेरैट या श्रीमती गौपिल की तुलना में एम. डी'एग्रीजेंट की ओर कम आकर्षित करता। "ओह! बेचारे बाबल और बेचारे ग्रि-ग्रि," श्रीमती डी गुएरमांटेस ने कहा, "उनकी हालत डु लाउ से कहीं ज्यादा खराब है, मुझे डर है कि वे दोनों ज्यादा दिन जीवित नहीं रहेंगे।"
जब एम. डी गुएरमांटेस ने मेरा लेख पढ़ लिया, तो उन्होंने मेरी प्रशंसा की, लेकिन साथ ही कुछ स्पष्ट शब्द भी कहे। उन्होंने मेरी शैली के थोड़े घिसे-पिटे स्वरूप पर खेद व्यक्त किया, जिसमें 'शेटोब्रिएंड के पुराने गद्य की तरह जोर और रूपक' थे; वहीं दूसरी ओर उन्होंने मुझे 'अपने काम में व्यस्त रखने' के लिए दिल खोलकर बधाई दी: "मुझे ऐसे व्यक्ति पसंद हैं जो अपने दस हाथों से कुछ काम करें। मुझे वे निकम्मे लोग पसंद नहीं जो हमेशा खुद को बहुत बड़ा समझते हैं या हंगामा करते रहते हैं। मूर्खों की ऐसी नस्ल!"
फैशन की दुनिया के तौर-तरीकों को अत्यंत तेज़ी से अपना रही गिलबर्ट ने घोषणा की कि उन्हें एक लेखक की मित्र होने पर कितना गर्व होगा। "आप कल्पना कर सकते हैं कि मैं लोगों को बताऊंगी कि मुझे आपसे परिचित होने का सौभाग्य और सम्मान प्राप्त है।"

“क्या आप कल हमारे साथ ओपेरा-कॉमिक चलना चाहेंगे?” डचेस ने मुझसे पूछा; और मुझे लगा कि शायद मैं उसी बॉक्स में बैठूँगी जहाँ मैंने उन्हें पहली बार देखा था, और जो मुझे तब नीरीड्स के समुद्री साम्राज्य की तरह दुर्गम लगा था। लेकिन मैंने उदास स्वर में उत्तर दिया: “नहीं, मैं अभी थिएटर नहीं जा रही हूँ; मैंने एक ऐसी दोस्त को खो दिया है जिससे मेरा गहरा लगाव था।” यह कहते हुए मेरी आँखों में लगभग आँसू आ गए, फिर भी, पहली बार मुझे अपने शोक के बारे में बात करने में एक तरह का सुख महसूस हुआ। इसी क्षण से मैंने अपने सभी दोस्तों को लिखना शुरू किया कि मैंने अभी-अभी बहुत बड़ा दुख झेला है, और अब मैं उस दुख को महसूस करना बंद कर रही हूँ।
गिलबर्ट के जाने के बाद, श्रीमती डी गुएरमांटेस ने मुझसे कहा: "तुम मेरी बात नहीं समझीं, मैं तुम्हें यह संकेत देने की कोशिश कर रही थी कि स्वान का ज़िक्र मत करो।" और जब मैंने माफ़ी मांगते हुए कहा: "पर मैं समझती हूँ। मैं खुद उसका ज़िक्र करने ही वाली थी, बस समय रहते रुक गई, यह बहुत बुरा होता, सौभाग्य से मैंने अपनी ज़बान पर लगाम लगा ली। तुम्हें पता है, यह बहुत उबाऊ है," उन्होंने अपने पति से कहा, मेरी गलती को कम करने की कोशिश करते हुए यह जताने की कोशिश की कि मैं भी सबकी तरह एक ऐसी प्रवृत्ति के आगे झुक गई थी, जिसका विरोध करना मुश्किल है। "तुम मुझसे क्या उम्मीद करती हो?" ड्यूक ने जवाब दिया। "तुम्हें बस उनसे कहना है कि वे उन चित्रों को वापस ऊपर ले जाएं, क्योंकि वे तुम्हें स्वान की याद दिलाते हैं। अगर तुम स्वान के बारे में नहीं सोचोगी, तो तुम उसके बारे में बात नहीं करोगी।"
अगले दिन मुझे बधाई के दो पत्र मिले, जिनसे मैं बहुत हैरान हुआ। एक पत्र श्रीमती गौपिल का था, जिनसे मैं कई वर्षों से नहीं मिला

भूलें।" उनका स्वभाव अपरिवर्तित रहा, लेकिन उनकी शैली कम दिखावटी हो गई, जैसा कि कुछ लोगों के साथ होता है जो अपनी आदतों को छोड़ देते हैं, जब वे प्रतीकवादी कविता लिखना छोड़कर अखबारों के लिए धारावाहिक लिखने लगते हैं।
उनकी चुप्पी से खुद को तसल्ली देने के लिए मैंने श्रीमती गौपिल का पत्र दोबारा पढ़ा; लेकिन उसमें गर्माहट की कमी थी, क्योंकि अगर कुलीन वर्ग कुछ खास औपचारिकताओं का इस्तेमाल करता है जो शुरुआती 'महाशय' और अंत में 'विशेष भाव' के बीच एक स्पष्ट सीमा रेखा में सिमट जाती हैं, तो खुशी और प्रशंसा के स्वर फूलों की तरह खिल उठते हैं और उनकी मनमोहक सुगंध सभी बाधाओं को पार कर जाती है। लेकिन मध्यमवर्गीय रूढ़िवादिता पत्रों की विषयवस्तु को भी 'आपकी योग्य सफलता' या ज़्यादा से ज़्यादा 'आपकी महान सफलता' के जाल में लपेट देती है। अपनी परवरिश के प्रति निष्ठावान और अपने सम्मानजनक वस्त्रों में जकड़ी हुई देवरानी- जेठानी सोचती हैं कि अगर उन्होंने सिर्फ 'मेरी हार्दिक शुभकामनाएं' लिखा है तो उन्होंने अपनी अत्यधिक उत्साहपूर्ण अभिव्यक्ति कर दी है। 'मां मेरे साथ हैं' एक ऐसा विशेषण है जिसका वे शायद ही कभी इस्तेमाल करती हैं।
मुझे श्रीमती गौपिल के पत्र के साथ-साथ एक और पत्र भी मिला, लेकिन लेखक का नाम मुझे ज्ञात नहीं था। लिखावट अनपढ़ थी, लेकिन शैली आकर्षक थी। पत्र लिखने वाले का पता न लगा पाने के कारण मैं बहुत निराश थी।
जब मैं खुद से यह सवाल कर रहा था कि क्या बर्गोट को यह लेख पसंद आया होगा, तभी श्रीमती डी फोर्शेविल ने जवाब दिया कि उन्हें यह लेख बहुत पसंद आया होगा और वे इसे ईर्ष्या किए बिना नहीं पढ़

सकते थे। लेकिन उन्होंने मुझे यह बात तब बताई जब मैं सो रहा था: यह एक सपना था।
हमारे लगभग सभी सपने उन सवालों का जवाब देते हैं जो हम खुद से पूछते हैं, जटिल कथनों के साथ, मंच पर कई पात्रों की प्रस्तुतियों के साथ, जो हालांकि किसी भी परिणाम तक नहीं पहुंचते हैं।
मैडम डी फोर्शेविल के बारे में सोचकर मुझे बहुत दुख हुआ। क्या? स्वान की बेटी, जो उसे गुएरमांटेस के घर पर देखना चाहते थे, जिनके लिए उन्होंने अपने महान मित्र को निमंत्रण देने से इनकार कर दिया था, अब वे अपनी मर्जी से उनसे मिलने गए थे। समय बीत चुका है, जो हमारे लिए सब कुछ बदल देता है, लोगों के बारे में जो कुछ हमें बताया गया है, उसके आधार पर एक नया व्यक्तित्व गढ़ देता है, उन लोगों में जिन्हें हमने लंबे समय से नहीं देखा है, इस दौरान हम खुद भी बदल गए हैं और नए स्वाद प्राप्त कर लिए हैं। मुझे याद आया कि स्वान इस लड़की को गले लगाते और चूमते हुए अक्सर कहते थे: "मेरी प्यारी, तुम्हारे जैसी संतान पाकर मुझे सुकून मिलता है; एक दिन जब मैं नहीं रहूंगा, अगर लोग तुम्हारे बेचारे पापा का जिक्र करेंगे, तो सिर्फ तुम्हारे लिए और तुम्हारी वजह से ही करेंगे।" अपनी मृत्यु के बाद अपनी बेटी में अपने जीवित रहने की एक डरपोक और चिंतित आशा की कल्पना करके स्वान उतनी ही बड़ी गलती कर बैठा था जितनी उस बूढ़े बैंकर ने की थी जिसने अपनी देखभाल में रखी एक युवती के पक्ष में वसीयत बनाई थी, जो बहुत ही अच्छे व्यवहार वाली थी, और खुद से कहता था कि वह उसके लिए एक महान मित्र से अधिक कुछ नहीं है, बल्कि वह उसकी स्मृति के प्रति वफादार रहेगी। उसने वास्तव में बहुत अच्छा व्यवहार किया, जबकि मेज के नीचे उसके पैर उस बूढ़े बैंकर के दोस्तों के पैरों को

बहुत पहले ही बिखर चुकी थीं और अस्थिर हो गई थीं। क्योंकि यदि उससे जुड़ी कई यादों ने शुरुआत में उसकी मृत्यु के प्रति मेरे दुःख को जीवित रखने में मदद की थी, तो बदले में उस दुःख ने ही उन यादों को स्थिर कर दिया था। इसलिए मेरी भावनात्मक स्थिति में जो बदलाव आया, जो निस्संदेह धीरे-धीरे विस्मृति के निरंतर विघटन से दिन-प्रतिदिन अस्पष्ट रूप से तैयार हो रहा था, लेकिन अचानक समग्र रूप से साकार हुआ, उसने मुझे वह आभास दिया जो मुझे याद है कि मैंने उस दिन पहली बार महसूस किया था - एक शून्य का, मेरे विचारों के एक पूरे हिस्से के दमन का, जैसा कि एक व्यक्ति महसूस करता है जिसके मस्तिष्क में एक धमनी, लंबे समय से कमजोर होकर फट गई हो, जिससे उसकी स्मृति का एक पूरा हिस्सा समाप्त या लकवाग्रस्त हो गया हो।
मेरे दुख और उससे जुड़ी हर चीज़ के गायब हो जाने से मैं वैसे ही कमज़ोर हो गया, जैसे अक्सर किसी ऐसी बीमारी के ठीक होने से होता है जिसने हमारे जीवन में एक बड़ा स्थान ले रखा हो। इसमें कोई संदेह नहीं कि यादें हमेशा सच्ची नहीं होतीं, इसीलिए प्रेम शाश्वत नहीं होता, और इसीलिए जीवन हमारी कोशिकाओं के निरंतर नवीनीकरण से बना है। लेकिन यादों के मामले में, यह नवीनीकरण उस ध्यान के कारण धीमा हो जाता है जो एक ऐसे क्षण को रोक देता है और स्थिर कर देता है जो निश्चित रूप से बदलेगा। और चूंकि दुख और स्त्रियों के प्रति इच्छा दोनों के मामले में ऐसा ही होता है कि हम इसके बारे में सोचकर इसे बढ़ाते हैं, इसलिए बहुत सी अन्य चीजें करने का होना, पवित्रता की तरह, विस्मृति को आसान बना देना चाहिए।
एक अन्य प्रतिक्रिया के कारण (हालाँकि यह ध्यान भटकाने वाली बात थी—श्रीमती डी'एपोर्शविल की चाहत—जिसने मेरी विस्मृति को

अचानक स्पष्ट और प्रत्यक्ष बना दिया था), यदि यह तथ्य बना रहता है कि समय ही धीरे-धीरे विस्मृति लाता है, तो विस्मृति समय के बारे में हमारी धारणा को गहराई से बदलने में विफल नहीं होती। समय में भी दृष्टिगत त्रुटियाँ होती हैं, जैसे स्थान में होती हैं। काम करने की, बीते हुए समय की भरपाई करने की, अपने जीवन जीने के तरीके को बदलने की, या यूँ कहें कि जीना शुरू करने की, मुझमें मौजूद एक पुरानी प्रवृत्ति ने मुझे यह भ्रम दिया कि मैं आज भी उतना ही युवा हूँ जितना पहले था; फिर भी, मेरे जीवन में घटी सभी घटनाओं की स्मृति (और मेरे हृदय में घटी घटनाओं की भी, क्योंकि जब हम बहुत बदल जाते हैं, तो हमें लगता है कि हमारा जीवन लंबा हो गया है) अल्बर्टीन के जीवन के उन अंतिम महीनों के दौरान, मुझे एक वर्ष से कहीं अधिक लंबी प्रतीत हुई थी, और अब इतनी सारी चीजों का यह विस्मरण, मुझे हाल की घटनाओं से खालीपन की खाई से अलग कर रहा है, जिन्हें उन्होंने मुझे दूरस्थ बना दिया था, क्योंकि मेरे पास उन्हें भूलने के लिए 'समय' था, मेरी स्मृति में इसके खंडित, अनियमित अंतर्विन्यास द्वारा - समुद्र में घने कोहरे की तरह जो सभी स्थलों को मिटा देता है - मेरे समय की दूरियों की भावना को भ्रमित और नष्ट कर दिया, एक जगह संकुचित, दूसरी जगह विस्तारित, और मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि मैं अब चीजों से दूर हूँ, अब उनसे वास्तव में जितना था उससे कहीं अधिक करीब हूँ। और जैसे मेरे सामने फैले उन नए, अभी तक अनछुए स्थानों में, अल्बर्टीन के लिए मेरे प्रेम का कोई निशान नहीं था, ठीक वैसे ही जैसे बीते समय में, जिसे मैंने अभी-अभी पार किया था, मेरी दादी के लिए मेरे प्रेम का कोई निशान नहीं था, मेरा जीवन मुझे ऐसा प्रतीत हुआ - एक ऐसे कालखंड की तरह जिसमें, एक निश्चित अंतराल के बाद, पिछले काल को बनाए रखने वाली कोई भी चीज

अगले काल में नहीं बची थी - एक ऐसे व्यक्ति, एकरूप और स्थायी स्व के समर्थन से इतना रहित, भविष्य में इतना बेकार और अतीत में इतना लंबा, कि मृत्यु इसे यहीं या वहीं समाप्त कर सकती है, बिना इसे पूरी तरह से समाप्त किए, जैसे फ्रांसीसी इतिहास के उन पाठ्यक्रमों के साथ होता है जो वाक्पटुता की कक्षा में, पाठ्यक्रम या प्रोफेसर की सनक के अनुसार, 1830 की क्रांति पर, या 1848 की क्रांति पर, या द्वितीय साम्राज्य के अंत पर, अनायास ही रुक जाते हैं।
शायद तब जो थकान और पीड़ा मैं महसूस कर रहा था, वह इसलिए नहीं थी कि मैंने जिसे भूलने लगा था, उससे व्यर्थ प्रेम किया था, बल्कि इसलिए थी कि मैं नए, जीवंत लोगों, केवल सामाजिक व्यक्तियों, गुएरमांटे परिवार के दोस्तों की संगति में आनंद लेने लगा था, जिनका स्वयं में कोई महत्व नहीं था। शायद यह स्वीकार करना आसान था कि जिसे मैंने प्रेम किया था, वह कुछ समय बाद एक धुंधली स्मृति मात्र रह गई थी, बजाय इसके कि मैं अपने भीतर उस व्यर्थ गतिविधि को पुनः खोज लूँ जो हमें अपना समय उस मानवीय वनस्पति से सजाने में बर्बाद करने पर मजबूर करती है जो जीवित तो है लेकिन परजीवी है, जो मरने पर कुछ भी नहीं रह जाएगी, जो हमारे अब तक के सभी अनुभवों से परे है, फिर भी हमारा बातूनी, उदास, अभिमानी बुढ़ापा उसे आकर्षित करने का प्रयास करता है। अल्बर्टीन के बिना जीवन की संभावना को सहने में सक्षम नवोदित व्यक्ति मुझमें प्रकट हो चुका था, क्योंकि मैं श्रीमती डी गुएरमांटे के यहाँ बिना किसी वास्तविक पीड़ा के, शोक की भाषा में उसके बारे में बात कर पा रहा था। ये विचित्र व्यक्तित्व, जिनमें से प्रत्येक का एक अलग नाम होना था, उनके आने की संभावना ने, मेरी प्रेमिका के प्रति उनकी उदासीनता के कारण, मुझे हमेशा चिंतित किया था।

लिए इस बात का कोई महत्व नहीं होता कि जिस व्यक्ति की जगह हमने ली है, उसे हमारी नींद में हत्यारों के एक गिरोह से भागना पड़ा। निःसंदेह, इस स्वयं ने पुराने स्वयं से कुछ संपर्क बनाए रखा था, जैसे कोई मित्र, शोक से अप्रभावित होकर, घर आने वालों से शोक के उपयुक्त स्वर में इसके बारे में बात करता है, और समय-समय पर उस कमरे में लौटता है जहाँ उस विधुर को, जिसने उसे अपने लिए आने वाले लोगों से मिलने के लिए कहा है, अभी भी रोते हुए सुना जा सकता है। मैंने इस संपर्क को और भी गहरा कर लिया जब मैं एक क्षण के लिए फिर से अल्बर्टीन का पूर्व मित्र बन गया। लेकिन मैं पूरी तरह से एक नए व्यक्तित्व में विलीन होने की ओर अग्रसर था। ऐसा इसलिए नहीं है कि अन्य लोग मर जाते हैं, बल्कि इसलिए कि हम स्वयं मर रहे हैं। अल्बर्टीन के पास अपने मित्र को फटकारने का कोई कारण नहीं था। जो व्यक्ति उसका नाम हड़प रहा था, उसने तो बस उसे विरासत में प्राप्त किया था। हम जो याद रखते हैं उसके प्रति वफादार हो सकते हैं, लेकिन हम केवल वही याद रखते हैं जो हमने जाना है। मेरा नया स्वयं, पुराने की छाया में पलते-बढ़ते हुए, अक्सर दूसरे को अल्बर्टीन के बारे में बात करते हुए सुनता था; उस दूसरे स्वरूप के माध्यम से, उससे प्राप्त जानकारी के आधार पर, उसे लगा कि वह उसे जानती है, वह उसे आकर्षक पाती है, वह उससे प्यार करती है, लेकिन यह केवल एक अप्रत्यक्ष स्नेह था।
एक और व्यक्ति, एंड्री, जिसके लिए अल्बर्टीन के संदर्भ में विस्मृति की प्रक्रिया संभवतः उस समय अधिक तीव्र थी, और जिसने मुझे कुछ समय बाद स्वयं में उस प्रक्रिया द्वारा की गई एक नई प्रगति का एहसास कराया (और यह अंतिम विस्मृति से पहले के दूसरे चरण की मेरी स्मृति है)। मैं अल्बर्टीन की इस विस्मृति का उल्लेख करने से शायद ही बच सकता हूँ, क्योंकि यह, यदि एकमात्र

कारण नहीं, तो कम से कम मुख्य कारण तो नहीं, एंड्री और मेरे बीच हुई उस बातचीत का एक आवश्यक और महत्वपूर्ण कारण अवश्य था, जो मैंने पहले ही बताई है, जिसके लगभग छह महीने बाद हुई थी, और जिसमें उसके शब्द पिछली बार के शब्दों से बिल्कुल भिन्न थे। मुझे याद है कि यह मेरे कमरे में हुआ था क्योंकि उस क्षण मुझे उसके साथ अर्ध-शारीरिक संबंध बनाने में आनंद आ रहा था, क्योंकि मेरे छोटे समूह की लड़कियों के प्रति प्रेम ने एक सामूहिक रूप धारण कर लिया था और अब उसे पुनः प्राप्त कर लिया था, एक ऐसा प्रेम जो लंबे समय से उनके बीच अविभाजित था, और कुछ समय के लिए अल्बर्टीन की मृत्यु से पहले और बाद के महीनों के दौरान विशेष रूप से अल्बर्टीन से जुड़ा हुआ था।
हम एक और वजह से मेरे कमरे में थे, जिससे मुझे इस बातचीत की सही तारीख का अंदाज़ा लगाने में मदद मिली। बात यह थी कि मुझे अपार्टमेंट के बाकी हिस्सों से बाहर निकाल दिया गया था क्योंकि उस दिन मम्मी का दिन था। मम्मी का दिन होने के बावजूद, और कुछ हिचकिचाहट के बाद, मम्मी मैडम सज़ेरत के साथ दोपहर के भोजन पर चली गईं, यह सोचकर कि मैडम सज़ेरत हमेशा उबाऊ लोगों से मिलवाने का कोई न कोई तरीका निकाल लेती थीं, इसलिए वह बिना किसी आनंद को खोए समय पर घर लौट सकेंगी। और वह सचमुच समय पर और बिना किसी पछतावे के लौट आईं, क्योंकि मैडम सज़ेरत के पास केवल सबसे कठोर लोग ही थे जो उनकी उस खास आवाज़ से तुरंत जम जाते थे जो वह मेहमानों के आने पर अपनाती थीं, जिसे मम्मी उनकी बुधवार वाली आवाज़ कहती थीं। फिर भी, मेरी माँ उससे बेहद स्नेह करती थी और उसकी गरीबी पर दुखी थी - जो उसके पिता की फिजूलखर्ची का परिणाम थी, जो डचेस डी एक्स के कारण बर्बाद हो गए थे... एक ऐसी गरीबी जिसने उसे पूरे साल कॉम्ब्रे में रहने के लिए मजबूर किया, कुछ

हफ्तों के लिए पेरिस में अपने चचेरे भाई के घर और हर दस साल में एक बड़ी 'मनोरंजन यात्रा' के लिए।
मुझे याद है कि इससे एक दिन पहले, मेरे द्वारा महीनों से दोहराए जा रहे अनुरोध पर, और क्योंकि राजकुमारी हमेशा उनसे आने की विनती करती रहती थीं, माँ प्रिंसेस डी पार्म से मिलने गई थीं, जो स्वयं कभी मिलने नहीं आती थीं, और जिनके घर पर लोग आमतौर पर अपना नाम लिखकर ही संतुष्ट हो जाते थे, लेकिन उन्होंने मेरी माँ के उनसे मिलने आने पर जोर दिया था, क्योंकि नियमों और विनियमों के अनुसार उनका हमारे पास आना संभव नहीं था। मेरी माँ बहुत गुस्से में घर लौटी थीं: "तुमने मुझे एक बेकार काम पर भेज दिया," उन्होंने मुझसे कहा, "प्रिंसेस डी पार्म ने मुश्किल से ही मेरा अभिवादन किया, वह बिना मेरी तरफ ध्यान दिए उन महिलाओं की ओर मुड़ गईं जिनसे वह बात कर रही थीं, और दस मिनट बाद भी, जब उन्होंने मुझसे एक शब्द भी नहीं कहा, तो मैं बिना उनका हाथ मिलाए ही चली गई। मुझे बहुत गुस्सा आया; हालाँकि, जाते समय दरवाजे पर मेरी मुलाकात डचेस डी गुएरमांटेस से हुई, जो बहुत दयालु थीं और उन्होंने तुम्हारे बारे में मुझसे बहुत बातें कीं। अल्बर्टीन के बारे में उन्हें बताना कितना अजीब विचार था। उन्होंने मुझे बताया कि तुमने उनसे कहा था कि उनकी मृत्यु से तुम्हें कितना दुख हुआ था। मैं अब कभी प्रिंसेस डी पार्म के पास नहीं जाऊंगी। तुमने मुझे मूर्ख बना दिया है।"
खैर, अगले दिन, जैसा कि मैंने बताया, मेरी माँ घर पर थीं, एंड्री मुझसे मिलने आई। उनके पास ज़्यादा समय नहीं था, क्योंकि उन्हें गिज़ेल को बुलाने जाना था, जिनके साथ वे भोजन करना चाहती थीं। उन्होंने मुझसे कहा, "मैं उसकी कमियाँ जानती हूँ, लेकिन आख़िरकार वह मेरी सबसे अच्छी दोस्त है और वह इंसान है जिससे

मुझे सबसे ज़्यादा लगाव है।" और उन्हें इस बात से थोड़ी घबराहट भी हुई कि कहीं मैं उनसे उनके साथ भोजन करने की अनुमति न माँग लूँ। उन्हें लोगों से मिलने की बहुत इच्छा थी, और मेरे जैसा कोई तीसरा व्यक्ति, जो उन्हें अच्छी तरह जानता हो, उन्हें खुलकर बात करने से रोककर, उनके साथ भोजन करने का पूरा आनंद लेने से वंचित कर देगा।
मेरे मन में अल्बर्टीन की यादें इतनी धुंधली हो गई थीं कि अब उनसे मुझे कोई दुख नहीं होता था, बल्कि वे नई इच्छाओं की ओर एक संक्रमण मात्र थीं, जैसे कोई सुर किसी नए सुर में बदलाव का संकेत देता हो। और वास्तव में, क्षणिक कामुक सनक की संभावना को खारिज करते हुए, क्योंकि मैं अब भी अल्बर्टीन की यादों के प्रति वफादार था, मैं एंड्री के साथ होने से कहीं अधिक प्रसन्न था, जितना कि अल्बर्टीन के चमत्कारिक रूप से जीवित हो जाने से होता। क्योंकि एंड्री मुझे अल्बर्टीन के बारे में उससे कहीं अधिक बातें बता सकती थी, जितनी अल्बर्टीन ने स्वयं मुझे कभी बताई थीं। अब अल्बर्टीन से संबंधित समस्याएं मेरे मन में बनी हुई थीं, जबकि उसके प्रति मेरा स्नेह, शारीरिक और नैतिक दोनों, पहले ही समाप्त हो चुका था। और उसके जीवन के बारे में जानने की मेरी इच्छा, क्योंकि वह पहले की तुलना में कम नहीं हुई थी, अब उसकी उपस्थिति की आवश्यकता से कहीं अधिक थी। दूसरी ओर, यह विचार कि शायद किसी महिला के अल्बर्टीन के साथ संबंध थे, अब मेरे मन में उस महिला के साथ स्वयं संबंध बनाने की इच्छा के अलावा और कुछ नहीं जगाता था। मैंने एंड्री को यह बताया, और बोलते हुए उसे सहलाया। फिर, कुछ महीने पहले कही गई बातों से अपने भाषण को सामंजस्य बिठाने का जरा भी प्रयास किए बिना, एंड्री ने मुझसे एक दबी हुई मुस्कान के साथ कहा: "आह! हाँ, लेकिन आप एक पुरुष हैं।

इसलिए हम वो सब काम नहीं कर सकते जो मैं अल्बर्टीन के साथ किया करती थी।" और चाहे उसने यह सोचा हो कि इससे मेरी इच्छा (दिल की बात जानने की उम्मीद में, मैंने उससे कहा था कि मैं उस महिला के साथ संबंध बनाना चाहता हूँ जिसने अल्बर्टीन के साथ संबंध बनाए थे) या मेरा दुख बढ़ गया, या शायद उसने अपने आप से श्रेष्ठता की भावना को नष्ट कर दिया हो, जो उसे लगता था कि मैं महसूस करता हूँ क्योंकि अल्बर्टीन के साथ संबंध रखने वाला मैं अकेला ही था: "आह! हमने साथ में कई सुखद पल बिताए, वह बहुत स्नेही और भावुक थी। इसके अलावा, वह केवल मेरे साथ ही आनंद नहीं लेती थी। मैडम वर्दुरिन के यहाँ उसकी मुलाकात एक अच्छे लड़के, मोरेल से हुई थी। वे एक-दूसरे को तुरंत समझ गए। उसने (उसकी अनुमति से, क्योंकि उसे कुंवारी लड़कियाँ पसंद थीं) उसके लिए छोटी लड़कियाँ लाने का जिम्मा लिया। जैसे ही वह उन्हें अपने जाल में फंसा लेता, वह उन्हें छोड़ देता। और इस तरह उसने खुद को किसी शांत जगह पर युवा मछुआरों की लड़कियों, युवा धोबिनों को आकर्षित करने का जिम्मा लिया, जो किसी लड़के से प्यार कर बैठती थीं, लेकिन किसी लड़की की बात नहीं सुनती थीं। जैसे ही लड़की उसके वश में आ जाती, वह उन्हें छोड़ देता। नियंत्रण में रहते हुए, वह उसे एक सुरक्षित स्थान पर ले जाता, जहाँ वह उसे अल्बर्टीन के हवाले कर देता। मोरेल को खोने के डर से, जो इस सब में शामिल था, लड़की हमेशा उसकी बात मानती थी, फिर भी वह उसे खो ही देती थी, क्योंकि वह भविष्य में होने वाली घटनाओं से डरा हुआ था और उसके लिए एक-दो बार ही काफी था, इसलिए वह झूठा पता छोड़कर चुपके से निकल जाता था। एक बार उसने हिम्मत करके अल्बर्टीन के साथ एक लड़की को कोर्लिविल के एक वेश्यालय में ले गया, जहाँ चार-पाँच महिलाओं ने एक साथ या बारी-बारी से उसके साथ संबंध बनाए। यही उसका जुनून था, और

भटकने के कारण, वो खबर हमारे सामने से गुज़र जाती है और हम खुद, जवाब में कहने वाली हज़ार बातों में उलझे रहते हैं, अपने साथ वालों को खुश करने की चाह में, कुछ पलों के लिए इस नए माहौल में किसी और की तरह व्यवहार करने लगते हैं, उन भावनाओं और दुखों से बचकर जिन्हें हमने इसमें प्रवेश करते समय त्याग दिया था और जो इस थोड़े समय के बाद फिर से लौट आएंगे, और हमारे पास उन खबरों को समझने का समय ही नहीं होता। फिर भी, अगर वो भावनाएं और दुख बहुत हावी हो जाते हैं, तो हम एक नए और क्षणिक संसार में विचलित होकर ही प्रवेश करते हैं, जिसमें अपने दुखों के प्रति अत्यधिक वफादार होने के कारण हम एक अलग व्यक्ति बनने में असमर्थ होते हैं, और तब जो शब्द हम सुनते हैं, वे तुरंत हमारे हृदय से जुड़ जाते हैं, जो निष्क्रिय नहीं रहा होता। लेकिन कुछ समय से अल्बर्टीन से संबंधित शब्द, एक वाष्पीकृत जहर की तरह, अपनी विषैली शक्ति खो चुके थे। वह मुझसे पहले ही बहुत दूर हो चुकी थी।
जैसे दोपहर में आकाश में धुंधली अर्धचंद्राकार आकृति देखकर कोई राहगीर मन ही मन कहता है, "यही तो है, विशाल चंद्रमा," वैसे ही मैंने भी मन ही मन कहा, "क्या, जिस सत्य की मैंने इतनी लगन से खोज की है, जिससे मैं इतना भयभीत रहा हूँ, वह बातचीत के दौरान बोले गए इन कुछ शब्दों से अधिक कुछ नहीं है, ऐसे शब्द जिन पर हम अपना पूरा ध्यान भी नहीं दे पाते क्योंकि हम अकेले नहीं हैं!" इसके अलावा, इसने मुझे गंभीर रूप से निराश कर दिया, मैं एंड्री के साथ ही थक चुका था। इतने विशाल सत्य के लिए, मैं और अधिक शक्ति समर्पित करना चाहता था; यह मेरे बाहर ही रहा, लेकिन ऐसा इसलिए था क्योंकि मैंने अभी तक इसे अपने हृदय में स्थान नहीं दिया था। हम चाहते हैं कि सत्य हमें नए संकेतों द्वारा प्रकट

हो, न कि उन वाक्यों द्वारा जिन्हें हम लगातार दोहराते रहते हैं। सोचने की आदत कभी-कभी हमें वास्तविकता को महसूस करने से रोकती है, हमें इसके प्रति उदासीन बना देती है, इसे केवल एक और विचार बना देती है।
ऐसा कोई विचार नहीं है जिसमें उसके खंडन की संभावना न हो, ऐसा कोई शब्द नहीं है जो अपने विपरीत अर्थ का संकेत न देता हो। किसी भी स्थिति में, यदि यह सब सच भी होता, तो उस प्रेमिका के जीवन की जाँच-पड़ताल करना कितना व्यर्थ होता, जो अब जीवित नहीं है—जो गहराई से ऊपर सतह पर तब आती है, जब हम उसका कोई उपयोग करने में असमर्थ हो चुके होते हैं। फिर, निस्संदेह किसी अन्य स्त्री के बारे में सोचते हुए—जिससे हम अब प्रेम करते हैं और जिसके संबंध में भी ऐसा ही परिवर्तन घटित हो सकता है (क्योंकि जिसे हम भूल चुके हैं, उसके बारे में हम अब सोचते भी नहीं)—हम हिम्मत हार बैठते हैं। हम स्वयं से कहते हैं: "काश वह जीवित होती!" हम स्वयं से कहते हैं: "काश वह, जो अभी जीवित है, यह सब समझ पाती; और यह भी कि जब वह मर जाएगी, तब मुझे वह सब कुछ ज्ञात हो जाएगा जो वह मुझसे छिपा रही है।" परंतु यह एक दुष्चक्र है। यदि मैं अल्बर्टिन को पुनः जीवित कर पाता, तो उसका तात्कालिक परिणाम यह होता कि एंड्री मुझसे कुछ भी प्रकट न करती। यह ठीक वैसा ही है जैसा कि वह चिर-परिचित कथन: "जब मैं तुमसे प्रेम करना छोड़ दूँगी, तब तुम्हें पता चलेगा कि कैसा लगता है"—जो एक ओर तो अत्यंत सत्य प्रतीत होता है, और दूसरी ओर उतना ही बेतुका; क्योंकि वास्तव में, यदि हम प्रेम-बंधन से मुक्त हो चुके होते, तो हमें बहुत कुछ ज्ञात हो सकता था—परंतु तब तक हमारे मन में पूछताछ करने का विचार ही शेष नहीं रहता। यह स्थिति ठीक वैसी ही है। क्योंकि जिस स्त्री से हम पुनः मिलते हैं—जब हम उससे प्रेम करना छोड़ चुके

होते हैं—यदि वह हमें सब कुछ बता भी देती है, तो तथ्य यह है कि या तो वह अब 'वह' नहीं रही, या फिर 'हम' अब 'हम' नहीं रहे: वह व्यक्ति, जो कभी प्रेम में था, अब अस्तित्वहीन हो चुका है। वहाँ भी मृत्यु का आगमन हो चुका है, और उसने सब कुछ सहज तथा अनावश्यक बना दिया है। मैंने इन विचारों का अनुसरण करते हुए यह परिकल्पना स्वीकार की कि एंड्री सत्य ही कह रही थी—जो कि संभव भी था—और उसे मेरे समक्ष निष्कपट होने की प्रेरणा ठीक इसी कारण मिली थी कि अब उसके मेरे साथ संबंध स्थापित हो चुके थे; और यह प्रेरणा उसके स्वभाव के उस 'सेंट-एंड्री-डेस-चैम्प्स' वाले पहलू से मिली थी, जिसे अल्बर्टिन ने भी, प्रारंभ में, मेरे समक्ष प्रदर्शित किया था। इस संदर्भ में उसे इस तथ्य से भी बल मिला कि अब उसे अल्बर्टिन का कोई भय नहीं था; क्योंकि अन्य व्यक्तियों का 'वास्तविक अस्तित्व'—उनकी मृत्यु के उपरांत—हमारे मन में केवल कुछ ही समय तक जीवित रह पाता है; और कुछ वर्षों के पश्चात् वे उन प्राचीन धर्मों के देवताओं के समान हो जाते हैं, जिनका हम बिना किसी भय के अपमान कर सकते हैं—क्योंकि लोगों ने उनके अस्तित्व में विश्वास करना छोड़ दिया होता है। लेकिन यह बात कि एंड्री अब अल्बर्टिन की असलियत पर यकीन नहीं करती थी, इसका मतलब यह हो सकता है कि उसे अब कोई डर नहीं था (सिवाय इसके कि वह कोई ऐसा राज़ खोल दे जिसे न बताने का उसने वादा किया था) कि वह कोई ऐसी झूठी कहानी गढ़ ले जिससे उसके कथित साथी की पिछली ज़िंदगी पर कलंक लगे। क्या डर की इस गैर-मौजूदगी ने उसे, जिस तरह वह बोल रही थी, सच बताने की इजाज़त दी थी—या फिर कोई झूठ गढ़ने की इजाज़त दी थी—अगर, किसी वजह से, उसे लगा हो कि मैं बहुत खुश और घमंडी हूँ, और वह मुझे दुख पहुँचाना चाहती हो? शायद मुझे देखकर उसे कुछ चिढ़ होती थी (जो तब तक दबी रहती थी जब तक वह देखती थी कि

चाहती थी; जैसे ही उसे पता चलता कि वे दुखी हैं या टूट चुके हैं, वैसे ही वह उन्हें कोई भी नुकसान पहुँचाने का विचार त्याग देती और उन पर अपनी दया-भावना बरसाने के लिए तत्पर हो जाती। क्योंकि वह मूल रूप से कोई दुष्ट इंसान नहीं थी; और भले ही उसका छिपा हुआ, कुछ हद तक दबा हुआ स्वभाव—जो उसकी शुरुआती कोमल देखभाल से दयालु प्रतीत होता था—असल में ईर्ष्या और अहंकार से भरा था, फिर भी उसका तीसरा स्वभाव—जो और भी गहराई में दबा हुआ था, जो उसका सच्चा, पर पूरी तरह से पहचाना न गया स्वभाव था—हमेशा अच्छाई और अपने पड़ोसियों के प्रति प्रेम की ओर ही उन्मुख रहता था। बस फ़र्क इतना था कि उन तमाम लोगों की तरह, जो जीवन की किसी एक स्थिति में होते हुए उससे बेहतर स्थिति की कामना तो करते हैं — परंतु उस बेहतर स्थिति को केवल अपनी कल्पना या इच्छा के रूप में ही जानते हैं—वे यह नहीं समझ पाते कि उस बेहतर स्थिति तक पहुँचने की पहली शर्त है, अपनी पिछली स्थिति से पूरी तरह से नाता तोड़ लेना; ठीक वैसे ही जैसे वे लोग जो मानसिक रूप से कमज़ोर (neurasthenics) होते हैं या अफ़ीम के आदी (morphinomaniacs) होते हैं—जो ठीक होना तो चाहते हैं, पर साथ ही अपनी उस आदत से छुटकारा भी नहीं पाना चाहते।
अपनी सनकों या मॉर्फिन से वंचित, उन धार्मिक हृदयों या कलात्मक आत्माओं की तरह जो दुनिया से जुड़े होते हैं और एकांत की चाह रखते हैं, लेकिन फिर भी उसे अपनी पिछली ज़िंदगी के पूर्ण त्याग के रूप में नहीं देखना चाहते—एंड्री अपने सभी साथी प्राणियों से प्रेम करने के लिए तैयार थी, लेकिन इस शर्त पर कि वह सबसे पहले उन्हें विजयी के रूप में देखना बंद कर दे, और इस उद्देश्य के लिए उन्हें पहले से ही नीचा दिखा दे। वह यह नहीं समझती थी कि हमें घमंडियों से भी प्रेम करना चाहिए, और उनके घमंड को प्रेम

आश्चर्य होता है कि मैं रैचेल की उस राय की पुष्टि कर रहा हूँ जिसे वह बहुत लंबे समय से मानती आ रही थी। जिन लोगों ने उसे बालबेक में जाना था—जो सिर्फ़ यह पक्का करने को उत्सुक रहते थे कि जिन लोगों के साथ वह उठता-बैठता है, उनके कपड़ों का स्टाइल स्मार्ट है या नहीं; जिन्होंने उसे अपना सारा समय बैकारेट, घुड़दौड़, गोल्फ़ कोर्स या पोलो के मैदान में बिताते देखा था; जो जानते थे कि स्कूल में वह हमेशा एक मंदबुद्धि छात्र रहा था, और यहाँ तक कि उसे लीसे (स्कूल) से निकाल भी दिया गया था (अपने माता-पिता को परेशान करने के लिए, उसने दो महीने एक आलीशान वेश्यालय में बिताए थे, जहाँ M. de Charlus को उम्मीद थी कि वह मोरेल को अचानक पकड़ लेंगे)—उन लोगों को लगता था कि शायद उसका काम एंड्री करती है, जो उसके प्यार में, उसे ही सारा यश देने का फ़ैसला करती है; या फिर, ज़्यादा संभावना यह थी कि वह अपनी विशाल निजी दौलत में से—जिसमें से उसके ऐशो-आराम ने बमुश्किल ही कोई सेंध लगाई थी—किसी प्रतिभाशाली लेकिन ज़रूरतमंद पेशेवर को पैसे देकर अपना काम करवाता है। इस तरह के अमीर समाज के लोग—जो कुलीन वर्ग के साथ मेल-जोल से परिष्कृत नहीं हुए होते, और जिन्हें इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं होता कि एक कलाकार असल में क्या होता है (उनके लिए यह शब्द सिर्फ़ एक ऐसे अभिनेता का प्रतिनिधित्व करता है जिसे वे अपनी बेटी की सगाई की पार्टी में एकालाप सुनाने के लिए बुलाते हैं, और तुरंत ही दूसरे कमरे में चुपके से उसकी फ़ीस थमा देते हैं; या फिर एक ऐसे चित्रकार का, जिसके सामने वे अपनी बेटी को शादी के बाद—बच्चे होने से पहले, जब वह अपनी सबसे बेहतरीन अवस्था में होती है—बैठने को कहते हैं)—अक्सर यह मान बैठते हैं कि समाज में जितने भी लोग लिखते हैं, संगीत रचते हैं या चित्रकारी करते हैं, उनका काम कोई और

करता है; और वे एक लेखक के तौर पर शोहरत पाने के लिए पैसे खर्च करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे दूसरे लोग संसद में अपनी सीट पक्की करने के लिए पैसे खर्च करते हैं। लेकिन यह सब सरासर झूठ था; वह नौजवान सचमुच उन अद्भुत कृतियों का असली रचयिता था। जब मुझे इस बात का पता चला, तो मैं परस्पर विरोधी अटकलों के बीच हिचकिचाने पर मजबूर हो गया। या तो वह सचमुच सालों तक वही 'अशिष्ट और क्रूर व्यक्ति' रहा था जैसा वह दिखता था, और किसी शारीरिक उथल-पुथल ने उसके अंदर छिपी हुई प्रतिभा को जगा दिया था—ठीक वैसे ही जैसे 'स्लीपिंग ब्यूटी' जागती है—या फिर अपने तूफानी स्कूली दिनों में, जब वह अंतिम परीक्षा में पास नहीं हो पाया था, जब उसे बालबेक में जुए में भारी नुकसान हुआ था, और जब वह अपनी मौसी वर्दुरिन के वफादार साथियों के साथ ट्राम में दिखने से कतराता था (क्योंकि उनका पहनावा बहुत ही अलग तरह का था)—उस समय भी वह एक प्रतिभाशाली व्यक्ति था; शायद वह अपनी प्रतिभा से भटक गया था, और अपनी किशोरावस्था के जोश में उसने अपनी प्रतिभा की 'चाबी' दरवाज़े के पायदान के नीचे ही छोड़ दी थी। या फिर, हो सकता है कि वह पहले से ही अपनी प्रतिभा के प्रति सचेत था, लेकिन अपनी कक्षा में सबसे पीछे रहता था—ऐसा इसलिए था क्योंकि जब शिक्षक सिसेरो के बारे में घिसी-पिटी बातें बता रहे होते थे, तब वह खुद रिम्बो या गोएथे पढ़ रहा होता था। निश्चित रूप से, जब मैं उससे बालबेक में मिला था, तब ऐसी किसी भी परिकल्पना का कोई आधार नहीं था; उस समय तो ऐसा लगता था कि उसकी सारी दिलचस्पी केवल एक शानदार घोड़ा-गाड़ी तैयार करवाने और कॉकटेल बनाने में ही सिमटी हुई है। लेकिन यह भी कोई ऐसी बाधा नहीं है जिसे पार न किया जा सके। हो सकता है कि वह बेहद घमंडी रहा हो—और घमंड का संबंध प्रतिभा से भी हो सकता है—और हो सकता है कि वह उसी तरीके से अपनी चमक

बिखेरना चाहता हो, जिसे वह अपने आस-पास की दुनिया में सबसे ज़्यादा प्रभावशाली मानता था; और उस दुनिया में प्रभावशाली होने का मतलब यह बिल्कुल नहीं था कि आपके पास कोई गहरा ज्ञान हो।
चुनावी जुड़ावों की समझ नहीं, बल्कि इससे कहीं ज़्यादा यह ज्ञान कि चार घोड़ों वाली गाड़ी कैसे चलाई जाती है। इसके अलावा, मुझे बिल्कुल भी यकीन नहीं है कि बाद में, जब वह उन बेहतरीन और एकदम मौलिक रचनाओं के लेखक बन गए थे, तो वह उन थिएटरों के बाहर, जहाँ वह जाने जाते थे, किसी ऐसे व्यक्ति का अभिवादन करने की ज़्यादा परवाह करते, जिसने शाम की पोशाक (evening dress) न पहनी हो—जैसा कि उनके पुराने दिनों के 'वफ़ादार' लोग किया करते थे। यह बात उनमें मूर्खता का नहीं, बल्कि घमंड का, और सच कहूँ तो एक खास तरह की व्यावहारिक समझ का सबूत होती—एक ऐसी दूरदृष्टि, जिसके ज़रिए वह अपने घमंड को उन बेवकूफ़ों की मानसिकता के हिसाब से ढाल लेते थे, जिनकी इज़्ज़त पर उनका गुज़ारा था, और जिनकी नज़रों में एक 'डिनर-जैकेट' शायद किसी विचारक की आँखों से भी ज़्यादा शानदार चमक बिखेरती थी। कौन कह सकता है कि बाहर से देखने पर, कोई प्रतिभाशाली व्यक्ति—या फिर कोई ऐसा व्यक्ति जिसमें प्रतिभा न भी हो, लेकिन जो बौद्धिक चीज़ों का प्रेमी हो (जैसे कि मैं खुद)—किसी ऐसे व्यक्ति को, जो उससे रिवेबेल में, बालबेक के होटल में, या वहाँ के समुद्र तट पर मिला हो, शायद सबसे बड़ा और दिखावा करने वाला बेवकूफ़ ही नज़र आया हो। यह तो कहने की ज़रूरत ही नहीं कि ऑक्टेव के लिए कला से जुड़ी बातें इतनी निजी और दिल के इतने गहरे कोनों में बसी हुई थीं कि यकीनन उनके मन में कभी यह ख्याल ही नहीं आया होगा कि वह उनके बारे में किसी से बात करें—जैसा कि सेंट-लूप किया करते थे; सेंट-लूप के लिए

ललित कलाओं का वही महत्व था, जो ऑक्टेव के लिए घोड़ों और गाड़ियों का था। इसके अलावा, हो सकता है कि उन्हें जुए का भी शौक रहा हो, और कहा जाता है कि यह शौक उनमें अब भी बरकरार है। बहरहाल, भले ही विंतेउइल की उस अनजान रचना को दुनिया के सामने लाने वाली वह श्रद्धा, मोंटजूवेन की उस उथल-पुथल भरी ज़िंदगी से ही क्यों न उपजी हो, फिर भी मैं इस विचार से कम प्रभावित नहीं हुआ कि हमारे ज़माने की जो बेहतरीन रचनाएँ (masterpieces) शायद सबसे असाधारण हैं, वे किसी विश्वविद्यालय की डिग्री से, या ब्रोगली के सिद्धांतों पर आधारित किसी आदर्श, अकादमिक शिक्षा से नहीं, बल्कि 'घुड़दौड़ के मैदानों' (paddocks) और फ़ैशनेबल बारों में बिताए गए समय से निकलकर सामने आई हैं। किसी भी हाल में, उन दिनों बालबेक में, जिन कारणों से मैं उसे जानने के लिए उत्सुक था—और जिन कारणों से अल्बर्टिन और उसकी सहेलियाँ नहीं चाहती थीं कि मैं उसे जानूँ—वे सभी कारण उसकी अपनी काबिलियत से पूरी तरह अलग थे। वे कारण केवल एक 'बुद्धिजीवी' (जिसका प्रतिनिधित्व इस मामले में मैं कर रहा था) और 'समाज के लोगों' (जिसका प्रतिनिधित्व वह छोटा-सा समूह कर रहा था) के बीच, समाज के ही किसी व्यक्ति (वह युवा गोल्फर) को लेकर मौजूद उस शाश्वत गलतफहमी को ही उजागर कर सकते थे। मुझे उसकी प्रतिभा का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था; और मेरी नज़रों में उसका जो रुतबा था—ठीक वैसा ही जैसा अतीत में मादाम ब्लातिन का था—वह केवल इस बात पर आधारित था कि वह—चाहे लोग कुछ भी कहें—मेरी सहेलियों का दोस्त था, और उस समूह का हिस्सा मुझसे कहीं ज़्यादा था। दूसरी ओर, अल्बर्टिन और आंद्रे — जो इस मामले में समाज के लोगों की, बौद्धिक चीज़ों पर सही राय बनाने में असमर्थता और झूठे दिखावों से जुड़ने की उनकी प्रवृत्ति का प्रतीक थीं—न केवल मुझे लगभग बेवकूफ़ समझती थीं,

क्योंकि मैं ऐसे मंदबुद्धि व्यक्ति में दिलचस्पी ले रहा था; बल्कि वे इस बात पर भी बेहद हैरान थीं कि, जब इतने सारे गोल्फर मौजूद थे, तो मेरी पसंद उन सबमें से सबसे कमज़ोर खिलाड़ी पर ही क्यों जाकर ठहरी। उदाहरण के लिए, अगर मैंने युवा गिल्बर्ट डी बेलओवर के साथ मेल-जोल बढ़ाना चाहा होता—तो गोल्फ़ के अलावा, वह एक ऐसा लड़का था जिसमें बातचीत करने की कला थी, जिसने परीक्षाओं में 'प्रॉक्सिम' (लगभग सर्वोच्च स्थान) हासिल किया था और जो काफी अच्छी कविताएँ लिखता था (असल में, वह उन सबमें सबसे ज़्यादा बेवकूफ़ था)। या फिर, अगर मेरा मकसद 'किसी किताब के लिए अध्ययन करना' होता—तो गाय सौमॉय, जो पूरी तरह से पागल था और जिसने दो लड़कियों का अपहरण भी किया था, कम-से-कम एक ऐसा अनोखा किरदार तो था जो शायद मेरी 'दिलचस्पी' जगा सकता था। इन दोनों के साथ मेल-जोल की मुझे शायद इजाज़त मिल जाती; लेकिन उस दूसरे व्यक्ति में—मैं भला क्या आकर्षण ढूँढ़ सकता था? वह तो 'कोरे जानवर' या 'अशिष्ट गंवार' जैसा व्यक्ति था। अब आंद्रे के उस दौरे की बात पर लौटते हैं: अल्बर्टिन के साथ अपने संबंधों के बारे में जो खुलासा उसने अभी-अभी मेरे सामने किया था, उसके बाद उसने यह भी बताया कि अल्बर्टिन के मुझे छोड़कर चले जाने का मुख्य कारण यह सोच थी कि—जब उसके उस छोटे-से समूह की सहेलियाँ (और दूसरे लोग भी) उसे एक ऐसे युवा लड़के के साथ इस तरह रहते हुए देखेंगी, जिससे उसकी शादी नहीं हुई है—तो वे सब उसके बारे में क्या सोचेंगे। "बेशक मुझे पता है, यह तुम्हारी माँ के घर में हुआ था। लेकिन इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। तुम कल्पना भी नहीं कर सकते कि वे लड़कियाँ असल में कैसी हैं, वे एक-दूसरे से क्या-क्या छिपाती हैं, और वे एक-दूसरे की राय से कितना डरती हैं। मैंने उन्हें नौजवानों के साथ बेहद सख़्त होते देखा है, सिर्फ़ इसलिए

क्योंकि उन लड़कों की जान-पहचान उनकी सहेलियों से थी और उन्हें डर था कि कहीं कुछ बातें दोहराई न जाएँ; और उन्हीं लड़कियों को, मैंने बिल्कुल ही एक अलग रूप में भी देखा है—जिससे उन्हें बेहद नफ़रत हुई।" कुछ महीने पहले, यह जानकारी—जो एंड्री के पास उस छोटी-सी टोली की लड़कियों को प्रभावित करने वाले इरादों के बारे में थी—मुझे दुनिया की सबसे कीमती चीज़ लगती। उसने जो कहा, शायद वह यह समझाने के लिए काफ़ी था कि अल्बर्टिन—जिसने बाद में पेरिस में खुद को मुझे सौंप दिया था—ने बालबेक में मेरे आगे झुकने से इनकार क्यों कर दिया था; बालबेक में मैं लगातार उसकी सहेलियों से मिलता रहता था, और मैंने बेवकूफ़ी से यह मान लिया था कि उसकी चाहत जीतने में यह एक बहुत बड़ा फ़ायदा साबित होगा। शायद असल में इसकी वजह यह थी कि उसने मुझे एंड्री के साथ कुछ ज़्यादा ही घुलते-मिलते देख लिया था, या फिर यह कि मैंने जल्दबाज़ी में एंड्री को बता दिया था कि अल्बर्टिन ग्रैंड होटल में रात बिताने आ रही थी; वही अल्बर्टिन, जो शायद एक घंटा पहले तक मुझे कुछ नज़दीकियां बढ़ाने देने को तैयार थी— मानो यह दुनिया की सबसे आसान बात हो—अचानक उसका मन बदल गया और उसने घंटी बजाने की धमकी दे दी। लेकिन फिर, उसने शायद और भी कई लोगों के साथ ऐसी ही नरमी बरती होगी। इस विचार ने मेरी ईर्ष्या को फिर से जगा दिया और मैंने एंड्री से कहा कि मैं उससे कुछ पूछना चाहता हूँ। "क्या तुमने वे सब चीज़ें अपनी दादी के खाली अपार्टमेंट में की थीं?" "ओह, नहीं, कभी नहीं; वहाँ हमें कोई न कोई परेशान कर देता।" "क्यों? मुझे तो लगा था... मुझे तो ऐसा ही प्रतीत हुआ था..." "इसके अलावा, अल्बर्टिन को गाँव-देहात में ऐसा करना बहुत पसंद था।" "और, ज़रा बताओ तो, कहाँ?" "शुरू में, जब उसके पास ज़्यादा दूर जाने का समय नहीं होता था, तो हम 'ब्यूत-

शोमों' (Buttes–Chaumont) चले जाते थे। वहाँ उसे एक घर के बारे में पता था। या फिर हम पेड़ों के नीचे लेट जाते थे—वहाँ आस-पास कोई नहीं होता था; और 'पेटी ट्रियानॉन' (Petit Trianon) की गुफा में भी।" "देखा तुमने? मैं तुम्हारी बात पर कैसे यकीन करूँ? अभी एक साल भी नहीं बीता है, जब तुमने कसम खाकर मुझसे कहा था कि तुमने 'ब्यूत-शोमों' में कभी कुछ नहीं किया।" "मुझे डर था कि कहीं तुम्हें दुख न पहुँचे।" जैसा कि मैंने कहा, मुझे लगा (हालाँकि यह बात मुझे बहुत बाद में समझ आई) कि इसके विपरीत, यह दूसरी बार था—यानी उसके अपने राज़ खोलने वाले दिन—जब एंड्री ने मुझे जान-बूझकर दुख पहुँचाने की कोशिश की थी। और यह विचार मुझे उसी समय आ गया होता—क्योंकि मुझे इसकी ज़रूरत महसूस होती — अगर मैं अब भी अल्बर्टिन के प्यार में उतना ही डूबा हुआ होता। लेकिन एंड्री की बातों से मुझे इतना गहरा दुख नहीं पहुँचा कि मेरे लिए उन्हें तुरंत ही 'झूठ' कहकर खारिज करना ज़रूरी हो जाए। संक्षेप में, अगर एंड्री की बात सच थी—और उस समय मुझे इस पर कोई शक नहीं था—तो असली अल्बर्टिन, जिसे मैंने अल्बर्टिन के इतने अलग-अलग रूप देखने के बाद खोजा था, उस युवा 'बैकेनल' (मस्ती में डूबी लड़की) से बहुत ज़्यादा अलग नहीं थी, जो पहले दिन बालबेक के समुद्र तट पर अचानक मेरे सामने आई थी और जिसे मैंने पहली बार देखा था। उसने मुझे एक के बाद एक अपने इतने अलग-अलग पहलू दिखाए थे—ठीक वैसे ही जैसे कोई शहर धीरे-धीरे अपनी इमारतों की जगह बदलता है, ताकि उस मुख्य स्मारक को ढक सके या छिपा सके, जिसे हम दूर से देखते हुए आते हैं; लेकिन जब हम उस स्मारक को अच्छी तरह जान लेते हैं और उसका सही अंदाज़ा लगा पाते हैं, तो उसके असली अनुपात वही निकलते हैं जो पहली नज़र के नज़ारे ने दिखाए थे। बाकी सब कुछ—जिससे होकर हम गुज़रे थे—रक्षा-पंक्तियों की एक

हैं, जो हमसे प्यार करते हैं। असल में, ऐसे लोग ही हमें अपनी खुशी के लिए डराते हैं और हम उनकी इज़्ज़त पाना चाहते हैं। पहले तो मुझे लगा था कि अल्बर्टिन कसूरवार है, और यह सिर्फ़ मेरी चाहत थी जिसने मेरी बुद्धि की सारी ताकत शक करने में लगा दी थी, जिसकी वजह से मैं गलत रास्ते पर चला गया था। शायद हम ऐसे बिजली जैसे, भूकंप जैसे संकेतों से घिरे रहते हैं, जिन्हें हमें पूरी ईमानदारी से समझना चाहिए ताकि हम दूसरे लोगों के असली स्वभाव के बारे में जान सकें। सच कहूँ तो, एंड्री की बातों से मुझे बहुत दुख हुआ था, लेकिन फिर भी मुझे लगा कि यही बेहतर है कि सच आखिरकार वही निकले जिसका अंदाज़ा मेरी अंतरात्मा ने शुरू में ही लगा लिया था, न कि वह झूठी उम्मीद जिसके आगे मैंने बाद में कायरों की तरह हार मान ली थी। मुझे तो यही पसंद होता कि ज़िंदगी मेरी अंतरात्मा के ऊँचे स्तर पर ही बनी रहती। इसके अलावा, जो एहसास मुझे उस पहले दिन समुद्र के किनारे हुआ था—जब मुझे लगा था कि वे लड़कियाँ खुशी के जोश का ही रूप हैं, कि वे साक्षात बुराई हैं—और फिर उस शाम, जब मैंने अल्बर्टिन की आया को उस जोशीली लड़की को घर, उस छोटे से विला में ले जाते देखा था—ठीक वैसे ही जैसे कोई किसी जंगली जानवर को उसके पिंजरे में धकेल देता है, जिसे भविष्य में कोई भी चीज़, चाहे वह बाहर से कितनी भी सीधी क्यों न दिखे, कभी भी पालतू नहीं बना पाएगी—क्या वे एहसास, ब्लॉक की उन बातों से मेल नहीं खाते थे जो उसने मुझे तब बताई थीं, जब उसने मुझे दुनिया इतनी खूबसूरत दिखाई थी, जब उसने अपनी सैरों के दौरान, शाम के समय, मेरे दिल की धड़कनें तेज़ कर दी थीं?
...हर मुलाक़ात में, इच्छा की सार्वभौमिकता। शायद, जब सब कुछ कहा- सुना जा चुका था, तो यह बेहतर ही था कि मुझे अपनी उन शुरुआती

अंतर्ज्ञानों की पुष्टि अब तक नए सिरे से न मिली होती। जब तक अल्बर्टिन के लिए मेरा पूरा प्यार बना रहा, वे अंतर्ज्ञान मुझे बहुत ज़्यादा तकलीफ़ देते; और यह बेहतर था कि उनका बस एक निशान ही बचा रहे—चीज़ों के प्रति मेरा वह लगातार शक, जिन्हें मैं देख नहीं पाता था, पर जो फिर भी मेरे इतने करीब लगातार घटित होती रहती थीं; और शायद एक और निशान भी—जो पहले का, ज़्यादा विशाल था — और वह था मेरा प्यार खुद। क्या यह सचमुच—मेरी बुद्धि के तमाम इनकारों के बावजूद—अल्बर्टिन को उसकी सारी भयानकता के साथ जान लेने जैसा ही नहीं था? महज़ उसे चुनना, उससे प्यार करना... और उन पलों में भी जब शक शांत हो जाता है, क्या प्यार उस शक का ही एक निरंतर रूप और रूपांतरण नहीं है? क्या यह दूरदृष्टि का एक प्रमाण नहीं है (एक ऐसा प्रमाण जो प्रेमी को खुद भी समझ नहीं आता)? क्योंकि इच्छा हमेशा उस चीज़ की ओर खिंचती है जो हमारे अपने स्वभाव के बिल्कुल विपरीत होती है, और हमें मजबूर करती है कि हम उससे प्यार करें जो हमें तकलीफ़ देगा। निश्चित रूप से, किसी व्यक्ति के आकर्षण में—उसकी आँखों, उसके होठों, उसकी काया के खिंचाव में—कुछ ऐसे तत्व शामिल होते हैं जिनसे हम अनजान होते हैं, पर जो हमें सबसे ज़्यादा गहरी तकलीफ़ देने में सक्षम होते हैं। इतना कि, जब हम उस व्यक्ति की ओर खिंचाव महसूस करते हैं, उससे प्यार करना शुरू करते हैं—तो चाहे हम इसे कितना भी मासूम क्यों न दिखाने की कोशिश करें—असल में हम पहले से ही, एक अलग रूप में, उसके सारे विश्वासघातों और उसकी सारी कमियों को पढ़ रहे होते हैं। और वे आकर्षण—जिन्होंने मुझे खींचने के लिए, उस व्यक्ति के भीतर छिपे हानिकारक, खतरनाक और जानलेवा हिस्सों को इस तरह मूर्त रूप दे दिया था—क्या उन आकर्षणों का, उन गुप्त ज़हरों के साथ, 'कारण और प्रभाव' का रिश्ता उन कुछ ज़हरीले फूलों

की मोहक भव्यता और विषैले रस के रिश्ते से भी ज़्यादा सीधा और गहरा नहीं था? शायद, मैंने खुद से कहा, यह अल्बर्टिन का अपना ही कोई दुर्गुण था—मेरे भविष्य के दुखों का कारण—जिसने उसके भीतर वह ईमानदार और स्पष्टवादी स्वभाव पैदा कर दिया था। जिसने यह भ्रम रच दिया था कि कोई उसके साथ भी वैसी ही वफ़ादार और बेरोकटोक दोस्ती निभा सकता है, जैसी किसी पुरुष के साथ निभाई जाती है; ठीक वैसे ही, जैसे एक समानांतर दुर्गुण ने एम. डी. शार्लस के भीतर संवेदनशीलता और मन की एक स्त्रियोचित नज़ाकत पैदा कर दी थी। घोर अंधकार और नासमझी के दौर से गुज़रते हुए भी, अंतर्दृष्टि—यानी चीज़ों को गहराई से समझने की क्षमता—हमारी पसंद और स्नेह के ठीक नीचे, उसी रूप में बनी रहती है। इसका मतलब है कि प्यार में 'गलत चुनाव' की बात करना हमारी गलती है, क्योंकि जब भी कोई चुनाव होता है, तो वह हमेशा गलत ही होता है। मैंने आंद्रे से पूछा, "क्या ब्यूट-शॉमों की वे सैरें तब हुई थीं, जब तुम उसे यहाँ लेने आती थी?" "ओह! नहीं, जिस दिन अल्बर्टिन तुम्हारे साथ बालबेक से लौटी थी, उस एक बार को छोड़कर जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया था, उसने मेरे साथ फिर कभी कुछ नहीं किया। वह तो मुझे ऐसी बातों का ज़िक्र भी नहीं करने देती थी।" "लेकिन, मेरी प्यारी आंद्रे, मुझसे झूठ क्यों बोल रही हो? महज़ एक इत्तेफ़ाक से—क्योंकि मैं कभी कुछ पता लगाने की कोशिश नहीं करता—मुझे उन बातों की छोटी-से-छोटी जानकारी मिल गई है जो अल्बर्टिन ने की थीं; मैं तुम्हें ठीक-ठीक बता सकता हूँ कि उसकी मौत से बस कुछ ही दिन पहले, नदी के किनारे एक धोबिन के साथ उसने ऐसा किया था।" "आह! शायद तुम्हारे पास से जाने के बाद—यह मैं नहीं कह सकती। उसे लगा था कि वह नाकाम हो गई है, कि वह तुम्हारा भरोसा फिर कभी नहीं जीत पाएगी।" उसके ये आखिरी शब्द सुनकर मैं

सन्न रह गया। फिर मैंने सिरिंगा की डाल वाली उस शाम के बारे में सोचा; मुझे याद आया कि लगभग पंद्रह दिन बाद—जब मेरी ईर्ष्या किसी नए शिकार की तलाश में थी—मैंने अल्बर्टिन से पूछा था कि क्या उसका कभी आंद्रे के साथ कोई रिश्ता रहा है? और उसने जवाब दिया था: "ओह! कभी नहीं! बेशक, मैं आंद्रे को बहुत पसंद करती हूँ; मेरे दिल में उसके लिए गहरा प्यार है, लेकिन ठीक वैसा ही जैसा बहनों के बीच होता है। और अगर मुझमें वे आदतें होतीं जिनका तुम अंदाज़ा लगा रहे हो, तब भी आंद्रे तो आखिरी इंसान होती जिसके बारे में मैं सोचती। मैं तुम्हें किसी भी चीज़ की कसम खाकर कह सकती हूँ—अपनी मौसी की, या अपनी बेचारी माँ की कब्र की।" मैंने उसकी बात पर यकीन कर लिया था। और फिर भी—भले ही कुछ मामलों में उसकी पहले की अधूरी स्वीकारोक्तियों और बाद में उन्हें पूरी तरह नकारने के बीच के विरोधाभास ने मुझमें शक पैदा न भी किया होता—तब भी मुझे स्वान की याद आनी चाहिए थी। स्वान, जिसे एम. डी शार्लस की दोस्ती के 'प्लेटोनिक' (निष्कपट) होने का पूरा यकीन था, और जिसने ठीक उसी शाम मुझे इस बात का भरोसा दिलाया था, जिस शाम मैंने अहाते में उस दर्ज़ी और बैरन को साथ देखा था। मुझे यह सोचना चाहिए था कि अगर दो दुनियाएँ हैं—एक दूसरी को ढके हुए— तो एक दुनिया उन बातों से बनी है जो सबसे अच्छे और सबसे सच्चे लोग कहते हैं, और उसके पीछे वह दुनिया है जो उन्हीं लोगों के लगातार किए गए कामों से बनी है। इसलिए, जब कोई शादीशुदा औरत किसी नौजवान के बारे में आपसे कहती है: "ओह! यह बिल्कुल सच है कि मुझे उससे बहुत ज़्यादा लगाव है, लेकिन यह बिल्कुल बेदाग और पवित्र है; मैं अपने माता-पिता की याद में इसकी कसम खा सकती हूँ," तो हमें खुद, बिना किसी हिचकिचाहट के, इस बात की कसम खानी चाहिए कि वह शायद अभी-अभी अपने बाथरूम से आई है—जहाँ वह उस

नौजवान के साथ हर मुलाक़ात के बाद, इस डर से भागकर जाती है कि कहीं वह उसे गर्भवती न कर दे। सिरिंगा के फूलों ने मुझे बहुत उदास कर दिया, और साथ ही इस बात का पता चलने पर भी कि अल्बर्टिन मुझे क्रूर और दुश्मन मान सकती थी या कह सकती थी; शायद सबसे ज़्यादा, कुछ ऐसे झूठ जो इतने अप्रत्याशित थे कि उन्हें समझना मेरे लिए मुश्किल था। एक दिन अल्बर्टिन ने मुझसे कहा था…
कि वह एक हवाई अड्डे पर गई थी, कि एक पायलट उससे प्यार करता था (यह बात उसने शायद इसलिए कही थी ताकि औरतों की तरफ से मेरा शक हट जाए, क्योंकि उसे लगा होगा कि मैं दूसरे आदमियों को लेकर कम ईर्ष्यालु हूँ), कि उस पायलट को देखकर आंद्रे का जो उत्साह था, और अल्बर्टिन की उसने जो भी तारीफ़ें की थीं, उन्हें देखना काफ़ी मज़ेदार रहा था—यहाँ तक कि आखिर में आंद्रे की भी उसके साथ हवा में उड़ने की इच्छा हो गई थी। अब यह बात पूरी तरह से मनगढ़ंत थी; आंद्रे उस हवाई अड्डे पर कभी गई ही नहीं थी।
जब एंड्री मुझे छोड़कर गई, तब खाने का समय हो गया था। मेरी माँ ने कहा, "तुम कभी अंदाज़ा नहीं लगा पाओगे कि कौन मुझसे मिलने आया था और कम से कम तीन घंटे रुका था।" "मैं इसे तीन घंटे कह रही हूँ, शायद यह उससे भी ज़्यादा था। वह मेरी पहली मेहमान, श्रीमती कॉटार्ड के तुरंत बाद आई थी, चुपचाप बैठी रही और सबको आते-जाते देखती रही—और मेरे पास तीस से ज़्यादा मेहमान आए थे—और मुझे छोड़कर सिर्फ़ पंद्रह मिनट पहले गई थी। अगर तुम्हारी दोस्त एंड्री तुम्हारे साथ न होती, तो मैं तुम्हें बुलवा लेती।" "अरे, कौन थी?" "एक ऐसी महिला जो कभी मिलने नहीं आती।" "क्या प्रिंसेस डी पार्म?" "अरे, मेरा बेटा तो मेरी सोच से भी ज़्यादा होशियार है। नाम का अंदाज़ा लगाने में कोई मज़ा नहीं है, क्योंकि तुम तुरंत सही नाम बता देते हो।" "क्या वह कल की अपनी बदतमीज़ी के

लिए माफ़ी माँगने आई थी?" नहीं, ऐसा करना बेवकूफी होती, उनका आना तो बस एक माफी थी। तुम्हारी बेचारी दादी को तो यह बहुत अच्छा लगता। लगता है कि करीब दो बजे उन्होंने एक नौकर को यह पूछने भेजा था कि क्या आज मैं घर पर हूँ। उन्हें बताया गया कि आज ही है, और इसलिए वह आ गईं। मेरा पहला ख्याल, जिसे मैंने माँ को बताने की हिम्मत नहीं की, यह था कि प्रिंसेस डी पार्म, जो एक दिन पहले ऊँचे दर्जे और संभ्रांत लोगों से घिरी हुई थीं, जिनसे उनके घनिष्ठ संबंध थे और जिनसे बातचीत करना उन्हें अच्छा लगता था, जब उन्होंने मेरी माँ को कमरे में आते देखा तो उन्हें झुंझलाहट हुई होगी जिसे उन्होंने छिपाने की कोई कोशिश नहीं की। और यह जर्मनी की बड़ी महिलाओं के स्वभाव के बिल्कुल अनुरूप था, जिसे गुएरमांटे परिवार ने भी काफी हद तक अपना लिया था, यह अकड़, जिसके लिए वे दिखावटी विनम्रता से प्रायश्चित करने की कोशिश करती थीं। लेकिन मेरी माँ का मानना था, और मैं भी समय रहते उनकी राय से सहमत हो गई, कि जो कुछ हुआ था वह यह था कि प्रिंसेस डी पार्म ने उन्हें पहचान न पाने के कारण उन पर ध्यान देना ज़रूरी नहीं समझा। मेरी माँ के जाने के बाद ही उन्हें पता चला होगा कि वह कौन हैं, या तो डचेस डी गुएरमांटेस से, जिनसे मेरी माँ घर से निकलते समय मिली थीं, या फिर उनके आगंतुकों की सूची से, जिनके नाम नौकरों ने उनके आने से पहले ही एक किताब में लिख रखे थे। उन्होंने मेरी माँ को संदेश भेजना या यह कहना असभ्य समझा कि "मैंने आपको पहचाना नहीं," लेकिन—और यह जर्मन दरबारों के शिष्टाचार और गुएरमांटेस के आचरण नियमों के साथ उतना ही मेल खाता था जितना कि मेरा मूल सिद्धांत—उन्होंने सोचा कि एक पुकार, एक शाही व्यक्ति की ओर से एक असाधारण कार्य, और वह भी कई घंटों तक चलने वाली पुकार, मेरी माँ को अप्रत्यक्ष रूप से,

लेकिन उतने ही विश्वसनीय तरीके से स्पष्टीकरण दे देगी, और ठीक यही हुआ भी। लेकिन मैंने राजकुमारी के फोन के बारे में अपनी माँ से पूछने में ज़रा भी देर नहीं की, क्योंकि मुझे अल्बर्टीन से जुड़ी कई घटनाएँ याद आ गई थीं जिनके बारे में मैं एंड्री से पूछना तो चाहती थी लेकिन भूल गई थी। वैसे भी, मुझे अल्बर्टीन की इस कहानी के बारे में कितना कम पता था, और क्या कभी पता भी चलेगा, जो एकमात्र कहानी थी जो मेरे लिए विशेष रूप से दिलचस्प हो सकती थी, या कम से कम कुछ क्षणों में मुझे फिर से दिलचस्प लगने लगी थी। क्योंकि मनुष्य वह प्राणी है जिसकी कोई निश्चित आयु नहीं होती, जो कुछ ही सेकंड में कई साल छोटा हो जाता है, और जो अपने जीवन के समय की दीवारों से घिरा हुआ, उनमें ऐसे तैरता है मानो किसी ऐसे कुंड में हो जिसका सतही स्तर लगातार बदलता रहता है, जिससे वह कभी एक युग के तो कभी दूसरे युग के दायरे में आ जाता है। मैंने एंड्री को पत्र लिखकर उसे फिर से आने के लिए कहा। वह एक सप्ताह बीतने तक नहीं आ सकी। जैसे ही वह कमरे में दाखिल हुई, मैंने उससे कहा: "ठीक है, तो चूंकि तुम कहती हो कि अल्बर्टीन ने यहां रहते हुए कभी ऐसा कुछ नहीं किया, तो तुम्हारे अनुसार, उसने मुझे इसलिए छोड़ा ताकि वह ऐसा और अधिक आज़ादी से कर सके, लेकिन अपने किस दोस्त के लिए?" "बिल्कुल नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं था।" "तो क्या इसलिए कि मैं उसके प्रति बहुत निर्दयी था?" "नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। मेरा मानना है कि उसकी चाची ने उसे तुम्हें छोड़ने के लिए मजबूर किया था, क्योंकि उसकी नज़र उस आवारा लड़के पर थी, जिसे तुम 'मैं मुसीबत में हूँ' कहकर पुकारती थीं, वही लड़का जो अल्बर्टीन से प्यार करता था और जिसने उसे शादी का प्रस्ताव दिया था। चूंकि तुमने उससे शादी नहीं की, इसलिए उन्हें डर था कि तुम्हारे घर में उसके इतने लंबे समय तक रहने से

के रिश्तों और उनसे पैदा होने वाले संकटों को समझने की कोशिश की है, तो अचानक कोई तीसरा व्यक्ति अपने नज़रिए से उन रिश्तों के बारे में मुझसे बात करने लगता है, क्योंकि उसका उन दोनों में से किसी एक के साथ और भी करीबी रिश्ता होता है, और शायद वही नज़रिया उस संकट का कारण रहा हो। और अगर लोगों के काम इतने अनिश्चित होते हैं, तो खुद लोग भी उतने ही अनिश्चित क्यों न हों? अगर मैं उन लोगों की बात सुनूँ जो कहते हैं कि अल्बर्टीन एक शातिर औरत थी जिसने एक के बाद एक कई आदमियों से शादी करने की कोशिश की, तो यह कल्पना करना मुश्किल नहीं था कि वे मेरे साथ उसके जीवन को कैसे परिभाषित करते। फिर भी, मेरे मन में वह एक पीड़ित थी, एक ऐसी पीड़ित जो शायद पूरी तरह से पवित्र नहीं थी, लेकिन उस मामले में अन्य कारणों से दोषी थी, उन बुराइयों के कारण जिनका लोग ज़िक्र नहीं करते थे। लेकिन सबसे पहले हमें खुद से यह कहना चाहिए: एक ओर, झूठ बोलना अक्सर चरित्र का एक गुण होता है; दूसरी ओर, जो महिलाएं वैसे तो झूठ नहीं बोलतीं, उनमें यह एक स्वाभाविक बचाव होता है, जो पहले तो तात्कालिक होता है, फिर धीरे-धीरे संगठित हो जाता है, उस अचानक खतरे से बचने के लिए जो जीवन को नष्ट कर सकता है: प्रेम। दूसरी ओर, यह संयोग नहीं है कि बुद्धिमान और संवेदनशील पुरुष हमेशा असंवेदनशील और हीन महिलाओं के प्रति आकर्षित होते हैं, और साथ ही उनसे इतने जुड़े रहते हैं कि यह साबित होने पर भी कि उन्हें प्यार नहीं किया जा रहा है, वे उस सहज प्रवृत्ति से मुक्त नहीं होते जिसके तहत वे ऐसी महिला को अपने पास रखने के प्रयास में सब कुछ त्याग देते हैं। यदि मैं कहूँ कि ऐसे पुरुषों को कष्ट सहना पड़ता है, तो मैं एक सटीक बात कह रहा हूँ, जबकि उन मूलभूत सच्चाइयों को दबा रहा हूँ जो उस कष्ट सहने की आवश्यकता को—एक अर्थ में अनैच्छिक रूप

उन्हें ठीक से पता नहीं होता कि कैसे। इसीलिए वह साधारण स्त्री, जिससे उन्हें प्रेम हो गया, उनके जीवन को एक बुद्धिमान स्त्री से कहीं अधिक समृद्ध बनाती है। उनके हर शब्द के पीछे उन्हें झूठ छिपा हुआ लगता है, हर उस घर के पीछे जहाँ वह जाने की बात कहती है, किसी दूसरे घर के पीछे, हर क्रिया के पीछे, हर व्यक्ति के पीछे, किसी दूसरी क्रिया के पीछे, किसी दूसरे व्यक्ति के पीछे। निःसंदेह वे नहीं जानते कि क्या या कौन है, उनमें जानने की ऊर्जा नहीं है, और शायद वे इसे जान भी न सकें। एक झूठी स्त्री, एक अत्यंत सरल चाल से, अपनी विधि बदले बिना ही, कई लोगों को, यहाँ तक कि उस व्यक्ति को भी धोखा दे सकती है जिसे उसकी चाल का पता लग जाना चाहिए था। यह सब संवेदनशील और बुद्धिमान व्यक्ति के सामने एक ऐसी असीम गहराई का संसार रच देता है जिसे उसकी ईर्ष्या भेदना चाहती है और जो उसकी बुद्धि के लिए भी रुचिकर है।
हालाँकि मैं ठीक उस तरह का आदमी नहीं था, फिर भी शायद अब, जब अल्बर्टिन मर चुकी थी, मैं उसकी ज़िंदगी का राज़ जानने वाला था। यहाँ फिर से, क्या ये बातें जो किसी इंसान की धरती पर ज़िंदगी खत्म होने के बाद ही सामने आती हैं, यह साबित नहीं करतीं कि असल में कोई भी मरने के बाद की ज़िंदगी पर यकीन नहीं करता? अगर ये बातें सच हैं, तो हमें उस औरत के गुस्से से उतना ही डरना चाहिए, जिसके कामों को हम पूरी तरह से ज़ाहिर कर रहे हैं—उस दिन भी जब हम उससे स्वर्ग में मिलेंगे—जितना हम तब डरते थे जब वह ज़िंदा थी, जब हम खुद को उसका राज़ रखने के लिए मजबूर महसूस करते थे। और अगर ये बातें झूठी हैं, सिर्फ़ इसलिए गढ़ी गई हैं क्योंकि वह अब उन्हें गलत साबित करने के लिए मौजूद नहीं है, तो अगर हम स्वर्ग पर यकीन करते, तो हमें उस मरी हुई औरत के गुस्से से और भी ज़्यादा डरना चाहिए था। लेकिन कोई भी इस पर यकीन नहीं करता। तो

कामों से अलग होते हैं, और अक्सर तो उनके बिल्कुल उलट होते हैं। सार्वजनिक जीवन में ऐसा कौन सा आदमी नहीं हुआ, जिसे उसके दोस्त संत मानते थे, लेकिन बाद में पता चला कि उसने दस्तावेज़ों में हेराफेरी की है, देश का पैसा लूटा है, या अपने देश के साथ गद्दारी की है? कितनी बार ऐसा होता है कि किसी बड़े रईस को उसका ही कोई नौकर लूट लेता है—जिसे उसने बचपन से पाला-पोसा होता है — और वह रईस कसम खाने को तैयार रहता है कि वह नौकर एक ईमानदार आदमी था (और शायद वह सचमुच ईमानदार रहा भी हो)? अब, यह जो पर्दा किसी दूसरे इंसान के इरादों को छिपाता है, वह तब और भी ज़्यादा अभेद्य (जिसे भेदा न जा सके) हो जाता है, जब हम उस इंसान से प्यार करने लगते हैं; क्योंकि यह पर्दा हमारी सोचने-समझने की शक्ति पर धुंध डाल देता है। साथ ही, यह उस महिला के कामों को भी धुंधला कर देता है, जो यह महसूस करके कि उससे प्यार किया जाता है, उन चीज़ों को तुरंत ही बेमतलब समझने लगती है, जिन्हें वह शायद पहले बहुत ज़रूरी मानती—जैसे कि, मिसाल के तौर पर, दौलत। शायद, इसके अलावा, वह कुछ हद तक दौलत के प्रति अपनी इस बेपरवाही का दिखावा इसलिए भी करती है, ताकि हमें तकलीफ़ देकर वह हमसे और ज़्यादा पैसा ऐंठ सके। हो सकता है कि इसमें मोल-भाव करने की उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति भी शामिल हो। और यही बात उसकी ज़िंदगी की असल घटनाओं पर भी लागू होती है—कोई ऐसी साज़िश या राज़ जो उसने किसी को नहीं बताया, इस डर से कि कहीं वह हमारे सामने खुल न जाए; हालाँकि, अगर दूसरे लोगों में भी उसे जानने की वैसी ही ज़बरदस्त चाहत होती जैसी हममें है, तो शायद वे लोग भी उसे जान गए होते— बशर्ते उनका दिमाग़ ज़्यादा आज़ाद होता और वे उस महिला में कम शक पैदा करते। यह एक ऐसा राज़ है जिसके बारे में कुछ लोग जानते भी हैं—लेकिन वे ऐसे लोग हैं जिन्हें हम नहीं जानते, और न ही

हमें यह पता है कि उन्हें कैसे ढूँढ़ा जाए। और हमारे प्रति उस महिला के इस अजीबोगरीब रवैये के पीछे जितने भी कारण हो सकते हैं, उन सबमें हमें उसके चरित्र की उन खासियतों को भी शामिल करना होगा, जो किसी भी इंसान को—चाहे वह अपने फ़ायदों के प्रति बेपरवाह हो, या किसी से नफ़रत करता हो, या उसे अपनी आज़ादी प्यारी हो, या उसे अचानक गुस्सा आ जाता हो, या फिर उसे इस बात का डर हो कि दूसरे लोग उसके बारे में क्या सोचेंगे—ठीक वैसा करने पर मजबूर कर देती हैं, जिसकी हमने उससे बिल्कुल भी उम्मीद नहीं की थी। और फिर माहौल और परवरिश के वे फ़र्क भी हैं, जिन पर हम यकीन करने से इनकार कर देते हैं—क्योंकि जब हम आपस में बात कर रहे होते हैं, तो हमारी बातचीत में वे फ़र्क मिट जाते हैं; लेकिन जब हम अलग होते हैं, तो वे फ़र्क फिर लौट आते हैं और हममें से हर किसी के कामों को इतने अलग नज़रिए से निर्देशित करते हैं कि हमारे मिलने की कोई गुंजाइश ही नहीं बचती। "लेकिन, मेरी प्यारी आंद्रे, तुम फिर झूठ बोल रही हो। याद है—तुमने खुद मुझसे यह बात मानी थी—मैंने एक शाम पहले तुम्हें फ़ोन किया था; तुम्हें याद होगा कि अल्बर्टिन कितनी बेचैन थी, और उसने मुझसे यह बात ऐसे छिपाकर रखी थी, मानो यह कोई ऐसी चीज़ हो जिसके बारे में मुझे बिल्कुल पता नहीं चलना चाहिए—कि वह वर्दुरिन के यहाँ दोपहर की पार्टी में जाना चाहती थी, जहाँ मिस विंटुइल के आने की उम्मीद थी।" "हाँ, लेकिन अल्बर्टिन को ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि मिस विंटुइल वहाँ मौजूद होंगी।" "क्या? तुमने खुद मुझसे कहा था कि वह कुछ दिन पहले ही मैडम वर्दुरिन से मिली थी। इसके अलावा, आंद्रे, हम दोनों का एक-दूसरे को धोखा देने की कोशिश करने का कोई मतलब नहीं है। एक सुबह मुझे एक खत मिला था।"

"अल्बर्टिन के कमरे में, Mme. Verdurin का एक नोट मिला, जिसमें उन्होंने अल्बर्टिन से उस दोपहर आने की गुज़ारिश की थी।" और मैंने उसे वह नोट दिखाया—जिसे असल में, Françoise ने अल्बर्टिन के जाने से कुछ दिन पहले ही, उसके सामान के ऊपर रखकर मेरा ध्यान उस पर खींचने की पूरी कोशिश की थी; और मुझे लगता है कि उसने वह नोट वहीं छोड़ दिया था, ताकि अल्बर्टिन को यह लगे कि मैं उसके सामान की तलाशी ले रहा था—या कम-से-कम उसे यह पता चल जाए कि मैंने वह नोट देख लिया है। और मैं अक्सर खुद से यह सवाल पूछता था कि क्या Françoise की इस चाल का अल्बर्टिन के चले जाने में कोई बड़ा हाथ तो नहीं था? क्योंकि अल्बर्टिन को यह एहसास हो गया था कि अब वह मुझसे कुछ भी छिपा नहीं सकती, और इस बात से वह निराश और हारी हुई महसूस करने लगी थी। मैंने Andrée को वह खत दिखाया: "मुझे ज़रा भी पछतावा नहीं है; परिवार के प्रति इस गहरे लगाव के आगे सब कुछ माफ़ है..." "तुम अच्छी तरह जानती हो, Andrée, कि अल्बर्टिन हमेशा यह कहा करती थी कि Mlle. Vinteuil की वह सहेली उसके लिए सचमुच एक माँ और एक बड़ी बहन जैसी थी।" "लेकिन तुमने इस नोट का गलत मतलब निकाला है। Mme. Verdurin जिस व्यक्ति से अल्बर्टिन को उस दोपहर मिलवाना चाहती थीं, वह Mlle. Vinteuil की सहेली बिल्कुल नहीं थी; बल्कि वह वही नौजवान था जिसे तुम 'I am in the soup' (मैं मुसीबत में हूँ) कहकर पुकारती हो। और 'परिवार के प्रति गहरा लगाव' असल में वह भावना थी जो Mme. Verdurin उस बदतमीज़ लड़के के लिए महसूस करती थीं—जो आखिर उनका ही भतीजा था। हाँ, साथ ही मुझे यह भी लगता है कि बाद में अल्बर्टिन को यह पता चल गया होगा कि Mlle. Vinteuil भी वहाँ आने वाली हैं; हो सकता है कि Mme. Verdurin ने उसे अलग से यह बात बता दी हो। बेशक, अपनी सहेली से दोबारा मिलने के ख्याल से उसे खुशी हुई होगी—उसे अपने

बीते हुए खुशहाल दिनों की याद आई होगी—लेकिन यह खुशी ठीक वैसी ही थी, जैसी तुम्हें तब होती, जब तुम कहीं जा रही होतीं और तुम्हें पता चलता कि Elstir भी वहाँ मौजूद होंगे; बस उससे ज़्यादा कुछ नहीं—यहाँ तक कि उतनी भी नहीं। नहीं, अगर अल्बर्टिन यह बताने को तैयार नहीं थी कि वह Mme. Verdurin के यहाँ क्यों जाना चाहती थी, तो उसकी वजह यह थी कि वहाँ एक 'रिहर्सल' होने वाली थी। Mme. Verdurin ने उस रिहर्सल के लिए बहुत ही चुनिंदा लोगों को बुलाया था—जिनमें उनका वह भतीजा भी शामिल था, जिससे तुम Balbec में मिल चुकी हो; वही भतीजा जिससे Mme. Bontemps, अल्बर्टिन की शादी करवाना चाहती थीं, और जिससे अल्बर्टिन खुद भी बात करना चाहती थी।" "क्या बढ़िया लोग हैं!" और इस तरह, एंड्री की माँ की सोच के बावजूद, अल्बर्टिन को आखिरकार एक अमीर शादी का मौका मिल ही गया था। और जब वह मैडम वेरडुरिन से मिलने जाना चाहती थी, जब वह उनसे अकेले में बात करती थी, जब वह इस बात से इतनी नाराज़ हुई थी कि मैं उस शाम उसे बिना बताए वहाँ चला गया था—तो उसके और मैडम वेरडुरिन के बीच जो साज़िश रची गई थी, उसका मकसद अल्बर्टिन की मुलाकात मैडम विंटुइल से नहीं, बल्कि उस भतीजे से करवाना था जिससे अल्बर्टिन प्यार करती थी और जिसके लिए मैडम वेरडुरिन बिचौलिए का काम कर रही थीं। उन्हें इस बात से संतोष मिल रहा था कि वे ऐसी शादियाँ करवाने में मदद कर रही हैं, जो हमें कुछ परिवारों में हैरान कर देती हैं—ऐसे परिवार जिनकी मानसिकता को हम पूरी तरह समझ नहीं पाते, और यह मान लेते हैं कि वे सिर्फ़ एक अमीर दुल्हन की तलाश में हैं। अब, मैंने उस भतीजे के बारे में फिर कभी नहीं सोचा था— शायद वही वह इंसान था जिसकी वजह से मुझे अल्बर्टिन का पहला चुंबन मिला था। और अल्बर्टिन के इरादों की जो पूरी तस्वीर

मैंने अपने मन में बनाई थी, अब मुझे उसकी जगह एक दूसरी तस्वीर बनानी होगी—या यूँ कहूँ कि उसे पहली तस्वीर के ऊपर ही रखना होगा—क्योंकि शायद दूसरी तस्वीर पहली को नकारती नहीं थी; औरतों के प्रति झुकाव होने का मतलब यह नहीं था कि वह शादी नहीं कर सकती थी। "और वैसे भी, इन सब बातों की इतनी ज़्यादा व्याख्या करने की कोई ज़रूरत नहीं है," एंड्री ने आगे कहा। "भगवान ही जानता है कि मैं अल्बर्टिन से कितना प्यार करती थी और वह कितनी अच्छी इंसान थी; लेकिन सच कहूँ तो, टाइफ़ाइड होने के बाद (यह उस साल की बात है जब आप पहली बार हम सबसे मिले थे), वह पूरी तरह से सनकी हो गई थी। अचानक ही, वह जो काम कर रही होती थी, उससे उसका मन उचट जाता था; उसकी सारी योजनाएँ पल भर में बदल जाती थीं; और शायद वह खुद भी आपको यह नहीं बता पाती थी कि उसने ऐसा क्यों किया। आपको वह साल याद है जब आप पहली बार बालबेक आए थे—वही साल जब आप हम सबसे मिले थे? एक दिन अचानक उसने किसी से पेरिस वापस बुलाने वाला एक टेलीग्राम भिजवाया; उसके पास अपना सामान पैक करने का भी मुश्किल से ही समय बचा था। लेकिन, उसके जाने का कोई भी ठोस कारण नहीं था। उसने जितने भी बहाने बनाए, वे सब झूठे थे। उस समय पेरिस जाना उसके लिए बिल्कुल भी मुमकिन नहीं था। हम सब अभी भी बालबेक में ही थे। गोल्फ़ क्लब भी बंद नहीं हुआ था—बल्कि, जिस कप को जीतने के लिए वह इतनी ज़्यादा उत्सुक थी, उसके मुक़ाबले अभी खत्म भी नहीं हुए थे। उसे पूरा यकीन था कि वह वह कप जीत जाएगी। इसके लिए उसे बस एक हफ़्ता और रुकना था। लेकिन, फिर भी वह चली गई।" उसके बाद मैंने अक्सर उससे इस बारे में बात की है। उसने खुद कहा कि उसे नहीं पता कि वह क्यों चली गई थी; कि उसे घर की याद सता रही थी (और वह घर पेरिस था—आप अंदाज़ा लगा सकते हैं कि ऐसा होना कितना मुमकिन था); कि उसे बालबेक में खुशी महसूस नहीं हो रही थी;

और उसे लगता था कि वहाँ कुछ लोग ऐसे थे जो उस पर हँस रहे थे। और मैंने खुद से कहा कि एंड्री की बातों में कुछ हद तक सच्चाई ज़रूर थी—कि अगर अलग-अलग लोगों के मन की बनावट में फ़र्क होने की वजह से, एक ही चीज़ को देखकर अलग-अलग लोगों पर अलग-अलग असर पड़ता है—जिससे उनकी भावनाएँ अलग होती हैं, और हम किसी ऐसे इंसान को अपनी तरफ़ खींच नहीं पाते जिसे हम पसंद नहीं आते—तो ठीक वैसे ही, लोगों के स्वभाव में भी फ़र्क होता है, हर इंसान की अपनी कुछ खास आदतें होती हैं, जो उसके किसी भी काम को करने की वजह बनती हैं। फिर मैंने इस बात पर सोचना छोड़ दिया और खुद से कहा कि इस दुनिया में सच्चाई का पता लगाना कितना मुश्किल है। मैंने सच में अल्बर्टिन को मैडम वर्दुरिन के यहाँ जाने के लिए बहुत बेचैन देखा था, और यह भी देखा था कि वह अपनी इस चाहत को छिपा रही थी—और मेरा अंदाज़ा बिल्कुल सही निकला था। लेकिन फिर भी, अगर हम किसी एक बात की सच्चाई जान भी लें…
इसी तरह, कुछ और चीज़ें भी हैं जिन्हें हम सिर्फ़ उनके बाहरी रूप में ही देखते हैं; क्योंकि उस टेपेस्ट्री का पिछला हिस्सा— यानी किसी काम या साज़िश का असली पहलू—साथ ही बुद्धि और दिल का असली पहलू भी हमसे छिपा रहता है। हमारे सामने से बस कुछ धुंधली परछाइयाँ गुज़रती हैं, जिन्हें देखकर हम खुद से कहते हैं: यह यह है, या वह वह है; यह उस लड़की की वजह से है, या किसी और की वजह से। यह बात सामने आने पर कि Mlle. Vinteuil के आने की उम्मीद थी, मुझे यह और भी ज़्यादा तार्किक लगा, क्योंकि Albertine ने पहले ही मुझसे उसका ज़िक्र करके इस बात का संकेत दे दिया था। और बाद में, क्या उसने मुझसे यह कसम खाने से मना नहीं कर दिया था कि Mlle. Vinteuil की मौजूदगी से उसे कोई खुशी नहीं मिलती? और अब, इस नौजवान के बारे में मुझे एक ऐसी बात याद आई जिसे मैं भूल गया था;

कुछ समय पहले, जब Albertine मेरे साथ रह रही थी, तब मैं उससे मिला था। Balbec में उसके रवैये के बिल्कुल उलट, वह मेरे साथ बहुत ही दोस्ताना, यहाँ तक कि प्यार भरा बर्ताव कर रहा था। उसने मुझसे गुज़ारिश की थी कि मैं उसे मुझसे मिलने आने की इजाज़त दूँ, लेकिन मैंने कई वजहों से मना कर दिया था। और अब मुझे एहसास हुआ कि ऐसा सिर्फ़ इसलिए था, क्योंकि उसे पता था कि Albertine घर में ही रह रही है; इसलिए वह मुझसे अच्छे संबंध बनाना चाहता था, ताकि उसे Albertine से मिलने और उसे मुझसे दूर ले जाने का हर मौका मिल सके। और मैंने यह नतीजा निकाला कि वह एक कमीना इंसान है। कुछ समय बाद, जब मैं इस नौजवान के कामों के पहले प्रदर्शनों में शामिल हुआ, तो बेशक मैं यही सोचता रहा कि अगर वह मुझसे मिलने के लिए इतना बेताब था, तो वह Albertine की खातिर ही था। लेकिन, जहाँ मुझे यह बात गलत लगी, वहीं मुझे यह भी याद आया कि पहले, अगर मैं Saint–Loup से मिलने Doncières गया था, तो असल में इसलिए गया था क्योंकि मैं Mme. de Guermantes के प्यार में पागल था। यह सच है कि दोनों हालात एक जैसे नहीं थे, क्योंकि Saint–Loup, Mme. de Guermantes के प्यार में नहीं था; जिसका नतीजा यह हुआ कि उसके लिए मेरे प्यार में शायद थोड़ी-बहुत बनावट तो थी, लेकिन कोई गद्दारी नहीं थी। लेकिन बाद में मैंने सोचा कि जिस इंसान के पास हमारी चाहत की चीज़ होती है, उसके लिए हमारे दिल में जो प्यार पैदा होता है—वैसा ही प्यार हमें तब भी महसूस होता है, जब वह इंसान खुद भी उस चीज़ से प्यार करता हो। इसमें कोई शक नहीं कि हमें ऐसी दोस्ती से लड़ना पड़ता है जो हमें सीधे देशद्रोह की ओर ले जाती है। और मुझे लगता है कि मैंने हमेशा यही किया है। लेकिन उन लोगों के मामले में जिनमें लड़ने की ताकत नहीं होती, हम यह नहीं कह सकते कि वे नियंत्रक के प्रति जो दोस्ती दिखाते हैं, वह

सिर्फ़ एक चाल है; वे इसे पूरी ईमानदारी से महसूस करते हैं और इसी वजह से इसे इतने जोश के साथ दिखाते हैं कि जब धोखा पूरा हो जाता है, तो धोखा खाया हुआ पति या प्रेमी हैरान होकर गुस्से में कह पाता है: "अगर तुमने वे प्यार भरी बातें सुनी होतीं जो उस नीच ने मुझ पर बरसाई थीं! कोई इंसान आकर किसी आदमी का खज़ाना लूट ले, यह मैं समझ सकता हूँ। लेकिन उसे पहले अपनी दोस्ती का यकीन दिलाने की शैतानी ज़रूरत महसूस हो, यह इतनी गिरी हुई और विकृत बात है जिसकी कल्पना करना भी नामुमकिन है।" अब, इस काम में ऐसी कोई विकृति नहीं है, और न ही कोई पूरी तरह से साफ़ झूठ है। अल्बर्टिन के तथाकथित मंगेतर ने उस दिन मेरे प्रति जिस तरह का प्यार दिखाया था, उसका एक और भी बहाना था; यह अल्बर्टिन के प्रति उसके प्यार का महज़ एक सीधा-सा नतीजा नहीं था, बल्कि उससे कहीं ज़्यादा पेचीदा था। उसे खुद को जानने, खुद को स्वीकार करने और एक बुद्धिजीवी के तौर पर पहचाने जाने की चाहत हुए अभी कुछ ही समय बीता था। पहली बार उसके लिए खेल-कूद या प्रेम-संबंधों से हटकर कुछ और चीज़ों का भी महत्व था। यह बात कि एल्स्टिर और बर्गोट जैसे लोग मेरा आदर करते थे, और शायद अल्बर्टिन ने उसे बताया था कि मैं लेखकों की आलोचना किस तरह करता हूँ—जिससे उसे यह लगा होगा कि शायद मैं खुद भी लिख सकता हूँ—इन सब बातों का नतीजा यह हुआ कि अचानक ही मैं उसके लिए (उस नए इंसान के लिए जिसे उसने आखिरकार खुद में पहचाना था) एक दिलचस्प इंसान बन गया, जिसके साथ वह जुड़ना चाहता था, जिसे वह अपनी योजनाएँ बताना चाहता था, और जिससे शायद वह एल्स्टिर से मिलवाने की गुज़ारिश करता। इसका नतीजा यह हुआ कि जब उसने मुझसे पूछा कि क्या वह मुझसे मिलने आ सकता है, तो वह पूरी तरह से ईमानदार था; उसने मेरे प्रति जो आदर दिखाया, उसमें बौद्धिक कारणों के साथ-साथ

अल्बर्टिन के खयाल ने भी ईमानदारी भर दी थी। इसमें कोई शक नहीं कि वह सिर्फ़ इसी वजह से मुझसे मिलने के लिए इतना बेताब नहीं था, और इस मकसद के लिए वह बाकी सब कुछ भी कुर्बान कर देता। लेकिन इस आखिरी वजह के बारे में—जिसने बाकी दो वजहों को बस एक तरह के जोशीले आवेग में बदल दिया था—शायद उसे खुद भी पता नहीं था; और बाकी दो वजहें सचमुच मौजूद थीं—ठीक वैसे ही जैसे शायद अल्बर्टिन के मन में भी रही होंगी, जब रिहर्सल वाली दोपहर को वह मैडम वर्दुरिन के यहाँ जाने के लिए बेताब थी: अपने बचपन के दोस्तों से दोबारा मिलकर उसे जो एक बेहद ही शालीन खुशी महसूस होती—जिनकी नज़र में वह खुद भी उतनी ही 'अच्छी' थी, जितने वे उसकी नज़र में थे—उनसे बातें करने में, और वर्दुरिन के घर में अपनी मौजूदगी से उन्हें यह दिखाने में कि वह 'बेचारी छोटी लड़की' जिसे वे कभी जानते थे, अब एक इतने प्रतिष्ठित घर में मेहमान बनकर बुलाई गई है; और साथ ही, विन्तेउइल का संगीत सुनने में भी शायद उसे वैसी ही खुशी महसूस होती। अगर यह सब सच था, तो अल्बर्टिन के गालों पर जो लाली उभर आई थी—जब मैंने मिस विन्तेउइल का ज़िक्र किया था—उसकी वजह यही थी।
तो, उस दोपहर की पार्टी के बारे में मैंने जो किया था—जिसे उसने मुझसे छिपाकर रखने की कोशिश की थी, क्योंकि वहाँ शादी का एक प्रस्ताव था जिसके बारे में मुझे पता नहीं चलना था—उस बात पर आते हैं। अल्बर्टिन ने मुझसे यह कसम खाने से इनकार कर दिया था कि उस पार्टी में Mlle. Vinteuil से दोबारा मिलकर उसे कोई खुशी नहीं होगी; उस पल तो इस इनकार ने मेरी पीड़ा और मेरे शक को और बढ़ा दिया था, लेकिन बाद में जब मैंने इस बारे में सोचा, तो मुझे लगा कि वह सच बोलने पर अड़ी हुई थी—भले ही वह कोई मामूली सी बात ही क्यों न हो, शायद इसलिए क्योंकि वह सचमुच एक मामूली सी बात

थी। अब बात आती है उस बात की जो Andrée ने मुझे अल्बर्टिन के साथ अपने संबंधों के बारे में बताई थी। शायद, मैं यह तो न मानूँ कि Andrée ने यह कहानी सिर्फ इसलिए गढ़ी थी ताकि मैं खुश न रहूँ और खुद को उससे बेहतर न समझूँ, लेकिन फिर भी मैं यह सोच सकता हूँ कि Andrée ने अल्बर्टिन के साथ अपने क्रियाकलापों के बारे में बताते हुए शायद थोड़ी-बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बातें कही होंगी। और दूसरी तरफ, अल्बर्टिन ने शायद मन ही मन कुछ सीमाएँ तय करके, Andrée के साथ अपने किए-धरे को थोड़ा कम करके बताया होगा; उसने बड़ी होशियारी से उन परिभाषाओं का इस्तेमाल किया होगा जो मैंने ही इस विषय पर नासमझी में गढ़ी थीं—यह सोचकर कि Andrée के साथ उसके संबंध उस दायरे में नहीं आते जिनके बारे में उसे मुझसे सच बताना ज़रूरी था, और इसलिए वह बिना झूठ बोले उन बातों से इनकार कर सकती थी। लेकिन मैं यह क्यों मानूँ कि Andrée के बजाय अल्बर्टिन ही झूठ बोल रही थी? सच और ज़िंदगी बहुत कठिन होते हैं; और इन दोनों को पूरी तरह से जाने-समझे बिना भी, मेरे मन में इनकी एक ऐसी छाप रह गई थी—एक ऐसा एहसास—जिसमें शायद दुख से कहीं ज़्यादा थकावट हावी थी।

जहां तक उस तीसरे अवसर की बात है जब मुझे याद है कि मैं अल्बर्टीन के प्रति पूर्ण उदासीनता की ओर बढ़ रहा था (और इस तीसरे अवसर पर मुझे लगा कि मैं पूरी तरह से उस स्थिति तक पहुंच गया हूं), वह एक दिन वेनिस में हुआ था, एंड्री की आखिरी यात्रा के काफी समय बाद।

अध्याय III
वेनिस
मेरी माँ मुझे कुछ हफ़्तों के लिए वेनिस ले आई थीं और—जैसा कि सबसे कीमती और सबसे साधारण चीज़ों में भी सुंदरता होती है— मुझे वहाँ वैसे ही अनुभव हो रहे थे जैसे मैंने पहले कई बार कॉम्ब्रे में किए थे, लेकिन इस बार ये अनुभव बिल्कुल अलग और कहीं अधिक समृद्ध थे। जब सुबह दस बजे मेरे खिड़कियाँ खोली गईं, तो मैंने सेंट-हिलैरे की काली संगमरमर की दीवारों के बजाय, सैन मार्को के घंटाघर पर बने सुनहरे देवदूत को सूर्य की रोशनी में चमकते हुए देखा। उसकी चकाचौंध भरी चमक, जिसके कारण उसे स्थिर रखना लगभग असंभव था, ने मुझे अपनी फैली हुई बाहों से उस पल के लिए, आधे घंटे बाद, जब मैं पियाज़ेटा पर पहुँचूँगा, एक ऐसी खुशी का वादा किया जो पहले कभी भी किसी नेक इंसान को नहीं दी जा सकती थी। जब तक मैं बिस्तर पर लेटा रहा, मुझे अपने सिवा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, लेकिन चूंकि पूरी दुनिया एक विशाल सूर्यघड़ी मात्र है, जिसका एक प्रकाशित खंड हमें यह बताने में सक्षम बनाता है कि कितने बजे हैं, इसलिए पहली ही सुबह मुझे कॉम्ब्रे के प्लेस डे ल'एग्लिस में स्थित दुकानों की याद आ गई, जो रविवार की सुबह जब मैं प्रार्थना के लिए पहुंचता था, तब लगभग बंद होने वाली होती थीं, जबकि बाजार में पहले से ही तेज धूप में भूसे की तेज गंध आती थी। लेकिन दूसरी सुबह, जब मैं जागा, तो मैंने जो देखा, जिसने मुझे बिस्तर से उठने पर मजबूर किया (क्योंकि उन्होंने मेरी चेतना और मेरी इच्छा में कॉम्ब्रे की मेरी यादों की जगह ले ली थी), वे वेनिस में मेरी पहली सुबह की सैर की छापें थीं, वेनिस जिसका दैनिक जीवन कॉम्ब्रे से कम वास्तविक नहीं था,

जहाँ कॉम्ब्रे की तरह रविवार की सुबह एक उत्सवपूर्ण सड़क पर निकलने का आनंद मिलता था, लेकिन जहाँ वह सड़क नीलम नीले पानी से पक्की थी, ठंडी हवा की छोटी-छोटी लहरों से तरोताजा, और इतना ठोस रंग कि मेरी थकी हुई आँखें, आराम की तलाश में और इसके फीका पड़ने के डर के बिना, अपनी निगाहें उस पर टिका सकती थीं। कॉम्ब्रे में, रू डे ल'ओइसो के सम्मानित लोगों की तरह, इस विचित्र शहर में भी, निवासी वास्तव में मुख्य सड़क के किनारे एक पंक्ति में, अगल-बगल बने घरों से निकलते थे, लेकिन यहाँ उन घरों की भूमिका, जो अपने सामने छाया का एक क्षेत्र बनाते थे, वेनिस में पोर्फिरी और जैस्पर के महलों को सौंपी गई थी, जिनके मेहराबदार दरवाजे के ऊपर एक दाढ़ी वाले देवता का सिर (कॉम्ब्रे के दरवाजे पर लगे नॉकर की तरह, अपनी संरचना से बाहर निकला हुआ) अपनी छाया से मिट्टी के भूरेपन को नहीं, बल्कि पानी के शानदार नीले रंग को गहरा कर देता था। चौक पर, कॉम्ब्रे में कपड़े की दुकान के शामियाने और नाई के खंभे की जो छाया पड़ती थी, वह पुनर्जागरण काल की इमारत के मुखौटे की छाया में बदल गई, जो धूप से झुलसी टाइलों के रेगिस्तान पर बिखरे छोटे-छोटे नीले फूलों में तब्दील हो गई। इसका मतलब यह नहीं है कि जब धूप तेज़ होती थी, तो वेनिस में भी, कॉम्ब्रे की तरह, हमें नहर से खुद को बचाने के लिए पर्दे गिराने पड़ते थे, लेकिन वे गोथिक शैली की खिड़कियों के चौकोर और पत्तों वाले डिज़ाइन के पीछे लटके रहते थे। इसी तरह की एक खिड़की हमारे होटल में थी, जिसके खंभों के पीछे मेरी माँ मेरा इंतज़ार कर रही थीं, नहर को ऐसे धैर्य से निहार रही थीं, जैसा धैर्य उन्होंने कॉम्ब्रे में पुराने दिनों में नहीं दिखाया होता, उस समय जब मुझमें ऐसी उम्मीदें टिकी थीं जो कभी पूरी नहीं हुईं, और वह मुझे यह दिखाना नहीं चाहती थीं कि वह मुझसे कितना प्यार करती

पढ़ रही थीं और मेरे लौटने का इंतज़ार कर रही थीं, उनका चेहरा एक ट्यूल के घूंघट से ढका हुआ था, जो उनके बालों की तरह ही अपनी सफेदी में पीड़ादायक था। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरी माँ ने अपने आँसू पोंछते हुए उसे अपनी पुआल की टोपी पर पिन कर दिया था, आंशिक रूप से होटल के कर्मचारियों की नज़र में 'सजे-धजे' दिखने के इरादे से, लेकिन मुख्य रूप से मुझे कम 'शोकग्रस्त', कम दुखी, लगभग मेरी दादी की मृत्यु पर सांत्वना प्राप्त करने के लिए; क्योंकि, पहले तो मुझे न पहचान पाने के कारण, जैसे ही मैंने गोंडोला से उन्हें पुकारा, उन्होंने अपने दिल की गहराई से मेरे लिए एक ऐसा प्यार भेजा जो केवल वहीं रुक गया जहाँ उसे सहारा देने के लिए कोई भौतिक पदार्थ नहीं बचा था। उनकी भावुक निगाहें, जिन्हें वह मेरे जितना संभव हो सके करीब लाती थीं, जिन्हें वह अपने होठों के आगे बढ़ाने की कोशिश करती थीं, एक ऐसी मुस्कान में जो मुझे चूमती हुई प्रतीत होती थी, दोपहर के सूरज से प्रकाशित मेहराबदार खिड़की की अधिक संयमित मुस्कान के ढांचे और छत्र के नीचे। इन्हीं कारणों से, वह खिड़की मेरी स्मृति में उन अनमोल वस्तुओं के समान बन गई है, जिन्होंने हमारे साथ-साथ, एक ऐसे क्षण में अपनी भूमिका निभाई है जो हमारे और उनके लिए एक समान था; और चाहे उसके खंभे कितने ही अद्भुत नक्काशीदार क्यों न हों, वह शानदार खिड़की मेरी दृष्टि में एक प्रतिभाशाली व्यक्ति की अंतरंग छवि को बरकरार रखती है, जिसके साथ हमने किसी पर्यटक स्थल पर एक महीना बिताया था, जहाँ उसने हमारे प्रति मैत्रीपूर्ण भाव विकसित किया था; और यदि तब से, जब भी मैं किसी संग्रहालय में उस खिड़की की प्रतिकृति देखता हूँ, तो मेरी आँखों में आँसू आ जाते हैं, तो इसका कारण केवल यह है कि वह खिड़की मुझसे वह बात कहती है

करता था, जब मैं अपनी माँ के साथ बाहर नहीं जाता था। असल बात यह थी कि वहाँ औद्योगिक वर्ग की महिलाओं, माचिस बनाने वाली, मोती पिरोने वाली, काँच या लेस का काम करने वाली, और लंबी झालर वाली काली शॉल ओढ़े कामकाजी महिलाओं को ढूँढना आसान था। मेरी गोंडोला छोटी नहरों के रास्ते पर चल रही थी; मानो किसी जिन्न का रहस्यमयी हाथ मुझे इस पूर्वी शहर की भूलभुलैया से रास्ता दिखा रहा हो, जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया, वे मेरे लिए एक भीड़भाड़ वाले इलाके के बीचोंबीच से रास्ता बनाते हुए प्रतीत हो रहे थे, मानो वे एक पतली सी दरार से, मनमाने ढंग से खोदी गई, छोटी-छोटी मूरिश खिड़कियों वाले ऊँचे घरों को अलग कर रहे हों; और, मानो जादुई मार्गदर्शक के हाथ में मोमबत्ती हो और वह मेरे लिए रास्ता रोशन कर रहा हो, वे अपने आगे सूर्य की किरणें बिखेरते हुए रास्ता साफ़ करते जा रहे थे।
ऐसा प्रतीत होता था कि नहर द्वारा अलग किए गए उन छोटे-छोटे मकानों के बीच, जो अन्यथा एक सघन इकाई बनाते, कोई खुली जगह नहीं छोड़ी गई थी। परिणामस्वरूप, चर्च का घंटाघर या बगीचे की जाली नदी के ऊपर ऐसे खड़ी थी मानो किसी बाढ़ग्रस्त शहर में हो। लेकिन उद्यानों की तरह गिरजाघरों में भी, ग्रैंड कैनाल की तरह ही, समुद्र संचार का एक इतना प्रभावी माध्यम बन गया, सड़क या गली का विकल्प बन गया, कि नहर के दोनों ओर इस प्राचीन, आम लोगों के इलाके में, जो अब साधारण, भीड़-भाड़ वाले मिशन चैपलों में तब्दील हो चुका था, गिरजाघर पानी से ऊपर उठते हुए दिखाई देते थे, जिनकी सतह पर उनकी आवश्यकता, साधारण लोगों की भीड़ द्वारा उनके उपयोग की छाप स्पष्ट थी; नहर की रेखा से पार किए गए उद्यानों में उनके आश्चर्यचकित पत्ते या फल पानी में लटकते थे; और उस घर के द्वार पर, जिसका खुरदरा पत्थर अभी भी झुर्रीदार था मानो उसे

अभी-अभी काटा गया हो, गोंडोला को देखकर आश्चर्यचकित हुए छोटे लड़के अपना संतुलन बनाए रखते हुए अपने पैरों को लंबवत लटका लेते थे, मानो नाविक झूले पर बैठे हों - एक ऐसा पुल जिसके दोनों हिस्से अलग-अलग झूले पर झूले हों, जिससे समुद्र उनके बीच से गुजर सके।
कभी-कभार वहाँ एक अधिक सुंदर इमारत दिखाई देती थी, मानो किसी डिब्बे में रखा कोई आश्चर्य हो जिसे हमने अभी-अभी खोला हो, एक छोटा सा हाथीदांत का मंदिर जिसमें कोरिंथियन स्तंभ और अग्रभाग पर एक प्रतीकात्मक मूर्ति हो, जो उन साधारण इमारतों के बीच कुछ हद तक बेमेल लगती थी जिनके बीच वह बची हुई थी, और नहर द्वारा प्रदान किया गया पेरिस्टाइल बाजार के बागवानों के लिए एक लैंडिंग-स्टेज जैसा दिखता था।
सूरज डूबने ही वाला था कि मैं पियाज़ेटा से अपनी माँ को लेने चला गया। हम अपनी गोंडोला में ग्रैंड कैनाल से वापस लौटे। हमने महलों की दोहरी कतार को देखा, जिनके बीच से हम गुज़रे। उनकी गुलाबी सतहों पर सूरज की रोशनी और कोण प्रतिबिंबित हो रहे थे, और वे उनके साथ बदल रहे थे। वे निजी आवास और ऐतिहासिक इमारतें नहीं, बल्कि संगमरमर की चट्टानों की एक श्रृंखला प्रतीत हो रहे थे, जिनके तल पर लोग शाम को नाव में बैठकर सूर्यास्त देखने जाते हैं। इस तरह, नहर के दोनों किनारों पर बने महल प्रकृति की वस्तुओं की याद दिलाते थे, लेकिन ऐसी प्रकृति की, जिसने मानो मानवीय कल्पना से अपनी रचनाएँ की हों। लेकिन उसी समय (हमेशा शहरी छापों के चरित्र के कारण, जो वेनिस हमें लगभग खुले समुद्र में, उन लहरों पर देता है जिनका उतार-चढ़ाव दिन में दो बार महसूस होता है, और जो बारी-बारी से उच्च ज्वार पर महलों की शानदार बाहरी सीढ़ियों को ढक देती हैं और निम्न ज्वार पर उजागर कर देती

हैं), जैसा कि हम पेरिस में बुलेवार्ड पर, चैंप्स-एलिसी में, बोइस में, किसी भी चौड़ी सड़क पर जो एक फैशनेबल रिसॉर्ट था, शाम की हल्की रोशनी में करते, हम सबसे खूबसूरत कपड़े पहने महिलाओं के पास से गुजरे, लगभग सभी विदेशी, जो अपने तैरते वाहन के गद्दों पर आराम से बैठी हुई, जुलूस में अपना स्थान लिया, एक महल के सामने रुकीं जिसमें एक दोस्त थी जिसे वे देखना चाहती थीं, यह पूछने के लिए भेजा गया था कि क्या वह घर पर है; और जब वे जवाब की प्रतीक्षा कर रहे थे और होटल डी गुएरमांटेस के दरवाजे पर कार्ड छोड़ने की तैयारी कर रहे थे, तभी उन्होंने महल की काल-शैली और कालक्रम जानने के लिए अपनी मार्गदर्शिका देखी। वे नीली लहर के शिखर पर खड़े होकर, चमकते-खिलखिलाते पानी के धक्के से व्याकुल हो उठे, जो नाचती हुई गोंडोला और थपथपाते संगमरमर के बीच फंसकर भयभीत हो गया था। इस प्रकार, वेनिस में कोई भी भ्रमण, चाहे वह केवल मिलने-जुलने या खरीदारी के लिए ही क्यों न हो, तीन गुना और अनूठा होता था, जहाँ साधारण सामाजिक आना-जाना भी एक ही समय में संग्रहालय भ्रमण और समुद्री यात्रा का रूप और आकर्षण धारण कर लेता था।
ग्रांड कैनाल पर स्थित कई महलों को होटलों में बदल दिया गया था, और बदलाव की ज़रूरत महसूस करते हुए, या श्रीमती सज़ेरत के प्रति आतिथ्य सत्कार दिखाने की इच्छा से, जिनसे हमारी मुलाक़ात हुई थी—विदेश यात्रा के दौरान अक्सर होने वाली अप्रत्याशित और अनचाही मुलाक़ात—और जिन्हें माँ ने हमारे साथ भोजन करने के लिए आमंत्रित किया था, हमने एक शाम किसी दूसरे होटल में जाने का फ़ैसला किया, जिसके बारे में हमें बताया गया था कि वहाँ का खाना बेहतर है। जब मेरी माँ गोंडोलियर को पैसे दे रही थीं और श्रीमती सज़ेरत को उनके द्वारा बुक किए गए कमरे में ले जा रही थीं, तो

मैं चुपके से रेस्तरां के विशाल हॉल का निरीक्षण करने चला गया, जिसमें संगमरमर के सुंदर खंभे और दीवारें और छत थी, जो कभी पूरी तरह से भित्तिचित्रों से ढकी हुई थीं, जिन्हें हाल ही में बुरी तरह से पुनर्स्थापित किया गया था। दो वेटर इतालवी में बातचीत कर रहे थे, जिसका मैंने अनुवाद किया:
"क्या बुज़ुर्ग लोग अपने कमरे में खाना खाएंगे? वे हमें कभी बताते नहीं। ये तो शैतान है, मुझे कभी पता ही नहीं चलता कि मुझे उनके लिए टेबल रिज़र्व करनी है या नहीं (non so se bisogna conservargli la loro tavola)। और फिर, मान लीजिए कि वे नीचे आएं और देखें कि उनकी टेबल पहले से ही किसी और ने ले रखी है! मुझे समझ नहीं आता कि इतने शानदार होटल में वे ऐसे वानिकी कर्मचारियों को कैसे ठहरा सकते हैं। ये हमारे ज़माने के लोग नहीं हैं।" अपनी अवहेलना के बावजूद, वेटर यह जानने के लिए उत्सुक था कि मेज के संबंध में उसे क्या कार्रवाई करनी है, और वह लिफ्ट-बॉय को ऊपर भेजने ही वाला था कि इससे पहले कि वह ऐसा कर पाता, उसे अपना जवाब मिल गया: उसने कमरे में प्रवेश करती हुई उस बूढ़ी महिला को देख लिया था। उम्र के बोझ से आने वाली उदासी और थकावट के बावजूद, और एक प्रकार के एक्जिमा, उसके चेहरे पर फैले लाल कुष्ठ रोग के बावजूद, मुझे उसकी टोपी के नीचे, उसकी काली जैकेट में, जो डब्ल्यू— द्वारा बनाई गई थी, लेकिन एक अनपढ़ व्यक्ति की नज़र में बिल्कुल एक बूढ़ी सफाईकर्मी जैसी लग रही थी, मार्क्विज़ डी विलेपारिसिस को पहचानने में कोई कठिनाई नहीं हुई। संयोग से, जिस स्थान पर मैं खड़ा था, दो सुंदर संगमरमर के पैनलों के बीच एक भित्तिचित्र के अवशेषों का अध्ययन कर रहा था, वह ठीक उस मेज के पीछे था जिस पर श्रीमती डी विलेपारिसिस अभी बैठी थीं।

"तो फिर एम. डी विलेपारिसिस को ज्यादा देर नहीं लगेगी। वे यहाँ एक महीने से हैं, और केवल एक बार ऐसा हुआ है जब उन्होंने एक साथ भोजन नहीं किया है," वेटर ने कहा।
मैं खुद से पूछ रहा था कि वह रिश्तेदार कौन हो सकता है जिसके साथ वह यात्रा कर रही थी, और जिसका नाम एम. डी विलेपारिसिस था, तभी मैंने कुछ क्षण बाद देखा कि उसका पुराना प्रेमी, एम. डी नॉरपोइस, मेज की ओर बढ़ा और उसके बगल में बैठ गया।
उनकी बढ़ती उम्र ने उनकी आवाज़ की गूंज को कमज़ोर कर दिया था, लेकिन बदले में उनकी भाषा को, जो पहले इतनी संयमित थी, एक अलग ही उग्रता प्रदान कर दी थी। इसका कारण शायद उनकी कुछ महत्वाकांक्षाओं में था, जिनके पूरा होने के लिए उन्हें लगता था कि उनके पास बहुत कम समय बचा है, और जिन्होंने उन्हें और भी अधिक जोश और उत्साह से भर दिया था; शायद इस तथ्य में भी कि राजनीति की दुनिया से बाहर निकाले जाने के बाद, जिसमें वे वापस लौटने के लिए तरस रहे थे, उन्होंने अपनी इच्छा की सरलता में यह कल्पना की थी कि वे अपने तीखे हमलों से उन लोगों को पद से हटा सकते हैं, जिनकी जगह वे लेना चाहते थे। इस प्रकार हम देखते हैं कि राजनेता इस बात से आश्वस्त हैं कि जिस मंत्रिमंडल के वे सदस्य नहीं हैं, वह तीन दिन भी नहीं टिक सकता। हालांकि, यह कहना अतिशयोक्ति होगी कि एम. डी नॉरपोइस ने कूटनीतिक भाषण की परंपराओं को पूरी तरह से खो दिया था। जब भी 'महत्वपूर्ण मामले' सामने आते थे, तो वह तुरंत वही व्यक्ति बन जाता था, जैसा कि हम आगे देखेंगे, जिसे हम अतीत में याद करते हैं, लेकिन अन्य सभी समयों में वह कुछ अस्सी वर्ष के बुजुर्गों की उस बुढ़ापे वाली हिंसा के साथ इधर-उधर के लोगों पर हमला करता था, जो उन्हें उन

महिलाओं की बाहों में धकेल देती है जिन्हें वे अब कोई गंभीर नुकसान पहुंचाने में सक्षम नहीं होते हैं।
श्रीमती डी विलेपारिस ने कुछ मिनटों तक एक ऐसी वृद्ध महिला की खामोशी बनाए रखी, जिसे उम्र की थकावट के कारण अतीत की यादों से उठकर वर्तमान पर विचार करना मुश्किल लगता है। फिर, उन्होंने उन अत्यंत व्यावहारिक प्रश्नों में से एक की ओर रुख किया, जो आपसी स्नेह के जीवित रहने का संकेत देते हैं:
"क्या आपने साल्वियाटी के यहाँ फोन किया था?"
"हाँ।"
"क्या वे इसे कल भेजेंगे?"
"मैं खुद कटोरा वापस लाया हूँ। आप इसे खाने के बाद देखेंगे। चलिए देखते हैं खाने में क्या है।"
"क्या आपने मेरे स्वेज शेयरों के बारे में निर्देश भेजे थे?" नहीं; फिलहाल बाजार पूरी तरह से तेल कंपनियों के शेयरों से भरा हुआ है। लेकिन कोई जल्दी नहीं है, इनकी कीमत अभी भी बहुत अच्छी है। ये रहा मेन्यू। सबसे पहले, लाल मुलेट मछली है। क्या हम इसे चखें?
"मेरे लिए तो हाँ, लेकिन आपको ये खाने की अनुमति नहीं है। इसके बजाय रिसोट्टो ऑर्डर करें। लेकिन उन्हें रिसोट्टो बनाना नहीं आता।"
"इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। वेटर, मैडम के लिए कुछ मुलेट और मेरे लिए एक रिसोट्टो लाओ।"
एक नया और लंबा सन्नाटा।
"क्यों, मैं आपके लिए अखबार लाया हूँ, कोरिएरे डेला सेरा, गज़ेटा डेल पोपोलो, और बाकी सभी। क्या आप जानते हैं, कूटनीतिक बदलाव की खूब चर्चा हो रही है, जिसका पहला बलि का बकरा पालेओलॉग होगा, जो

सर्बिया में अपनी अक्षमता के लिए कुख्यात है। शायद उसकी जगह लोज़े लेगा, और कॉन्स्टेंटिनोपल में एक पद खाली हो जाएगा। लेकिन," एम. डी नॉरपोइस ने कड़वे लहजे में जल्दी से कहा, "इतने बड़े दूतावास के लिए, एक ऐसी राजधानी में जहाँ यह स्पष्ट है कि ग्रेट ब्रिटेन को हमेशा, चाहे कुछ भी हो जाए, परिषद में प्रमुख स्थान प्राप्त करना है, यह समझदारी होगी कि ऐसे अनुभवी लोगों की मदद ली जाए जो हमारे ब्रिटिश सहयोगी के दुश्मनों के हमलों का सामना करने में आधुनिक राजनयिकों की तुलना में कहीं बेहतर सक्षम हों, जो आँख बंद करके जाल में फँस जाएँगे।" एम. डी नॉरपोइस ने जिस क्रोध और वाक्पटुता से अपने अंतिम शब्द कहे, उसका मुख्य कारण यह था कि समाचार पत्रों ने, उनके अनुरोध के विपरीत, विदेश मंत्रालय के एक युवा अधिकारी को 'सबसे प्रबल दावेदार' बताया था। "ईश्वर ही जानता है कि अनुभवी और वरिष्ठ लोग तमाम तरह की पेचीदगियों के चलते, कमोबेश अयोग्य उम्मीदवारों की जगह खुद को आगे करने में हिचकिचा सकते हैं। मैंने ऐसे कई स्वघोषित राजनयिकों को देखा है जो अनुभवजन्य पद्धति का पालन करते हैं और अपनी सारी उम्मीदें एक ऐसे बुलबुले पर टिकाए रखते हैं जिसे फोड़ने में मुझे देर नहीं लगी। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यदि सरकार इतनी अविवेकी है कि वह सत्ता की बागडोर अशांत हाथों में सौंप दे, तो कर्तव्य की पुकार पर एक अनुभवी सैनिक हमेशा 'हाज़िर!' कहेगा।" लेकिन कौन जानता है” (और यहाँ एम. डी नॉरपोइस भली-भांति जानते थे कि वे किसका जिक्र कर रहे हैं) “कि क्या उस दिन भी यही स्थिति न हो जब वे किसी अनुभवी, ज्ञानवान और कुशल व्यक्ति की तलाश में आएँगे। मेरी राय में, क्योंकि हर किसी को अपनी राय रखने का अधिकार है, कॉन्स्टेंटिनोपल का पद तब तक स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए जब तक हम जर्मनी के साथ अपने

मौजूदा संघर्षों का समाधान नहीं कर लेते। हम किसी के ऋणी नहीं हैं, और यह असहनीय है कि हर छह महीने में वे आकर हमसे कपटपूर्ण चालों से, बल और भय से, किसी न किसी ऋण की मांग करें, जो हमेशा भ्रष्ट प्रेस द्वारा जल्दबाजी में पेश किया जाता है। यह सब बंद होना चाहिए, और स्वाभाविक रूप से एक उच्च पदस्थ व्यक्ति जिसने अपनी योग्यता साबित की हो, एक ऐसा व्यक्ति जिसकी, अगर मैं कहूँ तो, सम्राट से विशेष निकटता हो, संघर्ष को समाप्त करने में किसी भी आम व्यक्ति से कहीं अधिक अधिकार का प्रयोग करेगा।”
अपना भोजन समाप्त कर रहे एक सज्जन ने एम. डी नॉरपोइस को प्रणाम किया।
"अरे, यहाँ तो प्रिंस फोगी हैं," मार्क्विस ने कहा।
"आह, मुझे यकीन नहीं है कि मैं समझ पा रही हूँ कि आप किसका जिक्र कर रही हैं," श्रीमती डी विलेपारिसिस ने बुदबुदाते हुए कहा। "क्यों, बिल्कुल आपको याद होगा। यह प्रिंस ओडोन हैं। आपके चचेरे भाई डूडौविल के बहनोई। आप यह तो भूल ही नहीं सकते कि मैं उनके साथ बोनेटेबल में शिकार पर गया था?"
"अरे! ओडोन, वही है जिसने पेंटिंग की पढ़ाई शुरू की थी?" "बिल्कुल नहीं, उसने ही ग्रैंड ड्यूक एन— की बहन से शादी की है।"
एम. डी नॉरपोइस ने ये टिप्पणियाँ एक ऐसे शिक्षक के चिड़चिड़े स्वर में कीं जो अपने छात्र से असंतुष्ट हो, और अपनी नीली आँखों से श्रीमती डी विलेपारिसिस को टकटकी लगाकर देखा।
जब राजकुमार ने अपनी कॉफ़ी पी ली और मेज़ से उठने लगे, तो एम. डी नॉरपोइस उठे, तेज़ी से उनकी ओर बढ़े और अपने हाथ को एक भव्य अंदाज़ में हिलाते हुए, खुद पीछे हटते हुए, उन्हें श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिलवाया। अगले कुछ मिनटों तक जब राजकुमार उनकी

मेज़ के पास खड़े रहे, एम. डी नॉरपोइस ने एक पल के लिए भी अपनी नीली आँखों को श्रीमती डी विलेपारिसिस पर टिकाए रखा, मानो किसी पुराने प्रेमी की कमज़ोरी या सख्ती से, मुख्य रूप से इस डर से कि कहीं वह इतालवी भाषा में कोई ऐसी गलती न कर दें जिसका उन्होंने आनंद लिया था लेकिन जिससे वे डरते थे। जब भी वह राजकुमार से कुछ ऐसा कहतीं जो पूरी तरह सही नहीं होता, तो वह उनकी गलती सुधारते और शर्मिंदा और विनम्र मार्क्विज़ की आँखों में सम्मोहनकर्ता की स्थिर तीव्रता से देखते रहते।
एक वेटर ने आकर मुझे बताया कि मेरी माँ मेरा इंतज़ार कर रही हैं। मैं उनके पास गई और श्रीमती सज़ेरत से माफ़ी मांगते हुए कहा कि मैं श्रीमती डी विलेपारिसिस से मिलना चाहती थी। यह नाम सुनते ही श्रीमती सज़ेरत का चेहरा पीला पड़ गया और ऐसा लगा जैसे वह बेहोश हो जाएंगी। बड़ी मुश्किल से खुद को संभालते हुए उन्होंने पूछा, "श्रीमती डी विलेपारिसिस, श्रीमती डी बौइलन कौन थीं?"
"हाँ।"
"क्या मुझे एक पल के लिए भी उसकी एक झलक नहीं मिल सकती? यह मेरे जीवन की सबसे बड़ी इच्छा रही है।"
"तो फिर, मैडम, समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं है, क्योंकि वह जल्द ही अपना भोजन समाप्त कर लेंगी। लेकिन आपको उनमें इतनी दिलचस्पी कैसे हो गई?"
क्योंकि श्रीमती डी विलेपारिसिस, अपनी दूसरी शादी से पहले, डचेस डी'हावरे थीं, जो देवदूत की तरह सुंदर और शैतान की तरह दुष्ट थीं। उन्होंने मेरे पिता को पागल कर दिया, उन्हें बर्बाद कर दिया और फिर तुरंत उन्हें छोड़ दिया। खैर, हो सकता है कि उन्होंने उनके साथ किसी गली-मोहल्ले की लड़की जैसा व्यवहार

किया हो, हो सकता है कि वह हमारे, मेरे परिवार और मुझे, कॉम्ब्रे में एक साधारण स्थिति में रहने का कारण रही हों; अब जब मेरे पिता मर चुके हैं, तो मुझे इस बात से तसल्ली मिलती है कि वह अपनी पीढ़ी की सबसे सुंदर महिला से प्यार करते थे, और चूंकि मैंने उन्हें कभी नहीं देखा है, इसलिए उन्हें देखना आखिरकार एक सुखद अनुभव होगा…।"
मैंने भावुकता से कांपती हुई श्रीमती सजेरत को रेस्तरां तक पहुंचाया और उन्हें श्रीमती डी विलेपारिसिस की ओर इशारा किया। लेकिन, एक अंधे व्यक्ति की तरह जो अपना चेहरा गलत दिशा में घुमा लेता है, वैसे ही श्रीमती सजेरत ने अपनी निगाह उस मेज पर नहीं टिकाई जहाँ श्रीमती डी विलेपारिसिस भोजन कर रही थीं, बल्कि कमरे के दूसरे हिस्से की ओर देखते हुए कहा:
"लेकिन वह चली गई होगी, मुझे वह उस जगह पर नहीं दिख रही है जहाँ आप इशारा कर रहे हैं।"
और वह कमरे में चारों ओर देखती रही, उस घृणित, पूजनीय छवि की तलाश में जो इतने लंबे समय से उसकी कल्पना में बसी हुई थी। "हां, वह दूसरी मेज पर बैठी है।"
"तो फिर हम एक ही बिंदु से गिनती नहीं कर रहे होंगे। जिसे मैं दूसरी मेज कहता हूँ, वहाँ केवल दो लोग हैं, एक बूढ़ा सज्जन और एक छोटी, कुबड़ी, लाल चेहरे वाली महिला, जो देखने में काफी बदसूरत है।"
"यही तो वो है!"
इसी बीच, श्रीमती डी विलेपारिस ने श्री डी नॉरपोइस से राजकुमार फोगी को बिठाने का अनुरोध किया, जिसके बाद तीनों के बीच सौहार्दपूर्ण बातचीत हुई; उन्होंने राजनीति पर चर्चा की। राजकुमार ने कहा कि उन्हें मंत्रिमंडल के भविष्य में कोई

प्रयास किया था, उदाहरण के लिए राष्ट्रपति चुनाव। वे ताज़ी हवा लेने, खाने-पीने, अखबार पढ़ने में ही संतुष्ट हो जाते हैं; वे अपने आप को पीछे छोड़ चुके होते हैं।
राजकुमार ने मार्क्विस को सहज महसूस कराने और उन्हें यह जताने के लिए कि वे उन्हें अपना देशवासी मानते हैं, तत्कालीन प्रधानमंत्री के संभावित उत्तराधिकारियों के बारे में बात करना शुरू किया। एक ऐसा उत्तराधिकारी जिसके सामने एक कठिन कार्य था। जब राजकुमार फोगी ने बीस से अधिक राजनेताओं के नाम लिए जो उन्हें पद के लिए उपयुक्त प्रतीत होते थे, और पूर्व राजदूत ने अपनी नीली आँखों पर पलकें झुकाए और बिना हिले-डुले उन नामों को सुना, तब एम. डी नॉरपोइस ने अंततः अपनी चुप्पी तोड़ी और वे शब्द कहे जो बीस वर्षों तक चांसरीज़ में चर्चा का विषय बने रहे, और बाद में, जब वे भुला दिए गए, तो किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा फिर से खोदे गए जिसने खुद को 'जानने वाला' या 'टेस्टिस' या 'मैकियावेली' के रूप में चिह्नित किया, और जिस विस्मृति में वे डूब गए थे, उसी ने उन्हें एक नई सनसनी पैदा करने का अधिकार दे दिया। जैसा कि मैंने कहा, प्रिंस फोगी ने राजनयिक के सामने बीस से अधिक नाम लिए थे, जो मानो बहरे की तरह स्थिर और मौन बैठा रहा। तभी एम. डी नॉरपोइस ने अपना सिर थोड़ा सा उठाया और अपने उन राजनयिक हस्तक्षेपों के अंदाज़ में, जिनका सबसे दूरगामी प्रभाव रहा था, हालांकि इस बार अधिक साहस और संक्षिप्तता के साथ, चतुराई से पूछा: "क्या किसी ने सिग्नोर जिओलिट्टी का नाम नहीं लिया?" ये शब्द सुनते ही प्रिंस फोगी की आंखें खुल गईं; उन्हें मानो एक दिव्य ध्वनि सुनाई दी। फिर एम. डी नॉरपोइस एक के बाद एक कई बातें करने लगे, अब उन्हें बोलने में कोई झिझक नहीं थी, ठीक वैसे ही जैसे बाख के किसी उत्कृष्ट गीत का अंतिम स्वर

बजने पर श्रोता भी ज़ोर से बोलने लगते हैं, अपने कोट और टोपी व कोट वगैरह व क्लोकरूम से मंगवाने लगते हैं। उन्होंने राजकुमार से अगली बार जब वे राजा और रानी से मिलें तो उन्हें अत्यंत विनम्रतापूर्वक प्रणाम करने का अनुरोध करके इस अंतर को और भी स्पष्ट कर दिया। यह विदाई का ऐसा संकेत था जैसे किसी संगीत कार्यक्रम के अंत में कोचवान को पुकारा जाता है: "ऑगस्टे, रू डे बेलोय से।" हम ठीक-ठीक नहीं कह सकते कि राजकुमार फोगी की क्या प्रतिक्रिया रही होगी। उन्हें यह सुनकर निश्चित रूप से प्रसन्नता हुई होगी: "और सिग्नोर जिओलिट्टी, क्या किसी ने उनका नाम नहीं लिया?" क्योंकि एम. डे नॉरपोइस, जिनमें उम्र ने उनके सबसे उत्कृष्ट गुणों को नष्ट या विकृत कर दिया था, दूसरी ओर, उम्र बढ़ने के साथ-साथ अपनी प्रतिभा को और भी निखारते गए, ठीक वैसे ही जैसे कुछ वृद्ध संगीतकार, जो अन्य सभी मामलों में कमजोर हो गए हैं, कक्ष संगीत के मामले में एक ऐसी परिपूर्ण निपुणता प्राप्त कर लेते हैं और अंत तक बनाए रखते हैं जो उनके पास पहले नहीं थी।
लेकिन जो भी हो, प्रिंस फोगी, जिन्होंने वेनिस में दो सप्ताह बिताने का इरादा किया था, उसी रात रोम लौट आए और कुछ दिनों बाद राजा ने उन्हें सिसिली में स्थित उनकी संपत्ति के संबंध में मुलाकात के लिए बुलाया, जिसका जिक्र शायद हम पहले ही कर चुके हैं। मंत्रिमंडल अपेक्षा से अधिक समय तक चला। जब वह गिर गया, तो राजा ने नए मंत्रिमंडल के सबसे उपयुक्त प्रमुख के चयन हेतु विभिन्न राजनेताओं से परामर्श किया। फिर उन्होंने सिग्नोर जिओलिट्टी को बुलवाया, जिन्होंने पद स्वीकार कर लिया। तीन महीने बाद एक समाचार पत्र ने प्रिंस फोगी और एम. डी नॉरपोइस की मुलाकात की खबर छापी। बातचीत का विवरण जैसा हमने यहां दिया है,

वैसा ही था, बस फर्क इतना था कि "एम. डी नॉरपोइस ने चतुराई से पूछा" के स्थान पर लिखा था: "एम. डी नॉरपोइस ने अपनी उस चतुर और आकर्षक मुस्कान के साथ जवाब दिया जो उनकी विशेषता है।" एम. डी नॉरपोइस का मानना था कि 'चतुराई से' शब्द में ही एक राजनयिक के लिए पर्याप्त विस्फोटक शक्ति थी और यह जोड़, कम से कम, समय से पहले था। उन्होंने क्वाइ डी'ओर्से से आधिकारिक खंडन जारी करने का अनुरोध भी किया था, लेकिन क्वाइ डी'ओर्से को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। दरअसल, बातचीत के सार्वजनिक होने के बाद से ही श्री बैरे पेरिस को हर घंटे कई बार टेलीग्राम भेज रहे थे, जिसमें वे बता रहे थे कि क्विरिनल में पहले से ही एक मान्यता प्राप्त राजदूत मौजूद है और इस घटना को पूरे यूरोप में जिस आक्रोश के साथ लिया गया है, उसका वर्णन कर रहे थे। यह आक्रोश न के बराबर था, लेकिन अन्य राजदूत श्री बैरे के इस आश्वासन का खंडन करने के लिए बहुत विनम्र थे कि हर कोई गुस्से में है, इस पर कोई संदेह नहीं हो सकता। श्री बैरे, केवल अपने विचारों में खोए हुए, इस विनम्र चुप्पी को सहमति समझ बैठे। उन्होंने तुरंत पेरिस को टेलीग्राम भेजा: "मैंने अभी-अभी मार्केसे विस्कोन्टी- वेनोस्टा के साथ एक घंटे की बातचीत की है," और इसी तरह आगे। उनके सचिव बुरी तरह थक चुके थे।
एम. डी नॉरपोइस को एक बेहद प्रतिष्ठित फ्रांसीसी समाचार पत्र का पूरा समर्थन प्राप्त था, जिसने वास्तव में 1870 में, जब वे एक जर्मन राजधानी में फ्रांसीसी मंत्री थे, उन्हें एक महत्वपूर्ण सेवा प्रदान की थी। यह समाचार पत्र (विशेषकर इसका मुख्य लेख, जिस पर हस्ताक्षर नहीं थे) प्रशंसनीय रूप से लिखा गया था। लेकिन यह समाचार पत्र तब और भी अधिक रोचक हो गया जब इसका यह मुख्य लेख (उन दिनों में 'प्रीमियर-पेरिस' के रूप में जाना जाता था और अब,

पता नहीं क्यों, 'संपादकीय' के रूप में) शब्दों की अंतहीन पुनरावृत्ति के साथ बुरी तरह से व्यक्त किया गया था। तब सभी ने भावुक होकर महसूस किया कि यह लेख किसी 'प्रेरित' व्यक्ति द्वारा लिखा गया था। शायद एम. डी नॉरपोइस द्वारा, या शायद उस समय के किसी अन्य प्रमुख व्यक्ति द्वारा। इतालवी घटना का पूर्वाभास देने के लिए, आइए देखें कि एम. डी नॉरपोइस ने 1870 में इस समाचार पत्र का उपयोग कैसे किया, जो कि व्यर्थ ही प्रतीत हो सकता है, क्योंकि युद्ध फिर भी छिड़ गया—एम. डी नॉरपोइस के अनुसार, यह अत्यंत प्रभावी था, जिनका सिद्धांत था कि हमें सर्वप्रथम जनमत तैयार करना चाहिए। उनके लेख, जिनमें प्रत्येक शब्द का मंथन किया गया था, उन आशावादी सूचनाओं के समान थे जिनके तुरंत बाद रोगी की मृत्यु हो जाती है। उदाहरण के लिए, 1870 में युद्ध की घोषणा की पूर्व संध्या पर, जब लामबंदी लगभग पूरी हो चुकी थी, एम. डी नॉरपोइस (स्वाभाविक रूप से पृष्ठभूमि में रहते हुए) ने इस प्रसिद्ध समाचार पत्र को निम्नलिखित 'संपादकीय' भेजना अपना कर्तव्य समझा:
आधिकारिक हलकों में यह राय प्रचलित प्रतीत होती है कि कल दोपहर से स्थिति, हालांकि निश्चित रूप से चिंताजनक नहीं है, फिर भी गंभीर और कुछ दृष्टिकोणों से तो नाजुक भी मानी जा सकती है। ऐसा प्रतीत होता है कि एम. ले मार्क्विस डी नॉरपोइस ने प्रशियाई मंत्री के साथ कई वार्ताएं कीं, ताकि दृढ़ता और सुलह के भाव से तथा पूरी तरह से ठोस तरीके से उन विभिन्न कारणों की जांच की जा सके जो मतभेद पैदा कर रहे हैं। दुर्भाग्य से, प्रकाशन के समय तक हमें यह जानकारी नहीं मिली है कि महामहिम किसी ऐसे सूत्र पर सहमत हो पाए हैं जो राजनयिक समझौते का आधार बन सके।

ताज़ा जानकारी: "हमें जानकार सूत्रों से संतोष के साथ पता चला है कि फ़्रांस-प्रशिया संबंधों में तनाव में थोड़ी कमी आई है। इस तथ्य को विशेष महत्व दिया जाना चाहिए कि श्री डी नॉरपोइस ने कथित तौर पर ब्रिटिश मंत्री से मुलाकात की और उनसे पूरे बीस मिनट तक बातचीत की। इस रिपोर्ट को अत्यंत संतोषजनक माना जाता है।" ('संतोषजनक' शब्द के बाद कोष्ठक में इसका जर्मन समकक्ष 'बेफ्राइडिगेंड' जोड़ा गया था।) और अगले दिन संपादकीय में पढ़ा गया: "ऐसा प्रतीत होता है कि श्री डी नॉरपोइस की तमाम कुशलता के बावजूद, जिनके कौशल और ऊर्जा के लिए हर किसी को उन्हें नमन करना चाहिए, जिसके साथ उन्होंने फ़्रांस के अविभाज्य अधिकारों की रक्षा की है, अब एक तरह से संबंध टूटना लगभग अपरिहार्य है।"
इस तरह के संपादकीय के बाद अखबार ने श्री डी नॉरपोइस द्वारा दिए गए कुछ चुनिंदा टिप्पणियों को प्रकाशित करने से खुद को नहीं रोका। पाठक ने शायद पिछले पन्नों में देखा होगा कि कूटनीति के साहित्य में 'सशर्त क्रिया' राजदूत के पसंदीदा व्याकरणिक रूपों में से एक थी। ("कोई विशेष महत्व देगा" के स्थान पर "ऐसा प्रतीत होता है कि लोग विशेष महत्व देते हैं।") लेकिन 'वर्तमान संकेतवाचक क्रिया', जिसका प्रयोग उसके नियमित अर्थ में नहीं बल्कि पुराने 'इच्छावाचक क्रिया' के अर्थ में किया गया था, श्री डी नॉरपोइस को कम प्रिय नहीं थी। संपादकीय के बाद की टिप्पणियाँ इस प्रकार थीं:
"जनता ने कभी भी इतनी अद्भुत शांति नहीं दिखाई है" (एम. डी नॉरपोइस यह मानना चाहते थे कि यह सच है, लेकिन उन्हें डर था कि यह बिल्कुल विपरीत है)। "वे व्यर्थ के आंदोलनों से थक चुके हैं और उन्हें इस बात का संतोष है कि महामहिम की सरकार संभावित परिस्थितियों के अनुसार अपनी जिम्मेदारियाँ निभाएगी। जनता को

इससे अधिक कुछ नहीं चाहिए।" (इच्छा) "उनकी इस शानदार शांति में, जो स्वयं एक विजय का प्रतीक है, हम एक ऐसी जानकारी जोड़ेंगे जो जनमत को आश्वस्त करने के लिए पर्याप्त है, यदि इसकी आवश्यकता हो। वास्तव में, हमें यह आश्वासन दिया गया है कि एम. डी नॉरपोइस, जिन्हें स्वास्थ्य कारणों से बहुत पहले चिकित्सा उपचार के लिए पेरिस लौटने का आदेश दिया गया था, बर्लिन छोड़ चुके हैं जहाँ उन्हें लगता है कि उनकी उपस्थिति का अब कोई उद्देश्य नहीं है।" ताजा जानकारी: "महामहिम सम्राट आज सुबह कॉम्पीएग्ने से पेरिस के लिए रवाना हुए ताकि युद्ध मंत्री मार्क्विस डी नॉरपोइस और मार्शल बाज़ेन से परामर्श कर सकें, जिन पर जनमत को पूर्ण विश्वास है। महामहिम सम्राट ने अपनी भाभी, डचेस ऑफ अल्बा के लिए आयोजित होने वाला भोज रद्द कर दिया है। यह खबर फैलते ही हर जगह इसकी विशेष रूप से सकारात्मक प्रतिक्रिया हुई। सम्राट ने अपनी सेना का निरीक्षण किया, जिसका उत्साह शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। सम्राट के पेरिस पहुंचने पर जारी किए गए एक लामबंदी आदेश के तहत, कई कोर किसी भी आपात स्थिति में राइन की दिशा में आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं।"

* * *

कभी-कभी शाम ढलते समय जब मैं होटल लौटता था, तो मुझे ऐसा लगता था कि बहुत पहले मेरी आँखों से ओझल हो चुका अल्बर्टाइन फिर भी मेरे भीतर एक आंतरिक वेनिस की तहखानों की तरह समाया हुआ है, जिसकी ठोस दीवारें कभी-कभी किसी घटना के कारण इस तरह से खिसक जाती थीं कि मुझे उस अतीत की एक झलक मिल जाती थी।
उदाहरण के लिए, एक शाम मेरे स्टॉकब्रोकर के एक पत्र ने मेरे लिए उस जेल के दरवाज़े पल भर के लिए फिर से खोल दिए, जिसमें अल्बर्टीन मेरे भीतर जीवित तो थी, लेकिन इतनी दूर, इतनी गहराई

में दबी हुई कि वह मेरे लिए पहुँच से बाहर ही रही। उसकी मृत्यु के बाद से मैंने उन निवेशों में कोई दिलचस्पी नहीं ली थी जो मैंने उसके लिए और अधिक धन जुटाने के लिए किए थे। लेकिन समय बीत चुका था; पिछली पीढ़ी के सबसे बुद्धिमान निर्णय इस पीढ़ी के सामने नासमझ साबित हो गए थे, जैसा कि अतीत में एम. थियर्स के साथ हुआ था, जिन्होंने कहा था कि रेलवे कभी सफल नहीं हो सकता। जिन शेयरों के बारे में एम. डी नॉरपोइस ने हमसे कहा था: "भले ही उनसे आपकी आय बहुत अधिक न हो, आप निश्चिंत रह सकते हैं कि आपकी पूंजी कभी नहीं डूबेगी," वे अक्सर वही शेयर थे जिनकी कीमत में सबसे अधिक गिरावट आई थी। मुझसे बड़ी रकम की मांग की गई थी और एक जल्दबाजी में मैंने सब कुछ बेचने का फैसला किया और पाया कि अब मेरे पास अल्बर्टीन के जीवित रहते हुए मेरे पास मौजूद संपत्ति का मुश्किल से पाँचवाँ हिस्सा ही बचा है। यह बात कॉम्ब्रे में हमारे परिवार के बचे हुए सदस्यों और उनके दोस्तों के बीच फैल गई, और चूंकि वे जानते थे कि मैं मार्क्विस डी सेंट-लूप और गुएरमांटेस परिवार के साथ घूमती थी, तो उन्होंने आपस में कहा: "घमंड का नतीजा बुरा होता है!" उन्हें यह जानकर बहुत आश्चर्य होता कि मैंने अल्बर्टीन जैसी साधारण लड़की के लिए ये अटकलें लगाई थीं। इसके अलावा, कॉम्ब्रे की उस दुनिया में, जहाँ हर किसी को उसकी आमदनी के आधार पर हमेशा के लिए वर्गीकृत किया जाता था, जैसे किसी भारतीय जाति व्यवस्था में, किसी के लिए भी गुएरमांटेस परिवार की उस महान स्वतंत्रता का अंदाजा लगाना असंभव था, जहाँ लोग धन को महत्व नहीं देते थे, और जहाँ गरीबी को अप्रिय माना जाता था, लेकिन उससे ज्यादा अपमानजनक नहीं, और किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति पर इसका उतना ही प्रभाव पड़ता था जितना पेट दर्द का। निस्संदेह, कॉम्ब्रे में उन्होंने इसके

विपरीत सोचा होगा कि सेंट-लूप और एम. डी गुएरमांटेस दिवालिया हो चुके कुलीन लोग होंगे, जिनकी जागीरें गिरवी रखी हुई थीं और जिन्हें मैं उधार देता था, जबकि अगर मैं दिवालिया हो गया होता तो वे पूरी ईमानदारी से मेरी सहायता करने के लिए सबसे पहले आगे आते। मेरी तुलनात्मक गरीबी की बात करें तो, उस समय यह और भी अजीब थी क्योंकि कुछ समय से मेरी वेनिस में दिलचस्पी एक गुलाबी गालों वाली युवा कांच बेचने वाली पर टिकी हुई थी, जो आँखों को नारंगी रंगों की एक पूरी श्रृंखला से मोहित कर देती थी और मुझे उसे फिर से देखने की इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि, यह महसूस करते हुए कि मैं और मेरी माँ जल्द ही वेनिस छोड़ देंगे, मैंने मन बना लिया था कि मैं पेरिस में उसके लिए किसी तरह का काम बना दूँगा जिससे मुझे उससे बिछड़ने का दुख न सहना पड़े। उसकी सत्रह वर्षों की सुंदरता इतनी महान, इतनी तेजस्वी थी कि ऐसा लग रहा था मानो उस जगह को छोड़ने से पहले एक असली टिटियन की पेंटिंग मिल गई हो। और क्या मेरी बची-खुची संपत्ति उसके लिए इतना प्रलोभन होगी कि वह अपना वतन छोड़कर सिर्फ मेरे लिए पेरिस में रहने आ जाए? लेकिन जैसे ही मैंने स्टॉकब्रोकर का पत्र पढ़ना समाप्त किया, उसमें एक अंश था जिसमें उसने कहा था: "मैं आपके कर्ज़ का ध्यान रखूँगा।" इसने मुझे बालबेक के स्नानघर की परिचारिका द्वारा ऐमे ऑफ अल्बर्टाइन से बात करते समय इस्तेमाल किए गए एक लगभग उतने ही पाखंडी पेशेवर कथन की याद दिला दी। उसने कहा था, "मैंने ही उसका ध्यान रखा था," और ये शब्द, जो फिर कभी मेरे दिमाग में नहीं आए, जेल के दरवाजे पर 'खुल जाओ!' की तरह झनझना उठे। लेकिन एक पल बाद ही दरवाजा फिर से उस कैद पीड़ित पर बंद हो गया— जिसके साथ न जाने की मेरी इच्छा में कोई दोष नहीं था, क्योंकि मैं अब उसे देख नहीं पा रहा था, उसे याद नहीं कर पा रहा था, और

क्योंकि दूसरे लोग हमारे लिए केवल उस हद तक ही मौजूद होते हैं जितना कि हम उनके बारे में सोचते हैं—जो एक पल के लिए मुझे इतनी मार्मिक लगी थी, क्योंकि मैंने उसे छोड़ दिया था, भले ही वह इससे अनजान थी, कि एक पल के लिए ही सही, मैं उस समय की लालसा से भर उठा, जो अब बहुत दूर हो चुका था, जब मैं दिन-रात उसकी यादों के साये में तड़पता था। एक और बार सैन जियोर्जियो डेगली शियावोनी में, एक चील जो प्रेरितों में से एक के साथ थी और उसी तरह से पारंपरिक थी, ने उस स्मृति और लगभग उस पीड़ा को पुनर्जीवित कर दिया जो उन दो अंगूठियों के कारण हुई थी जिनकी समानता फ्रांकोइस ने मुझे बताई थी, और जिनके बारे में मुझे कभी पता नहीं चला कि उन्हें अल्बर्टीन को किसने दिया था। अंत में, एक शाम, एक ऐसी घटना घटी कि ऐसा लगा मानो मेरा प्यार फिर से जाग उठेगा। जैसे ही हमारी गोंडोला होटल की सीढ़ियों पर रुकी, कुली ने मुझे एक टेलीग्राम थमा दिया, जिसे संदेशवाहक पहले ही तीन बार होटल ला चुका था। प्राप्तकर्ता के नाम में गड़बड़ी के कारण (जिसे मैंने इतालवी क्लर्कों द्वारा की गई गलतियों के बावजूद अपना ही नाम पहचान लिया था) डाकघर को एक हस्ताक्षरित रसीद की आवश्यकता थी जो यह प्रमाणित करे कि टेलीग्राम मुझे संबोधित है। अपने कमरे में पहुँचते ही मैंने उसे खोला और उस पन्ने पर लिखे शब्दों को सरसरी नज़र से देखते हुए, जो ठीक से नहीं लिखे गए थे, किसी तरह समझ पाई: "मेरे प्रिय, तुम मुझे मरा हुआ समझ रहे हो, मुझे क्षमा करो, मैं बिल्कुल जीवित हूँ, तुमसे मिलना चाहती हूँ, शादी के बारे में बात करना चाहती हूँ, तुम कब लौट रहे हो? प्यार। अल्बर्टीन।" फिर मेरे भीतर ठीक उसी तरह की प्रक्रिया घटी जो मेरी दादी के मामले में घटी थी: जब मुझे मेरी दादी की मृत्यु का पता चला, तो मुझे पहले तो कोई दुख नहीं हुआ था। और मुझे उनकी मृत्यु का वास्तव

में दुख तभी हुआ जब सहज यादों ने मुझे ऐसा महसूस कराया जैसे वह फिर से जीवित हो उठी हों। अब जब मेरे मन में अल्बर्टीन का अस्तित्व नहीं रहा, तो उसके जीवित होने की खबर से मुझे वह खुशी नहीं मिली जिसकी मुझे उम्मीद थी। अल्बर्टीन मेरे लिए विचारों के एक समूह से ज्यादा कुछ नहीं थी; जब तक वे विचार मेरे मन में जीवित थे, तब तक वह शारीरिक मृत्यु के बाद भी जीवित थी; दूसरी ओर, अब जब वे विचार मर चुके थे, तो अल्बर्टीन अपने शारीरिक रूप में मेरे लिए किसी भी तरह से पुनर्जीवित नहीं हुई। और जब मुझे एहसास हुआ कि उसके जीवित होने के विचार से मुझे कोई खुशी नहीं मिल रही है, कि अब मैं उससे प्यार नहीं करता, तो मुझे उस व्यक्ति से भी ज्यादा आश्चर्यचकित होना चाहिए था जो महीनों की यात्रा या बीमारी के बाद शीशे में अपना प्रतिबिंब देखकर पाता है कि उसके बाल सफेद हो गए हैं और चेहरा बदल गया है, एक अधेड़ या बूढ़े आदमी का। यह हमें झकझोर देता है क्योंकि इसका संदेश है: "मैं जो व्यक्ति था, वह सुंदर युवक अब अस्तित्व में नहीं है, मैं एक अलग व्यक्ति हूँ।" फिर भी, क्या मुझे ऐसा नहीं लगा कि अब मैं अपने पुराने स्वरूप में आए उतने ही गहरे बदलाव, उतनी ही पूर्ण मृत्यु और उस पुराने स्वरूप के स्थान पर एक नए स्वरूप के पूर्ण प्रतिस्थापन का प्रमाण महसूस कर रहा हूँ, जितना कि बहुत पहले के चेहरे के स्थान पर बर्फीले बालों से ढके झुर्रीदार चेहरे को देखकर सिद्ध होता है? लेकिन वर्षों के बीतने के बाद और घटनाओं के स्वाभाविक क्रम में, हम एक अलग व्यक्ति बन जाने के तथ्य से उतना ही विचलित नहीं होते जितना कि हम किसी भी क्षण इस तथ्य से विचलित होते हैं कि हम एक के बाद एक असंगत व्यक्ति हैं, चालाक, संवेदनशील, परिष्कृत, अशिष्ट, निस्वार्थ, महत्वाकांक्षी, जो हम अपने जीवन के प्रत्येक दिन बारी-बारी से होते हैं। और इसका कारण

हमें विचलित न करने का कारण वही है, अर्थात् वह स्वरूप जो ग्रहण लग गया है—बाद वाले मामले में क्षणिक रूप से और जब यह चरित्र का प्रश्न है, पहले वाले मामले में स्थायी रूप से और जब यह भावनाओं का मामला है—दूसरे के लिए शोक मनाने के लिए उपस्थित नहीं है, वह दूसरा जो क्षण भर के लिए, या हमेशा के लिए, हमारा संपूर्ण स्वरूप है; अशिष्ट स्वभाव वाला व्यक्ति अपनी ही अशिष्टता पर हंसता है, क्योंकि वह एक अशिष्ट व्यक्ति है, और विस्मृत व्यक्ति अपनी स्मृति के नुकसान के बारे में चिंता नहीं करता है, क्योंकि वह भूल चुका है।
मैं अल्बर्टीन को पुनर्जीवित करने में असमर्थ था क्योंकि मैं स्वयं को, उन दिनों के अपने स्वरूप को पुनर्जीवित करने में असमर्थ था। जीवन, अपनी उस आदत के अनुसार जो निरंतर, सूक्ष्म परिश्रमों द्वारा संसार का स्वरूप बदल देता है, ने अल्बर्टीन की मृत्यु के अगले दिन मुझसे यह नहीं कहा: "एक नया व्यक्ति बन जाओ," बल्कि, उन परिवर्तनों से जो इतने सूक्ष्म थे कि मुझे यह भी एहसास नहीं हुआ कि मैं बदल रहा हूँ, मेरे भीतर के लगभग हर तत्व को बदल दिया, जिसके परिणामस्वरूप मेरा मन अपने नए स्वामी—मेरे नए स्वरूप—के अभ्यस्त हो चुका था जब उसे अपने परिवर्तन का एहसास हुआ; यह इसी नए स्वामी पर निर्भर था। अल्बर्टीन के प्रति मेरा स्नेह, मेरी ईर्ष्या, जैसा कि हम देख चुके हैं, कुछ सुखद या दुखद अनुभवों के विचारों के जुड़ाव से उत्पन्न विकिरण पर, मोंटजोवेन में मैडम विंटेउइल की स्मृति पर, और अल्बर्टीन द्वारा मेरे गले पर दिए जाने वाले अनमोल शुभ रात्रि चुंबनों पर निर्भर थी। लेकिन जैसे-जैसे ये छापें धुंधली होती गईं, वैसे- वैसे उन छापों का विशाल क्षेत्र, जिन्हें उन्होंने पीड़ादायक या सुखदायक रंग से रंगा था, अपना तटस्थ रंग फिर से धारण करने

लगा। जैसे ही विस्मृति ने दुख और सुख के कुछ प्रमुख बिंदुओं को जकड़ लिया, मेरे प्रेम का प्रतिरोध समाप्त हो गया, मैं अब अल्बर्टीन से प्रेम नहीं करता था। मैंने उसकी छवि को अपने मन में याद करने की कोशिश की। अल्बर्टीन के भाग जाने के कुछ दिनों बाद, जब मुझे यह जानकर स्तब्ध कर दिया गया कि मैं उसके बिना अड़तालीस घंटे जी सकता था, तो मेरा पूर्वाभास सही निकला था। यही बात तब भी हुई थी जब मैंने बहुत पहले गिल्बर्ट को पत्र लिखकर मन ही मन कहा था: "अगर यह एक-दो साल तक ऐसे ही चलता रहा, तो मैं उससे प्रेम करना छोड़ दूंगा।" और अगर, जब स्वान ने मुझे गिल्बर्ट से दोबारा मिलने के लिए बुलाया था, तो यह मुझे किसी मृत महिला से मिलने जितना शर्मनाक लगा था, तो अल्बर्टीन के मामले में मृत्यु — या जिसे मैंने मृत्यु समझा था—ने गिल्बर्ट के जीवन में लंबे समय तक चले अलगाव के समान ही परिणाम दिया था। मृत्यु का प्रभाव अनुपस्थिति के समान ही होता है। जिस राक्षस के दर्शन से मेरा प्रेम कांप उठा था, विस्मृति ने, जैसा कि मुझे आशंका थी, अंततः उसी प्रेम को निगल लिया। उसके जीवित होने की खबर से न केवल मेरा प्रेम पुनर्जीवित नहीं हुआ, बल्कि इससे मुझे यह एहसास भी हुआ कि मैं उदासीनता की ओर कितना आगे बढ़ चुका था, और इसने उस प्रक्रिया को इतनी तीव्र गति से बढ़ा दिया कि मैंने स्वयं से पूछा कि क्या अतीत में इसके विपरीत, अल्बर्टीन की मृत्यु की खबर ने, उसके जाने के प्रभाव को पूर्ण करके, मेरे प्रेम को और अधिक प्रबल नहीं बनाया था और उसके पतन को कुछ समय के लिए टाला नहीं था। अब जब मुझे पता चला कि वह जीवित है और हमारे पुनर्मिलन की संभावना ने उसे अचानक मेरी नज़रों में इतना महत्वहीन बना दिया, तो मैंने खुद से पूछा कि क्या फ्रांस्वा के इशारे, हमारा अलगाव और यहाँ तक कि उसकी मृत्यु (काल्पनिक, लेकिन जिसे सच माना गया)

रूप से उन लड़कियों की तरह बड़ी हो गई थी जिनसे उसने प्यार किया था? क्या उसी के लिए मुझे उस चकाचौंध भरी लड़की को त्यागना था जो कल की मेरी याद थी, कल की मेरी आशा थी (जिसे मैं कुछ भी नहीं दे सकता था, किसी और की तरह, अगर मैं अल्बर्टाइन से शादी करता), क्या मुझे उस नई अल्बर्टाइन को त्यागना था जो "नरक जैसी नहीं" बल्कि वफादार और "थोड़ी शर्मीली" थी? अब वही अल्बर्टाइन थी जो अतीत में थी: अल्बर्टाइन के लिए मेरा प्यार तो बस बचपन के प्रति मेरी भक्ति का एक क्षणिक रूप था। हम सोचते हैं कि हम एक लड़की से प्यार करते हैं, जबकि हम उसमें प्यार करते हैं, अफसोस! केवल उस सुबह से जिसकी चमक क्षण भर के लिए उसके चेहरे पर झलकती है। रात बीत गई। सुबह मैंने होटल के पोर्टर को टेलीग्राम वापस कर दिया और समझाया कि यह गलती से मेरे पास आ गया था और यह मुझे संबोधित नहीं था। उसने मुझसे कहा कि अब जब यह खुल चुका है तो वह मुसीबत में पड़ सकता है, इसलिए बेहतर होगा कि मैं इसे अपने पास ही रखूँ; मैंने इसे वापस अपनी जेब में रख लिया, लेकिन ठान लिया कि मैं ऐसा व्यवहार करूँगी जैसे मुझे यह कभी मिला ही न हो। मैंने अल्बर्टीन से प्रेम करना बिल्कुल छोड़ दिया था। इस प्रकार, यह प्रेम, मेरे अनुमान से इतना भटकने के बाद, जब मुझे गिल्बर्ट के लिए अपने प्रेम की याद आई, मुझे इतना लंबा और कष्टदायक चक्कर लगाने के लिए मजबूर करने के बाद, स्वयं भी एक अपवाद प्रस्तुत करते हुए, गिल्बर्ट के लिए मेरे प्रेम की तरह ही विस्मृति के सामान्य नियम में विलीन होकर समाप्त हो गया।
लेकिन फिर मैंने सोचा: मैं अल्बर्टीन को खुद से ज़्यादा महत्व देता था; अब मैं उसे उतना महत्व नहीं देता क्योंकि कुछ समय से मेरा उससे मिलना बंद हो गया है। लेकिन मृत्यु से खुद से अलग न होने की, मृत्यु के बाद फिर से जीवित होने की मेरी इच्छा, यह

प्रतीत होता था, मुझे यह सोचने पर मजबूर कर देता था कि मैं अपने एकांत, सन्नाटे और शांति में बसे उस खूबसूरत, गुमनाम चौक को देखने ही वाला हूँ। ठीक उसी क्षण, किसी दुष्ट जिन्न ने एक नई गली का रूप धारण कर लिया और मुझे अनजाने में अपने रास्ते से भटका दिया, और मैं अचानक ग्रैंड कैनाल पर वापस आ गया। और चूंकि सपने की याद और वास्तविकता की याद में कोई बड़ा अंतर नहीं होता, इसलिए मैंने अंत में खुद से पूछा कि क्या मेरी नींद के दौरान ही वेनिस के अंधेरे में वह अजीब सा दृश्य नहीं आया था, जिसने चंद्रमा की ध्यानमग्न दृष्टि के सामने रोमांटिक महलों से घिरे एक विशाल चौक का दृश्य प्रस्तुत किया था।
हमारी यात्रा से एक दिन पहले, हमने पडुआ तक जाने का फैसला किया, जहाँ वे अवगुण और सद्गुण मौजूद थे जिनकी प्रतिकृतियाँ स्वान ने मुझे दी थीं; एरिना के बगीचे में धूप की चकाचौंध में चलने के बाद, मैं गियोटो चैपल में दाखिल हुआ, जिसकी पूरी छत और भित्ति चित्रों की पृष्ठभूमि इतनी नीली है कि ऐसा लगता है मानो चमकीला दिन मानव आगंतुक के साथ दहलीज पार कर आया हो, और एक पल के लिए अपनी छाया और ठंडक में अपने शुद्ध आकाश को छिपा रहा हो, जो अब सूर्य की सुनहरी चमक से मुक्त होने के कारण थोड़ा गहरा नीला हो गया है, जैसे उन संक्षिप्त विश्राम के क्षणों में जो सबसे अच्छे दिनों को बाधित करते हैं, जब बिना किसी बादल को देखे, सूर्य ने एक पल के लिए अपनी दृष्टि कहीं और कर ली होती है, और नीला रंग, और भी अधिक सुंदर, गहरा हो जाता है। इस आकाश में, नीले रंग से पुते पत्थरों पर, देवदूत इतनी तीव्र दिव्य, या कम से कम शिशुवत उत्साह के साथ उड़ रहे थे कि वे किसी विशेष प्रजाति के पक्षियों की तरह प्रतीत होते थे जो वास्तव में अस्तित्व में रहे हों, जिनका बाइबिल और प्रेरितों के समय के प्राकृतिक इतिहास में

अवश्य उल्लेख रहा हो, ऐसे पक्षी जो संतों के बाहर निकलते समय हमेशा उनके आगे उड़ते हैं; कुछ देवदूत हमेशा उनके ऊपर फड़फड़ाते हुए दिखाई देते हैं, और चूंकि वे वास्तविक प्राणी हैं जिनमें उड़ने की वास्तविक शक्ति है, हम उन्हें ऊपर की ओर उड़ते हुए, वक्र बनाते हुए, बिना किसी कठिनाई के 'लूप द लूप' करते हुए, पृथ्वी की ओर सिर नीचे की ओर गोता लगाते हुए देखते हैं, उन पंखों की सहायता से जो उन्हें गुरुत्वाकर्षण के नियम को चुनौती देने वाली स्थितियों में खुद को बनाए रखने में सक्षम बनाते हैं, और वे हमें पुनर्जागरण और बाद के काल की कला के देवदूतों की तुलना में किसी पक्षी की प्रजाति या गैरोस के युवा छात्रों द्वारा वोल-प्लेने का अभ्यास करने की अधिक याद दिलाते हैं, जिनके पंख केवल प्रतीक बन गए हैं और जिनका भाव सामान्यतः उन स्वर्गीय प्राणियों के समान है जिनके पंख नहीं हैं।

* * *

जिस दिन हमें पेरिस के लिए रवाना होना था, ठीक उसी दिन जब मुझे पता चला कि श्रीमती पुटबस और उनकी नौकरानी वेनिस पहुँच चुकी हैं, तो मैंने अपनी माँ से कुछ दिनों के लिए हमारी यात्रा टालने का अनुरोध किया। उनका मेरी बात को अनसुना करने का, यहाँ तक कि गंभीरता से न सुनने का भाव, मेरे मन में वेनिस की बसंत ऋतु के उत्साह को फिर से जगा गया। मेरे अंदर अपने माता-पिता द्वारा रची गई एक काल्पनिक साजिश के खिलाफ विद्रोह करने की पुरानी इच्छा जागृत हो गई (क्योंकि वे सोचते थे कि मैं उनकी बात मानने के लिए मजबूर हो जाऊँगी)। वही जुझारू भावना, वही इच्छा जिसने मुझे अतीत में उन लोगों पर अपनी इच्छाएँ थोपने के लिए प्रेरित किया जिन्हें मैं दुनिया में सबसे अधिक प्यार करती थी, और जो मेरे द्वारा उन्हें वश में करने के बाद उनकी इच्छाओं के अनुरूप ढलने

लोकप्रिय गीत के पहले से परिचित कोई भी तत्व मुझे वह दृढ़ संकल्प प्रदान करने में सक्षम नहीं था जिसकी मुझे आवश्यकता थी; इससे भी बढ़कर, जब भी इसका प्रत्येक वाक्यांश आता और चला जाता, वह मेरे उस संकल्प को प्रभावी बनाने में बाधा बन जाता, या यूँ कहें कि इसने मुझे इसके विपरीत संकल्प लेने के लिए मजबूर कर दिया कि मैं वेनिस नहीं छोड़ूँगा, क्योंकि इससे मेरी ट्रेन छूट जाती। इसलिए, 'सोल मियो' सुनने का यह काम, जो अपने आप में किसी भी आनंद से रहित था, एक गहरे, लगभग निराशाजनक उदासी से भरा हुआ था। मैं अच्छी तरह जानता था कि वास्तव में जहाँ मैं था वहीं रहकर मैंने न जाने का संकल्प ही अपना लिया था; लेकिन खुद से यह कहना: "मैं नहीं जा रहा," जो सीधे तौर पर कहना असंभव था, अप्रत्यक्ष रूप से कहने पर संभव हो गया: "मैं 'सोल मियो' की एक और पंक्ति सुनने जा रहा हूँ"; लेकिन इस लाक्षणिक भाषा का व्यावहारिक महत्व मुझसे छिपा नहीं रहा और जब मैंने खुद से कहा: "आखिरकार, मैं सिर्फ एक और पंक्ति सुन रहा हूँ," तब मुझे पता चल गया कि इन शब्दों का अर्थ है: "मैं वेनिस में अकेला रहूँगा।" और शायद यही उदासी, एक सुन्न कर देने वाली ठंड की तरह, गीत के निराशाजनक लेकिन मोहक आकर्षण का स्रोत थी। गायक की आवाज का हर स्वर, जो लगभग मांसपेशियों की ताकत और आडंबर के साथ निकलता था, मेरे दिल को भेद देता था; जब उसने अपना आखिरी स्वर गाया और गीत समाप्त होता प्रतीत हुआ, तब भी गायक को संतुष्टि नहीं मिली और उसने उसे एक सप्तक ऊँचे स्वर में दोहराया, मानो उसे एक बार फिर मेरे अकेलेपन और निराशा को प्रकट करना हो।
मेरी माँ अब तक स्टेशन पहुँच चुकी होंगी। थोड़ी देर में वो चली जाएँगी। मेरा हृदय उस पीड़ा से व्याकुल था जो मुझे इस दृश्य से उत्पन्न हुई थी—उस नहर को देखकर जो अब बिल्कुल छोटी हो गई थी

क्योंकि वेनिस की आत्मा उससे विमुख हो गई थी, उस साधारण रियाल्टो को देखकर जो अब रियाल्टो नहीं रहा था,—उस निराशा के विलाप को देखकर जो 'सोल मियो' बन गया था, जिसे उन सारहीन महलों के सामने इस प्रकार गाकर, उन्हें धूल और राख में मिला दिया और वेनिस के विनाश को पूर्ण कर दिया; मैंने अपनी पीड़ा के उस धीमे अहसास को देखा जिसे गायक ने कलात्मक रूप से, बिना किसी हड़बड़ी के, एक-एक सुर करके रचा था, जब वह सैन जियोर्जियो मैगियोर* के पार अपने मार्ग में रुके सूर्य की विस्मयकारी दृष्टि के नीचे खड़ा था, जिसके परिणामस्वरूप मंद होता प्रकाश मेरी स्मृति में मेरी भावनाओं की धड़कन और गायक की कांस्य जैसी आवाज के साथ एक संदिग्ध, अपरिवर्तनीय और मार्मिक मिश्रण में हमेशा के लिए समाहित हो गया।
[*अनुवादक की टिप्पणी: इस अध्याय का भूगोल भ्रामक है, लेकिन यह स्पष्ट है कि प्रॉस्ट ने सैन जियोर्जियो मैगियोर का नाम ग्रांड कैनाल पर स्थित एक चर्च को स्थानांतरित कर दिया है। पृष्ठ 289 की भी तुलना करें। सी. के. एस. एम.]
इस प्रकार मैं बिखरी हुई इच्छाशक्ति के साथ, बिना किसी स्पष्ट निर्णय के, स्थिर पड़ा रहा; निःसंदेह ऐसे क्षणों में हमारा निर्णय पहले ही हो चुका होता है: हमारे मित्र अक्सर इसका अनुमान स्वयं लगा लेते हैं। लेकिन हम, हम ऐसा करने में असमर्थ होते हैं, अन्यथा हम कितने कष्टों से बच जाते!
लेकिन अंततः, उस अंधकारमय गुफा से, जहाँ से उस धूमकेतु की चमक निकलती है जिसकी हम भविष्यवाणी कर सकते हैं,—अथक आदत की अटूट रक्षात्मक शक्ति के कारण, आदत के उस छिपे हुए भंडार के कारण जिसे वह अंतिम क्षण में अचानक आवेग से युद्ध में झोंक देती है— मेरी सक्रियता जागृत हुई; मैं तेज़ी से चल पड़ा और तब पहुँचा जब

बारे में मुझे वेनिस में एक टेलीग्राम भेजा था, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। मुझे याद आया कि मुझे बताया गया था कि वहाँ की तार सेवा ठीक नहीं है, मुझे उसका टेलीग्राम कभी मिला ही नहीं। शायद, वह इस बात पर विश्वास न करे। अचानक, मेरे दिमाग में एक बात बैठ गई जो एक स्मृति के रूप में मेरे मन में बसी हुई थी, और अब उसकी जगह एक नई बात ने ले ली थी। कुछ दिन पहले मुझे जो टेलीग्राम मिला था, और जिसे मैंने अल्बर्टीन का समझा था, वह गिलबर्ट का था। गिलबर्ट की लिखावट की कुछ हद तक श्रमसाध्य मौलिकता मुख्य रूप से इस बात में निहित थी कि जब वह एक पंक्ति लिखती थी, तो ऊपर वाली पंक्ति में अपने 't' के स्ट्रोक इस तरह से लगाती थी जैसे शब्दों को रेखांकित कर रही हो, या अपने 'i' के ऊपर बिंदु लगाती थी जैसे ऊपर वाले वाक्य को विराम चिह्न दे रही हो, और दूसरी ओर नीचे वाली पंक्ति में ठीक ऊपर वाले शब्दों के अंत और अलंकरणों को शामिल करती थी। इसलिए यह स्वाभाविक था कि टेलीग्राम भेजने वाले क्लर्क ने ऊपर वाली पंक्ति में 's' या 'z' के अंत को 'Gilberte' शब्द से जुड़ा हुआ '–me' समझ लिया हो। 'Gilberte' के 'i' के ऊपर का बिंदु शब्द से ऊपर उठकर संदेश के अंत को दर्शाता था। जहाँ तक उसके बड़े अक्षर 'G' की बात है, वह गॉथिक 'A' जैसा दिखता था। इसके अलावा, दो-तीन शब्द गलत पढ़े गए थे, जो आपस में जुड़े हुए प्रतीत होते थे (उनमें से कुछ मुझे समझ से बाहर लगे थे), और यह मेरी गलती के विवरण को समझाने के लिए पर्याप्त था और इसकी आवश्यकता भी नहीं थी। एक लापरवाह व्यक्ति, जिसे पहले से ही पता होता है कि संदेश किस व्यक्ति का है, वह वास्तव में एक शब्द में कितने अक्षर पढ़ पाता है, वाक्य में कितने शब्द पढ़ पाता है? हम पढ़ते समय अनुमान लगाते हैं, हम रचना करते हैं; हर चीज़ एक शुरुआती गलती से शुरू होती है; इसके बाद होने वाली गलतियाँ (और ये केवल

पत्रों और टेलीग्राम को पढ़ने में ही नहीं, बल्कि समग्र रूप से पढ़ने में भी होती हैं), भले ही किसी ऐसे व्यक्ति को असाधारण लगें जिसने उसी शुरुआती बिंदु से शुरुआत नहीं की है, लेकिन ये सभी बिल्कुल स्वाभाविक हैं। हम जिस बात को सत्य मानते हैं (और यह हमारे अंतिम निष्कर्षों पर भी लागू होता है), वह हमारी ईमानदारी के बराबर दृढ़ता से, हमारी मान्यताओं की मूल गलतफहमी से उत्पन्न होती है।

अध्याय IV
रॉबर्ट डी सेंट-लूप पर एक नया प्रकाश
“अरे, ये तो बिल्कुल अनोखी बात है,” मेरी माँ ने कहा। “सुनो, मेरी उम्र में तो अब किसी बात पर आश्चर्य नहीं होता, लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाती हूँ कि इस पत्र में जो कुछ मैंने पाया है, उससे ज़्यादा अप्रत्याशित कुछ नहीं हो सकता।” “पहले मेरी बात सुनो,” मैंने जवाब दिया। “मुझे नहीं पता कि क्या है, लेकिन चाहे कितना भी आश्चर्यजनक क्यों न हो, मेरे पत्र में जो मिला है, उससे ज़्यादा आश्चर्यजनक कुछ नहीं हो सकता। ये शादी है। रॉबर्ट डी सेंट-लूप, गिल्बर्ट स्वान से शादी कर रहे हैं।” “आह!” मेरी माँ ने कहा, “तो फिर यही बात दूसरे पत्र में है, जिसे मैंने अभी तक खोला नहीं है, क्योंकि मैंने तुम्हारे दोस्त की लिखावट पहचान ली।” और मेरी माँ ने मुझे देखकर उस हल्की सी भावना के साथ मुस्कुराया, जो अपनी माँ को खोने के बाद से, हर छोटी से छोटी घटना पर, उन इंसानों पर झलकती थी जो शोक करने, याद करने और अपने प्रियजनों का शोक मनाने में सक्षम थे। और इसलिए मेरी माँ ने मेरी ओर मुस्कुराते हुए मुझसे कोमल स्वर में बात की, मानो उन्हें डर था कि अगर वे इस विवाह को हल्के में लेंगी, तो स्वान की विधवा और बेटी, रॉबर्ट की माँ, जो अपने बेटे से बिछड़ने के लिए तैयार हो चुकी थीं, के मन में उठने वाली उदासी को कमतर आँक देंगी। मेरी माँ ने अपने दयालु हृदय से, मेरे प्रति उनकी दयालुता के लिए कृतज्ञता से, उन सभी को अपने पुत्रवत, वैवाहिक और मातृत्व भाव से परिपूर्ण किया था। मैंने उनसे पूछा, "क्या मैंने आपसे सही कहा था कि आपको इससे अधिक आश्चर्यजनक कुछ नहीं मिलेगा?" उन्होंने कोमल स्वर में उत्तर दिया, "इसके विपरीत! मैं

ही आपको सबसे असाधारण समाचार दे सकती हूँ, मैं यह नहीं कहूँगी कि सबसे बड़ा या सबसे छोटा, क्योंकि सेविग्ने की वह पंक्ति, जिसे हर कोई कहता है जो उनकी लिखी कोई और रचना नहीं जानता, आपकी दादी को उतना ही परेशान करती थी जितना कि 'सिगरेट पीना कितना मनमोहक है'। हम सेविग्ने की ऐसी घिसी-पिटी पंक्तियों को नहीं चुनते। यह पत्र कैम्ब्रेमर के लड़के के विवाह की घोषणा करने के लिए है।" "ओह!" मैंने उदासीनता से कहा, "किसके लिए? वैसे भी दूल्हे का व्यक्तित्व इस शादी से सारा रोमांच छीन लेता है।" "जब तक कि दुल्हन का व्यक्तित्व इसे पूरा न कर दे।" "और यहाँ किसकी बात हो रही है?" "अरे, अगर मैं तुम्हें अभी बता दूँगी तो सब कुछ खराब हो जाएगा; देखो तुम अनुमान लगा पाओ," मेरी माँ ने कहा, क्योंकि हम अभी तक ट्यूरिन नहीं पहुँचे थे, इसलिए वह मेरे लिए बाकी यात्रा के लिए कुछ बचाकर रखना चाहती थीं। "लेकिन आप मुझसे कैसे उम्मीद करती हैं कि मुझे पता चलेगा? क्या वह कोई प्रतिभाशाली महिला है? अगर लेग्रैंडिन और उसकी बहन संतुष्ट हैं, तो हम यकीन कर सकते हैं कि यह एक शानदार शादी है।" लेग्रैंडिन के बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता, लेकिन मुझे शादी की सूचना देने वाले व्यक्ति का कहना है कि श्रीमती डी कैम्ब्रेमर बहुत खुश हैं। मुझे नहीं पता कि आप इसे शानदार शादी कहेंगे या नहीं। मेरे विचार से, यह उन दिनों की याद दिलाता है जब राजा चरवाहिनियों से शादी करते थे, हालांकि इस मामले में चरवाहा तो चरवाहे से भी कहीं अधिक विनम्र है, चाहे वह कितनी भी आकर्षक क्यों न हो। यह आपकी दादी को अचंभित कर देता, लेकिन उन्हें चौंकाता नहीं। "लेकिन आखिर यह दुल्हन कौन है?" "यह श्रीमती डी'ओलोरोन हैं।" "यह मुझे बहुत ही शानदार लगता है और बिल्कुल भी चरवाहे जैसा नहीं, लेकिन मुझे ठीक से समझ नहीं आ रहा

युवा कैम्ब्रेमर के चुनाव की निंदा करने से रोकने के लिए अपनी अपार दयालुता, अपनी असीम उदारता का सहारा नहीं लेना पड़ता। क्या तुम्हें याद है कि वर्षों पहले, एक दिन जब वह अपनी स्कर्ट में एक सिलाई करवाने दुकान में गई थी, तो उन्होंने उस लड़की को कितना विशिष्ट समझा था? तब वह केवल एक बच्ची थी। और अब, भले ही वह थोड़ी बूढ़ी हो गई हो और कुंवारी हो गई हो, वह एक अलग महिला है, हज़ार गुना अधिक परिपूर्ण। लेकिन तुम्हारी दादी ने यह सब एक नज़र में देख लिया था। उन्होंने एक मामूली दर्जी की छोटी भतीजी को ड्यूक डी गुएरमेंटेस से अधिक 'महान' पाया।" लेकिन मेरी दादी की प्रशंसा करने से भी अधिक आवश्यक यह था कि मेरी माँ ने यह निर्णय लिया कि उनके लिए यह 'बेहतर' था कि वह उस दिन को देखने के लिए जीवित नहीं रहीं। यह उनकी पितृभक्ति की सर्वोच्च विजय थी, मानो वह मेरी दादी को अंतिम दुख से बचा रही हों। "और फिर भी, ज़रा एक पल के लिए कल्पना कीजिए," मेरी माँ ने मुझसे कहा, "कि बूढ़े पिता स्वान—वैसे तो आप उन्हें कभी जानते भी नहीं थे—को कैसा लगता अगर उन्हें पता होता कि एक दिन उनका एक परपोता होगा जिसकी रगों में 'पोंचौर मेजियर्स' कहा करने वाली माँ मोसर का खून ड्यूक डी गुइज़ के खून के साथ मिल जाएगा!" "लेकिन सुनो, माँ, यह उससे कहीं ज़्यादा आश्चर्यजनक है। स्वान परिवार बहुत सम्मानित लोग थे, और उनके बेटे की स्थिति को देखते हुए, अगर उन्होंने खुद एक सभ्य विवाह किया होता, तो उनकी बेटी का विवाह बहुत अच्छे परिवार में हो सकता था। लेकिन एक वेश्या से शादी करने के कारण उसके सारे अवसर बर्बाद हो गए।" "ओह, एक वेश्या, आप जानती हैं, लोग शायद उसके साथ कुछ ज़्यादा ही कठोर व्यवहार करते थे, मुझे कभी विश्वास नहीं हुआ।" "हाँ, एक वेश्या, वास्तव में, मैं तुम्हें एक दिन कुछ चौंकाने वाले खुलासे कर सकती हूँ।" ध्यानमग्न होकर

मेरी माँ ने कहा: "एक ऐसी महिला की बेटी, जिसके सामने तुम्हारे पिता मुझे कभी झुकने भी नहीं देते थे, श्रीमती डी विलेपारिसिस के भतीजे से शादी कर रही है, जिनसे तुम्हारे पिता ने मुझे पहले मिलने की अनुमति नहीं दी थी क्योंकि उन्हें लगता था कि वह मेरे लिए बहुत ही भव्य हैं!" फिर: "मैडम डी कैम्ब्रेमर का बेटा, जिसे लेग्रैंडिन हमें परिचय पत्र देने से इतना डरता था क्योंकि वह हमें उतना बुद्धिमान नहीं समझता था, एक ऐसे आदमी की भतीजी से शादी कर रहा है जो हमारे फ्लैट में आने की हिम्मत ही नहीं करता, सिवाय सेवा सीढ़ियों के!… फिर भी तुम्हारी बेचारी दादी सही थीं — तुम्हें याद है—जब उन्होंने कहा था कि कुलीन वर्ग ऐसे काम कर सकता है जो मध्यम वर्ग को चौंका दें और रानी मैरी-एमिली ने प्रिंस डी कोंडे की प्रेमिका से जो प्रेम निवेदन किया, उससे वह बिगड़ गई थीं, ताकि प्रिंस डी कोंडे अपनी संपत्ति ड्यूक डी औमाले को दे दें। तुम्हें यह भी याद है, उन्हें यह जानकर हैरानी हुई थी कि सदियों से ग्रामोंट परिवार की जो बेटियाँ पूर्ण संत रही हैं, वे हेनरी चतुर्थ के अपने पूर्वजों में से एक के साथ संबंध की याद में कोरिसांडे नाम धारण करती रही हैं। ये ऐसी बातें हैं जो शायद मध्यम वर्ग में भी होती हों, लेकिन हम उन्हें बेहतर तरीके से छिपाते हैं। क्या तुम कल्पना नहीं कर सकते कि तुम्हारी बेचारी दादी को यह कितना मजेदार लगा होगा?" माँ ने उदास स्वर में कहा, "जिन खुशियों से हमारी दादी वंचित रह गईं, यह सोचकर हमें बहुत दुख होता था, वे जीवन की सबसे सरल खुशियाँ थीं - एक कहानी, एक नाटक, या कुछ और भी मामूली, जैसे कोई अभिनय, जो उन्हें प्रसन्न कर देता। क्या तुम उनकी हैरानी की कल्पना भी नहीं कर सकते? मुझे पूरा यकीन है कि तुम्हारी दादी इन शादियों से बहुत दुखी होतीं, उन्हें बहुत तकलीफ होती। मुझे लगता है कि

हमारे जैसे कम बुद्धिमान लोगों के लिए ऐसा कोई विचार बनाना असंभव है। "क्या तुम कल्पना नहीं कर सकते," मेरी माँ ने सबसे पहले मुझसे कहा, "तुम्हारी बेचारी दादी कितनी हैरान होती!" और मुझे लगा कि मेरी माँ को यह खबर न बता पाने का दुख था, उन्हें इस बात का अफसोस था कि मेरी दादी को यह पता नहीं चल सका, और उन्हें यह किसी न किसी तरह अन्यायपूर्ण लगा कि जीवन का क्रम ऐसे तथ्यों को सामने लाए जिन पर मेरी दादी कभी विश्वास नहीं करतीं, जिससे लोगों और समाज के बारे में मेरी दादी का ज्ञान पूर्वव्यापी रूप से झूठा और अधूरा साबित हो गया। जुपियन की लड़की और लेग्रैंडिन के भतीजे का विवाह मेरी दादी के जीवन के सामान्य विचारों को बदलने वाला था, ठीक उसी तरह जैसे यह खबर - अगर मेरी माँ उन्हें बता पातीं - कि लोगों ने हवाई नौवहन और वायरलेस टेलीग्राफी की उन समस्याओं को हल करने में सफलता प्राप्त कर ली है, जिन्हें मेरी दादी अघुलनशील मानती थीं।
मेरी माँ और मैंने इन दो खबरों पर चर्चा पूरी भी नहीं की थी कि ट्रेन पेरिस पहुँच गई। यात्रा लंबी न लगे, इसलिए उन्होंने जानबूझकर इन खबरों का ज़िक्र यात्रा के आखिरी हिस्से के लिए बचाकर रखा था और मिलान से आगे निकलने तक इनका ज़िक्र नहीं किया था। घर पहुँचने के बाद भी मेरी माँ ने चर्चा जारी रखी: "ज़रा सोचो, बेचारा स्वान, जो अपनी बेटी गिलबर्ट को गुएरमांटे परिवार में स्वीकार किए जाने के लिए इतना चिंतित था, कितना खुश होता अगर वह अपनी बेटी को गुएरमांटे बनते देख पाता!" "किसी दूसरे नाम से, मैडम डी फोर्शेविल के रूप में वेदी तक ले जाए जाने पर, क्या आपको लगता है कि वह इतना खुश होता?" "अरे हाँ, यह सच है। मैंने इस बारे में सोचा ही नहीं था। यही वजह है कि मैं उस नन्ही परी को बधाई नहीं दे पा रही हूँ, यह सोचकर कि उसने अपने पिता का नाम

छोड़ने की हिम्मत कैसे की, जबकि वह उसके प्रति इतना दयालु था। हाँ, तुम सही कह रही हो, आखिरकार, शायद यही अच्छा है कि उसे इसके बारे में कुछ पता नहीं है।" मृतकों के बारे में भी, जीवितों की तरह, हम यह नहीं बता सकते कि कोई बात उन्हें खुशी देगी या दुख। ऐसा लगता है कि सेंट-लूप्स टैनसनविले में रहने वाले हैं। बूढ़े पिता स्वान, जो आपके बेचारे दादाजी को अपना तालाब दिखाने के लिए इतने उत्सुक थे, क्या उन्होंने कभी सपने में भी सोचा होगा कि ड्यूक डी गुएरमांटेस उसे लगातार देखते रहेंगे, खासकर तब जब उन्हें अपने बेटे की शादी के बारे में पता चल गया हो? और आप खुद, जिन्होंने सेंट-लूप से टैनसनविले के गुलाबी हॉथोर्न, लिली और आइरिस के बारे में इतनी बार बात की है, वे आपको बेहतर समझेंगे। वे उनकी संपत्ति होंगे। इस प्रकार हमारे भोजन कक्ष में, उन वार्ताओं में से एक का विकास हुआ, जो उनके लिए अत्यंत अनुकूल दीपक की रोशनी में घटित होती हैं, जिसमें राष्ट्रों का नहीं बल्कि परिवारों का ज्ञान, किसी घटना - मृत्यु, सगाई, विरासत, दिवालियापन - को स्मृति के आवर्धक लेंस के नीचे रखकर, उसे स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है, उसके एक पहलू को अलग करता है, उसे पीछे धकेलता है, और समय और स्थान के विभिन्न बिंदुओं पर उस चीज़ को परिप्रेक्ष्य में रखता है, जो उस कालखंड से न गुज़रे लोगों को एक ही सतह पर समाहित प्रतीत होती है - मृत लोगों के नाम, क्रमिक पते, भाग्य की उत्पत्ति और परिवर्तन, संपत्ति का हस्तांतरण। क्या यह ज्ञान उस देवी से प्रेरित नहीं है जिसे यथासंभव लंबे समय तक अनदेखा करना ही सर्वोत्तम है, यदि हम अपने विचारों की ताजगी और रचनात्मक शक्ति को बनाए रखना चाहते हैं, लेकिन यहां तक कि वे लोग भी जिन्होंने उसे अनदेखा किया है, अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में पुराने ग्रामीण गिरजाघर में उससे

मिलते हैं, उस समय जब अचानक उन्हें एहसास होता है कि वे वेदी की नक्काशी में व्यक्त शाश्वत सुंदरता से कम, बल्कि उन नक्काशी के भाग्य के उतार-चढ़ाव के विचार से अधिक प्रभावित हैं, जो एक प्रसिद्ध निजी संग्रह में, एक चैपल में, वहां से एक संग्रहालय में, और अंत में चर्च में वापस आ गई हैं, या उस संगमरमर की पटिया पर कदम रखते हुए, जो लगभग विचार से ओतप्रोत है, यह महसूस करते हुए कि यह अर्नोल्ट या पास्कल के अंतिम अवशेषों को ढकती है, या केवल लकड़ी की प्रार्थना-मेज की पीतल की प्लेट पर ग्रामीण जमींदार या प्रमुख नागरिक की बेटियों के नामों को समझने से (शायद एक सुंदर युवा उपासक की मानसिक छवि बनाते हुए) प्रभावित होते हैं? इतिहास वह देवी है जिसने दर्शन और कला की अधिक प्रतिष्ठित देवियों द्वारा अस्वीकृत हर चीज को, सत्य पर आधारित न होने वाली हर चीज को, मात्र आकस्मिक हर चीज को, लेकिन जो अन्य नियमों को भी प्रकट करती है, एकत्रित किया है।
मुझे बाद में पता चला—क्योंकि मैं वेनिस से इस पूरे मामले से अवगत नहीं रह सका था—कि मैडम डी फोर्शेविल का हाथ सबसे पहले प्रिंस डी सिलिस्ट्री ने मांगा था, जबकि सेंट-लूप ड्यूक डी लक्ज़मबर्ग की बेटी मैडम डी'एंट्राग्स से शादी करना चाहते थे। घटना कुछ इस प्रकार थी: मैडम डी फोर्शेविल के पास एक सौ मिलियन फ्रैंक थे, इसलिए मैडम डी मार्सैंट्स ने फैसला किया कि वह उनके बेटे के लिए एक आदर्श जीवनसाथी होंगी। उन्होंने यह कहकर गलती की कि लड़की आकर्षक है, कि उन्हें खुद इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं है कि वह अमीर है या गरीब, कि वह जानना भी नहीं चाहतीं, लेकिन एक पैसा भी न होने पर भी, सबसे समझदार युवक के लिए भी ऐसी पत्नी पाना सौभाग्य की बात होगी। एक ऐसी महिला के लिए, जो केवल एक सौ मिलियन फ्रैंक के लालच में थी और जिसने उसकी आंखें बाकी

हैं, वह बस मैडम स्वान हैं। और शादी में उनके गवाह, 'बैरन' डी चार्लस, जैसा कि वह खुद को कहते हैं, वही बूढ़े आदमी हैं जो एक समय उनकी माँ को स्वान की नाक के नीचे रखते थे, और निस्संदेह अपने फायदे के लिए।" "लेकिन आपका क्या मतलब है?" मेरी माँ ने विरोध किया। "पहली बात तो यह है कि स्वान बेहद अमीर थे।" "हमें यह मान लेना चाहिए कि अगर उसे दूसरों के पैसे की ज़रूरत थी, तो वह उतना अमीर नहीं था। लेकिन उस औरत में ऐसा क्या है कि वह अपने पुराने प्रेमियों को इस तरह सहेज कर रखती है? उसने तीसरे को उससे शादी करने के लिए मना लिया और दूसरे को, जो लगभग मर चुका है, घसीट कर अपनी बेटी की शादी में शामिल होने के लिए मजबूर कर रही है, जो उसकी पहले या किसी और से हुई थी, क्योंकि कौन बता सकता है कि पिता कौन था? वह खुद भी निश्चित नहीं हो सकती! मैंने तीसरे की बात कही, मुझे तीन सौवें की बात कहनी चाहिए थी। लेकिन फिर, क्या आप नहीं जानते, अगर वह आपसे या मुझसे ज़्यादा फोर्शेविल नहीं है, तो वह दूल्हे के बराबर है, जो ज़ाहिर है बिल्कुल भी कुलीन नहीं है। केवल एक साहसी ही ऐसी लड़की से शादी करेगा। लगता है वह बस एक साधारण मिस्टर डुपोंट या डूरंड या कुछ और है। अगर कॉम्ब्रे में अब हमारे पास एक कट्टरपंथी मेयर न होता, जो पादरी को सलाम तक नहीं करता, तो मुझे इसके बारे में सब पता होता। क्योंकि, आप समझते हैं, जब उन्होंने प्रकाशित किया..." विवाह की घोषणा में, उन्हें अपना असली नाम बताना अनिवार्य था। अखबारों या सूचना भेजने वाले स्टेशनरी विक्रेता के लिए खुद को मार्क्विस डी सेंट-लूप के रूप में वर्णित करना बहुत अच्छा लगता है। इससे किसी को कोई नुकसान नहीं होता, और अगर इससे उन सम्मानित लोगों को कोई खुशी मिलती है, तो मैं दुनिया का आखिरी व्यक्ति होऊंगा जो आपत्ति करेगा! इससे मुझे क्या नुकसान हो

सकता है? चूंकि मैं कभी भी उस महिला की बेटी से मिलने नहीं जाऊंगा जिसने अपने बारे में चर्चा होने दी है, इसलिए वह अपने नौकरों के सामने मेरे हाथ जितनी लंबी उपाधियों की सूची रख सकती है। लेकिन एक आधिकारिक दस्तावेज़ में यह बात अलग है। आह, अगर मेरे चचेरे भाई सजेरत अभी भी उप-महापौर होते, तो मैं उन्हें पत्र लिखता, और वे निश्चित रूप से मुझे बता देते कि उस व्यक्ति का नाम किस रूप में दर्ज है।
मेरी माँ की कुछ अन्य सहेलियाँ, जो हमारे घर में सेंट-लूप से मिली थीं, उनकी शादी के दिन आईं और उन्होंने पूछा कि क्या दूल्हा वाकई वही व्यक्ति है जो मेरी सहेली थी। कुछ लोगों ने तो यहाँ तक कह दिया कि दूसरी शादी का लेग्रैंडिन कैम्ब्रेमर्स से कोई लेना-देना नहीं है। उनके पास इसका पुख्ता सबूत था, क्योंकि मार्क्विज़, जिनका मायके का नाम लेग्रैंडिन था, ने सगाई की घोषणा से ठीक एक दिन पहले इस अफवाह का खंडन किया था। मैं, अपने आप से, यह सवाल कर रहा था कि एम. डी चार्लस और सेंट-लूप, जिन्होंने हाल ही में मुझे पत्र लिखा था, ने कई दोस्ताना योजनाएँ और यात्राएँ क्यों बनाईं और प्रस्तावित कीं, जो निश्चित रूप से शादी समारोहों से टकरातीं, और मुझे इनके बारे में कुछ भी क्यों नहीं बताया। इस तरह के मामलों में लोग हमेशा आखिरी क्षण तक गोपनीयता बनाए रखते हैं, इस बात को भूलकर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि मैं उनका उतना दोस्त नहीं था जितना मैंने सोचा था, और सेंट-लूप के लिए यह निष्कर्ष मुझे बहुत दुखी कर रहा था। लेकिन जब मैंने पहले ही यह टिप्पणी कर दी थी कि अभिजात वर्ग का सौहार्द और 'एक-दूसरे के प्रति' रवैया सब दिखावा है, तो मुझे खुद इसका शिकार होने पर आश्चर्य क्यों होना चाहिए? महिलाओं के उस प्रतिष्ठान में—जहाँ अब पुरुषों की संख्या

लगातार बढ़ रही थी—जहाँ एम. डी चार्लस ने मोरेल को चौंका दिया था, और जहाँ की 'सहायक महिला', जो गॉलॉइस अखबार की एक बड़ी पाठक थी, अपने ग्राहकों के साथ सामाजिक गपशप किया करती थी, यह महिला एक हट्टे-कट्टे सज्जन से बातचीत करते हुए बोली: "लगता है, युवा सेंट-लूप और युवा कैम्ब्रेमर दोनों ही 'उनमें से एक' हैं। अगर आप दूल्हों को जानती हैं, तो उन्हें हमारे पास भेजें, उन्हें यहाँ सब कुछ मिल जाएगा, और उनसे खूब पैसा कमाया जा सकता है।" इस पर उस हट्टे-कट्टे सज्जन ने, हालांकि वह स्वयं भी उन्हीं में से एक था, विरोध जताते हुए, थोड़ा घमंडी होने के कारण जवाब दिया कि वह अक्सर अपने चचेरे भाई अर्दुविलर के घर कैम्ब्रेमर और सेंट-लूप से मिलता था, और वे बड़े स्त्रियोचक थे, और 'इन सब बातों' के बिल्कुल विपरीत थे। "आह!" सहायक मैट्रन ने संदेह भरे स्वर में कहा, लेकिन अपने दावे का कोई प्रमाण न होने के कारण, और इस बात से आश्वस्त थी कि हमारी पीढ़ी में नैतिकता की विकृति केवल निंदनीय अफवाहों के बेतुके अतिशयोक्ति से ही मेल खाती है। कुछ लोग, जिनसे अब मेरा कोई वास्ता नहीं था, मुझे पत्र लिखकर पूछते थे कि इन दोनों विवाहों के बारे में मेरी क्या राय है, मानो वे रंगमंच या मनोवैज्ञानिक उपन्यास में महिलाओं की टोपियों की ऊँचाई पर सार्वजनिक चर्चा को आमंत्रित कर रहे हों। मेरा इन पत्रों का उत्तर देने का मन नहीं हुआ। इन दोनों विवाहों के बारे में मैंने कुछ भी नहीं सोचा, लेकिन मुझे एक गहरी उदासी का अनुभव हुआ, मानो हमारे अतीत के दो हिस्से, जो हमारे करीब लंगर डाले बैठे थे और जिन पर हम शायद दिन-प्रतिदिन एक अनजानी आशा टिकाए बैठे थे, अंततः आनंदमय ज्वालाओं की चटक के साथ अज्ञात गंतव्यों की ओर विदा हो गए हों, जैसे खुले समुद्र में दो जहाज। भावी दूल्हों की बात करें तो, उन्होंने अपने विवाहों को एक स्वाभाविक दृष्टिकोण

से देखा, क्योंकि यह प्रश्न दूसरों का नहीं बल्कि स्वयं का था। वे किसी गुप्त शर्म पर आधारित ऐसे 'भव्य विवाहों' का उपहास करने से कभी नहीं थके थे। और वास्तव में, कैम्ब्रेमर परिवार, जो अपने वंश में इतना प्राचीन और अपने दावों में इतना विनम्र था, जुपियन को भूलकर केवल ओलोरोन परिवार की अकल्पनीय भव्यता को याद करने वाला पहला परिवार होता, यदि इस विवाह से सबसे अधिक प्रसन्न होने वाली व्यक्ति, मार्क्विज़ डी कैम्ब्रेमर-लेग्रैंडिन, के रूप में एक अपवाद न होता। क्योंकि उसका स्वभाव द्वेषपूर्ण था, इसलिए वह अपने परिवार को अपमानित करने में स्वयं की महिमा करने से अधिक आनंद पाती थी। और इसलिए, चूंकि उसे अपने बेटे से कोई स्नेह नहीं था, और जल्द ही उसे अपनी बहू से भी घृणा हो गई, उसने घोषणा कर दी कि कैम्ब्रेमर के लिए ऐसी स्त्री से विवाह करना विपत्ति है जो न जाने कहाँ से आई है और जिसके दाँत इतने खराब हैं। जहाँ तक युवा कैम्ब्रेमर की बात है, जो पहले से ही साहित्यिक लोगों की संगति में रहने की प्रवृत्ति दिखा रहा था, हम यह कल्पना कर सकते हैं कि इतने शानदार विवाह ने उसे पहले से अधिक अभिमानी नहीं बनाया, बल्कि खुद को ड्यूक्स डी'ओलोरोन का उत्तराधिकारी समझकर—जिन्हें अखबारों में 'संप्रभु राजकुमार' कहा जाता था—वह अपने महत्व के प्रति इतना आश्वस्त हो गया कि वह सबसे साधारण लोगों के साथ भी घुलमिल जाता था। और जब वह राजघराने तक ही सीमित नहीं रहता था, तो वह छोटे कुलीन वर्ग को छोड़कर बुद्धिमान बुर्जुआ वर्ग के साथ रहता था। अखबारों में छपी सूचनाओं, विशेषकर जब उनमें सेंट-लूप का जिक्र होता था, तो मेरे मित्र को, जिनके शाही पूर्वजों का उल्लेख किया गया था, एक नया महत्व मिल जाता था, हालांकि इससे मुझे केवल निराशा ही होती थी— जैसे कि वह कोई और ही बन गया हो, रॉबर्ट द स्ट्रॉन्ग का वंशज, न

कि वह मित्र जो कुछ ही समय पहले गाड़ी में पीछे की सीट पर बैठा था ताकि मैं दूसरी सीट पर अधिक आराम से बैठ सकूं; यह तथ्य कि मुझे गिलबर्ट के साथ उसके विवाह का कोई पूर्व संदेह नहीं था, जिसकी संभावना मुझे अचानक एक पत्र में पता चली, जो उससे या उससे एक दिन पहले तक मेरी किसी भी अपेक्षा से बिल्कुल अलग थी, और यह तथ्य कि उसने मुझे इस बारे में नहीं बताया, मुझे बहुत दुख पहुँचाया, जबकि मुझे यह सोचना चाहिए था कि उसके पास करने के लिए बहुत सी अन्य चीजें थीं, और इसके अलावा फैशनेबल दुनिया में अक्सर विवाह इस तरह अचानक तय किए जाते हैं, आमतौर पर किसी अन्य रिश्ते के टूटने के बदले में—अचानक—जैसे कोई रासायनिक अवक्षेपण हो गया हो। और वह उदासी का एहसास, जो घर खाली करने जितना निराशाजनक और ईर्ष्या जितना कड़वा था, जो इन विवाहों के अचानक प्रभाव से मेरे मन में पैदा हुआ था, इतना गहरा था कि बाद में लोग मुझे इसकी याद दिलाते थे, मेरी दूरदर्शिता की बेतुकी तारीफ करते हुए, यह कहते हुए कि यह उस समय जो था, उसके बिल्कुल विपरीत था, एक दोहरा, बल्कि तिहरा और चौगुना पूर्वाभास था। समाज के जिन लोगों ने गिलबर्ट पर ध्यान नहीं दिया था, उन्होंने मुझसे गंभीर रुचि के भाव से कहा: "अरे! यह वही है जो मार्क्विस डी सेंट-लूप से शादी कर रही है!" और उसे उन लोगों की तरह ध्यान से देखने लगे जो न केवल पेरिस की सामाजिक गपशप का आनंद लेते हैं, बल्कि जानने के लिए उत्सुक भी होते हैं और अपने आत्मनिरीक्षण की गहराई में विश्वास रखते हैं। दूसरी ओर, जो लोग केवल गिलबर्ट को जानते थे, उन्होंने सेंट-लूप को बहुत ध्यान से देखा, मुझसे (अक्सर ये वे लोग होते थे जो मुझे मुश्किल से जानते थे) उनका परिचय कराने के लिए कहा और दूल्हे से परिचय कराने के बाद मूर्खता के आनंद से चमकते हुए मुझसे कहा: "वह बहुत सुंदर दिखता

है।" गिलबर्ट को पूरा विश्वास था कि 'मार्क्विस डी सेंट-लूप' नाम 'ड्यूक डी'ऑरलियन्स' से हज़ार गुना अधिक महत्वपूर्ण है।
“ऐसा लगता है कि युवा कैम्ब्रेमर की शादी प्रिंसेस डी पार्म ने ही करवाई थी,” माँ ने मुझे बताया। और यह सच था। राजकुमारी लंबे समय से लेग्रैंडिन को जानती थीं, एक ओर तो उनके कामों के कारण, जिन्हें वह एक प्रतिष्ठित व्यक्ति मानती थीं, और दूसरी ओर श्रीमती डी कैम्ब्रेमर को, जो राजकुमारी के यह पूछने पर कि क्या वह लेग्रैंडिन की बहन नहीं हैं, बात का रुख बदल देती थीं। राजकुमारी जानती थीं कि श्रीमती डी कैम्ब्रेमर उस महान कुलीन जगत के द्वार पर अपनी स्थिति को कितनी गंभीरता से महसूस करती थीं, जिसमें उन्हें कहीं भी आमंत्रित नहीं किया जाता था। जब प्रिंसेस डी पार्म, जिन्होंने मैडम डी ओलोरोन के लिए पति खोजने का जिम्मा लिया था, ने एम. डी चार्लस से पूछा कि क्या उन्होंने कभी किसी ऐसे मिलनसार, शिक्षित व्यक्ति के बारे में सुना है जो खुद को लेग्रैंडिन डी मेसेग्लिस कहता है (इसी तरह एम. लेग्रैंडिन अब खुद को कहते थे), तो बैरन ने पहले तो नकारात्मक उत्तर दिया, फिर अचानक उन्हें एक ऐसे व्यक्ति की याद आ गई, जिससे उनकी मुलाकात एक रात ट्रेन में हुई थी और जिसने उन्हें अपना कार्ड दिया था। उसने हल्की सी मुस्कान दी। "शायद यह वही व्यक्ति है," उसने मन ही मन कहा। जब उसे पता चला कि होने वाला दूल्हा लेग्रैंडिन की बहन का बेटा है, तो उसने कहा: "अरे वाह, यह तो वाकई असाधारण बात है! अगर वह अपने चाचा जैसा दिखता है, तो मुझे चिंता नहीं होगी, मैंने हमेशा कहा है कि वे सबसे अच्छे पति बनते हैं।" "वे कौन हैं?" राजकुमारी ने पूछा। "ओह, महोदया, अगर हम अक्सर मिलते तो मैं आपको सब कुछ समझा सकता था। आपसे खुलकर बात की जा सकती है। आपकी महारानी बहुत बुद्धिमान हैं," चार्लस ने कहा,

हमेशा मिलने नहीं आते थे। "दरअसल, मैंने हाल ही में ड्यूक डी गुरमांटेस के भाई, एम. डी चार्लस के साथ यात्रा की थी। उन्होंने सहजता से बातचीत शुरू की, जो हमेशा एक अच्छा संकेत होता है, क्योंकि इससे पता चलता है कि वह व्यक्ति न तो झिझकने वाला है और न ही घमंडी। ओह, मुझे पता है कि लोग उनके बारे में क्या-क्या कहते हैं। लेकिन मैं इस तरह की गपशप पर कभी ध्यान नहीं देता। वैसे भी, दूसरों के निजी जीवन से मेरा कोई लेना-देना नहीं है। उन्होंने मुझे एक संवेदनशील स्वभाव और सुसंस्कृत बुद्धि का आभास कराया।" फिर प्रिंसेस डी पार्म ने श्रीमती डी सेंट-लूप के बारे में बात की। डी'ओलोरोन। गुएरमांटे परिवार में लोग एम. डी चार्लस के उदार हृदय से प्रभावित थे, जो हमेशा की तरह उदार थे और एक निर्धन लेकिन आकर्षक लड़की के भविष्य की खुशियों को सुनिश्चित कर रहे थे। और ड्यूक डी गुएरमांटेस, जो अपने भाई की प्रतिष्ठा से परेशान थे, ने यह स्पष्ट कर दिया कि यह आचरण भले ही अच्छा था, लेकिन पूरी तरह स्वाभाविक था। "मुझे नहीं पता कि मैं अपनी बात स्पष्ट कर पा रहा हूँ या नहीं, इस मामले में सब कुछ स्वाभाविक है," उन्होंने आदत के चलते अटपटे ढंग से बोलते हुए कहा। लेकिन उनका उद्देश्य यह बताना था कि वह लड़की उनके भाई की बेटी थी, जिसे वे अपना मान रहे थे। इसी से जुपियन का भी पता चल गया। प्रिंसेस डी पार्म ने लेग्रैंडिन को यह दिखाने के लिए कहानी के इस संस्करण का संकेत दिया कि युवा कैम्ब्रेमर की शादी मैडम डी नैनटेस जैसी किसी लड़की से होगी, जो लुई XIV की उन नाजायज संतानों में से एक थी, जिन्हें न तो ड्यूक डी'ऑरलियन्स और न ही प्रिंस डी कोंटी ने तिरस्कार किया था।
ये दो विवाह, जिनके बारे में मैंने पेरिस वापस लाने वाली ट्रेन में अपनी माँ से चर्चा शुरू कर दी थी, इस वृत्तांत में आने वाले

में जानते थे लेकिन उन्हें अच्छी तरह से जानते थे। जिन महिलाओं से लोग उनका परिचय कराने की पेशकश करते थे, वे उन्हें बताती थीं कि पिछले बीस वर्षों से वह हर पखवाड़े उनके साथ ग्रामीण इलाके में रहते थे, और यह वही थे जिन्होंने उन्हें छोटे से ड्राइंग रूम में रखा सुंदर पुराना बैरोमीटर दिया था। संयोग से, उनकी तस्वीरें उन 'समूहों' में ली गई थीं जिनमें उनके रिश्तेदार ड्यूक भी शामिल थे। लेकिन जैसे ही उन्होंने यह सामाजिक स्थिति प्राप्त की, उन्होंने इसका उपयोग करना बंद कर दिया। ऐसा केवल इसलिए नहीं था कि अब जब लोग उन्हें हर जगह स्वागत योग्य मानते थे, तो उन्हें आमंत्रित किए जाने से कोई खुशी नहीं मिलती थी, बल्कि इसलिए था कि उन दो दुर्गुणों में से जो लंबे समय से उन पर हावी होने के लिए संघर्ष कर रहे थे, कम स्वाभाविक, घमंड ने अपना स्थान एक कम कृत्रिम दुर्गुण को दे दिया, क्योंकि यह कम से कम प्रकृति की ओर एक प्रकार की वापसी का संकेत देता था, भले ही वह अप्रत्यक्ष रूप से ही क्यों न हो। निःसंदेह ये दोनों बातें असंगत नहीं हैं, और डचेस की पार्टी से निकलते ही झुग्गी बस्ती का रात्रिकालीन भ्रमण किया जा सकता है। लेकिन उम्र के प्रभाव ने लेग्रैंडिन को इतने सुखों का संचय करने से विमुख कर दिया, वे किसी निश्चित उद्देश्य के बिना घर से बाहर नहीं निकलते थे, और इसका यह भी प्रभाव पड़ा कि प्रकृति के सुख लगभग निरर्थक हो गए, जिनमें मुख्य रूप से मित्रताएँ, समय लेने वाली बातचीत शामिल थीं, और उन्होंने अपना लगभग सारा समय निम्न वर्ग के लोगों के बीच व्यतीत किया, जिससे उनके पास सामाजिक जीवन के लिए बहुत कम समय बचा। श्रीमती डी कैम्ब्रेमर स्वयं डचेस डी गुएरमांटेस के मैत्रीपूर्ण प्रस्तावों के प्रति लगभग उदासीन हो गईं। बाद वाली, मार्क्विज़ से मिलने के लिए बाध्य होने पर, ने गौर किया,

जैसा कि तब होता है जब हम अपने साथी मनुष्यों को अधिक करीब से देखते हैं, अर्थात् अच्छे गुणों के संयोजन जिन्हें हम अंततः खोजते हैं और दोषों के जिनसे हम अंततः अभ्यस्त हो जाते हैं, कि श्रीमती... डी कैम्ब्रेमर एक ऐसी महिला थीं जिनमें सहज बुद्धिमत्ता और अर्जित संस्कृति थी, जिसके बारे में मैं स्वयं तो बहुत कम सोचता था, लेकिन डचेस को यह असाधारण प्रतीत होती थी। इसलिए वह अक्सर देर दोपहर में श्रीमती डी कैम्ब्रेमर से मिलने आती थीं और उनसे लंबे समय तक मिलती थीं। लेकिन डचेस डी गुएरमांटेस में जो अद्भुत आकर्षण उनकी मेज़बान के मन में था, वह उस क्षण गायब हो जाता था जब वह देखती थीं कि दूसरी महिला उनकी संगति चाहती है, और वह उन्हें अपने सुख के लिए नहीं बल्कि शिष्टाचारवश ही स्वीकारती थीं। गिलबर्ट में एक अधिक उल्लेखनीय परिवर्तन प्रकट हुआ, एक ऐसा परिवर्तन जो स्वान में विवाह के बाद हुए परिवर्तन के समरूप और उससे भिन्न दोनों था। यह सच है कि पहले कुछ महीनों के दौरान गिलबर्ट चुनिंदा लोगों के लिए अपने दरवाजे खोलने में प्रसन्न थीं। निस्संदेह यह केवल संभावित उत्तराधिकार की दृष्टि से ही था कि उन्होंने अपनी माँ के करीबी मित्रों को आमंत्रित किया, लेकिन केवल कुछ निश्चित दिनों में जब उनके अलावा कोई और नहीं होता था, फैशनेबल लोगों से अलग एकांत में, मानो श्रीमती बोंटेम्प्स या श्रीमती... प्रिंसेस डी गुएरमांटेस या प्रिंसेस डी पार्म के साथ कॉटार्ड का मिलन, दो अस्थिर पाउडरों की तरह, अपूरणीय आपदाएँ उत्पन्न कर सकता था। फिर भी, बोंटेम्प्स, कॉटार्ड्स और उनके जैसे अन्य लोग, भले ही समारोह में लोगों की कम संख्या से निराश थे, इस बात पर गर्व महसूस करते थे कि वे कह सकते थे: "हम मार्क्विज़ डी सेंट-लूप के साथ भोजन कर रहे थे," खासकर इसलिए क्योंकि वह कभी-कभी मैडम डी

मार्सेंटेस को भी आमंत्रित करने का साहस करती थीं, जो कछुए की खोल और शुतुरमुर्ग के पंखों से बने पंखे के साथ 'महान महिला' के रूप में जानी जाती थीं, और यह भी विरासत को सहेजने का एक प्रयास था। वह केवल समय-समय पर उन विशिष्ट लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करती थीं जिन्हें केवल आमंत्रित किए जाने पर ही देखा जाता था, एक चेतावनी के साथ जो उन्होंने कॉटार्ड-बोंटेम्प्स वर्ग के अपने श्रोताओं को अपना सबसे विनम्र और दूरीपूर्ण अभिवादन दिया। शायद मुझे भी इन समारोहों में शामिल होना पसंद होता। लेकिन गिलबर्ट, जिसकी नज़र में मैं अब मुख्य रूप से उसके पति और गुएरमांटे परिवार का दोस्त था (और जिसने—शायद कॉम्ब्रे के दिनों में भी, जब मेरे माता-पिता उसकी माँ से मिलने नहीं जाते थे—उस उम्र में जब हम चीज़ों के मूल्य में कुछ जोड़कर नहीं, बल्कि उन्हें उनकी श्रेणी के अनुसार वर्गीकृत करके ही समझते हैं, मुझे वह प्रतिष्ठा प्रदान की थी जो हम बाद में कभी नहीं खोते), इन शामों को मेरे लिए उचित नहीं समझती थी, और जब मैं उससे विदा लेता तो वह कहती: "आपसे मिलकर बहुत अच्छा लगा, लेकिन परसों फिर आना, तुम्हें मेरी चाची गुएरमांटे और श्रीमती डी पोइक्स मिलेंगी; आज तो मैंने माँ को खुश करने के लिए बस कुछ ही दोस्तों को बुलाया था।" लेकिन यह स्थिति कुछ ही महीनों तक चली, और बहुत जल्द सब कुछ बदल गया। क्या इसका कारण यह था कि गिलबर्ट का सामाजिक जीवन भी स्वान के जीवन की तरह ही विरोधाभासों से भरा होना तय था? चाहे जो भी हो, गिलबर्टे कुछ ही समय के लिए मार्क्विज़ डी सेंट-लूप (जैसा कि हम आगे देखेंगे, डचेस डी गुएरमेंटेस बनने की प्रक्रिया में) थीं, जब उन्होंने सबसे शानदार और सबसे कठिन पद प्राप्त कर लिया। तब उन्होंने यह निर्णय लिया कि सेंट-लूप नाम अब उनके भीतर एक चमकते हुए इनेमल

कहा था: "आखिरकार मैं अपनी ही धरती पर आ गई हूँ। मैं अभी-अभी श्रीमती ला डचेस डी X— से आई हूँ, कमरे में तीन से ज़्यादा चेहरे ऐसे थे जिन्हें मैं जानती नहीं थी।" संक्षेप में, ओपेरा के उस पात्र की राय से सहमत होते हुए, जो कहता है: "मुझे लगता है कि मेरा नाम मुझे और कुछ कहने से मुक्त करता है," गिलबर्ट ने अपनी उस तीव्र इच्छा के प्रति अपनी अवमानना को ज़ाहिर करने का काम शुरू कर दिया, यह घोषणा करने के लिए कि फाउबर्ग सेंट-जर्मेन के सभी लोग मूर्ख थे, ऐसे लोग जिनके घरों में कोई नहीं जा सकता था, और अपने शब्दों के अनुरूप कार्य करते हुए, उसने उनके यहाँ जाना बंद कर दिया। जो लोग इस युग के बाद ही उनसे परिचित हुए, और जिन्होंने उस परिचय के शुरुआती दौर में, उन्हें (उस समय तक डचेस डी गुएरमांटेस बन चुकीं) उस दुनिया का बेतुका मज़ाक उड़ाते हुए सुना, जिसमें वह आसानी से रह सकती थीं, क्योंकि उन्होंने उस दुनिया से बाहर किसी को भी आमंत्रित नहीं किया था, और यदि उनमें से कोई भी, यहाँ तक कि सबसे प्रतिभाशाली व्यक्ति भी, उनके ड्राइंग रूम में आने का साहस करता, तो वह उनके सामने खुलेआम जम्हाई लेतीं, अब इस बात पर शर्मिंदा होतीं कि वे स्वयं कभी फैशनेबल दुनिया में विशिष्टता का दावा कैसे कर सकते थे, और अपनी पिछली कमजोरियों के इस अपमानजनक रहस्य को उस महिला के सामने कभी भी स्वीकार करने का साहस नहीं करते, जिसके बारे में उनका मानना है कि अपने स्वभाव की अंतर्निहित उच्चता के कारण, वह बचपन से ही ऐसी बातों को समझने में असमर्थ थीं। वे उन्हें ड्यूक्स का इतना मज़ाकिया ढंग से मज़ाक उड़ाते हुए सुनते हैं, और उन्हें (जो अधिक महत्वपूर्ण है) अपने व्यवहार को अपने उपहास के अनुरूप बनाते हुए देखते हैं! निस्संदेह वे उस घटना के कारणों की जाँच करने के बारे में नहीं सोचते जिसने मैडम स्वान को मैडम डी

फोर्शेविल, मैडम में बदल दिया। डी फोर्शेविल से मार्क्विज़ डी सेंट-लूप और अंत में डचेस डी गुएरमेंटेस बनने तक। शायद उन्हें यह भी समझ नहीं आया कि इस घटना के परिणाम, इसके कारणों के साथ-साथ, गिलबर्ट के बाद के रवैये को समझाने में भी उतने ही सहायक होंगे। नए अमीरों के साथ मेलजोल रखने की आदत को मैडम स्वान की नज़र से नहीं देखा जाता था, क्योंकि गिलबर्ट को हर कोई 'मैडम ला डचेस' कहकर बुलाता था और अन्य डचेसें, जो उसे 'चचेरी बहन' मानती थीं, इस आदत को नहीं समझती थीं। हम हमेशा उस लक्ष्य को तुच्छ समझने लगते हैं जिसे हम हासिल नहीं कर पाए हैं या जिसे हमने स्थायी रूप से प्राप्त नहीं किया है। और यह तिरस्कार हमें उन लोगों के चरित्र का हिस्सा लगता है जिन्हें हम अभी तक नहीं जानते। शायद अगर हम बीते वर्षों के घटनाक्रम को फिर से देख पाते, तो पाते कि वे उन्हीं कमजोरियों से सबसे अधिक क्रूरतापूर्वक ग्रस्त थे, जिन्हें उन्होंने इतनी कुशलता से छिपाया या उन पर विजय प्राप्त की थी कि हम उन्हें न केवल स्वयं उन कमजोरियों का शिकार होने में असमर्थ मानते हैं, बल्कि दूसरों में भी उन्हें माफ करने में असमर्थ समझते हैं, उनकी कल्पना करने की तो बात ही दूर है। खैर, बहुत जल्द ही नई मार्क्विज़ डी सेंट-लूप के ड्राइंग रूम ने सामाजिक दृष्टि से अपना स्थायी रूप धारण कर लिया, क्योंकि हम एक अन्य संदर्भ में देखेंगे कि उसमें क्या परेशानियाँ पनप रही थीं; खैर, यह रूप निम्नलिखित कारण से आश्चर्यजनक था: लोगों को अब भी याद था कि पेरिस में सबसे औपचारिक, सबसे विशिष्ट पार्टियाँ, डचेस डी गुएरमांटेस द्वारा दी जाने वाली पार्टियों जितनी ही शानदार, सेंट-लूप की माँ, श्रीमती डी मार्सेंटेस की होती थीं। दूसरी ओर, हाल के वर्षों में, ओडेट का ड्राइंग रूम, सामाजिक स्तर पर कहीं

अधिक निचले दर्जे का होते हुए भी, अपनी भव्यता और वैभव में कम आकर्षक नहीं था। हालाँकि, सेंट-लूप अपनी पत्नी की अपार संपत्ति के कारण सुख-सुविधाओं से भरपूर हर चीज़ पाकर प्रसन्न थे और अच्छे संगीत के साथ बढ़िया भोजन के बाद केवल अपनी कुर्सी पर शांति से आराम करना चाहते थे। और यह युवक, जो कभी इतना अभिमानी और महत्वाकांक्षी प्रतीत होता था, अपने उन पुराने मित्रों को भी अपने विलासितापूर्ण जीवन में आमंत्रित करता था जिन्हें उसकी माँ अपने घर में आने की अनुमति नहीं देती थी। गिलबर्ट ने स्वान के इस कथन को साकार किया: "गुणवत्ता मायने नहीं रखती, मुझे मात्रा से डर लगता है।" और सेंट-लूप, हमेशा अपनी पत्नी के सामने नतमस्तक रहते थे, क्योंकि वे उससे प्रेम करते थे, और क्योंकि उन्हीं की बदौलत उन्हें ये असीम सुख-सुविधाएँ प्राप्त थीं, इसलिए उन्होंने उन रुचियों में हस्तक्षेप न करने का ध्यान रखा जो उनकी अपनी रुचियों से इतनी मिलती-जुलती थीं। परिणामस्वरूप, श्रीमती डी मार्सेंटेस और श्रीमती द्वारा दिए गए भव्य स्वागत समारोहों में... डी फोर्शेविल, जो हर साल मुख्य रूप से अपने बच्चों को एक शानदार नींव पर स्थापित करने के उद्देश्य से दिया जाता था, एम. और मैडम डी सेंट-लूप द्वारा कभी भी स्वागत योग्य नहीं था। उनके पास घुड़सवारी के लिए बेहतरीन घोड़े थे, सैर के लिए सबसे शानदार नौकाएँ थीं—लेकिन वे कभी भी दो से अधिक मेहमानों को अपने साथ नहीं ले जाते थे। पेरिस में, हर शाम, वे तीन या चार दोस्तों को भोजन पर आमंत्रित करते थे, इससे अधिक कभी नहीं; परिणामस्वरूप, एक अप्रत्याशित लेकिन साथ ही साथ पूरी तरह से स्वाभाविक प्रतिगामी प्रक्रिया के कारण, दो विशाल मातृ- आश्रयस्थल एक शांत घोंसले में परिवर्तित हो गए थे।

[**अनुवादक की टिप्पणी: यह बिल्कुल समझ से परे है। गिलबर्टे सेंट-लूप की विधवा के रूप में फिर से प्रकट होती है जबकि ड्यूक डी गुएरमांटेस और उनकी पत्नी अभी भी जीवित हैं।]
इन दोनों विवाहों से सबसे कम लाभ युवा मैडमोजेल डी'ओलोरोन को हुआ, जो धार्मिक समारोह के दिन पहले से ही टाइफाइड बुखार से पीड़ित थीं और बड़ी मुश्किल से रेंगकर चर्च तक पहुँच पाईं और कुछ सप्ताह बाद उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु के कुछ समय बाद भेजे गए सूचना पत्र में जुपियन के नाम के साथ यूरोप के लगभग सभी महानतम परिवारों के नाम भी शामिल थे, जैसे कि विस्काउंट और विस्काउंटेस डी मोंटमोरेंसी, एच.आर.एच. कॉम्टेस डी बॉर्बन-सोइसन्स, प्रिंस ऑफ मोडेना-एस्टे, विस्काउंटेस डी एडुमेआ, लेडी एसेक्स, इत्यादि। निस्संदेह, यहाँ तक कि उस व्यक्ति के लिए भी जो जानता था कि मृतक जुपियन की भतीजी थी, इन भव्य संबंधों की भरमार कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी। आखिरकार, महान संबंध होना ही तो महानता है। फिर, सत्ता के औचित्य का हवाला देते हुए, एक साधारण सी दुकान में काम करने वाली लड़की की मृत्यु से यूरोप के सभी शाही परिवार शोक में डूब जाते हैं। लेकिन बाद की पीढ़ी के कई युवा, जो तथ्यों से परिचित नहीं थे, इस पत्र को पढ़ते समय संभवतः मैरी-एंटोनेट डी'ओलोरोन, मार्क्विज़ डी कैम्ब्रेमर को कुलीन परिवार की महिला समझ बैठे होंगे, और अन्य कई गलतियाँ भी कर बैठे होंगे। इसलिए, यदि फ्रांस की यात्राओं ने उन्हें कॉम्ब्रे के आसपास के क्षेत्र से कुछ हद तक परिचित कराया होता, तो जब उन्होंने देखा कि कॉम्टे डी मेसेग्लिस हस्ताक्षरकर्ताओं में ड्यूक डी गुएरमेंटेस के निकट, पहले स्थान पर थे, तो उन्हें शायद कोई आश्चर्य नहीं हुआ होगा। “मेसेग्लिस का तरीका गुएरमांटेस के तरीके से मिलता-जुलता है। एक ही क्षेत्र के

पुराने और कुलीन परिवार पीढ़ियों से सहयोगी रहे होंगे। कौन जाने? शायद गुएरमांटेस परिवार की ही कोई शाखा हो जिसे कॉम्टे डी मेसेग्लिस की उपाधि प्राप्त है।” लेकिन असल में कॉम्टे डी मेसेग्लिस का गुएरमांटेस से कोई संबंध नहीं था और उनका नाम गुएरमांटेस पक्ष में दर्ज भी नहीं था, बल्कि कैम्ब्रेमर पक्ष में था। क्योंकि कॉम्टे डी मेसेग्लिस, जो तेजी से तरक्की करके सिर्फ दो साल के लिए लेग्रैंडिन डी मेसेग्लिस बने थे, हमारे पुराने दोस्त लेग्रैंडिन थे। निस्संदेह, एक के बाद एक झूठे खिताबों का इस्तेमाल करना गुएरमांटेस को बहुत बुरा लगा होगा। अतीत में उनका संबंध मेसेग्लिस के वास्तविक कॉम्टेस से था, जिनकी केवल एक महिला वंशज ही जीवित बची थी, जो साधारण और विनम्र माता-पिता की बेटी थी। उसने मेरी चाची के एक किरायेदार किसान मेनेजर से शादी कर ली थी, जो अमीर हो गया था और उसने मेरी चाची से मिरौग्रेन खरीद लिया था और अब खुद को 'मेनेजर डी मिरौग्रेन' कहता था। इसका नतीजा यह हुआ कि जब आप कहते थे कि उसकी पत्नी 'डी मेसेग्लिस' में पैदा हुई थी, तो लोग सोचते थे कि वह मेसेग्लिस में ही पैदा हुई होगी और वह 'मेसेग्लिस की' थी क्योंकि उसका पति 'मिरौग्रेन का' था।
किसी भी अन्य दिखावटी उपाधि से गुएरमांटेस परिवार को इतनी परेशानी नहीं होती। लेकिन कुलीन वर्ग इन परेशानियों और अन्य कई तरह की परेशानियों को बर्दाश्त करना जानता है, खासकर तब जब किसी ऐसे विवाह का सवाल उठता है जिसे किसी भी दृष्टिकोण से लाभकारी माना जाता है। ड्यूक डी गुएरमांटेस द्वारा संरक्षित, लेग्रैंडिन उस पीढ़ी के एक हिस्से के लिए और उसके बाद आने वाली पूरी पीढ़ी के लिए सच्चे कॉम्टे डी मेसेग्लिस थे।

की मृत्यु के कुछ समय बाद, जब उन्हें 'लियोनोर' नाम से एक पत्र मिला (जो नाम मुझे उनका याद नहीं था), तो मुझे यह तब पता चला कि मुझे किसने लिखा है, जब मैंने पत्र के अंत में लिखा वाक्य पढ़ा: "Croyez à ma sympathie vraie," जिसमें 'vraie' शब्द इसी क्रम में था, और इस तरह लियोनोर नाम के साथ कैम्ब्रेमर उपनाम जोड़ा गया था।
लगभग इसी समय मैं गिलबर्ट से अक्सर मिलने लगा था, जिसके साथ मेरी पुरानी घनिष्ठता फिर से जागृत हो गई थी: क्योंकि अंततः हमारा जीवन हमारी मित्रता की अवधि के अनुसार नहीं चलता। कुछ समय बीतने दीजिए और आप देखेंगे कि (जैसे पूर्व मंत्री राजनीति में फिर से आ जाते हैं, जैसे पुराने नाटक मंच पर पुनर्जीवित होते हैं) लंबे वर्षों के अंतराल के बाद उन्हीं लोगों के बीच पुराने मैत्रीपूर्ण संबंध फिर से पनप जाते हैं, और खुशी से पुनर्जीवित हो जाते हैं। दस वर्षों के बाद, वे कारण जो एक पक्ष को अत्यधिक प्रेम करने के लिए प्रेरित करते थे, और दूसरे को अत्यधिक कठोर निरंकुशता सहन करने में असमर्थ बनाते थे, अब मौजूद नहीं हैं। केवल परंपरा ही शेष रहती है, और जो कुछ भी गिलबर्ट ने मुझे पहले देने से इनकार कर दिया था, जो उसे असहनीय, असंभव लगता था, वह मुझे बड़ी आसानी से दे देती थी—निस्संदेह इसलिए कि अब मुझे उसकी आवश्यकता नहीं थी। यद्यपि हम दोनों में से किसी ने भी इस बदलाव का कारण अपने आप से नहीं बताया, यदि वह हमेशा मेरे पास आने के लिए तैयार रहती थी, मुझे छोड़ने की कभी जल्दी नहीं करती थी, तो इसका कारण यह था कि बाधा दूर हो गई थी: मेरा प्रेम।
इसके अलावा, मैं कुछ दिनों बाद टैनसनविले में कुछ दिन बिताने गया। मुझे यह कदम कुछ असुविधाजनक लगा, क्योंकि पेरिस में मेरी

मानती थी, और जैसा उसने कहा था। यह राय आत्मसम्मान, दूसरों को धोखा देने की इच्छा, खुद को धोखा देने की इच्छा, और रॉबर्ट की बेवफ़ाइयों के बारे में अधूरी जानकारी से जायज़ थी, जो धोखा खाए पति-पत्नी को हमेशा मिलती है, खासकर इसलिए क्योंकि रॉबर्ट, जो एम. डी चार्लस का असली भतीजा था, खुलेआम उन महिलाओं के साथ घूमता था जिनके साथ उसने संबंध बनाए थे, जिन्हें दुनिया मानती थी और जिन्हें गिलबर्ट कमोबेश उसकी रखैलें समझती थी। समाज में यह भी माना जाता था कि वह बहुत बेशर्म था, किसी पार्टी में किसी महिला के साथ से कभी नहीं हटता था, जिसे वह बाद में घर तक छोड़ देता था, और श्रीमती डी सेंट-लूप को जैसे-तैसे वापस लौटने के लिए छोड़ देता था। जो कोई भी यह कहता कि जिस दूसरी महिला के साथ उसने इस तरह संबंध बनाए थे, वह वास्तव में उसकी प्रेमिका नहीं थी, उसे मूर्ख समझा जाता, जो अपने सामने की सच्चाई को देखने में असमर्थ होता। लेकिन अफसोस, जुपियन के कुछ शब्दों ने मुझे सच्चाई की ओर इशारा कर दिया, एक ऐसी सच्चाई जिसने मुझे असीम पीड़ा दी। टैनसनविले जाने से कुछ महीने पहले, जब मैं एम. डी चार्लस के बारे में पूछताछ करने गया था, जिनके हृदय संबंधी कुछ लक्षणों ने उनके मित्रों को बहुत चिंतित कर दिया था, और मैंने जुपियन को, जिनसे मैं अकेले मिला था, रॉबर्ट को संबोधित और बॉबेट के हस्ताक्षर वाले कुछ प्रेम पत्रों के बारे में बताया, जिन्हें श्रीमती डी सेंट-लूप ने खोजा था, तो मुझे बैरन के पूर्व सहायक से पता चला कि बॉबेट के हस्ताक्षर का उपयोग करने वाली व्यक्ति कोई और नहीं बल्कि वही वायलिन वादक थी जिसने एम. डी चार्लस के जीवन में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह जानकर मुझे कितना आश्चर्य हुआ था। जुपियन उसके बारे में बिना आक्रोश के बात नहीं कर सकता था: "लड़का जो चाहे करने के लिए स्वतंत्र था। लेकिन अगर कोई एक दिशा

थी जिसमें उसे कभी नहीं देखना चाहिए था, तो वह बैरन का भतीजा था। खासकर इसलिए क्योंकि बैरन अपने भतीजे को अपने बेटे की तरह प्यार करता था। उसने इस युवा जोड़े को अलग करने की कोशिश की है, यह शर्मनाक है। और उसने यह काम बड़ी ही धूर्तता से किया होगा, वरना मार्क्विस डी सेंट-लूप से ज्यादा इस तरह की चीजों का विरोध करने वाला कोई नहीं होता। सोचो उसने अपनी रखैलियों के लिए क्या- क्या पागलपन किया होगा! नहीं, हो सकता है उस नीच संगीतकार ने बैरन को किसी घटिया चाल से छोड़ा हो; फिर भी, यह उसका निजी मामला था। लेकिन भतीजे के साथ संबंध बनाना, कुछ चीजें ऐसी हैं जो नहीं करनी चाहिए।" जुपियन का आक्रोश सच्चा था; जिन लोगों को अनैतिक कहा जाता है, उनमें नैतिक आक्रोश उतना ही तीव्र होता है जितना अन्य लोगों में, बस उसका उद्देश्य थोड़ा अलग होता है। इतना ही नहीं, जिन लोगों का अपना दिल सीधे तौर पर प्रेम से जुड़ा नहीं होता, वे हमेशा दुर्भाग्यपूर्ण उलझनों और विनाशकारी विवाहों को इस तरह देखते हैं मानो प्रेम हमें अपने प्रेम की प्रेरणा चुनने के लिए स्वतंत्र करता हो, और वे प्रेम द्वारा उत्पन्न उस अद्भुत भ्रम को ध्यान में नहीं रखते जो उस व्यक्ति को पूरी तरह और अनोखे ढंग से घेर लेता है जिससे हम प्रेम करते हैं, और इस प्रकार उस 'मूर्खता' को नज़रअंदाज़ कर देते हैं जिसका आरोप उस व्यक्ति पर लगाया जाता है जो अपनी रसोइया या अपने सबसे अच्छे दोस्त की प्रेमिका से शादी करता है, जबकि आमतौर पर यही एकमात्र काव्यात्मक कार्य होता है जो वह अपने जीवनकाल में करता है। मुझे पता चला कि रॉबर्ट और उनकी पत्नी अलगाव के कगार पर थे (हालाँकि गिल्बर्ट को अभी तक समस्या की सही वजह का पता नहीं चला था) और यह श्रीमती डी मार्सैंट्स थीं, जो एक स्नेही, महत्वाकांक्षी और दार्शनिक माँ थीं, जिन्होंने उनके बीच सुलह

बोतलें गिरा दीं: "नहीं, नहीं, मेरे प्रिय, ऑर्डर करो! मैंने अपने जीवन में कभी इन दस्तावेजों को समझा ही नहीं है। मुझे कभी खाना ऑर्डर करना नहीं आता!" उसने शायद ही सच्चे गर्व के साथ दोहराया और साहित्य और लालच को मिलाकर, तुरंत शैम्पेन की एक बोतल मंगवाई, जिसे वह बातचीत में 'केवल प्रतीकात्मक रूप से' रखना पसंद करता था। दूसरी ओर, सेंट-लूप को खाना ऑर्डर करना आता था। वह गिलबर्ट के बगल में बैठा था—जो पहले से ही गर्भवती थी (आने वाले वर्षों में, वह उसे लगातार संतान प्रदान करता रहेगा*) — और जल्द ही होटल में अपने डबल बेड पर उसके बगल में लेटने वाला था। वह अपनी पत्नी के अलावा किसी से बात नहीं कर रहा था, होटल का बाकी हिस्सा उसके लिए मानो अस्तित्वहीन था। लेकिन जैसे ही एक वेटर उसका ऑर्डर लेने आया और उसके पास खड़ा हुआ, उसने अपनी नीली आँखें तेज़ी से उठाईं और उस पर एक नज़र डाली जो दो सेकंड से भी कम समय तक टिकी रही, लेकिन उसकी निर्मल भेदक दृष्टि में एक ऐसी जिज्ञासा और खोज की झलक थी जो किसी आम भोजन करने वाले व्यक्ति में नहीं होती, जो किसी सेवक या संदेशवाहक को लंबे समय तक ध्यान से देखता है और अपने दोस्तों को बताने के लिए हास्यपूर्ण या अन्य टिप्पणियाँ करता है। यह छोटी सी, क्षणिक, दृष्टि से बिल्कुल निस्वार्थ, उन लोगों को बता रही थी जिन्होंने इसे देखा था कि इस उत्तम पति, राहेल के कभी इतने भावुक प्रेमी, के जीवन का एक और पहलू भी था, जो उसे कर्तव्य की भावना से किए जाने वाले जीवन से कहीं अधिक रोचक लगता था। लेकिन यह केवल उस एक नज़र में ही झलक सकता था। उसकी नज़रें फिर से गिलबर्ट पर टिक गईं, जिसने कुछ नहीं देखा था। उसने एक गुजरते हुए दोस्त का परिचय कराया और उसके साथ बाहर टहलने के लिए कमरे से निकल गया। अब, ऐमे उस समय मुझसे बहुत पहले के समय की बात कर रही थी, उस समय की जब मैंने इसी

बालबेक में श्रीमती डी विलेपारिसिस के माध्यम से सेंट-लूप से परिचय किया था। "क्यों, महोदय," उन्होंने मुझसे कहा, "यह तो सर्वविदित है, मैं इसे बहुत लंबे समय से जानता हूँ। जिस वर्ष महाशय पहली बार बालबेक आए थे, उसी वर्ष श्रीमान ले मार्क्विस ने अपनी दादी की कुछ तस्वीरें विकसित करने के बहाने मेरे लिफ्ट-बॉय के साथ खुद को कमरे में बंद कर लिया था। लड़के ने शिकायत की, और हमें मामले को दबाने में बड़ी मुश्किल हुई। और इसके अलावा, महाशय, महाशय को वह दिन अवश्य याद होगा, जब वे श्रीमान ले मार्क्विस डी सेंट-लूप और उनकी प्रेमिका के साथ रेस्तरां में दोपहर के भोजन के लिए आए थे, जिन्हें श्रीमान ले मार्क्विस एक आड़ के रूप में इस्तेमाल कर रहे थे। महाशय को निस्संदेह याद होगा कि श्रीमान ले मार्क्विस गुस्से का बहाना बनाकर कमरे से चले गए थे। बेशक, मैं एक पल के लिए भी यह नहीं कह रहा हूँ कि मैडम सही थीं। वह उन्हें खूब नचा रही थीं। लेकिन उस दिन के बारे में, कोई भी मुझे यह विश्वास नहीं दिला सकता कि श्रीमान ले मार्क्विस का गुस्सा दिखावा नहीं था, और उनके पास वहाँ से जाने का कोई ठोस कारण नहीं था। "महाशय और महोदया।" जहाँ तक उस दिन की बात है, मुझे पूरा यकीन है कि अगर ऐमे जानबूझकर झूठ नहीं बोल रहा था, तो वह पूरी तरह से गलत था। मुझे रॉबर्ट की हालत और पत्रकार को मारा गया उसका वार अच्छी तरह याद था। और, बालबेक वाली घटना में भी यही बात थी; या तो लिफ्ट वाले लड़के ने झूठ बोला था, या ऐमे झूठ बोल रहा था। कम से कम, मुझे ऐसा ही लगा; मुझे पक्का यकीन नहीं था, क्योंकि हम चीजों के एक से ज़्यादा पहलू कभी नहीं देख पाते। अगर यह विचार मुझे परेशान न करता, तो मुझे इस बात में एक ताज़ा विडंबना नज़र आती कि जहाँ मेरे लिए लिफ्ट वाले लड़के को सेंट-लूप भेजना उसे पत्र पहुँचाने और उसका जवाब पाने का सबसे

सुविधाजनक तरीका था, वहीं उसके लिए इसका मतलब था एक ऐसे व्यक्ति से जान-पहचान करना जो उसे पसंद आया था। दरअसल, हर चीज़ के कम से कम दो पहलू होते हैं। हमारे द्वारा किए गए सबसे छोटे काम पर भी, दूसरा व्यक्ति कई बिल्कुल अलग काम जोड़ देता है; यह निश्चित है कि सेंट-लूप का लिफ्ट-बॉय के साथ जो वाकया हुआ था, अगर वह हुआ भी था, तो मेरे पत्र के साधारण प्रेषण में उसका कोई संबंध नहीं था, ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यक्ति जो वैगनर के बारे में लोहेनग्रिन के युगल गीत के अलावा कुछ नहीं जानता हो, ट्रिस्टन के प्रस्तावना का अनुमान नहीं लगा सकता। निश्चित रूप से, मनुष्यों के लिए, वस्तुएँ अपने असंख्य गुणों में से केवल सीमित संख्या में ही गुण प्रदर्शित करती हैं, क्योंकि हमारी इंद्रियाँ सीमित हैं। वे रंगीन इसलिए दिखाई देती हैं क्योंकि हमारे पास आँखें हैं; अगर हमारे पास सैकड़ों इंद्रियाँ होतीं तो वे कितने अन्य विशेषणों के योग्य न होतीं? लेकिन उनका यह भिन्न रूप हमारे लिए तब अधिक बोधगम्य हो जाता है जब जीवन में कोई छोटी से छोटी घटना भी घटित होती है, जिसका हम एक हिस्सा जानते हैं जिसे हम संपूर्ण मान लेते हैं, और जिसे दूसरा व्यक्ति ऐसे देखता है मानो घर के दूसरे हिस्से में खुलने वाली खिड़की से एक अलग दृश्य प्रस्तुत हो रहा हो। मान लीजिए कि ऐमे को कोई गलतफहमी नहीं हुई थी, तो ब्लोच द्वारा लिफ्ट-बॉय के बारे में बात करने पर सेंट-लूप का चेहरा लाल होना शायद मेरे दोस्त द्वारा उस शब्द का उच्चारण 'लाइट' करने के कारण नहीं था। लेकिन मुझे पूरा यकीन था कि सेंट-लूप का शारीरिक विकास उस समय शुरू नहीं हुआ था और तब तक वह केवल महिलाओं के प्रति ही आकर्षित थे। किसी भी अन्य संकेत से ज़्यादा, मैं यह बात बालबेक में सेंट-लूप द्वारा मेरे प्रति दिखाई गई मित्रता से समझ सकता था। वह केवल महिलाओं के प्रति

प्रेम में रहते हुए ही वास्तव में मित्रता करने में सक्षम थे। उसके बाद, कम से कम कुछ समय के लिए, उन पुरुषों के प्रति जो उन्हें शारीरिक रूप से आकर्षित नहीं करते थे, उन्होंने एक उदासीनता दिखाई जो कुछ हद तक, मेरे विचार से, सच्ची थी—क्योंकि वह बहुत रूखे हो गए थे—और जिसे उन्होंने बढ़ा-चढ़ाकर भी दिखाया ताकि लोग यह सोचें कि उनकी रुचि केवल महिलाओं में है। लेकिन मुझे वह दिन अच्छी तरह याद है जब डोंसिएरेस में, मैं वर्दुरिन परिवार के साथ भोजन करने जा रहा था, और मोरेल को ध्यान से देखने के बाद, उन्होंने मुझसे कहा: "अजीब है वह लड़का, वह मुझे कुछ मायनों में राहेल की याद दिलाता है। क्या आपको समानता नहीं दिखती? मेरे विचार से, वे कुछ मामलों में बिल्कुल एक जैसे हैं। वैसे इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।" फिर भी उनकी आँखें काफी देर तक क्षितिज पर टकटकी लगाए रहीं, जैसे हम ताश खेलने या रात के खाने पर जाने से पहले उन लंबी यात्राओं के बारे में सोचते हैं जो हम कभी नहीं कर पाएंगे, लेकिन जिनके लिए हमारे मन में क्षणिक लालसा जागती है। लेकिन अगर रॉबर्ट को चार्ली में राहेल की कुछ झलकियाँ दिखीं, तो गिलबर्ट ने भी राहेल से कुछ समानता दिखाने की कोशिश की, ताकि वह अपने पति को आकर्षित कर सके। उसने राहेल की तरह लाल, गुलाबी या पीले रंग के रिबन बांधे, और उसी तरह के स्टाइल में बाल संवारे, क्योंकि उसे लगता था कि उसका पति अभी भी राहेल से प्यार करता है, और इसलिए उससे ईर्ष्या करता है। यह बिल्कुल संभव था कि रॉबर्ट का प्रेम कभी-कभी उस सीमा रेखा के पार चला गया हो जो एक पुरुष के स्त्री के प्रति प्रेम और एक पुरुष के पुरुष के प्रति प्रेम को विभाजित करती है। किसी भी मामले में, राहेल की स्मृति की भूमिका अब विशुद्ध रूप से सौंदर्यपरक थी। यह वास्तव में असंभव है कि इसकी कोई अन्य

[* Dis aliter visum. We will see, in the sequel, that the widowed Gilberte appears to be mother of a only daughter. C. K. S. M.]

छोड़े बिना, सार्वजनिक रूप से उसके वस्त्रों में लिपटा रहा, मुझे एक अतिरिक्त घबराहट के साथ, एक प्रकार के पैतृक हावभाव का अनैच्छिक पूर्वाभ्यास याद आया, जिसे मैंने एम. डी चार्लस में देखने का अवसर प्राप्त किया था, जब वह मैडम के उत्तम वस्त्रों में सजे हुए दिखाई दिए थे। मोले हो या कोई और स्त्री, स्त्री- प्रेम के उस आंदोलन का प्रतीक, जो उसका अपना नहीं था, लेकिन जिसे वह प्यार करता था, भले ही उसे इस तरह दिखावा करने का अधिकार न हो, चाहे इसलिए कि वह इसे सुरक्षा के रूप में उपयोगी मानता था या सौंदर्य की दृष्टि से आकर्षक, मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि यह युवक, जो पहले इतना उदार था जब वह इतना गरीब था, अब इतना कंजूस हो गया था। यह एक आम बात है कि एक आदमी केवल उसी चीज़ से चिपटा रहता है जो उसके पास है, और जो पहले पैसे लुटाता था जब उसके पास बहुत कम होता था, अब उस धन का संचय करता है जो उसके पास भरपूर है, फिर भी इस मामले में मुझे यह एक अधिक व्यक्तिगत रूप में दिखाई दिया। सेंट-लूप ने टैक्सी लेने से इनकार कर दिया, और मैंने देखा कि उसने एक ट्राम का ट्रांसफर टिकट संभाल कर रखा था। निस्संदेह ऐसा करके सेंट-लूप एक अलग उद्देश्य के लिए उन प्रतिभाओं का उपयोग कर रहा था जो उसने राहेल के साथ अपने घनिष्ठ संबंध के दौरान अर्जित की थीं। एक युवक जो वर्षों तक एक स्त्री के साथ रहा हो, वह उस नौसिखिए जितना अनुभवहीन नहीं होता जिसके लिए वह लड़की पहली होती है जिससे वह विवाह करता है। इसी प्रकार, राहेल के घरेलू खर्चों की छोटी से छोटी बात में दखल देने के कारण, आंशिक रूप से इसलिए कि वह स्वयं एक कुशल गृहस्वामी नहीं थी, और बाद में उसकी ईर्ष्या ने उसे राहेल के निजी जीवन पर कड़ा नियंत्रण रखने के लिए दृढ़ बना दिया, वह अपनी पत्नी की संपत्ति के प्रबंधन और घर के संचालन में उस कुशलता और अनुभव के साथ अपनी

भूमिका निभाता रहा, जिसकी शायद गिल्बर्ट में कमी होती, जिसने खुशी-खुशी ये कर्तव्य उसे सौंप दिए थे। लेकिन निस्संदेह वह यह सब मुख्य रूप से चार्ली का भरण-पोषण करने के लिए कर रहा था, ताकि वह अपनी मितव्ययिता से बचाए गए हर पैसे से उसे समृद्ध बनाए रख सके, और गिल्बर्ट को उसके गबन का पता न चले या उसे इससे कोई नुकसान न हो। मेरी आँखों में आँसू आ गए जब मैंने सोचा कि अतीत में मैंने एक अलग सेंट-लूप के लिए इतना गहरा स्नेह महसूस किया था, और मैं उसके अब अपनाए गए ठंडे और टालमटोल वाले व्यवहार से अच्छी तरह समझ सकती थी कि अब वह मेरे लिए ऐसा महसूस नहीं करता, क्योंकि अब पुरुष, जो उसकी इच्छाओं को जगाने में सक्षम थे, अब उसकी मित्रता को प्रेरित नहीं कर सकते थे। एक ऐसे नौजवान में ये रुचियां कैसे पनप सकती थीं जो स्त्रियों का इतना दीवाना था कि मैंने उसे लगभग आत्महत्या की हद तक उन्माद में देखा था, क्योंकि 'राहेल, जब प्रभु से दूर हो जाए', ने उसे छोड़ने की धमकी दी थी? क्या चार्ली और राहेल के बीच की समानता—जो मुझे दिखाई नहीं देती थी—वह आधार थी जिसने रॉबर्ट को अपने पिता की रुचियों से अपने चाचा की रुचियों की ओर बढ़ने में सक्षम बनाया, ताकि वह शारीरिक विकास को पूरा कर सके जो उस चाचा में भी जीवन के काफी बाद के चरण में हुआ था? हालांकि, कभी-कभी ऐमे के शब्द मेरे मन में लौट आते थे और मुझे बेचैन कर देते थे; मुझे बालबेक में वह साल याद आया; लिफ्ट-बॉय से बात करते समय उसकी एक तरकीब थी, कि वह उस पर बिल्कुल ध्यान नहीं देता था, जो कुछ पुरुषों से बात करते समय एम. डी चार्लस के तरीके से बहुत मिलती-जुलती थी। लेकिन रॉबर्ट ने यह आसानी से एम. डी चार्लस से, गुएरमांटेस परिवार की एक खास तरह की अकड़ और शारीरिक हाव-भाव से लिया होगा, बिना एक पल के लिए भी बैरन की विशेष रुचियों को अपनाए। उदाहरण के लिए,

और राहेल के साथ दोपहर का भोजन किया था, तो मुझे अपने आँसू रोकने के लिए बहुत प्रयास करना पड़ा।
संयोगवश, मुझे कॉम्ब्रे जिले की अपनी इस यात्रा पर विचार करने की आवश्यकता ही नहीं होती, जो शायद मेरे जीवन का वह समय था जब मैंने कॉम्ब्रे के बारे में सबसे कम सोचा था, यदि इसने 'गुएरमांटेस मार्ग' के बारे में मेरे कुछ पुराने विचारों और 'मेसेग्लिस मार्ग' के बारे में मेरे कुछ अन्य विचारों की अस्थायी पुष्टि न की होती। मैं हर शाम, विपरीत दिशा में, उन सैरों को दोहराता था जो हम कॉम्ब्रे में दोपहर में 'मेसेग्लिस मार्ग' पर किया करते थे। अब हम टैनसनविले में उस समय भोजन करते थे जिस समय तक मैं पहले कॉम्ब्रे में सो चुका होता था। और यह सूरज की गर्मी के कारण था। और इसलिए भी क्योंकि गिलबर्ट दोपहर घर से जुड़े चैपल में चित्रकारी करने में बिताती थी, इसलिए हम भोजन से लगभग दो घंटे पहले तक सैर पर नहीं जाते थे। पहले की सैरों का वो आनंद, जो घर लौटते समय बैंगनी आकाश को कलवारी पर्वतमाला को घेरे हुए देखने या विवोन नदी में स्वयं का प्रतिबिंब देखने में मिलता था, अब शाम ढलने के बाद निकलने के आनंद में बदल गया था। उस समय गाँव में हमें भेड़ों के झुंड के नीले-भूरे, अनियमित और बदलते त्रिकोण के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता था, जिन्हें घर ले जाया जा रहा होता था। आधे से ज़्यादा खेतों में रात हो चुकी होती थी; शाम के तारे के ऊपर चाँद ने अपना दीपक जला दिया होता था, जो जल्द ही पूरे क्षेत्र को रोशन कर देगा। कभी-कभी गिलबर्ट मुझे उसके बिना जाने देती थी, और मैं आगे बढ़ता जाता था, अपनी परछाईं पीछे छोड़ते हुए, मानो कोई नाव जादुई पानी पर सरक रही हो। लेकिन आमतौर पर गिलबर्ट मेरे साथ आती थी। हम जो सैर साथ-साथ करते थे, वे अक्सर वही सैर होती थीं जो मैं

बचपन में किया करता था: तो भला 'गुएरमांटेस मार्ग' पर चलते हुए मुझे यह दृढ़ विश्वास पहले से कहीं अधिक गहराई से क्यों महसूस हो रहा था कि मैं कभी कुछ लिख नहीं पाऊंगा, साथ ही यह विश्वास भी कि मेरी कल्पना और संवेदनशीलता कमजोर हो गई है, जब मैंने पाया कि कॉम्ब्रे में मेरी रुचि कितनी कम हो गई है? और यह देखकर मुझे बहुत दुख हुआ कि मैं अपने बचपन के दिनों को कितना कम जी पा रहा था। मुझे विवोन नदी अपने किनारे के रास्ते के नीचे एक छोटी, बदसूरत धारा जैसी लगी। ऐसा नहीं था कि मुझे अपनी यादों से कोई बड़ा अंतर दिखाई दिया हो। लेकिन, एक अलग जीवन के विस्तार से अलग होकर, जिन स्थानों पर मैं दोबारा जा रहा था, उनके और मेरे बीच वह निकटता नहीं थी जिससे स्मृति का तात्कालिक, मधुर और पूर्ण प्रज्वलन जन्म लेता है, इससे पहले कि हम इसे समझ भी पाएं। शायद इसके स्वरूप की स्पष्ट समझ न होने के कारण, मैं इस विचार से दुखी था कि मेरी भावनाओं और कल्पना करने की क्षमता कम हो गई होगी, क्योंकि अब मुझे इन सैरों में कोई आनंद नहीं मिलता था। गिलबर्ट, जो मुझे मुझसे भी कम समझती थी, मेरे आश्चर्य में शामिल होकर मेरी उदासी को और बढ़ा देती थी। वह कहती, "क्या, इस छोटी सी पगडंडी पर मुड़ते ही तुम्हें कोई रोमांच नहीं होता, जिस पर तुम पहले चढ़ती थीं?" और वह स्वयं इतनी बदल गई थी कि अब मुझे वह सुंदर नहीं लगती थी, और वास्तव में वह सुंदर नहीं रह गई थी। जैसे-जैसे हम चलते गए, मैंने परिदृश्य को बदलते देखा; हमें छोटी पहाड़ियों पर चढ़ना पड़ा, फिर एक ढलान आई। हमने बातचीत की, जो मेरे लिए बहुत सुखद थी—हालांकि थोड़ी मुश्किल भी थी। बहुत से लोगों में अलग-अलग परतें होती हैं जो एक जैसी नहीं होतीं (उसमें उसके पिता और उसकी माता का चरित्र था); हम पहले एक से गुजरते हैं, फिर दूसरे से। लेकिन, अगले दिन, उनका क्रम उलट जाता है। और अंत

में, हमें यह भी नहीं पता कि भूमिकाएँ कौन आवंटित करेगा, और हमें सुनवाई के लिए किससे अपील करनी है। गिलबर्ट उन देशों में से एक थी जिनके साथ हम गठबंधन करने की हिम्मत नहीं करते थे क्योंकि वहाँ सरकारें बार-बार बदलती रहती थीं। लेकिन वास्तव में यह एक भ्रम है। सबसे स्थिर व्यक्तित्व की स्मृति व्यक्ति में एक प्रकार की पहचान स्थापित कर देती है, जिसके परिणामस्वरूप वह उन वादों को निभाने में कभी नहीं चूकता जिन्हें वह याद रखता है, भले ही उसने उनका समर्थन न किया हो। जहाँ तक बुद्धिमत्ता की बात है, गिलबर्ट अपनी माँ से विरासत में मिली कुछ विचित्रताओं के साथ बहुत तेज थी। मुझे याद है कि इन सैर के दौरान हमारी बातचीत में, वह ऐसी बातें कहती थी जो अक्सर मुझे बहुत आश्चर्यचकित करती थीं। पहली बात यह थी: "अगर आपको ज्यादा भूख न लगी हो और ज्यादा देर न हुई हो, तो इस सड़क से बाईं ओर मुड़कर फिर दाईं ओर मुड़कर, हम पंद्रह मिनट से भी कम समय में गुएरमांटेस पहुँच जाएँगे।" ऐसा लगा जैसे उसने कहा हो: "बाईं ओर मुड़ो, फिर दाईं ओर पहला मोड़ लो और तुम उस अगोचर को छू लोगे, तुम उस दुर्गम, दूरस्थ इलाके तक पहुँच जाओगे जिसके बारे में धरती पर हम दिशा के अलावा कुछ नहीं जानते, लेकिन" (जिसे मैंने बहुत पहले गुएरमांटेस के बारे में सब कुछ समझ लिया था, और शायद एक अर्थ में मैं गलत नहीं था) "वह 'रास्ता' है।" मेरे अन्य आश्चर्यों में से एक था 'विवोन नदी का स्रोत' देखना, जिसे मैंने नरक के द्वार जितना ही अलौकिक समझा था, और जो केवल एक आयताकार कुंड था जिसमें बुलबुले सतह पर उठते थे। और तीसरा अवसर तब आया जब गिलबर्ट ने मुझसे कहा: "अगर तुम चाहो, तो हम एक दोपहर बाहर जा सकते हैं, और फिर हम मेसेग्लिस वाली सड़क से गुएरमांटेस जा सकते हैं, यह सबसे सुंदर सैर है," इस वाक्य ने मेरे सभी बचकाने विचारों को उलट दिया, यह बताकर कि दोनों

'रास्ते' उतने असंगत नहीं थे जितना मैंने सोचा था। लेकिन सबसे ज़्यादा मुझे इस बात ने झकझोर दिया कि इस यात्रा के दौरान मैंने अपने बचपन के दिनों को कितना कम जिया, कॉम्ब्रे को देखने की मेरी इच्छा कितनी कम हुई, और विवोन मुझे कितना छोटा और बदसूरत लगा। लेकिन गिलबर्ट ने मेसेग्लिस मार्ग के बारे में मेरी कुछ कल्पनाओं को साकार कर दिया, उन सैरों में से एक के दौरान जो रात में ही होती थीं, भले ही हमने उन्हें रात के खाने से पहले किया हो—क्योंकि वह बहुत देर से खाना खाती थी। चांदनी से ढकी एक शांत और गहरी घाटी के रहस्य में उतरने से पहले, हम एक पल के लिए रुके, जैसे दो कीड़े किसी फूल की नीली पंखुड़ी में गोता लगाने वाले हों। फिर गिलबर्ट ने शायद एक मेज़बान की विनम्रता से, जो इस बात से दुखी थी कि आप इतनी जल्दी जा रहे हैं और आपको उस देश के और भी हिस्से दिखाना चाहती थी जिसकी आप सराहना करते प्रतीत होते हैं, कुछ ऐसा कहा जिसमें एक अनुभवी महिला के रूप में उनकी कुशलता, मौन, सादगी और संयम का उपयोग करके अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का तरीका, आपको यह विश्वास दिलाता है कि आप उनके जीवन में एक ऐसा स्थान रखते हैं जिसे कोई और नहीं भर सकता। उस मनमोहक हवा और ताज़ी हवा से जो भावनाएँ मुझमें उमड़ रही थीं, उन्हें अचानक उस पर उड़ेलते हुए, मैंने उससे कहा: "तुम उस दिन उस छोटे से रास्ते की बात कर रही थीं, तब मैं तुमसे कितना प्यार करता था!" उसने जवाब दिया: "तुमने मुझे क्यों नहीं बताया? मुझे इसका ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था। मैं तुमसे प्यार करती थी। सच में, मैंने दो बार तुम्हारे सिर पर छलांग लगाई थी।" "कब?" "जब हम पहली बार टैनसनविले गए थे, तब आप अपने परिवार के साथ टहल रहे थे, मैं घर लौट रही थी, मैंने इतना प्यारा छोटा लड़का पहले कभी नहीं देखा था। मेरी आदत थी," उसने थोड़ी विनम्रता से कहा, "रोसैनविले

“और दूसरी बार,” गिलबर्ट ने आगे कहा, “कई साल बाद जब मैं आपके घर के दरवाज़े पर आपसे मिली, मेरी चाची ओरियान के घर आपसे दोबारा मिलने से कुछ दिन पहले। मैंने आपको पहली बार में पहचाना नहीं, या यूँ कहूँ कि मैंने अनजाने में ही आपको पहचान लिया क्योंकि मुझे वही तड़प महसूस हुई जो मुझे टैनसनविले में हुई थी।” “लेकिन इन दोनों मौकों के बीच, आखिरकार, शैंप्स-एलिसी भी तो था।” “हाँ, लेकिन वहाँ आप मुझसे कुछ ज़्यादा ही लगाव रखते थे, मुझे लगता था कि आप हर समय मुझ पर नज़र रख रहे हैं।” मैंने उस समय उससे यह नहीं पूछा कि वह युवक कौन था जिसके साथ वह एवेन्यू डेस शैंप्स-एलिसी पर चल रही थी, उस दिन जब मैं उससे मिलने निकला था, उस दिन जब समय रहते मैं उससे सुलह कर लेता, वह दिन जो शायद मेरे जीवन की पूरी दिशा बदल देता, अगर मैंने शाम के धुंधलके में अगल-बगल मेरी ओर बढ़ते उन दो धुंधले सायों को न देखा होता। मैंने मन ही मन सोचा, अगर मैंने उससे पूछा होता, तो शायद वह सच कबूल कर लेती, जैसे अल्बर्टीन भी कर लेती अगर उसे जीवनदान मिल जाता। और सच में, जब हम उन महिलाओं से प्यार करना छोड़ देते हैं जिनसे हम कई सालों बाद मिलते हैं, तो क्या उनके और हमारे बीच मृत्यु की खाई नहीं खड़ी हो जाती, ठीक वैसे ही जैसे मानो वे इस दुनिया से चली गई हों? क्योंकि प्यार न रहने का मतलब है कि वे जो थीं या हम जो उस समय थे, वे सब मानो मर चुके हैं। मेरे मन में ख्याल आया कि शायद उसे याद न हो, या उसने मुझसे झूठ बोला हो। खैर, अब मुझे यह जानने में ज़रा भी दिलचस्पी नहीं थी, क्योंकि मेरा दिल गिलबर्ट के चेहरे से भी ज़्यादा बदल चुका था। इस आखिरी बात से मुझे शायद ही कोई खुशी मिली, लेकिन सबसे चौंकाने वाली बात यह थी कि मैं अब दुखी नहीं थी। अगर मैं इस बारे में फिर से सोचती, तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि गिलबर्ट को एक युवक के साथ चलते हुए देखकर

मैं इतनी दुखी हो सकती थी और मन ही मन कह सकती थी: "सब खत्म हो गया, मैं उसे फिर कभी देखने की कोशिश नहीं करूंगी।" उस दूर के वर्ष में, जो मेरे लिए एक अंतहीन यातना मात्र थी, उस मन की स्थिति का अब कुछ भी शेष नहीं था। क्योंकि इस संसार में, जहाँ सब कुछ नष्ट हो जाता है, सब कुछ निष्फल हो जाता है, एक ऐसी चीज है जो धूल में मिल जाती है, जो स्वयं को और भी पूरी तरह से नष्ट कर देती है, सौंदर्य से भी कम निशान छोड़ती है: वह है दुःख।
इसलिए मुझे आश्चर्य नहीं हुआ कि मैंने उस समय उससे यह नहीं पूछा कि वह शैंप्स-एलिसी में किसके साथ टहल रही थी, क्योंकि समय के साथ आने वाली इस उदासीनता के मैंने पहले ही कई उदाहरण देख लिए हैं। लेकिन मुझे थोड़ा आश्चर्य हुआ कि मैंने गिलबर्ट को यह नहीं बताया कि उस शाम उससे मिलने से पहले, मैंने उसके लिए फूल खरीदने के लिए चीनी मिट्टी के पुराने बर्तनों का एक कटोरा बेच दिया था। वास्तव में, उसके बाद के उस निराशाजनक समय में, यही मेरा एकमात्र सहारा था कि एक दिन मैं बिना किसी खतरे के उसे अपने इतने नाजुक इरादे के बारे में बता सकूंगा। एक साल से भी अधिक समय बाद, अगर मुझे कोई और गाड़ी मेरी गाड़ी की ओर आती हुई दिखाई देती, तो मेरे न मरने की इच्छा का एकमात्र कारण यही होता कि मैं यह बात गिलबर्ट को बता सकूं। मैंने खुद को इस विचार से दिलासा दिया: "कोई जल्दी नहीं है, मेरे पास उसे बताने के लिए पूरा जीवन पड़ा है।" और इसी कारण मैं अपनी जान गंवाने से डर रहा था। अब मुझे यह बात शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल, लगभग हास्यास्पद और एक ऐसी बात लगती जिसके गंभीर परिणाम हो सकते थे। “लेकिन,” गिलबर्ट ने आगे कहा, “जिस दिन मैं दरवाज़े पर तुमसे मिली थी, उस दिन भी तुम बिल्कुल वैसी ही थीं जैसी कॉम्ब्रे में थीं; काश तुम्हें पता होता कि तुममें कितना कम बदलाव आया है!”

मैंने गिलबर्ट की छवि को फिर से अपनी यादों में संजो लिया। मैं काँटेदार झाड़ियों के नीचे सूरज की रोशनी का वो आयताकार घेरा, उस छोटी लड़की के हाथ में पकड़ा हुआ करनी, और वो धीमी निगाह जो उसने मुझ पर टिका दी थी, सब कुछ चित्रित कर सकती थी। लेकिन उस निगाह के साथ जुड़े अशिष्ट हावभाव के कारण, मैंने सोचा था कि वह एक तिरस्कारपूर्ण निगाह थी, क्योंकि मैं जो अर्थ उस निगाह से देखना चाहती थी, वह मुझे ऐसा लगता था कि छोटी लड़कियाँ नहीं जानतीं और केवल मेरी कल्पना में, मेरे एकांत के पलों में ही होता है। मैं यह सोच भी नहीं सकती थी कि इतनी आसानी से, इतनी तेज़ी से, लगभग मेरे दादाजी की आँखों के सामने, उनमें से कोई इतनी हिम्मत कर लेगी कि ऐसा सुझाव दे दे।
इस बातचीत के काफी समय बाद, मैंने गिलबर्ट से पूछा कि जिस शाम मैंने कटोरा बेचा था, उस शाम वह किसके साथ एवेन्यू डेस चैंप्स-एलिसीज़ पर टहल रही थी: वह पुरुष के वेश में लीया थी। गिलबर्ट जानती थी कि वह अल्बर्टीन को जानती है, लेकिन वह मुझे इससे ज्यादा कुछ नहीं बता सकी। इस प्रकार, कुछ लोग हमारे जीवन में बार-बार प्रकट होते हैं, जो हमारे सुख या दुख का संदेश देते हैं। उस समय जो दिखावटीपन छिपा था, वह मेरे लिए पूरी तरह से महत्वहीन हो गया था। फिर भी, कितने ही दिन और रातें मैंने इस बात को लेकर खुद को परेशान किया कि वह आदमी कौन था? जब भी मैं उसके बारे में सोचती, तो शायद मुझे अपने दिल की धड़कन को उसी कॉम्ब्रे में माँ को शुभ रात्रि कहने के लिए नीचे जाने से रोकने की कोशिश से भी ज़्यादा काबू में रखना पड़ता था। कहा जाता है, और यही कुछ तंत्रिका संबंधी विकारों के धीरे-धीरे लुप्त होने का कारण है, कि हमारा तंत्रिका तंत्र बूढ़ा हो जाता है। यह न केवल हमारे स्थायी स्वरूप के लिए सच है जो हमारे पूरे जीवन भर बना रहता है,

बल्कि हमारे सभी क्रमिक स्वरूपों के लिए भी सच है जो अंततः एक हद तक स्थायी स्वरूप का निर्माण करते हैं।
और इसलिए इतने वर्षों के अंतराल के बाद, मुझे उस छवि को नए रंग देने के लिए विवश होना पड़ा जिसे मैं अच्छी तरह से याद कर पा रहा था। इस कार्य ने मुझे अत्यंत प्रसन्न किया क्योंकि इसने मुझे दिखाया कि मेरे और सुनहरे बालों वाली एक विशेष प्रकार की छोटी लड़की के बीच जो अथाह खाई मैंने तब मौजूद मानी थी, वह पास्कल की खाई की तरह ही काल्पनिक थी, और जिसे मैंने काव्यात्मक महसूस किया क्योंकि इतने वर्षों के अंत में मुझे इसे साकार करना पड़ा था। रूसैनविले की कालकोठरियों के बारे में सोचते ही मेरे मन में इच्छा और खेद का एक तीव्र आवेग उठा। फिर भी, मैं यह कहने में प्रसन्न था कि जिस आनंद के लिए मैं उन दिनों अपनी पूरी शक्ति झोंक देता था, और जिसे अब कुछ भी मुझे वापस नहीं दिला सकता, वह वास्तव में मेरे मन में नहीं, बल्कि वास्तविकता में, और मेरे इतने करीब, उस रूसैनविले में मौजूद था जिसके बारे में मैं अक्सर बात करता था, जिसे मैं ओरिस की सुगंध से महकते कमरे की खिड़की से देख सकता था। और मुझे कुछ भी पता नहीं था! संक्षेप में, गिलबर्ट उन सभी चीज़ों का प्रतीक थी जिनकी मैंने अपनी सैर के दौरान कामना की थी, यहाँ तक कि घर लौटने का मेरा अनिर्णय भी, जब मुझे ऐसा लगता था कि मैं पेड़ों के तनों को अलग होते हुए, मानव रूप लेते हुए देख सकता हूँ। जिन चीज़ों के लिए उस समय मैं इतनी बेसब्री से तरस रहा था, वह उनके लिए तैयार थी, बस अगर मुझमें समझदारी होती और मैं उससे दोबारा मिल पाता, ताकि मैं अपने बचपन में उनका स्वाद चख सकूँ। जितना मैंने सोचा था उससे भी कहीं अधिक, गिलबर्ट उन दिनों वास्तव में 'मेसेग्लिस जीवन शैली' का हिस्सा थी।

और सचमुच, जिस दिन मैं उससे एक दरवाजे पर मिला था, भले ही वह मैडम डी ल'ऑर्गेविल नहीं थीं, वह लड़की जिससे रॉबर्ट गुप्त मुलाकातों के दौरान मिला था (और यह कितना अजीब संयोग था कि मैंने उसके भावी पति से ही उसके बारे में जानकारी मांगी थी), मैं उसकी नज़र के अर्थ को लेकर पूरी तरह गलत नहीं था, न ही उस तरह की महिला को लेकर जो वह थी और जैसा कि उसने अब मुझसे स्वीकार किया था। "वह सब बहुत पहले की बात है," उसने मुझसे कहा। "हमारी सगाई के दिन से मैंने रॉबर्ट के अलावा किसी और के बारे में कभी सोचा ही नहीं। और, मैं आपको बता दूं, वह बचकानापन वह चीज नहीं है जिसके लिए मैं खुद को सबसे ज्यादा दोषी मानती हूं।"